प्रकाशिका—श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल शांतिपुरी (सौराष्ट्र) गुजरात



वीर सं० २५०१] विक्रम सं० २०३१ [सन् १९७५

आ आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी
सुविहित साधु महाराजो छे.

मूल्य रु. ६०—००

मुद्रक—
ज्ञानोदय प्रिन्टिंग प्रेस
पिण्डवाडा (राजस्थान)
(वाया-सिरोहीरोड)
गौतम आर्ट प्रिन्टर्स
ब्यावर (राजस्थान)

संपादकीय निवेदन

निष्कारणबंधु विश्ववत्सल चरमशासनपति श्रमणभगवान महावीर देवे भव्यजीवोना हितने माटे स्थापेल शासन आजे विद्यमान छे अने विषमकालमां पण भव्य जीवोने माटे सर्वज्ञ परमात्मानु' ओ शासन परमआलंबन रूप छे. तीर्थंकरदेवोनी अविद्यमानतामां तेओश्रीनी वाणी शासनना प्राण स्वरूप होय छे. श्री तीर्थंकरदेवोओ अर्थथी प्ररूपेल अने गणधरोदेवोओ सूत्रथी गू'थेल ओ जिनवाणी हितकांक्षी पुन्यात्माओ माटे अमृत तुल्य छे.

विद्यमान आगम श्रुतज्ञानमां मुख्यतया ४५ आगम गणाय छे. ते उपरांत पण ८४ आगमनी गणतरीने हिसाबे बीजु' पण केटलु'क आगम रूपी श्रुतज्ञान विद्यमान छे. आगम सूत्रो उपर नियु'क्तिओ, भाष्यो, चूर्णिओ अने टीकाओ रचाइ छे. अने ओथी सूत्र सहित आगमनी ओ पंचांगी जैन शासनमां मान्य छे. तेना आधारे वर्तमान ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रचार, तपाचार अने वीर्याचार रूप व्यवहार प्रवर्ते छे. सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्चारित्र रूप मुक्ति-मार्ग प्रवर्तमान छे.

पंचांगीनो वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा रूप पंचलक्षण स्वाध्याय जेटलो जोरदार तेटली श्री संघमां सम्यग् ज्ञाननी शुद्धि जोरदार, तेनाथी ज्ञानाचार उज्वल, उज्वल ज्ञानाचारथी दर्शनाचार उज्वल, उज्वल दर्शनाचारथी चारित्राचार उज्वल, उज्वल चारित्राचारथी तपाचार उज्वल, अने ओ चारे उज्वल आचारथी वीर्याचार उज्वल. वीर्याचारनी उज्वलताथी जैनशासन उज्वल. ए उज्वल जैन शासन सदा जयवंत वर्ते छे.

आम शासननो आधार कहो के पायो कहो, मूल कहो के प्राण कहो, ओ श्री जिनवाणी छे. अने ते जिनवाणी ४५ मुल आगम सहित पंचांगी स्वरूप छे. पंचांगीने अनुसरता प्रकरण ग्रन्थो यावत् स्तवन सज्झाय के नाना निबंध के वाक्य स्वरूप छे. उपशम विवेक संवर-ओ त्रिपदी स्वरूप जिनवाणीथी घोर पापी चिलातीपुत्र पण पतनना मार्गथी नीकली प्रगतिमार्गना मुसाफिर बनी गया हता.

४५ मूल आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिवरो छे. साध्वीजी महाराजो श्रीआवश्यक सूत्र आदि मूल सूत्रोना तेमज श्रीआचारांग सूत्रना योगवहन करवा पूर्वक अधिकारी छे. श्रावक श्राविकाओ उपधान वहन करवा पूर्वक श्री आवश्यक सूत्र उपरांत दशवैकालिकसूत्रना षड्जीव-निकाय-नामना चोथा अध्ययन पर्यंतना श्रुतना अधिकारी छे आम आगमश्रुतना अधिकारी मुनिवरो योगवहन करवा पूर्वक योग्यता मुजब अध्ययन आदि करीने पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रने निर्मल बनावे छे अने योग्यता मुजब धर्मकथा द्वारा जिणवाणीनुं पान करावी साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप चारे प्रकारना संघने तेमज मार्गाभिमुख जीवोने मुक्तिमार्ग प्रदान करे छे.

४५ आगमसूत्रो ६ विभागोमां वहेंचायेल छे. (१) अंगसूत्रो-११ (२) उपांगसूत्रो-१२ (३) पयन्नासूत्रो-१० (४) छेदसूत्रो-६ (५) मूलसूत्रो-४ (६) चूलिकासूत्रो-२. आ सूत्रोनुं स्वाध्याय आदि अध्ययन वधे ते माटे उपयोगी बने ते रीते ४५ मूल सूत्रो श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्रीसंघमां सळंग मुद्रित नथी अने जेथी आगम सूत्रोना स्वाध्याय आदिनी अनुकूलता थाय ते माटे शक्य प्रयत्ने संशोधन करीने प्रगट करवानी योजना विचारवामां आवी छे, ते योजना मुजब ४५ आगमसूत्रो १४ विभागमां संपादन थशे. तेना प्रथम विभागमां श्रीआचारांगसूत्र, श्रीसूत्रकृतांगसूत्र, श्रीस्थानांगसूत्र, श्रीसमवायांगसूत्र ओ चार सूत्रनो समावेश करवामां आव्यो छे. आ सूत्रोमां जुदी जुदी प्रतो मेळववा साथे टीकामां रहेला पाठान्तरो मेळवीने मूलसूत्रो साथे कोंशमां आपेला छे. पू. आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज द्वारा संशोधित श्री आगममंजूषा, बाबुश्री धनपतसिंहजी द्वारा प्रकाशित सटीक सूत्रो, आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित सटीक सूत्रो, श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला द्वारा, तथा स्था. समाज द्वारा प्रकाशित श्री आचारांग सूत्रना पुस्तको, श्री गोडीजी जैन पार्श्वनाथ पेढी द्वारा प्रकाशित श्रीसूत्रकृतांगसूत्रसटीक, श्रीविजयदानसूरिज्ञानमंदिरनी हस्तप्रतो विगेरेनो आधार आ सूत्रो माटे संशोधनमां लेवामां आव्यो छे.

श्री श्रमण संघमां आगमो कंठस्थ करवामां स्वाध्याय करवामां विस्तृत टीकाओना वांचन पछी मूलसूत्रोनुं पुनरावर्तन करवामां आ मूल सूत्रोना संयुक्त संपादनथी घणी अनुकूलता रहेशे. अने ओथी होंशे होंशे उत्साही मुनि भगवंतो सूत्रो कंठस्थ करीने आगम श्रुतने धारण करवा माटे पण समर्थ बनी शकशे. २, ५, के १०, २० सूत्र कंठस्थ करनारा अने पुरतो प्रयत्न थाय तो ओक लाख श्लोकप्रमाण मूल सूत्रो कंठस्थ करी धारी राखनारा अनेक गणो मुनिवरोमां थइ शकशे. 'ज्ञानधनाः साधवः' 'शास्त्रचक्षुषः साधवः' ओ विधान मुजब श्रमण संघना प्राण समान आ आगम सूत्रोनुं श्री श्रमण भगवंतो द्वारा विशेष परिशीलन

थर्तां श्रीसंघने माटे श्री शासन ने माटे घणी उज्वलता फेलाशे. अने ओ आश्रयथी स्वपरना श्रेयकारी आगम सूत्रोनां संशोधन संपादनमां अविरत उत्साह प्रवर्तमान छे.

प्रकाशननी सगवडता माटे श्री पिंडवाड़ा जैन संघना आगेवान अने श्री भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन समितिना कार्यकर्ताओ श्राद्धवर्यश्री समरथमलजी भाई श्राद्धवर्यश्री लालचंदजी भाई विगेरे तेमज श्री ज्ञानोदय प्रिन्टिंग प्रेस (पिंडवाड़ा) ना मेनेजर श्री फतेहचन्दभाई तेमज श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्स (व्यावर) ना व्यवस्थापक श्री छगनलालभाई अे जे खंत अने उत्साह बताव्या छे तेने कारणे आ प्रकाशनो समयसर प्रकाशित थइ रह्यां छे.

चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीर देवे प्रकाशेल जिनवाणीनो प्रभाव पांचमा आराना छेडा सुधी रहेशे. अे ज्वलंत जिनवाणीनो प्रकाश आपणा आत्माने अजवाळनारो बने ते माटे योग्यता अने अधिकार मुजब जिनवाणीनी उपासना भक्तिमां भावोल्लास पूर्वक रस लइ रह्यो छुं ते टकी रहे अने सौ श्रुत आराधनामां उजमाल बनीअे अेज मारा अंतरनी शुभ भावना छे.

वीर सं. २५०१ वि सं २०३१
जेठ सुद ११ गुरुवार
शेठ मोतीशा लालबाग जैन उपाश्रय
भुलेश्वर मुंबई-४

हालार देशोद्धारक कविरत्न पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-अमृतसूरीश्वरजी महाराजानो चरण सेवक-
पं. जिनेन्द्रविजय गणी



◉ प्रकाशकीय निवेदन ●



अमारी ग्रन्थमाला तरफथी आ श्रीमदागमसुधासिन्धु प्रथम विभाग मूल प्रगट करता आनंद अनुभवीए छीए । हालमां ४९ आगम मूल अने केटलाक आगम टीका सहित प्रगट करवानु काम शरू करतां आ ग्रन्थ नागरी लिपिमां मोटा टाइपमां प्रगट करेल छे ।

आ ग्रन्थनु संशोधन संपादन हालारदेशोद्धारक कविरत्न स्व. पू० आचार्यदेव श्रीमद्-विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्यरत्न पू० पंन्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवरे घणी खंत थी करेल छे ।

कागळ छपाइ आदिना भाव वधवाने कारणे खर्च धार्या करतां वधु आवे छे । मोटा टाइपमां मुद्रित करातां पेज वधारे थाय छे । परंतु टकवानी अने अभ्यासनी दृष्टिए अनुकुलता रहेशे ।

आगम सूत्रोना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिओ छे । ए शास्त्रविधि मुजब पूज्य श्रमणसंघमां आगम वांचनादिमां अनुकूलता थाय ते रूप आ श्रुतभक्ति करतां अमे आनंद अनुभविए छीए ।

श्री आचारांग सूत्रादि ४ मूल सूत्रो आ प्रथम विभागमां प्रगट थइ रह्यां छे । ४५ मूल आगम १४ विभागमां प्रगट थशे । सटीक आगमोमां श्रीमदन्तकृद्दशा, श्रीमदन्तरोपपातिकदशा अने श्रीमदुपासकदशा सूत्र तैयार थइ गयां छे । मुद्रण माटे श्री ज्ञानोदय प्रिन्टिग प्रेस, पिडवाडा अने श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्सना व्यवस्थापको ए सारी खंत राखी छे ते माटे तेमनो आभार मानीए छीए.

वीर संवत् २५०१
वि० सं० २०३१
ज्येष्ठ सुद १० बुधवार
ता: १८-६-७५

लि.-
नेमचद वाघजी गुढका
नवीनचद्र बाबुलाल शाह

* अनुक्रमः *

॥१॥ श्रीमदाचाराङ्गसूत्रम्

(पृष्ठ १ थी १४०)

॥१॥ प्रथमो ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधः

॥२॥ द्वितीयोऽग्र-श्रुतस्कंधः प्रथमाचूलिका

द्वितीया चूलिका

तृतीया चूलिका

चतुर्थी चूलिका

॥२॥ श्रीमत्सूत्रकृताङ्गसूत्रम्

(पृष्ठ १४१ था २५४)

प्रथमः श्रुतस्कन्धः



समर्पण

परम पूज्य प्रशांतमूर्ति प्रकृष्टवक्ता कविरत्न प्रवचन प्रभावक हालार-
देशोद्धारक परम उपकारी गुरुदेव स्वर्गस्थ पूज्यपाद आचार्यदेव

श्रीमद् विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराज

जेओश्रीए

प्रभु महावीर देवना कल्याणकारी शासनजो भव्य जीवोना हित माटे
प्रचार प्रसार करतां अनेक आत्माओने मोक्ष मार्गना यात्रिक बनाव्या
छे. ते साथे मने पण अज्ञान अने मिथ्यात्वना घेरा वमळमांथी
खेंची, संसार पारावार पार करवा यानपात्र सम संयम धर्ममां
स्थापन कर्यो अने मारी संयम साधनानी सफलता माटे
जेओश्रीए सतत हितचिंता सेवी हती. तेओश्रीना मह-
दुपकारनी स्मृतिमां यत्किंचित् कृतज्ञता रूपे
तेओश्रीने

श्री आगम सुधा सिन्धु

प्रथम विभाग

सादर समर्पण करी कृतकृत्यता अनुभवुं छुं.

गुरुदेव-कृपाकांक्षी
जिनेन्द्रविजय

卐

॥ शुद्धिपत्रकम् ॥

पृष्ठ	पंक्तिः	अशुद्ध	शुद्धं
३	११	समारभंतो	समारंभते
५	१३	वट्टनिस्सिया	वट्टनिस्सिया
१२	८	दृढे	दढे
१६	१४	करुसयं	फरुसयं
२०	१	शद्धे	सुद्धे
२४	१०	चेयं	एयं
३०	१५	आयणं	आयाणं
३४	१८	सवस्मिणोमि	समुस्सिणोमि
३५	२४	विणयन्ने	विणयन्ने
४०	१७	जिवीए	जीविए
४३	५	अप्पिं	अप्पं
४६	६	पुण्णकम्मासं	पुराणकुम्मासं
५६	२	पयलमाले	पयलमाणे
६३	२४	पुक्खलं	पुक्खलं वा
६८	१७	अजाण्या	अजाणया
७४	१०	निरुवरुवे	विरुवरुवे
७५	१२	वियट्टित्तए	वियट्टित्तए
७६	२	निक्खत्तपुव्वा	निक्खित्तपुव्वा
७६	१३	अलिहणेज्ज	अभिहणेज्ज
८४	१०	०वणिमागा	०वणिमगा
८६	५	विक्खूवा	भिक्खू वा
८९	२	अणालाइए	अणासादए
१०२	१४	हुदेसएण	बहुदेसिएण
१२७	१४	अवमाहिज्जति	एवमाहिज्जंति
१३७	३	पणीयरसभोयणभाइ	पणीयरसमोयणमोई
१३७	३	अइमत्तपाणभोयण भोयणमाइ	अइमत्तपाणमोयणमोई
१३८	५	भक्खिज्जा	भंसिज्जा
१३६	१८	मेहुणो	मेहुणे
१४१	१०	चे	चेव
१४३	८	तुमं दे	तु मदे
१४५	१२	वसवत्ता	वसवत्ती
१४८	१८	सोउण	(सोउण
१५४	१८	वल	वलया
१५९	१३	अन्नपागाय	(अन्नपागाय)
१७४	५	(आरंभसत्तो	(आरंभसत्तो)
१७६	१	इत्ताव एव	(इत्ताव एव)
१७७	१२	अहमाणं च	अहमाणं च मायं च
१७९	१७	वुद्धे	(वुद्धे)
१८०	१६	मेव०	सेव०
१९१	२	कट्टुएति	कट्टुएति
१९६	१३	रत्त	रत्त
२०५	१३	चितासोगर०	चितासोगसागर०
२०६	१	मणो	माणी
२०७	१	नियट्टइ	ण नियट्टइ
२१०	४	एगइओ	एगइओ
२१२	२०	अयं पुरिसे,	अयं पुरिसे देवजीवणिज्जे खलु अयं पुरिसे
२१४	७	सव्वओ कय- विक्कय- ... लावज्जीवाए,	वे वार छे ते एक वार गणवुं
२१७	१	सुद्धहियया खग्गिविसाणं व	,, ,,
२३४	२१	०णवकम्मे	०पावकम्मे
२४२	११	पुरिसे	से पुरिसे
२५५	५	एवमक्खाये	एवमक्खाय
२५५	१२	एग मणे	एगे मणे
२५५	२३	०वीरियपुकार०	वीरियपुरिसकार०
२६४	११	पन्नत्त	पन्नत्ते
२६५	१४	दुवि	दुविहे
२६५	२०	अछिगिज्झ	अभिगिज्झ
२८३	१८	पुप्फदते	पुप्फदंते
२८५	१	त्रिकस्थानकाध्यनम्	त्रिस्थानकाध्ययनम्
२९०	१०	धम्मायरिस्स	धम्मायरियस्स
२९०	११	उव्वट्टित्ता	उवट्टित्ता
२९३	९	अरहतवसे	अरहंतवसे

पृष्ठं	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
२९३	११	० उस्सप्पिणीए	० उस्सप्पिणीए
२९६	१६-२१	पूरिस-	पुरिस-
२९७	६	अलभित्ता	अलंभित्ता
२९८	१२	अविमतिमा	अबिमातिमा
३०७	१३	१६	१७
३११	१	केसंमंसु०	केसमंसु०
३१५	२१	णं णा	ण णो
३१६	११	दिट्ठा	दिट्ठी
३३१	९	(उज्जूमणे)	(उज्जूमणे)
३३४	१३	पन्नत्ते	पन्नत्ता
३४५	११	तजह-	तंजहा-
३४९	१७	कलुसमावन्ने	कलुससमावन्ने
३५९	१३-१४-१५	० क्वट्ठे	० कट्ठे
३६०	१४	पगरेंति	पगरेंति
३६३	३	जीहाऽविऽय कडुयभासिणो	जीहाऽवि य महुरभासिणी
३६४	२२	जिब्भमयातो	जिब्भामयातो
३६७	१०	मणुस्स-	मणुस्स०
३७१	८	सम्मणणुप्प-वातित्ता	सम्ममणुप्प-वातित्ता
३७४	१७	२, २	५, २
३८५	२२	भास-	भासा
३९१	२३	अत्तवता	अत्तवतो
३९४	६	ओसलवइत्ता	ओसक्कवइत्ता
४०३	१७	पंजम	पचम
४१४	१४	उवयवाए	उववाए
४१८	३	अवादणे	अवादाणे
४२६	४	केवली०	केवलि०
४२७	१०	कूल०	कुल०
४३५	२२	सागरमखोमे	सागरमखोभे
४४१	२	चालेज्जा	चलेज्जा
४४१	२२	आदिन्नादाण	अदिन्नादाण-
४४४	१	कुड्डा	कुड्डा
४४८	२१	सिद्धिगइं	सिद्धिगइ

पृष्ठं	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
४५१	१३	सेच्छती	लेच्छती
४५२	११	वक्ती	वक्ती
४६४	७	आयण०	आयाण०
४६८	३	अरुरासं	अरुणाभ
४७६	१	पुरोहियखणे	पुरोहियरयणे
४७८	२	तेसी णं	तेसि णं
४७८	४	परिनिव्वाइसति	परिनिव्वाइस्संति
४८१	२४	पन्नत्त,	पन्नत्ता
४८५	१९	दुगुछा	दुगुछा
४८६	१२	उवट्ठिय	उवट्ठियं
४९७	७	०परियाइं	परियायं
४९७	१२	आतबे	आतये
४९८	१५	उवभगंतगाए	उवभोगंतराए
५०३	१९	सत्तीतसं सत्तत्तीस	सत्ततीसं सत्तत्तीसं
५०४	७	मदरा	मंदरा
५०६	२	इसिभासिय उसवणा	इसिभासिय ज्झयणा
५०८	६	उत्तग०	उत्तर०
५२०	१९	जोयणसहससइ	जोयणसहस्साइं
५२१	११	उच्चत्तेणं	उड्ढं उच्चत्तेणं
५२९	८	वित्थेरेणं	वित्थरेणं
५३३	१२	इड्ढिविसेसा	इड्ढिविसेसा
५३४	११	अबुह० विवोहण०	अबुह०विबोहण०
५३५	२१	जरमणजोणि-	जरमरणजोणि-
५३९	११	दुगालसंगं	दुवालसग
५४०	१४	णिरयावाआ	निरयावासा
५४१	१०	जतमुसलसढि०	जंतमुसलमुसंढि०
५४३	१२/१३	उक्कोसेण	उक्कोसेणं
५४४	३	एगिदिय०	एगिंदिय०
५४७	२३	त	त जहा-
५४९	१३	सव्वोउग-माए	सव्वोउगसुमाए
५५०	१३	सले	साले
५५१	२०	वदमत्तो	वभदत्तो

(सूचना-शुद्धिपत्रकनो उपयोग करी अध्ययन करवुं जरुरी छे.)

४५ आगम (मूल) श्रेणी योजना

❀ श्रीआगमसुधासिन्धुः ❀

संपादकः पू. पं. श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर

अग्यार अंग सूत्रोः—

प्रथमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१	श्री आचारांग	सूत्र	२५५४
२	,, सूत्रकृतांङ्ग	,,	२१००
३.	,, ठाणांग	,,	३७००
४.	,, समवायांग	,,	१६६०
			१००१८

द्वितीय-तृतीय-विभागः

नं.	नाम		श्लोक
५.	,, भगवती	सूत्र	१५७५२

चतुर्थो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
६	,, ज्ञाता	सूत्र	५४५४
७	,, उपासक दशा	,,	८१२
८	,, अंतकृद्दशा	,,	७९०
९.	,, अनुत्तरौपपातिक	,,	१९२
१०	,, प्रश्नव्याकरण	,,	१२५०
११.	,, विपाक	,,	१२१६
			३५४६०

बार उपांग सूत्रो :—

पञ्चमो विभागः

न.	नाम		श्लोक
१	श्री उववाइ	सूत्र	११६७
२.	,, राजप्रश्नीय	,,	२१२०
३.	,, जीवाभिगम	,,	४७००

षष्ठो विभागः

न.	नाम		श्लोक
४.	,, पन्नवणा	सूत्र	७७८७

सप्तमो विभागः

न.	नाम		श्लोक
५.	, जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति	सूत्र	४४५४
६	, चद्र प्रज्ञप्ति	,,	२२००
७.	,, सूर्य प्रज्ञप्ति	,,	२२९६
८.	,, कलिका	सूत्र	
९	,, कल्पावतंसिका	,,	
१०	,, पुष्पिका	,,	११०९
११.	,, पुष्प चूलिका	,,	२५७३४
१२	वह्निदशा	,	

१० पयन्ना सूत्रो :—

अष्टमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१	श्री चउशरण	सूत्र	८०
२	,, आउरपच्चक्खाण	,,	१००
३	,, महापच्चक्खाण	,,	१७६
४	,, भक्त परिज्ञा	,,	२१५
५	,, तंदुलवैयालीय	,,	१३८
६	,, संस्तारक	,,	१५५
७.	,, गच्छाचार	,,	१७५
८.	,, गणिविज्जा	,,	१०५
९	,, देवेन्द्र स्तव	,,	३७५
१०	,, मरणसमाधि	,,	८७५
१	,, चद्र वेध्यक	,,	१७४
२.	,, वीरस्तव	,,	४३
			२६११

—: ६ छेद सूत्रो :—

नवमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१.	श्री निशीथ	सूत्र	८०१
२.	,, बृहत्कल्प	,,	४३१
	,, पंचकल्पभाष्य	,,	३१३५
३.	,, व्यवहार	,,	३७३
४.	,, दशाश्रुत	,,	२१०६
५.	,, जीतकल्प	,,	१०५

दशमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
६.	,, महा निशीथ	सूत्र	४५४८

एकादशमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
	श्री कल्पसूत्र	सूत्र	१२१५
			१०७४१

४ मूल सूत्रोः—

द्वादशमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१	श्री आवश्यक	सूत्र	२५००
२	,, ओघनिर्युक्ति	,,	१३५५

त्रयोदशमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
३	,, दशवैकालिक	,,	७००
	,, पिंडनिर्युक्ति	,,	८३५
४	,, उत्तराध्ययन	,,	२०००
			७३९०

२ चूलिका सूत्रो

चतुर्दशमो विभागः

नं.	नाम	श्लोक
१	श्री नंदी सूत्र	७००
२	श्री अनुयोगद्वार सूत्र	१८९९
		२५९९

सटीक आगमो आदि

नं	नाम	मूल श्लोक	टीकाकार	टीका श्लोक
१	श्री आचारांग सूत्र	२५५४	श्री शीलांकाचार्य	१२०००
२	श्री उपासकदशांग ,,	८१२	श्री अभयदेवसूरिजी	८००
३	श्री अंतकृद्दशांग ,,	८९९	,,	४००
४	श्री अनुत्तरोपपातिक ,,	१८२	,,	१००
५	नवस्मरणानि गौतमस्वामिरासश्च			



४५ आगम श्रेणी पुस्तक योजना अंगे

• निवेदन •

जणावतां आनंद थाय छे के परम करुणानिधि चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीरदेवे भव्य जीवोना श्रेयना हेतु रूप तीर्थनी स्थापना करी अने गणधर देवोने त्रिपदीनुं प्रदान कर्युं लब्धिनिधान श्री गणधर देवोअे द्वादशांगीनी रचना करी जेमनो पाट परंपरा विद्यमान छे ते श्रीमत्सुधर्मस्वामीजीनी द्वादशांगी प्रवर्तमान रही अने वर्तमानमां अग्यार अंग आदि अंग प्रविष्ट अने बार उपांग, दश पयन्ना, छ छेद, ४ मूल अने २ चूलिका सूत्रो अेम अंग बाह्य श्रुतज्ञान आदि विद्यमान छे ते सूत्रो उपर पूर्वाचार्य महापुरूषो विरचित, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, अवचूरि विगेरे आगमानुसारी श्रुत विद्यमान छे.

आ कल्याणकारी श्रुतना आधारे श्री महावीर परमात्मानुं शासन प्रवर्तमान छे, पूज्य आचार्य भगवतो आदि मुनिराजो आदि योगवहन, गुरुकुलवास, गुरूआज्ञा आदि योग्यता मुजब अे श्रुतना अधिकारी छे, अने अेथी अे शास्त्रीय मर्यादामां रहेता पूज्योने आ श्रुतज्ञानना स्वाध्याय आदिनी अनुकुलता रहे ते हेतुथी श्रुत भक्तिरूपे ४५ आगमो मूल तेमज केटलाक सूत्रोनी टीका आदि मुद्रित करवानुं नक्की कर्युं छे. तेनुं संशोधन अने संपादन हालार-देशोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय अमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्य पूज्य पन्न्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर अथाग परिश्रम पूर्वक करी रह्या छे.

आ सूत्रो श्री संघना भंडारोमां, पूज्य गुरुदेवोने अर्पण करवा प्रसारित करवानो अमे निर्णय कर्यो छे तेनी मर्यादित नकलो प्रकाशित थाय छे अने जे श्री संघो के श्रुतभक्ति रूपे श्रावकोअे आ प्रतिओ मेळववी होय तेमणे पोतानी प्रतो नी यादी लखावी देवा विनंति छे.

सूत्रोनी प्रतो मर्यादित प्रकाशित थाय छे वळी बुकसेलरोने ते वेंचवा आपवानी नथी अेटले पाछलथी प्रतिओ प्राप्त थवी मुश्केल पडशे. जेथी भंडारोने सुव्यवस्थित अने समृद्ध बनाववा श्री संघोअे पोताना सेट तरतमां लखावी देवा, पूज्य गुरूदेवो के संघोने अर्पण करवा या श्री शासननी मिल्कत रूपे सुरक्षित राखी, पूज्य गुरुदेवोने स्वाध्याय आदि माटे अर्पण करवा सुश्रावको पण आ सेट खरीदी शकशे तेओ आ सेट वांची के वेंची शकशे नहीं.

४५ आगमो अने ४/५ सूत्रोनी टीकाओ आदि जे कार्य हाथ उपर धरायुं छे तेनुं मूल्य अंदाज रु० ६०० थी ७०० थशे दर वरसे ८ थी १० सूत्रो तैयार थशे. जेमणे सेट लखाववा होय तेमणे रु. २००) अेक सेट दीठ मोकलवा अने अेटला सूत्रो तेमने प्राप्त थया पछी तेमने जणाववाथी आगलना सूत्रो माटे रकम मोकलवानी रहेशे.

चौद विभागमां ४५ आगम प्रगट थशे तेमां १ लो विभाग तैयार छे ८ मो विभाग पण पूर्ण थवा आव्यो छे. बाद १२ मो तेरमो चौदमो तैयार थशे तथा श्री उपासकदशा सटीक श्री अंतकृद्दशा सटीक, श्री अनुत्तरोपपातिक दशा सटीक पण तैयार छे, श्री आचारांग सूत्र सटीक हवे छपाशे.

पहोंचाडवानी सगवडता रहे ते माटे ८ थी १० सूत्रो तैयार थयेथी रवाना कराशे. जेथी सेट मंगावनारे पोताने मोकलवानुं रेल्वे के ट्रान्सपोर्ट द्वारा प्राप्त थाय तेवुं सरनामुं जणाववुं.

आ आगम श्रेणी अंगे नाम नोंधाववा तथा रकम मोकलवाना सरनामाः-

(१) महेता मगनलाल चत्रभुज
शाक मारकेट सामे निशालफली,
जामनगर, (सौराष्ट्र)

(२) शा. मनसुखलाल जीवराज भाडलावाला
शराफ बजार, राजकोट (सौराष्ट्र)

(३) शा. वालजी गणशी
C/o हीरा एम्पोरीयम, आनंदरोड,
मलाड (वेस्ट) मुंबई-४०००६४

(४) शा. वेलजी हीरजी गुढका
५२ बी. एम. आझाद रोड, रंगवाला चाल,
मुंबई-४०००११

(५) शा. रीखवचंद फुलचंद
सी पी. टेन्क १ लो पारसीवाडो
खलीफ मेन्सन, वी. पी. रोड, मुंबई-४

आ आगम श्रेणी उपरांत अप्रगट तथा अप्राप्य ग्रन्थोनुं विशाल पाया उपर प्रकाशन करवानी पण अमारी धारणा छे

श्रुतज्ञाननी आ भक्तिना कार्यमां सौनो साथ मळशे तो अमे वहेलासर सफल थशुं. तेथी आ अंगे योग्य सहकारनी अपेक्षा राखी श्रुतज्ञान भक्तिना कार्यमां साथ आपवा नम्र विनंति छे.



॥ गुरु स्तुतिः ॥

पन्न्यासो गणिवर्यवृद्धिविजयस्त्यागीतपस्वी महान् तच्छिष्यो गणभृत् सहाऽखिलगुणैः पन्न्यासवर्यः सुधीः।
आनन्दो विजयान्तनामसहितः शिष्यस्तदीयो गुणी जातः सर्वगुणाकरश्च हर्षविजयस्तेभ्यो नमः सन्ततम् ॥१॥

श्रीमानुग्रतप प्रभावमहितः सर्वार्थसिद्धिप्रदः पञ्चाचारपवित्रबोधिविदितः कर्पूरसूरीश्वरः ।
जातो येन कृतं स्वशासनमहो सर्वोत्तमं भूतले तत्पादौ कलिकल्पवृक्षसदृशौ भक्त्या नुमः सन्ततम् ॥२॥

त्यक्त्वा सर्वरसाञ्च संयमपरः सिद्धान्तनिष्ठः प्रभुः ग्राम्यांस्सभ्यजनान् सदा ह्युपदिशत् सद्धर्मकर्माधिकम् ।
सूरिः श्रीविजयामृतः कविवरो हालारदेशोद्धृतिं कृत्वाऽऽश्चर्यमयञ्च कार्यमखिलं प्राप्तो जगत्पूज्यताम् ॥३॥



॥ श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला ॥

लाखाबावल-शान्तिपुरी (हालार) सौराष्ट्र)

ग्रंथांक	ग्रंथनुं नाम	मूल्य रु० पैसा
(१)	दीक्षानु सुंदर स्वरुप	१-५०
(२)	विधियुक्त पौषधविधि	१-३५
(३)	स्वाध्याय सुधारस (नूतन सज्झायो)	०-५०
(४)	स्तवनामृत सग्रह	१-५०
(५)	जिनेन्द्र भक्ति भावना (त्रीजी आवृत्ति)	१-००
(६)	चतुर्विंशति जिन चैत्यवन्दनादि	०-५०
(७)	नवस्मरणादि स्तोत्र संग्रह	१-००
(८)	जयविजय कथानकम्	
(९)	श्री लेखामृत सग्रह भा. १	
(१०)	सद्गुरुवदन चैत्यवदन	
(११)	चौद नियम धारवानी बुक	०-२०
(१२)	लेखामृत सग्रह भा. २	१-००
(१३)	जिनेन्द्र भक्तिसुधा (आवृत्ति त्रीजी)	१-७५
(१४)	सोम भीम कथा तथा तपोमूर्ति पू. आ श्री विजय कर्पूरसूरिजी म. नु जीवन चरित्र	०-५०
(१५)	सक्षिप्त श्राद्धधर्म प्रथम भाग	२-५०
(१६)	स्नात्रपूजा स्तवनादि	०-२५
(१८)	श्री लेखामृत सग्रह भा. ३	०-५०
(१९)	होलिका व्याख्यान	०-३०
(२०)	मगल कलश कथा	०-३०
(२१)	प्रभु महावीर देव	०-२५
(२२)	नित्यबोध	०-२०
(२३)	बे प्रतिक्रमण सूत्रो	०-५५
(२४)	श्री विविध पूजामृत सग्रह	३-००
(२५)	महात्मा मत्योदर	०-३०
(२६)	श्री लेखामृत संग्रह भा ४	०-७५
(२७)	,, ,, भा. ५	०-७५
(२८)	,, ,, भा. ६	०-७५
(२९)	श्री अमृत गहूंली संग्रह	०-७५
(३०)	श्री जिनेन्द्र पूजा पीयूष	१-००
(३१)	श्री जिनेन्द्र पूजा पीयूष	०-५०
(३२)	तिथिचर्चामा स्पष्टीकरण	०-५०
(३३)	सामायिक चैत्यवंदनादि सूत्रो	०-२०
(३४)	महासती सुलसा	०-०
(३५)	शास्त्रदर्पण[पर्व आराधना अंगे प्रमाणो]	०-४०
(३६)	अक्षय तृतीया [सचित्र]	०-३५
(३७)	कार्तिक पूर्णिमा महिमा	०-२५
(३८)	छन्दोमृतरसः	०-३०
(३९)	समेतशिखर तीर्थवंदना	०-१६
(४०)	नारकी चित्रावली [त्रीजी आवृत्ति]	८-००
(४१)	शत्रुञ्जय-तीर्थवंदना (बीजी आवृति)	०-२०
(४२)	भक्तामर सौरभ (महिमा कथाओ)	१-२५
(४३)	नारकी चित्रावली (हीन्दी)	६-००
(४४)	मनोहर स्वाध्याय सौरभ (उत्तराध्ययन मूल)	१-७५
(४५)	महामंत्र प्रभाव	०-८०
(४६)	श्री नमस्कार पद स्तवना	०-२०
(४७)	वार्ता विहार	१-००
(४८)	सत्कर्म चित्रावली (बीजी आवृति)	प्रेसमां
(४९)	कल्पसूत्र पूजा व्याख्यान (सचित्र)	३-५०
(५०)	पू बापजी म० नो खुलासो	०-२०
(५१)	कुलभूषण (सचित्र कथा)	२-००
(५२)	लक्ष्मी सरस्वती सवाद	०-५०
(५३)	श्री आचारांग मूलं (मोटा टाइप)	१०-००
(५४)	सुनदा रुपसेन	०-५०
(५५)	पारसमणि-(वार्तासग्रह)	१-२५
(५६)	जन्म पत्रिका रजीस्टर (३०० कुंडली माटे)	४-००
(५७)	धनंजय नाममाला	१-७५
(५८)	जिनेन्द्र सगीतमाला	३-५०
(५९)	अनेकार्थ सग्रह सटीक भाग १ लो	१०-००
(६०)	जयशखेश्वरनाथ	१-००
(६१)	चैत्री पूर्णिमानो महामहिमा	०-६०
(६२)	श्रीमदन्तकृद्दशांग श्रीमदनुत्तरोपपातिदशाङ्ग सटीकञ्च	४-००
(६३)	नवस्मरणानि गौतमस्वामिरासश्च	२-००
(६४)	श्रीमत्सूत्रकृताङ्गं मूलम्	१०-००
(६५)	श्रीमदुपासकदशाङ्गं सटीकम्	५-००
(६६)	श्रीमत्स्थानाङ्ग सूत्रं मूलम्	३०-००
(६७)	श्रीमत्समवायांग सूत्रम् ,,	१२-००
(६८)	श्रीआगमसुधासिन्धुः प्रथमविभाग	६०-००

॥ अर्हम् ॥

॥ श्री आचाराङ्ग–सूत्रम् ॥

॥१॥ अथ प्रथमः श्रुतस्कंधः ॥

॥१: शस्त्रपरिज्ञा–अध्ययनं प्रथमोद्देशकः ॥

सुयं मे आउसं ! तेणं (आमुसंतेणं, आवसंतेणं) भगवया एवम-क्खायं–इहमेगेसिं णो सण्णा भवइ ॥सू० १॥ तं जहा–पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, अहोदिसाए वा आगओ अहमंसि, अण्णयरीओ वा दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि, एवमेगेसिं णो णायं भवति ॥सू० २॥ अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ? ॥सू० ३॥ से जं पुण जाणेज्जा सह संमइयाए परवागरणेणं अण्णेसिं अंतिए वा सोच्चा तं जहा–पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि जाव अण्णयरीओ दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि एवमेगेसिं जं णायं भवति–अत्थि मे आया उववाइए, जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ (अणुसंसरइ), सव्वाओ दिसाओ अणुदिसाओ, सोऽहं ॥सू० ४॥ से आयावादी लोयावादी कम्मावादी किरिया-वादी ॥सू० ५॥ अकरिस्सं चऽहं कारवेसुं चऽहं, करओ आवि समणुन्ने भविस्सामि ॥सू० ६॥ एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणि-यव्वा भवंति ॥सू० ७॥ अपरिण्णायकम्मा(म्मे) खलु अयं पुरिसे जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ

अणुदिसाओ साहेति ॥सू० ८॥ अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ (संधावइ), विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ ॥सू० ९॥ तत्थ खलु भगवता परिरणा पवेइया ॥सू० १०॥ इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं ॥सू० ११॥ एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति ॥सू० १२॥ जस्सेते लोगंमि कम्मसमारंभा परिरणाया भवंति, से हु मुणी परिरणायकम्मे त्ति बेमि ॥सू० १३॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥ १-१ ॥

॥ अध्ययनं-१ उद्देशकः २ ॥

अट्टे लोए परिजुराणे दुस्संबोहे अविजाणए, अस्सिं लोए पव्वहिए तत्थ तत्थ पुढो पास आतुरा परितावेंति ॥सू० १४॥ संति पाणा पुढो सिया लज्जमाणा पुढो पास; अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा, जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं पुढवीकम्मसमारंभेणं पुढवीसत्थं समारंभेमाणा अणेगरूवे पाणे विहिंसइ । तत्थ खलु भगवया परिरणा पवेइया, इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं स सयमेव पुढवीसत्थं समारंभइ, अराणेहिं वा पुढविसत्थं समारंभावेइ, अराणे वा पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणइ ॥सू० १५॥ तं से अहियाए तं से अबोहीए से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाय सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति-एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए, इच्चत्थं गढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अराणे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ, से बेमि, अप्पेगे अंधमब्भे अप्पेगे अंधमच्छे अप्पेगे पायमब्भे अप्पेगे पायमच्छे अप्पेगे गुप्फमब्भे अप्पेगे गुप्फमच्छे अप्पेगे जंघमब्भे (२) अप्पेगे जाणुमब्भे (२) अप्पेगे ऊरुमब्भे (२) अप्पेगे कडिमब्भे (२) अप्पेगे णाभिमब्भे (२)अप्पेगे उदरमब्भे (२) अप्पेगे पासमब्भे (२) अप्पेगे पिट्ठिमब्भे (२) अप्पेगे

उरमब्भे (२) अप्पेगे हिययमब्भे (२) अप्पेगे थणमब्भे (२) अप्पेगे खंधमब्भे (२) अप्पेगे बाहुमब्भे (२) अप्पेगे हत्थमब्भे (२) अप्पेगे अंगुलिमब्भे (२) अप्पेगे णहमब्भे (२) अप्पेगे गीवमब्भे (२) अप्पेगे हणुमब्भे (२) अप्पेगे होट्ठमब्भे (२) अप्पेगे दंतमब्भे (२) अप्पेगे जीब्भमब्भे (२) अप्पेगे तालुमब्भे (२) अप्पेगे गलमब्भे (२) अप्पेगे गंडमब्भे (२) अप्पेगे कण्णमब्भे (२) अप्पेगे णासमब्भे (२) अप्पेगे अच्छिमब्भे (२) अप्पेगे भमुहमब्भे (२) अप्पेगे णिडालमब्भे (२) अप्पेगे सीसमब्भे (२) अप्पेगे संपमारए अप्पेगे उद्दवए, इत्थं सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति ॥सू० १६॥ एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाता भवंति, तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं पुढवीसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं पुढविसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, जस्सेते पुढविकम्मसमारंभा परिण्णाता भवंनि, से हु मुणी परिण्णातकम्मे त्ति बेमि ॥सू० १७॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥१-२॥

अध्ययनं-१ उद्देशकः ३

से बेमि जहा अणगारे उज्जुकडे नियायपडिवण्णे (निकायपडिवन्ने) अमायं कुव्वमाणे वियाहिए ॥सू० १८॥ जाए सद्धाए निक्खंतो तमेव अणुपालिज्जा, वियहित्ता विसोत्तियं (विजहित्ता पुव्वसंजोयं) ॥सू० १९॥ पणया वीरा महावीहिं ॥सू० २०॥ लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुओ-भयं ॥सू० २१॥ से बेमि, णेव सयं लोगं अब्भाइक्खिज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खिज्जा, जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ, जे अत्ताणं अब्भाइक्खइसे लोयं अब्भाइक्खइ ॥सू० २२॥ लज्जमाणा पुढो पास; अणगारा मो त्ति एगे पवयमाणा जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदयकम्म-समारंभेणं उदयसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ । तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेदिता । इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणण-

पूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव उदयसत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदयसत्थं समारंभावेति, अण्णे उदयसत्थं समारंभंते समणुजाणति। तं से अहियाए, तं से अबोहीए, से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाय सोच्चा भगवओ अणगाराणं अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए, इच्चत्थं गढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदयकम्मसमारंभेणं उदयसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ। से बेमि संति पाणा उदयनिस्सिया जीवा अणेगे ॥सू० २३॥ इहं च खलु भो ! अणगाराणं उदयजीवा वियाहिया ॥सू० २४॥ सत्थं चेत्थ अणुवीइ पासा, पुढो सत्थं (पासं) पवेइयं ॥सू० २५॥ अदुवा अदिन्नादाणं ॥सू० २६॥ कप्पइ णे कप्पइ णे पाउं, अदुवा विभूसाए ॥सू० २७॥ पुढो सत्थेहिं विउट्टन्ति ॥सू० २८॥ एत्थऽवि तेसिं नो निकरणाए ॥सू० २९॥ एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेए आरंभा अपरिण्णाया भवंति, एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति, तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं उदयसत्थं समारम्भेज्जा, नेवण्णेहिं उदयसत्थं समारंभावेज्जा, उदयसत्थं समारंभंतेऽवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जस्सेते उदयसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णातकम्मे त्ति बेमि ॥सू० ३०॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥१-३॥

॥ अध्ययनं-१ उद्देशकः ४ ॥

से बेमि णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा, जे लोयं अब्भाइक्खइ से अत्ताणं अब्भाइक्खइ जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ से लोयं अब्भाइक्खइ ॥सू० ३१॥ जे दीहलोगसत्थस्स खेयण्णे से असत्थस्स खेयण्णे, जे असत्थस्स खेयण्णे से दीहलोगसत्थस्स खेयण्णे ॥सू० ३२॥ वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं, संजएहिं सया जत्तेहिं सया अप्पमत्तेहिं ॥सू० ३३॥ जे पमत्ते

गुणट्ठीए से हु दंडेत्ति पवुच्चइ ॥सू० ३४॥ तं परिरणाय मेहावी इयाणिं णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ॥सू० ३५॥ लज्जमाणा पुढो पास, अणगारा मोत्ति एगे पवदमाणा जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारम्भेणं अगणिसत्थं समारंभमाणे अणे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति । तत्थ खलु भगवता परिणा पवेदिता, इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव अगणिसत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा अगणिसत्थं समारंभावेइ अण्णे वा अगणिसत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ, तं से अहियाए, तं से अबोहियाए, से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाय सोच्चा भगवओ अणगाराणं इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए, इच्चत्थं गढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारंभमाणे अणे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ ॥सू० ३६॥ से वेमि—संति पाणा पुढवीनिस्सिया, तणणिस्सिया, पत्तणिस्सिया, कट्ठनिस्सिया, गोमयणिस्सिया, कयवरणिस्सिया, संति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति, अगणिं च खलु पुट्ठा एगे संघायमावज्जंति, जे तत्थ संघायमावज्जति ते तत्थ परियावज्जंति जे तत्थ परियावज्जंति ते तत्थ उद्दायंति ॥सू० ३७॥ एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिणाया भवंति, एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिणाया भवंति, तं परिणाय मेहावी णेव सयं अगणिसत्थं समारंभे, नेवऽण्णेहिं अगणिसत्थं समारंभावेज्जा, अगणिसत्थं समारंभमाणे अण्णे न समणुजाणेज्जा, जस्सेते अगणिकम्मसमारंभा परिणाया भवंति, से हु मुणी परिणायकम्मे त्ति वेमि ॥सू० ३८॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ १-४॥

।। अध्ययनं-१ उद्देशकः ५ ।।

तं णो करिस्सामि समुट्ठाए, मत्ता मइमं अभयं विदित्ता, तं जे णो करए एसोवरए, एत्थोवरए, एस अणगारेत्ति पवुच्चइ ।।सू० ३९।। जे गुणे से आवट्टे जे आवट्टे से गुणे ।।सू० ४०।। उड्ढं अहं तिरियं पाइणं पासमाणे रूवाइं पासति, सुणमाणे सद्दाइं सुणेति, उड्ढं अहं पाइणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सेसेसु आवि ।।सू० ४१।। एस लोए वियाहिए एत्थ अगुत्ते अणाणाए ।।सू ४२।। पुणो पुणो गुणासाए, वंकसमायारे ।।सू० ४३।। पमत्तऽगारमावसे ।।सू० ४४।। लज्जमाणा पुढो पास, अणगारा मोत्ति एगे पवदमाणा जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारभमाणा अणेगे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति, तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता, इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाती(जरा)-मरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव वणस्सइसत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइसत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइसत्थं समारंभमाणे समणु-जाणइ, तं से अहियाए, तं से अबोहीए, से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति-एस खलु गंथे, एस खलु मोहे; एस खलु मारे, एस खलु णरये, इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहि वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति ।।सू० ४५।। से बेमि, इमंपि जाइधम्मयं, एयंपि जाइधम्मयं, इमंपि वुड्ढिधम्मयं, एयंपि वुड्ढिधम्मयं, इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमतयं, इमंपि छिण्णं मिलाइ, एयंपि छिण्णं मिलाइ, इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं, इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं, इमंपि असासयं, एयंपि असासयं (इमंपि अधुवं एयंपि अधुवं) इमंपि चओवचइयं, एयंपि चओवचइयं इमंपि विपरिणामधम्मय (नामियं) एयंपि विपरिणामधम्मयं ।।सू० ४६।। एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति,

एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति, तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं वणस्सइसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, जस्सेते वणस्सइसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि ॥सू० ४७॥

॥ इति पंचम उद्देशकः ॥ १-५ ॥

॥ अध्ययनं-१ : उद्देशकः ६ ॥

से बेमि संतिमे तसा पाणा, तं जहा—अंडया पोयया जराउआ रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भियया उववाइया, एस संसारेत्ति पवुच्चइ ॥सू० ४८॥ मंदस्सावियाणओ ॥सू० ४९॥ निज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिनिव्वाणं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं अस्सायं अपरिनिव्वाणं महब्भयं दुक्खं त्ति बेमि, तसंति पाणा पदिसो दिसासु य ॥सू० ५०॥ तत्थ तत्थ पुढो पास, आतुरा परितावेंति, संति पुढो सिया ॥सू० ५१॥ लज्जमाणा पुढो पास, अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकायसमारंभेणं तसकायसत्थं समारंभमाणा अणेगे अणेगरूवे पाणे विहिंसति, तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया, इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव तसकायसत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकायसत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा तसकायसत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ तं से अहियाए, तं से अबोहीए से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाय सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए, इच्चत्थं गढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकायसमारंभेणं तसकायसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥सू० ५२॥ से बेमि अप्पेगे अच्चाए हणंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति, अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहन्ति, एवं हिययाए पित्ताए वसाए

पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए णहाए एहारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए, अप्पेगे हिंसिसु मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ॥सू० ५३॥ एत्थं सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिणाया भवंति, एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिणाया भवंति, तं परिणाय मेहावी णेव सयं तसकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवऽण्णेहिं तसकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवऽण्णे तसकायसत्थं समारभंते समणुजाणेज्जा, जस्सेते तसकायसत्थसमारंभा परिणाया भवंति, से हु मुणी परिणायकम्मे त्ति बेमि ॥सू० ५४॥

॥ इति षष्ठ उद्देशकः ॥ १-६ ॥

॥ अध्ययनं-१ : उद्देशकः ७ ॥

पहू एजस्स (एगस्स) दुगुंछणाए ॥सू० ५५॥ आयंकदंसी अहियंति णच्चा, जे अज्झत्थं जाणइ से बहिआ जाणइ, जे बहिया जाणइ से अज्झत्थं जाणइ, एयं तुलमन्नेसिं ॥सू० ५६॥ इह संतिगया दविया णावकंखंति जीविउं ॥सू० ५७॥ लज्जमाणे पुढो पास, अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अणे अणेगरूवे पाणे विहिंसति। तत्थ खलु भगवया परिणा पवेइया। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव वाउसत्थं समारभति, अण्णेहि वा वाउसत्थं समारभावेइ, अण्णे वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणाति, तं से अहियाए, तं से अबोहिए, से तं संवुज्झमाणे आयाणीए समुट्ठाए सोच्चा भगवओ अणगाराणं अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति–एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए, इच्चत्थं गढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अणे अणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥सू० ५८॥ से बेमि संति संपाइमा पाणा आहच्च संपयंति य फरिसं च खलु पुट्ठा एगे संघायमावज्जंति,

जे तत्थ संघायमावज्जंति ते तत्थ परियावज्जंति, जे तत्थ परियावज्जंति ते तत्थ उद्दायंति, एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति, एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति, तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वाउसत्थं समारंभेज्जा, णेवऽण्णेहिं वाउसत्थं समारंभावेज्जा, णेवऽण्णे वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, जस्सेते वाउसत्थसमारंभ परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मेत्ति बेमि ॥सू० ५९॥ एत्थंपि जाणे उवादीयमाणा, जे आयारे ण रमंति, आरंभमाणा विणयं वयंति, छंदोवणीया अज्झोववण्णा, आरंभसत्ता पकरंति संगं ॥सू० ६०॥ से वसुमं सव्वसमण्णागयपण्णाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मं णो अण्णेसिं तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीवनिकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवऽण्णेहिं छज्जीवनिकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवऽण्णे छज्जीवनिकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, जस्सेते छज्जीवनिकायसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकम्मेत्ति बेमि ॥सू० ६१॥

॥ इति सप्तमोद्देशकः ॥ १-७ ॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥१॥

॥ २ : लोकविजय-अध्ययनं : उद्देशकः-१ ॥

जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे। इति से गुणट्ठी महया परियावेणं पुणो पुणो रसे पमत्ते—माया मे, पिया मे, भाया मे, भगिणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूआ मे, ण्हुसा मे, सहिसयणसंगंथसंथुआ मे, विवित्तुवगरणपरिवट्टणभोयणच्छायणं मे। इच्चत्थं गड्ढिए लोए अहो य राओ य परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठाई संजोगट्ठी अट्ठालोभी आलुंपे सहसाकारे विणिविट्ठचित्ते, एत्थ सत्थे पुणो पुणो, अप्पं च खलु आउयं इहमेगेसिं माणवाणं तं जहा—॥सू० ६२॥ सोयपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, चक्खुपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाणपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं रस-

णपरिरणाणेहिं परिहायमाणेहिं फासपरिरणाणेहिं परिहायमाणेहिं अभिकंतं च खलु वयं संपेहाए तओ से एगदा मूढभावं जणयंति ॥सू० ६३॥ जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वि णं एगदा णियगा पुव्विं परिवयंति सोऽवि ते णियए पच्छा परिवएज्जा, णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरण ए वा, से ण हासाय ण किड्डाए ण रतीए ण विभूसाए ॥सू० ६४॥ इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए अंतरं च खलु इमं संपेहाए धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए वओ अच्चेति जोव्वणं व ॥सू० ६५॥ जीविए इह जे पमत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवित्ता उत्तासइत्ता, अकडं करिस्सामित्ति मराणमाणे, जेहिं वा सद्धिं संवसइ ते वा णं एगया नियगा तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसिज्जा, नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा ॥सू० ६६॥ उवाइयसेसेण या संनिहिसंनिचओ किज्जइ, इहमेगेसिं असंजयाण भोयणाए, तओ से एयगा रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति, जेहिं वा सद्धिं संवसइ ते वा णं एयगा नियगा तं पुव्विं परिहरति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरिज्जा, नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा ॥सू० ६७॥ जाणित्तु दुक्खं पत्तेअं सायं ॥सू० ६८॥ अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए ॥सू० ६९॥ खणं जाणाहि पंडिए ॥सू० ७०॥ जाव सोयपरिणाणा अपरिहीणा, नेत्तपरिणाणा अपरिहीणा, घाणपरिणाणा अपरिहीणा, जीहपरिणाणा अपरिहीणा, फरिसपरिणाणा अपरिहीणा। इच्चेएहिं विरूवरूवेहिं पराणेहिं अपरिहीणेहिं, आयट्ठं संमं समणुवासिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ७१॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥२-१॥

॥ अध्ययनं–२ : उद्देशकः–२ ॥

अरइं अउट्टे स मेहावी, खणंसि मुक्के ॥सू० ७२॥ अणाणाय पुट्ठावि एगे नियट्टंति, मंदा मोहेण पाउडा, अपरिग्गहा भविस्सामो समुट्ठाय लद्धे कामे अभिगाहइ, अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति, इत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ना नो हव्वाए नो पाराए ॥सू० ७३॥ विमुत्ता हु ते जणा जे जणा पारगामिणो लोभमलोभेण दुगुंछमाणे लद्धे कामे नाभिगाहइ ॥सू० ७४॥ विणावि लोभं निक्खम्म एस अकम्मे जाणइ पासइ पडिलेहाए नावकंखइ, एस अणगारित्ति पवुच्चइ, अहो य राओ परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठाई संजोगट्ठी अट्ठालोभी आलुंपे सहकारे विणिविट्ठचित्ते, इत्थ सत्थे पुणो पुणो से आयबले, से नाइबले, से सयणबले, से मित्तबले, से पिच्चबले, से देवबले, से रायबले, से चोरबले, से अतिहिबले, से किविणबले, से समणबले इच्चेएहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहि दंडसमायाणं संपेहाए भया कज्जइ, पावमुक्खुत्ति मन्नमाणे अदुवा आसंसाए ॥सू० ७५॥ तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं एएहि कज्जेहिं दंडं समारंभिज्जा, णेव अन्नं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभाविज्जा, एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतंपि अन्नं न समणुजाणिज्जा, एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, जहेत्थ कुसले नोवलिंपिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ७६॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥ २–२ ॥

॥ अध्ययनं–२ उद्देशकः–३ ॥

से असइं उच्चागोए असइं नीआगोए, नो हीणे नो अइरित्ते (एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइ उच्चागोए असइ नीआगोए, कंडगट्ठयाए नो हीणे नो अइरित्ते) नोऽपीहए, इय संखाय को गोयावाइ को माणावाइ? कंसि वा एगे गिज्झा, तम्हा नो हरिसे नो कुप्पे, भूएहिं जाण पडिलेह सायं ॥सू० ७७॥ समिए एयाणुपस्सी (पुरिसे णं खलु दुक्खुव्वेअसुहेसए)

तं जहा, अन्धत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुंटत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सवलत्तं सह पमाएणं अणेगरूवाओ जोणीओ संधायइ विरूवरूवे फासे परिसंवेयइ ॥सू० ७८॥ से अबुज्झमाणे हओवहए जाइमरणं अणुपरियट्टमाणे, जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं खित्तवत्थुममायमाणाणं, आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ परिगिज्झति तत्थेव रत्ता, न इत्थ तवो वा दमो वा नियमो वा दिस्सइ, संपुण्णं बाले जीविउकामे लालप्पमाणे मूढे विप्परियासमुवेइ ॥सू० ७९॥ इणमेव नावकंखंति, जे जणा धुवचारिणो। जाइमरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दढे, नत्थि कालस्स णागमो, सव्वे पाणा पियाउया (पियायया) सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं, तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजिया णं संसिंचिया णं तिविहेण जाऽवि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुया वा, से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोअणाए, तओ से एगया विविहं परिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दायाया वा विभयन्ति, अदत्तहारो वा से अवहरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारदाहेण वा से डज्झइ इय, से परस्सऽट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण संमूढे विप्परियासमुवेइ, मुणिणा हु एयं पवेइयं, अणोहंतरा एए नो य ओहं तरित्तए, अतीरंगमा एए नो य तीरं गमित्तए, अपारंगमा एए नो य पारं गमित्तए, आयाणिज्जं च आयाय तंमि ठाणे न चिट्ठइ, वितहं पप्पऽखेयन्ने तंमि ठाणंमि चिट्ठइ ॥सू० ८०॥ उद्देसो पासगस्स नत्थि, बाले पुण निहे कामसमणुन्ने असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ त्ति बेमि ॥सू० ८१॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ २-३ ॥

॥ अध्ययनं-२ उद्देशकः-४ ॥

तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति, जेहिं वा सद्धिं संवसइ ते व णं एगया नियया पुव्विं परिवयंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिवइज्जा, नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा, जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं, भोगा मे व अणुसोयन्ति इहमेगेसिं माणवाणं ॥सू० ८२॥ तिविहेण जाऽवि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोयणाए, तओ से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो वा से हरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारदाहेण वा से डज्झइ इय, से परस्स अट्ठाए कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेइ ॥सू० ८३॥ आसं च छन्दं च विगिंच धीरे !, तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु जेण सिया तेण नो सिया, इणमेव नावबुज्झंति जे जणा मोहपाउडा, थीभि लोए पव्वहिए, ते भो ! वयंति एयाइं आययणाइं से दुक्खाए मोहाए माराए नरगाए नरगतिरिक्खाए, सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ, उआहु वीरे, अप्पमाओ महामोहे, अलं कुसलस्स पमाएणं, संतिमरणं संपेहाए भेउरधम्मं संपेहाए नालं पास अलं ते एएहिं ॥सू० ८४॥ एयं पस्स मुणी ! महब्भयं, नाइवाइज्ज कंचणं एस वीरे पसंसिए जे न निव्विज्जइ आयाणाए, न मे देइ न कुप्पिज्जा थोवं लद्धुं न खिंसए, पडिसेहिओ (पडिलाभिओ) परिणमिज्जा, एयं मोणं समणुवासिज्जासि त्ति बेमि॥सू० ८५॥

॥ इति चतुर्थोद्देशकः ॥ २-४ ॥

॥ अध्ययनं-२ उद्देशकः-५ ॥

जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति, तं जहा अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं, नाइणं, धाइणं, राइणं, दासाणं,

दासीणं, कम्मकराणं, कम्मकरीणं आएसाए पुढोपहेणाए, सामासाए, पायरासाए, संनिहिसंनिचओ कज्जइ, इहमेगेसि माणवाणं भोयणाए ॥सू० ८६॥ समुट्ठिए अणगारे आरिए आरियपन्ने आरियदंसी अयंसंधित्ति अदक्खु, से नाइए नाइयावए न समणुजाणइ, सव्वामगंधं परिन्नाय निरामगंधो परिव्वए ॥सू० ८७॥ अदिस्समाणे कयविक्कयेसु, से ण किणे, न किणावए, किणंतं न समणुजाणइ, से भिक्खू कालन्ने, बालन्ने, मायन्ने, खेयन्ने, खणयन्ने, विणयन्ने स-समय-पर-समयन्ने, भावन्ने, परिग्गहं अममायमाणे कालाणुट्ठाइ अपडिन्नो ॥सू० ८८॥ दुहओ छेत्ता नियाइ, वत्थं, पडिग्गहं, कंबलं, पायपुंछणं, उग्गहणं च कडासणं एएसु चेव जाणिज्जा ॥सू० ८९॥ लद्धे आहारे अणगारो मायं जाणि(ए)ज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं, लाभुत्ति न मज्जिज्जा, अलाभुत्ति न सोइज्जा, बहुंपि लद्धुं न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्जा ॥सू० ९०॥ अन्नहा णं पासए परिहरिज्जा, एस मग्गे आयरिएहि पवेइए, जहित्थ कुसले नोवलिंपिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ९१॥ कामा दुरतिक्कमा, जीवियं दुप्पडिवूहगं, कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिप्पइ परितप्पइ ॥सू० ९२॥ आययचक्खू लोगविपस्सी लोगस्स अहो भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ, गढिए लोए अणुपरियट्टमाणे, संधि विइत्ता इह मच्चिएहि, एस वीरे पसंसिए जे बद्धे पडिमोयए, जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहि तहा अंतो, अंतो अंतो पुइदेहंतराणि पासइ, पुढोवि सवंताइं पंडिए पडिलेहाए ॥सू० ९३॥ से मइमं परिन्नाय मा य हु लालं पच्चासी, मा तेसु तिरिच्छमप्पाण-मावायए, कासंकासे खलु अयं पुरिसे, बहुमाई कडेण मूढे, पुणो तं करेइ लोहं, वेरं वड्ढेइ अप्पणो, जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स चेव पडिवूहणयाए, अमरा य महासड्ढी अट्टमेयं तु पेहाए अपरिणाए कंदइ ॥सू० ९४॥ से तं जाणह जमहं बेमि, तेइच्छं पंडिए पवयमाणे से हंता छित्ता भित्ता

लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता, अकडं करिस्सामित्ति मन्नमाणे, जस्सवि य णं करेइ, अलं बालस्स संगेणं, जे वा से कारइ बाले, न एवं अणगारस्स जायइ त्ति बेमि ॥सू० ९५॥

॥ इति पंचमोद्देशकः ॥ २–५ ॥

॥ अध्ययनं–२ उद्देशकः–६ ॥

से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाय तम्हा पावकम्मं नेव कुज्जा, न कारवेज्जा ॥सू० ९६॥ सिया तत्थ एगयरं विप्परामुसइ छसु अन्नयरंमि, कप्पइ सुहट्ठी लालप्पमाणे, सएण दुक्खेण मुढे विप्परियासमुवेइ, सएण विप्पमाएण पुढो वयं पकुव्वइ, जंसिमे पाणा पव्वहिया, पडिलेहाए नो निकरणयाए, एस परिन्ना पवुच्चइ, कम्मोवसंती ॥सू० ९७॥ जे ममाइयमइं जहाइ से चयइ माइयं, से हु दिट्ठपहे मुणी जस्स नत्थि ममाइयं, तं परिन्नाय मेहावी विइत्ता लोगं वंता लोगसन्नं से मइमं परिक्कमिज्जासि त्ति बेमि ॥ नारइं सहइ वीरे वीरे न सहइ रतिं ॥ जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे न रज्जइ ॥१॥ सू० ९८॥ सद्दे फासे अहियासमाणे, निव्विंद नंदिं इह जीवियस्स । मुणी मोणं समायाय, धुणे कम्मसरीरगं ॥२॥ पंतं लुहं सेवंति, वीरा संमत्तदंसिणो । एस ओहंतरे मुणी, तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए ॥३॥ त्ति बेमि ॥सू० ९९॥ दुव्वसुमुणी अणाणाए, तुच्छए गिलाइ वत्तए, एस वीरे पसंसिए, अच्चेइ लोयसंजोगं, एस नाए पवुच्चइ ॥सू० १००॥ जं दुक्खं पवेइयं इह माणवाणं तस्स दुक्खस्स कुसला परिन्न-मुदाहरंति, इह कम्मं परिन्नाय सव्वसो जे अणन्नदंसी से अणन्नारामे, जे अणणणारामे से अणन्नदंसी, जहा पुण्णस्स कत्थइ तहा तुच्छस्स कत्थइ, जहा तुच्छस्स कत्थइ तहा पुण्णस्स कत्थइ ॥सू० १०१॥ अवि य हणे, अणाइयमाणे, इत्थंपि जाण सेयंति नत्थि केयं पुरिसे कं च नए ! एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, से सव्वओ

सव्वपरिन्नाचारी, न लिप्पइ छणपएण, वीरे, से मेहावि अणुग्घायणखेयन्ने जे य बन्धपमुक्खमन्नेसी कुसले पुण नो बद्धे नो मुक्के ॥सू० १०२॥ से जं च आरंभे जं च नारभे, अणारद्धं च न आरभे, छणं छणं परिणाय लोगसन्नं च न सव्वसो ॥सू० १०३॥ उद्देसो पासगस्स नत्थि, बाले पुणो निहे कामसमणुन्ने, असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ त्ति बेमि ॥सू० १०४॥

॥ इति षष्ठोद्देशकः ॥ २-६ ॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥२॥

॥ ३ : शीतोष्णीयाध्ययनं-३ उद्देशकः-१ ॥

सुत्ता अमुणी सया मुणिणो जागरंति ॥सू० १०५॥ लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं, समयं लोगस्स जाणित्ता, इत्थ सत्थोवरए, जस्सिमे सद्दा य रूवा य रसा य गंधा य फासा य अभिसमन्नागया भवंति ॥सू० १०६॥ से आयवं नाणवं वेयवं धंमवं बंभवं पन्नाणेहिं परियाणइ लोयं, मुणीति वुच्चे, धम्मविऊ उज्जू, आवट्टसोए संगमभिजाणइ ॥सू० १०७॥ सीउसिणच्चाई से निग्गंथे अरइरइसहे, फरुसयं नो वेएइ, जागरे वेरोवरए वीरे एवं दुक्खा पमुक्खसि, जरामच्चुवसोवणिए नरे सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ ॥सू० १०८॥ पासिय आउरपाणे अप्पमत्तो, परिव्वए मंता य मइमं; पास आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा, माइ पमाइ पुण एइ गब्भं, उवेहमाणो सद्दरूवेसु उज्जू माराभिसंकी मरणा पमुच्चइ, अप्पमत्तो कामेहिं, उवरओ पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते खेयन्ने, जे पज्जवजायसत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे जे असत्थस्स खेयण्णे से पज्जवजायसत्थस्स खेयण्णे; अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ, कम्मुणा उवाही जायइ; कम्मं च पडिलेहाए ॥सू० १०९॥ कम्ममूलं च जं छणं, पडिलेहिय सव्वं सामायाय दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो तं परिन्नाय मेहावी विइत्ता लोगं वंता लोगसन्नं से मइमं परिक्कमिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ११०॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥३-१॥

॥ अध्ययनं-३ :: उद्देशकः-२ ॥

जाइं च वुड्ढिं च इहऽज्ज ! पासे, भूएहिं जाणे पडिलेहसायं ॥ तम्हाऽतिविज्जे परमंति णच्चा, संमत्तदंसी न करेइ पावं ॥१॥ उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ॥ कामेसु गिद्धा निचयं करंति, संसिच्चमाणा पुणरिंति गब्भं ॥२॥ अवि से हासमासज्ज, हंता नंदीति मन्नइ ॥ अलं बालस्स संगेणं, वेरं वड्ढेइ अप्पणो ॥३॥ तम्हातिविज्जो परमंति णच्चा, आयंकदंसी न करेइ पावं ॥ अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिच्छिंदिया णं निक्कम्मदंसी ॥४॥ एस मरणा पमुच्चइ, से हु दिट्ठभए मुणी, लोगंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिए सहिए सयाजए कालकंखी परिवए, बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं ॥सू० १११॥ सच्चंमि धिइं कुव्वहा, एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं जोसइ ॥सू० ११२॥ अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरित्तए, से अण्णवहाए अण्णपरियावाए अण्णपरिग्गहाए, जणवयवहाए जणवयपरियावाए जणवयपरिग्गहाए ॥सू० ११३॥ आसेवित्ता एतं(वं) अट्ठं इच्चेवेगे समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं नो सेवे, निस्सारं पासिय नाणी, उववायं चवणं णच्चा अणण्णं चर माहणे से न छणे न छणावए छणंतं नाणुजाणइ, निव्विंद नंदिं, अरए पयासु, अणोमदंसी निसण्णे पावेहिं कम्मेहिं ॥सू० ११४॥ कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे निरयं महंतं ॥ तम्हा य(हि) वीरे विरए वहाओ, छिंदिज्ज सोयं लहुभूयगामी ॥१॥ गंथं परिण्णाय इहऽज्ज ! धीरे, सोयं परिण्णाय चरिज्ज दंते ॥ उम्मज्ज लद्धुं इह माणवेहिं, नो पाणिणं पाणे समारभिज्जासि ॥२॥ त्ति बेमि ॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥ ३-२ ॥

॥ अध्ययनं-३ :: उद्देशकः-३ ॥

संधिं लोयस्स जाणित्ता, आयओ बहिया पास, तम्हा न हंता, न वि घायए, जमिणं अन्नमन्नवितिगिच्छाए पडिलेहाए न करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया ? ।।सू० ११५।। समयं तत्थुवेहाए अप्पाणं विप्पसायए– अणन्नपरमं नाणी, नोपमाए कयाइ वि । आयगुत्ते सया वीरे, जायामायाइ जावए ।।१।। विरागं रूवेहिं गच्छिज्जा महया खुड्डएहि य, आगइं गइं परिण्णाय दोहिवि अंतेहिं अदिस्समाणेहि से न छिज्जइ, न भिज्जइ, न डज्झइ, न हंमइ कंचणं सव्वलोए ।।सू० ११६।। अवरेण पुव्विं न सरंति एगे, किमस्स तीयं किं वाऽऽगमिस्सं । भासंति एगे इह माणवाओ, जमस्स तीयं तमागमिस्सं ।।१।। (अवरेणपुव्विं किह से अतीतं, किह आगमिस्सं न सरंति एगे । आसंति एगे इह माणवाओ, नह से अईयं तह आगमिस्सं ।।१।।) नाईयमट्ठं न य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छन्ति तहागयाउ । विहुयकप्पे एयाणुपस्सी, निज्झोसइत्ता खवगे महेसी ।।२।। का अरइ के आणंदे ?, इत्थंपि अग्गहे चरे, सव्वं हासं परिच्चज्ज आलीणगुत्तो परिव्वए, पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ? ।।सू० ११७।। जं जाणिज्जा उच्चालइयं तं जाणिज्जा दूरालइयं, जं जाणिज्जा दूरालइयं तं जाणिज्जा उच्चालइयं, पुरिसा ! अत्ताणमेवं अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमुच्चसि, पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि, सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ, सहिओ धम्ममायाय सेयं समणुपस्सइ ।।सू० ११८।। दुहओ जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जंसि एगे पमायंति ।।सू० ११९।। सहिओ दुक्खमत्ताए पुट्ठो नो झंझाए, पासिमं दविए लोकालोकपवंचाओ मुच्चइ त्ति बेमि ।।सू० १२०।।

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ ३-३ ॥

॥ अध्ययनं-३ :: उद्देशकः-४ ॥

से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च, एयं पासगस्स दंसणं, उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स, आयाणं सगडब्भि ॥सू० १२१॥ जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ. जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ ॥सू० १२२॥ सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अपमत्तस्स नत्थि भयं, जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं नामे से एगं नामे; दुक्खं लोगस्स जाणित्ता वंता लोगस्स संजोगं जंति धीरा महाजाणं, परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥सू० १२३॥ एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढोवि, सड्ढी आणाए मेहावी लोगं च आणाए अभिसमिच्चा अकुओभयं, अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं ॥सू० १२४॥ जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से मायादंसी, जे मायादंसी से लोभदंसी, जे लोभदंसी से पिज्जदंसी, जे पिज्जदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मोहदंसी, जे मोहदंसी से गब्भदंसी, जे गब्भदंसी से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से नरय दंसी, जे नरयदंसी से तिरियदंसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदंसी । से मेहावी अभिणिवट्टिज्जा, कोहं च माणं च मायं च लोभं च पिज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च, एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स, आयाणं निसिद्धा सगडब्भि, किमत्थि ओवाही पासगस्स ? न विज्जइ ? नत्थि त्ति बेमि ॥सू० १२५॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ ३-४ ॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ ३ ॥

॥ ४ : सम्यक्त्वाध्ययनं-४ :: उद्देशकः-१ ॥

से बेमि जे अईया, जे य पडुपन्ना, आगमिस्सा अरहंता भगवंतो, ते सव्वे एवमाइक्खन्ति, एवं भासंति, एवं पराणविंति, एवं परूविंति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हंतव्वा, न अज्जावेयव्वा, न परिघि-

त्तव्वा, न परियावेयव्वा, न उद्दवेयव्वा, एस धम्मे शुद्धे निइए सासिए समिच्च लोयं खेयण्णेहिं पवेइए, तं जहा–उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा, उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा, उवरयदंडेसु वा, अणुवरयदंडेसु वा, सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा, संजोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा, तच्चं चेयं तहा चेयं अस्सिं चेयं पवुच्चइ ॥सू० १२६॥ तं आइत्तु न निहे न निक्खिवे जाणित्तु धम्मं जहा तहा दिट्ठेहिं निव्वेयं गच्छिज्जा, नो लोगस्सेसणं चरे ॥सू० १२७॥ जस्स नत्थि इमा जाइ अण्णा तस्स कओ सिया?, दिट्ठं सुयं मयं विण्णायं जं एयं परिकहिज्जइ, समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जाइं पकप्पंति ॥सू० १२८॥ अहो अ राओ य जयमाणे धीरे सया आगयपण्णाणे पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परिक्कमिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १२९॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥ ४-१ ॥

॥ अध्ययनं-४ :: उद्देशकः--२ ॥

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा, जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा, एए पए संबुज्झमाणे लोयं च आणाए अभिसमिच्चा पुढो पवेइयं ॥सू० १३०॥ आघाइ नाणी इह माणवाणं संसारपडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं (आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तं जहा संसारपडिवन्नाणं माणुसभवत्थाणं आरंभविणईणं दुक्खुव्वेअसुहेसगाणं धम्मसवणगवेसयाणं सुस्सुसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं) विन्नाणपत्ताणं, अट्टावि संता अदुवा पमत्ता अहा सच्चमिणं तिबेमि, नाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि, इच्छा पणीया वंका निकेया कालगहिया निचयनिविट्ठा पुढो पुढो जाइं पकप्पयंति (एत्थ मोहे पुणो पुणो) ॥सू० १३१॥ इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ अहोववाइए फासे पडिसंवेयंति, चिट्ठं कम्मेहि कूरेहिं चिट्ठं परिचिट्ठइ, अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहि नो चिट्ठं परिचिट्ठइ, एगे वयंति अदुवावि नाणी, नाणी वयंति अदुवावि एगे ॥सू० १३२॥ आवंती

केयावंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो विवायं वयंति, से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ सुपडिलेहियं च णे-सव्वे पाणा, सव्वे जीवा, सव्वे भूया, सव्वे सत्ता, हन्तव्वा अज्जावेयव्वा, परियावेयव्वा, परिघेत्तव्वा, उद्दवेयव्वा, इत्थ वि जाणह नत्थित्थ दोसो अणारिय वयणमेयं; तत्थ जे आरिया ते एवं वयासी-से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुम्मयं च भे, दुविण्णायं च भे, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ दुप्पडिलेहियं च भे, जं णं तुब्भे एवं आइक्खह, एवं भासह, एवं परूवेह, एवं पण्णवेह-सव्वे पाणा (४) हंतव्वा (५), इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो, अणारिय-वयणमेयं, वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं पण्णवेमो-सव्वे पाणा (४) न हंतव्वा १ न अज्जावेयव्वा २ न परिघित्तव्वा ३ न परियावेयव्वा ४ न उद्दवेयव्वा ५, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो आयरियवयणमेयं पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं पत्तेयं पुच्छिस्सामि, हं भो पावाइया (पावाउया)? किं भे सायं दुक्खं उयाहु असायं? समिया पडिवण्णे यावि एवं बूया-सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं; सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिनिव्वाणं महब्भयं दुक्खं त्ति बेमि ॥सू० १३३॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥४-२॥

॥ अध्ययनं-४ :: उद्देशकः-३ ॥

उवेहि णं बहिया य लोगं, से सव्वलोगंमि जे केइ विण्णू, अणुवीइ पास निक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति, नरा मुयच्चा धम्मविउत्ति अंजू, आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा, एवमाहु संमत्तदंसिणो, ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति इय कम्मं परिण्णाय सव्वसो ॥सू० १३४॥ इह आणाकंखी पंडिए अणिहे, एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरं, कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं-जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थइ। एवं अत्तसमाहिए अणिहे, विगिंच कोहं अविकंपमाणो

॥सू० १३५॥ इमं निरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्खं च जाण अदु आगमेस्सं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पास विफंदमाणं, जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया, तम्हा अतिविज्जो नो पडिसंजलिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १३६॥

॥ इति तृतीय उद्देशकः ॥ ४--३ ॥

॥ अध्ययनं-४ :: उद्देशकः-४ ॥

आवीलए पवीलए निप्पीलए जहित्ता पुव्वसंजोगं हिच्चा उवसमं, तम्हा अविमणे वीरे, सारए समिए सहिए सया जए, दुरणुचरो मग्गो वीराणं अनियट्टगामीणं, विगिंच मंससोणियं, एस पुरिसे दविए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए, जे धुणाइ समुस्सयं वसित्ता बंभचेरंसि ॥सू० १३७॥ नित्तेहिं पलिच्छिन्नेहिं आयाणसोयगढिए बाले, अव्वोच्छिन्नबंधणे अण-भिक्कंतसंजोए तमंसि अवियाणओ आणाए लंभो नत्थि त्ति बेमि ॥सू० १३८॥ जस्स नत्थि पुरा पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया ?, से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए संमत्तेयंति पासह, जेण बंधं वहं घोरं परितावं च दारुणं पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, निक्कंमदंसी इह मच्चिएहिं, कम्माणं सफलं दट्ठुण तओ निज्जाइ वेयवी ॥सू० १३९॥ जे खलु भो ! वीरा ते समिया सहिया सया जया संघडदंसिणो आओवरया अहातहं लोयं उवेह-माणा पाइणं पडिणं दाहिणं उइणं इय सच्चंसि परि(चिए)चिट्ठिसु, साहिस्सामो नाणं वीराणं समियाणं सहियाणं सयाजयाणं संघडदंसीणं आओवरयाणं अहातहं लोयं समुवेहमाणाणं किमत्थि उवाही ?, पासगस्स न विज्जइ नत्थि त्ति बेमि ॥सू० १४०॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ ४--४ ॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ ४ ॥

॥५॥ लोकसाराध्ययनं-५ :: उद्देशकः-१ ॥

आवंती केयावंती लोयंसि विप्परामुसंति अट्ठाए अणट्ठाए, एएसु चेव विप्परामुसंति, (जावंति केइ लोए छकायवहं समारभंति अट्ठाए अणट्ठाए) गुरु से कामा, तओ से मारंते, जओ से मारंते तओ से दूरे, नेव से अंतो नेव दूरे ॥सू० १४१॥ से पासइ फुसियमिव कुसग्गे पणुन्नं निवइयं वाएरियं एवं बालस्स जीवियं मंदस्स अवियाणओ, कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे, तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेइ, मोहेण गब्भं मरणाइ एइ, एत्थ मोहे पुणो पुणो ॥सू० १४२॥ संसयं परिआणओ संसारे परिन्नाए भवइ, संसयं अपरियाणओ संसारे अपरिन्नाए भवइ ॥सू० १४३॥ जे छेए से सागारियं न सेवइ, कट्टु एवमविआणओ बिइआ मंदस्स बालया, (जे खलु विसए सेवइ, सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अहवा तं परं सएण वा दोसेण पाविट्ठयरेण वा दोसेण उवलिंपिज्जति) लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाय त्ति बेमि ॥सू० १४४॥ पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे, इत्थ फासे पुणो पुणो, (एत्थ मोहे पुणो पुणो) आवंती केयावंती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी, इत्थवि बाले परिपच्चमाणे रमइ पावेहिं कम्मेहिं असरणे सरणंति मन्नमाणे, इहमेगेसिं एगचरिया भवइ, से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुरए बहुनडे बहुसढे बहुसंकप्पे आसवसत्ती पलिउच्छन्ने उट्ठियवायं पवयमाणे, मा मे केइ अदक्खू अन्नायपमायदोसेणं, सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ, अट्टा पया माणव ! कंमकोविया जे अणुवरया अविज्जाए पलिमुक्खमाहु आवट्टमेव अणुपरियट्टंति त्ति बेमि ॥सू० १४५॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥ ५-१ ॥

॥ अध्ययनं-५ :: उद्देशकः-२ ॥

आवन्ती केयावन्ती लोए अणारंभजीविणो तेसु, एत्थोवरए तं झोसमाणो, अयं संधीति अदक्खू, जे इमस्स विग्गहस्स अयं खणो त्ति अन्नेसी एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, उट्ठिए नो पमायए, जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं, पुढोछंदा इह माणवा पुढो दुक्खं पवेइयं, से अविहिंसमाणो अणवयमाणो, पुट्ठो फासे विपणुन्नए ॥सू० १४६॥ एस समिया परियाए वियाहिए, जे असत्ता पावेहि कम्मेहिं उदाहु ते आयंका फुसंति, इति उदाहु धीरे ते फासे पुट्ठो अहियासइ, से पुव्विंपेयं पच्छापेयं भेउरधम्मं, विद्धंसणधम्ममधुवं, अणिइयं, असासयं चयावचइयं, विप्परिणामधम्मं, पासह चेयं रूवसंधिं ॥सू० १४७॥ समुप्पेहमाणस्स इकायणरयस्स इह विप्पमुक्कस्स नत्थि मग्गे विरयस्स त्ति बेमि ॥सू० १४८॥ आवंती केयावंती लोगंसि परिग्गहावंती, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा एएसु चेव परिग्गहावंती, एतदेव एगेसि महब्भयं भवइ, लोगवित्तं च णं उवेहाए, एए संगे अवियाणओ ॥सू० १४९॥ से सुपडिबद्धं सूवणीयंति नच्चा पुरिसा परमचक्खू विपरिक्कमा, एएसु चेव बंभचेरं त्ति बेमि, से सुयं च मे, अज्झत्थयं च मे, बंधपमुक्खो अज्झत्थेव, इत्थ विरए अणगारे दीहरायं तितिक्खए, पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्तो परिव्वए, एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १५०॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥ ५--२ ॥

॥ अध्ययनं-५ :: उद्देशकः-३ ॥

आवंती केयावंती लोयंसि अपरिग्गहावंती, एएसु चेव अपरिग्गहावंती, सुच्चा वइ मेहावी पंडियाण निसामिया समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए जहित्थ मए संधी झोसिए, एवमन्नत्थ संधी दुज्जोसए भवइ, तम्हा बेमि नो निहणिज्ज वीरियं ॥सू० १५१॥ जे पुव्वुट्ठाइ नो पच्छानिवाइ,

जे पुव्वुट्ठाइ पच्छानिवाइ जे नो पुव्वुट्ठायी नो पच्छानिवाइ, सेऽवि तारिसिए सिया, जे परिन्नाय लोगमन्नेसयंति ॥सू० १५२॥ एयं नियाय मुणिणा पवेइयं, इह आणाकंखी पंडिए अणिहे, पुव्वावररायं जयमाणे, सया सीलं सुपेहाए सुणिया भवे अकामे अझंझे, इमेण चेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ ? ॥सू० १५३॥ जुद्धारिहं खलु दुल्लहं, जहित्थ कुसलेहिं परिन्नाविवेगे भासिए, चुए हु बाले गब्भाइसु रज्जइ (रिज्जइ) अस्सिं चेयं पवुच्चइ, रूवंसि वा, छणंसि वा से हु एगे संविद्धपहे (संवद्धिभये-संचिट्ठपहे) मुणी, अन्नहा लोगमुवेहमाणे, इय कम्म परिण्णाय सव्वसो से न हिंसइ, संजमइ नो पगब्भइ, उवेहमाणो पत्तेय सायं, वण्णाएसी नारंभे कंचणं सव्वलोए एगप्पमुहे विदिसप्पइन्ने निव्विण्णचारी अरए पयासु ॥सू० १५४॥ से वसुमं सव्वसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावकम्मं तं नो अन्नेसी, जं संमंति पासहा तं मोणंति पासहा, जं मोणंति पासहा तं संमंति पासहा, न इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं, मुणी मोणं समायाए धुणे सरीरगं पंतं लुहं सेवंति वीरा सम्मत्तदंसिणो, एस ओहन्तरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि ॥सू० १५५॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ ५-३ ॥

॥ अध्ययनं-५ :: उद्देशकः-४ ॥

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ अवियत्तस्स भिक्खुणो ॥सू० १५६॥ वयसावि एगे बुइया कुप्पंति माणवा, उन्नयमाणे य नरे महया, मोहेण मुज्झइ, संबाहा बहवे भुज्जो (२) दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं, तद्दिट्ठिए तम्मुत्तिए तप्पुरकारे तस्सन्नी तन्निवेसणे, जयं विहारी चित्तनिवाइ पंथनिज्झाइ पलिबाहिरे, पासिय पाणे गच्छिज्जा ॥सू० १५७॥ से अभिक्कममाणे, पडिक्कममाणे

संकुचमाणे पसारेमाणे विणिवट्टमाणे संपलिज्जमाणे, एगया गुणसमियस्स रीयओ कायसंकासं समणुचिन्ना एगतिया पाणा उद्दायंति, इहलोग वेयणविज्जावडियं, जं आउट्टिकयं कम्मं तं परिन्नाय विवेगमेइ, एवं से अप्पमाएण विवेगं किट्टइ वेयवी ॥सू० १५८॥ से पभूयदंसी पभूयपरिन्नाणे उवसंते समिए सहिए सयाजए, दट्ठुं विप्पडिवेएइ अप्पाणं किमेस जणो करिस्सइ ? एस से परमारामो जाओ लोगंमि इत्थीओ, मुणिणा हु एयं पवेइयं, उव्वाहिज्जमाणे, गामधम्मेहिं अवि निब्बलासए अवि ओमोयरियं कुज्जा, अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा, अवि गामाणुगामं दूइज्जिज्जा, अवि आहारं वुच्छिंदिज्जा, अवि चए इत्थीसु मणं, पुव्वं दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा, इच्चेए कलहासंगकरा भवंति, पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्तिबेमि, से नो काहिए नो पासणिए नो संपसारणिए नो मामए णो कयकिरिए वइगुत्ते अज्झप्पसंवुडे परिवज्जइ सया पावं एयं मोणं समणुवासिज्जासि त्तिबेमि ॥सू० १५९॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ ५-४ ॥

॥ अध्ययनं-५ :: उद्देशकः-५ ॥

से बेमि तं जहा-अवि हरए पडिपुण्णे समंसि भोमे चिट्ठइ उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठइ सोयमज्झगए से पास सव्वओ गुत्ते, पास लोए महेसिणो जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरम्भोवरया सम्ममेयंति पासह, कालस्स कंखाए परिव्वयंति त्ति बेमि ॥सू० १६०॥ वितिगिच्छसमावन्नेणं अप्पाणेणं नो लहइ समाहिं, सिया वेगे अणुगच्छंति असिता वेगे अनुगच्छंति अणुगच्छमाणेहिं अणणुगच्छमाणे कहं न निव्विज्जे ? ॥सू० १६१॥ तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहि पवेइयं ॥सू० १६२॥ सड्ढिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स समियंति मन्नमाणस्स एगया समिया होइ १, समियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ २, असमियंति मन्नमाणस्स एगया समिया

होइ ३, असमियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ ४, समियंति मन्नमाणस्स समिया वा असमिया वा समिआ होइ उवेहाए ५, असमियंति मन्नमाणस्स समिया वा असमिया वा असमिया होइ उवेहाए ६, उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया—उवेहाहि समियाए, इच्चेवं तत्थ संधी झोसिओ भवइ, से उट्ठियस्स ठियस्स गइं समणुपासह, इत्थवि बालभावे अप्पाणं नो उवदंसिज्जा ॥सू० १६३॥ तुमंसि नाम सच्चेव जं हंतव्वंति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं अज्जावेयव्वंति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं परियावेयव्वंति मन्नसि, एवं जं परिघित्तव्वंति मन्नसि, जं उद्दवेयव्वंति मन्नसि, अंजू चेयपडिबुद्धजीवी, तम्हा न हंता नवि घायए, अणुसंवेयणमप्पाणेणं जं हंतव्वं नाभिपत्थए ॥सू० १६४॥ जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया, जेण वियाणइ से आया, तं पडुच्च पडिसंखाए, एस आयावाइ समियाए परियाए वियाहिए त्तिबेमि ॥सू० १६५॥

॥ इति पंचमोद्देशकः ॥ ५-५ ॥

॥ अध्ययन-५ :: उद्देशकः-६ ॥

अणाणाए एगे सोवट्ठाणा आणाए एगे निरुवट्ठाणा, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं, तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तप्पुरकारे तस्सन्नी तन्निवेसणे ॥सू० १६६॥ अभिभूय अदक्खू अणभिभूए पभू निरालंबणयाए जे महं अबहिमणे, पवाएण पवायं जाणिज्जा, सहसंमइयाए परवागरणेणं अन्नेसि वा अंतिए सुच्चा ॥सू० १६७॥ निद्देसं नाइवट्टेज्जा मेहावी सुपडिलेहिया सव्वओ सव्वप्पणा सम्मं समभिन्नाय, इह आरामं परिन्नाय अल्लीणगुत्तो आरामो परिव्वए निट्ठियट्ठी वीरे आगमेण सया परक्कमे ॥सू० १६८॥ उड्ढं सोया अहे सोया, तिरियं सोया वियाहिया । एए सोया विअक्खाया, जेहिं संगंति पासह ॥१॥ आवट्टं तु पेहाए इत्थ विरमिज्ज वेयवी, विणइत्तु सोयं निक्खम्म एसमहं अकम्मा जाणइ पासइ पडिलेहाए नावकंखइ इह

आगइं गइं परिन्नाय ॥सू० १६९॥ अच्चेइ जाइमरणस्स वट्टमग्गं विक्खायरए, सव्वे सरा नियट्टंति, तक्का जत्थ न विज्जइ, मइ तत्थ न गाहिया, ओए, अप्पइट्ठाणस्स खेयन्ने, से न दीहे न हस्से न वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमंडले न किण्हे न नीले न लोहिए न हालिद्दे न सुक्किल्ले न सुरभिगंधे न दुरभिगंधे न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न कक्खडे न मउए न गरुए न लहुए न उण्हे न निद्धे न लुक्खे न काऊ न रुहे न संगे न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा, परिन्ने सन्ने उवमा न विज्जए, अरूवी सत्ता अपयस्स पयं नत्थि ॥सू० १७०॥ से न सद्दे न रूवे न गंधे न रसे न फासे इच्चेव त्तिबेमि ॥सू० १७१॥

॥ इति षष्ठ उद्देशकः ॥ ५-६ ॥ इति पंचममध्ययनम् ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ धूताध्ययनं-६ :: उद्देशकः-१ ॥

ओबुज्झमाणे इह माणवेसु आघाइ से नरे, जस्स इमाओ जाइओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति, आघाइ से नाणमणेलिसं, से किट्टइ तेसिं समुट्ठियाणं निक्खित्तदंडाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं, एवं (अवि) एगे महावीरा विपरिक्कमंति पासह एगे अवसीयमाणे अणत्तपन्ने से बेमि, से जहावि (सेवि) कुंमे हरए विणिविट्ठचित्ते पच्छन्नपलासे उम्मग्गं से नो लहइ भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति, एवं (अवि) एगे अणेगरूवेहिं कुलेहिं जाया रूवेहि सत्ता कलुणं थणंति, नियाणाओ ते न लभंति मुक्खं, अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए जाया ॥सू० १७२॥ गंडी अहवा कोढी, रायंसी अवमारियं । काणियं झिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा ॥१॥ उदरिं च पास मूयं च, सूणीयं च गिलासणिं । वेवइं पीढसप्पिं च, सिलिवयं महुमेहणिं ॥२॥ सोलस एए रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो । अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा ॥३॥ मरणं तेसिं संपेहाए उववायं चवणं च नच्चा, परियागं च संपेहाए ॥सू० १७३-७६॥

तं सुणेह जहा तहा संति पाणा अंधा तमसि वियाहिया, तामेव सइं असइं अइअच्च उच्चावयफासे पडिसंवेएइ, बुद्धेहिं एयं पवेइयं—संति पाणा वासगा रसगा उदए उदए चरा आगासगामिणो पाणा पाणे किलेसंति, पास लोए महब्भयं ॥सू० १७७॥ बहुदुक्खा हु जन्तवो, सत्ता कामेसु माणवा, अबलेण वहं गच्छन्ति सरीरेणं पभंगुरेण अट्टे से बहुदुक्खे इइ बाले पकुव्वइ एए रोगा बहू नच्चा आउरा परियावए नालं पास, अलं तवेएहिं, एयं पास मुणी ! महब्भयं नाइवाइज्ज कंचणं ॥सू० १७८॥ आयाण भो सुस्सूस ! भो धूयवायं पवेयइस्सामि, (धुतोवायं पवेयंति) इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया अभिसंजाया अभिनिव्वुडा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्कंता अणुपुव्वेण महामुणी ॥सू० १७९॥

तं परिक्कमंतं परिदेवमाणा मा चयाहि इय ते वयंति—छंदोवणीया अज्झोववन्ना अक्कंदकारी जणगा रुयंति अतारिसे मुणी (ण य) ओहं तरए जणगा जेण विप्पजढा, सरणं तत्थ नो समेइ, कहं नु नाम से तत्थ रमइ ?, एयं नाणं सया समणुवासिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १८०॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥६-१॥

॥ अध्ययनं-६ :: उद्देशकः-२ ॥

आउरं लोगमायाए चइत्ता पुव्वसंजोगं हिच्चा उवसमं वसित्ता बंभचेरंसि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा तहा अहेगे तमचाइ कुसीला ॥सू० १८१॥ वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुञ्छणं विउसिज्जा, अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए, कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्तेण वा अपरिमाणाए भेए, एवं से अंतराएहिं कामेहिं आकेवलिएहि अवइन्ना चेए ॥सू० १८२॥ अहेगे धम्ममायाय आयाणप्पभिइसु पणिहिए चरे अप्पलीयमाणे दढे सव्वं गिद्धिं परिन्नाय, एस पणए महामुणी,

अइअच्च सव्वओ संगं न महं अत्थित्ति इय एगो अहं, अस्सिं जयमाणो इत्थ विरए अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते, जे अचेले परिवुसिए संचिक्खइ ओमोयरियाए, से आकुट्ठे वा हए वा लुंचिए (लूसिए) वा पलियं पकत्थ अदुवा पकत्थ अतहेहिं सद्दफासेहिं इय संखाए एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणो परिव्वए जे य हिरी जे य अहिरीमाणा (मणा)॥सू० १८३॥ चिच्चा सव्वं विसुत्तियं फासे समियदंसणे, एए भो णगिणा वुत्ता जे लोगंसि अणागमण-धम्मिणो आणाए मामगं धम्मं एस उत्तरवाए इह माणवाणं वियाहिए, इत्थोवरए तं झोसमाणे आयाणिज्जं परिन्नाय परियाएण, विगिंचइ, इह एगेसिं एगचरिया होइ तत्थियरा इयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए से मेहावी परिव्वए सुब्भिं अदुवा दुब्भिं अदुवा तत्थ भेरवा पाणापाणे किलेसंति, ते फासे पुट्ठो धीरे अहियासिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १८४॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ ६-२ ॥

॥ अध्ययनं-६ :: उद्देशकः-३ ॥

एयं खु मुणी आयाणं सया सुयक्खायधम्मे विहूयकप्पे निज्झोसइत्ता, जे अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स नो एवं भवइ-परिजुण्णे मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि संधिस्सामि सीविस्सामि उक्कसिस्सामि वुक्कसिस्सामि परिहिस्सामि पाउणिस्सामि, अदुवा तत्थ परिक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंसमसगफासा फुसंति, एयगरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेइ अचेले लाघवं आगममाणे, (एवं खलु से उवगरणलाघवियं तवं कम्मक्खय-कारणं करेइ) तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए संमत्तमेव समभिजाणिज्जा, एवं तेसिं महा-वीराणं चिररायं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाणं पास अहियासियं

॥सू० १८५॥ आगयपन्नाणाणं किसा बाहवो भवंति पयगुए य मंससोणिए विस्सेणि कट्टु परिन्नाय, एस तिराणे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि ॥सू० १८६॥ विरयं भिक्खुं रीयंतं चिरराओ सियं अरइ तत्थ किं विधारए ?, संधेमाणे समुट्ठिए, जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे आरियपदेसिए, ते अणवकंखमाणा पाणे अणइवाएमाणा जइया मेहाविणो पंडिया, एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दियापोए एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय त्ति बेमि ॥सू० १८७॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ ६-३ ॥

॥ अध्ययनं–६ :: उद्देशकः–४ ॥

एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया तेहिं महावीरेहिं पन्नाणमन्तेहिं तेसिमंतिए पन्नाणमुवलब्भ हिच्चा उवसमं फारुसियं समाइयंति, वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं नोत्ति मन्नमाणा आघायं तु सुच्चा निसम्म, समणुन्ना जीविस्सामो एगे निक्खमंते असंभवंता विडज्झमाणा कामेहिं गिद्धा अज्झोववन्ना समाहिमाघायमजोसयंता सत्थारमेव फरुसं वयंति ॥सू० १८८॥ सीलमंता उवसंता संखाए रीयमाणा असीला अणुवयमाणस्स बिइया मंदस्स बालया ॥सू० १८९॥ नियट्टमाणा वेगे आयरगोयरमाइक्खंति; नाणब्भट्ठा दंसणलूसिणो ॥सू० १९०॥ नममाणा वेगे जीवियं विप्परिणामंति पुट्ठा वेगे नियट्टंति जीवियस्सेव कारणा, निक्खंतंपि तेसिं दुन्निक्खंतं भवइ, बालवयणिज्जा हु ते नरा; पुणो पुणो जाइं पकप्पिंति अहे संभवंता विद्दायमाणा अहमंसीति विउक्कसे उदासीणे फरुसं वयंति, पलियं पकथे अदुवा पकथे अतहेहिं, तं वा मेहावी जाणिज्जा धम्मं ॥सू० १९१॥ अहम्मट्ठी तुमंसि नाम बाले आरंभट्ठी अणुवयमाणे हण पाणे घायमाणे हणओ यावि समणुजाणमाणे घोरे धम्मे, उदीरिए उवेहइ णं अणाणाए एस विसन्ने वियद्दे वियाहिए त्ति बेमि ॥सू० १९२॥ किमणेण भो ! जणेण करिस्सामित्ति

मज्झमाणे एवं एगे वइत्ता मायरं पियरं हिच्चा नायओ य परिग्गहं वीरायमाणा समुट्ठाए अविहिंसा सुव्वया दंता (समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसुया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करेस्सामो समुट्ठाए) पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति, अहमेगेसिं सिलोए पावए भवइ, से समणो भवित्ता विब्भंते २ पासहेगे समन्नागएहिं सह असमन्नागए नममाणेहिं अनममाणे विरएहिं अविरए दविएहिं अदविए अभिसमिच्चा पंडिए मेहावी निट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ११३॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ ६-४ ॥

॥ अध्ययनं--६ :: उद्देशकः--५ ॥

से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसु वा नगरंतरेसु वा जणवयेसु वा जणवयंतरेसु वा गामनगरंतरे वा गामजणवयंतरे वा नगरजणवयंतरे वा संतेगइआ जणा लूसगा भवंति अदुवा फासा फुसंति ते फासे पुट्ठे वीरो अहियासए, ओए समियदंसणे, दयं लोगस्स जाणित्ता पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे, विभए किट्टे वेयवि, से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेयए संतिं विरइं उवसमं निव्वाणं सोयं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणइवत्तियं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं सत्ताणं सव्वेसिं जीवाणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खिज्जा ॥सू० ११४॥ अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे नो अत्ताणं आसाइज्जा नो परं आसाइज्जा नो अन्नाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाइज्जा से अणासायए अणासायमाणे वज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणे एवं से भवइ सरणं महामुणी, एवं से उट्ठिए ठियप्पा अणिहे अचले चले अबहिल्लेसे परिव्वए संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिनिव्वुडे, तम्हा संगंति पासह गंथेहिं गढिआ नरा विसन्ना कामक्कंता तम्हा लूहाओ

नो परिवित्तसिज्जा, जस्सिमे आरंभा सव्वओ सव्वप्पयाए सुपरिन्नाया भवंति जेसिमे लूसिणो नो परिवित्तसंति, से वंता कोहं च माणं य मायं च लोभं च एस तुट्टे वियाहिए त्ति बेमि ॥सू० ११५॥ कायस्स वियाघाए एस संगामसीसे वियाहिए से हु पारंगमे मुणी, अविहम्ममाणे फलगावयट्ठी कालोवणीए कंखिज्ज कालं जाव सरीरभेउ त्ति बेमि ॥सू० ११६॥

॥ इति पंचमोद्देशकः ॥ ६-५ ॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ ६ ॥

(सप्तममध्ययनं व्युच्छिन्नम्)

॥ ८ ॥ विमोक्षाध्ययनं-८ :: उद्देशकः-१ ॥

से बेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा नो पादेज्जा नो निमंतिज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे त्ति बेमि ॥सू० ११७॥ धुवं चेयं जाणिज्जा असणं वा जाव पायपुंछणं वा लभिया नो लभिया भुंजिया नो भुंजिया पंथं विउत्ता विउकम्म विभत्तं धम्मं जोसेमाणे समेमाणे चलेमाणे (पलेमाणे) पाइज्जा वा निमंतिज्जा वा कुज्जा वेयावडियं परं अणाढायमाणे त्ति बेमि॥ ॥सू० ११८॥ इहमेगेसिं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवति ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हण पाणे घायमाणा हणओ यावि समणुजाणमाणा अदुवा अदिन्नमाययंति अदुवा वायाउ विउज्जंति, तं जहा-अत्थि लोए नत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, साइए लोए अणाइए लोए, सपज्जवसिए लोए अपज्जवसिए लोए, सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा, कल्लाणेत्ति वा पावेत्ति वा, साहुत्ति वा असाहुत्ति वा, सिद्धित्ति वा असिद्धित्ति वा निरएत्ति वा अनिरएत्ति वा, जमिणं विप्पडिवन्ना मामगं धम्मं पन्नवेमाणा इत्थवि जाणह अकस्मात् एवं तेसिं नो सुयक्खाए धम्मे नो सुपन्नत्ते धम्मे भवइ ॥सू० ११९॥ से जहेयं भगवया पवेइयं आसुपन्नेण जाणया पासया अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्तिबेमि सव्वत्थ संमयं पावं, तमेव उवाइक्कम्म एस महं विवेगे

वियाहिए, गामे वा अदुवा रराणे नेव गामे नेव रराणे धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया, जामा तिन्नि उदाहिया जेसु इमे आयरिया संबुज्झमाणा समुट्ठिया, जे णिव्वुया पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया ॥सू० २००॥ उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ सव्वावंति च णं पाडियक्कं जीवेहिं कम्मसम्मारम्भे णं तं परिन्नाय मेहावी नेव सयं एएहिं काएहिं दंडं समारंभिज्जा, नेवन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारंभाविज्जा, नेवन्ने एएहिं कायेहिं दंडं समारंभंतेऽवि समणुजाणेज्जा नेवऽन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारभंति तेसिं पि वयं लज्जामो तं परिन्नाय मेहावी तं वा दंडं अन्नं वा नो दंडभी दंडं समारंभिज्जासि त्ति बेमि ॥सू० २०१॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥८-१॥

॥ अध्ययनं–८ :: उद्देशकः–२ ॥

से भिक्खू परिक्कमिज्ज वा चिट्ठिज्ज वा निसीइज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा सुन्नागारंसि वा गिरिगुहंसि वा रुक्खमूलंसि वा कुंभाराययणंसि वा हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावइ बूया-आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंच्छणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएमि आवसहं वा समुस्सिणोमि से भुंजह वसह, आउसंतो समणा ! भिक्खू तं गाहावइं समणसं सवयसं पडियाइक्खे–आउसंतो ! गाहावई नो खलु ते वयणं आढामि नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाणाइं वा (४) समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि आवसहं वा समुस्सिणासि, से विरओ आउसो गाहावई ! एयस्स अकरणायाए ॥सू० २०२॥ से भिक्खू परिक्कमिज्ज वा जाव हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उव-

संकमित्तु गाहावई आयगयाए पेहाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) जाव आहट्टु चेएइ आवसहं वा समुस्सिणाइ भिक्खू परिवासेउं, तं च भिक्खू जाणिज्जा सहसम्मइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा सुच्चा अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) जाव आवसहं वा समुस्सिणाइ, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्ति बेमि ॥सू० २०३॥ भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा वा फुसंति, से हंता हणह खणह छिंदह दहह पयह आलुंपह विलुंपह सहसाकारेह विप्परामुसह, ते फासे धीरो पुट्ठो अहियासए अदुवा आयारगोयरमाइक्खे, तक्किया णामणेलिसं अदुवा वइगुत्तीए गोयरस्स अणुपुव्वेण संमं पडिलेहाए आयतगुत्ते बुद्धेहिं एयं पवेइयं ॥सू० २०४॥ से समणुन्ने असमणुन्नस्स असणं वा जाव नो पाइज्जा नो निमंतिज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे त्ति बेमि ॥सू० २०५॥ धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा जाव कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे त्ति बेमि ॥सू० २०६॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥ ८-२ ॥

॥ अध्ययनं-८ :: उद्देशकः-३ ॥

मज्झिमेणं वयसावि एगे संबुज्झमाणा समुट्ठिया, सुच्चा मेहावी वयणं पंडियाणं निसामिया समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा अपरिग्गहेमाणा नो परिग्गहावंती सव्वावंती च णं लोगंसि निहाय दंडं पाणेहिं पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंथे वियाहिए ओए जुइमस्स खेयन्ने उववायं चवणं च नच्चा ॥सू० २०७॥ आहारोवचया देहा परीसहपभंगुरा पासह एगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ॥सू० २०८॥ ओए दयं दयइ, जे संनिहाणसत्थस्स खेयन्ने से भिक्खू कालन्ने बलन्ने मायन्ने खणन्ने विणयन्ने समयन्ने परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाई

अपडिन्ने दुहओ छित्ता नियाइं ॥सू० २०९॥ तं भिक्खुं सीयफासपरिवेवमाणगायं उवसंकमित्ता गाहावई बूया–आउसंतो समणा ! नो खलु गामधम्मा उव्वाहंति, आउसंतो गाहावई ! नो खलु मम गामधम्मा उव्वाहंति, सीयफासं च नो खलु अहं संचाएमि अहियासित्तए, नो खलु मे कप्पइ अगणिकायं उज्जालित्तए वा पज्जालित्तए वा कायं आयावित्तए वा पयावित्तए वा, अन्नेसिं वा वयणाओ, सिया स एवं वयंतस्स परो अगणिकायं उज्जालित्ता पज्जालित्ता कायं आयाविज्ज वा, पयाविज्ज वा, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्ति बेमि ॥सू० २१०॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ ८–३ ॥

॥ अध्ययनं–८ :: उद्देशकः–४ ॥

जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिए पायचउत्थेहिं तस्स णं नो एवं भवइ चउत्थं वत्थं जाइस्सामि, से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्जा, नो धोइज्जा (नो रइज्जा) नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारिज्जा, अपलिओवमाणे (अपलिउंचमाणे) गामंतरेसु ओमचेलिए, एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ॥सू० २११॥ अह पुण एवं जाणिज्जा–उवाइक्कंते खलु हेमंते गिम्हे पडिवन्ने अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठविज्जा, अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले ॥सू०२१२॥ लाघवियं आगममाणे, तवे से अभिसमन्नागए भवइ ॥सू० २१३॥ जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए सव्वत्तमेव समभिजाणिज्जा ॥सू. २१४॥ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ पुट्ठो खलु अहमंसि नालमहमंसि सीयफासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्वसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणयाए आउट्टे तवस्सिणो हु तं सेयं जमेगे विहमाइए तत्थावि तस्स कालपरियाए, सेऽवि तत्थ विअंतिकारए इच्चेयं विमोहायतणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामिअं त्ति बेमि ॥सू० २१५॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥८–४॥

॥ अध्ययनं–८ :: उद्देशकः–५ ॥

जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिए पायतईएहिं तस्स णं नो एवं भवइ तइयं वत्थं जाइस्सामि, से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा जाव एवं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं, अह पुण एवं जाणिज्जा–उवाइक्कंते खलु हेमन्ते गिम्हे पडिवरणे, अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठविज्जा, अहापरिजुन्नाइं परिट्ठवित्ता अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–पुट्ठो अबलो अहमंसि नालमहमंसि गिहंतरसंकमणं भिक्खायरियं गमणाए, से एवं वयंतस्स परो अभिहडं असणं वा (४) आहट्टु दलइज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसंतो ! नो खलु मे कप्पइ अभिहडं असणं वा (४) भुत्तए वा पायए वा अन्ने वा एयप्पगारे ॥सू० २१६॥ जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे–अहं च खलु पडिन्नत्तो अपडिन्नत्तेहिं गिलाणो अगिलाणेहिं अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि, अहं वावि खलु अप्पडिन्नत्तो पडिन्नत्तस्स अगिलाणो गिलाणस्स अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए आहट्टु परिन्नं अणुक्खिस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि १, आहट्टु परिन्नं आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि २, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि ३, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि ४, एवं से अहाकिट्टियमेव धम्मं समभिजाणमाणे संते विरए सुसमाहियलेसे तत्थवि तस्स कालपरियाए से तत्थ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं त्ति बेमि ॥सू० २१७॥

॥ इति पंचमोद्देशकः ॥८-५॥

॥ अध्ययनं-८ :: उद्देशकः-६ ॥

जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिए पायबिईएण, तस्स णं नो एवं भवइ-बिईयं वत्थं जाइस्सामि, से अहेसणिज्जं वत्थं जाइज्जा अहापरिग्गहियं वत्थं धारिज्जा जाव गिम्हे पडिवन्ने अहापरिजुन्नं वत्थं परिट्ठविज्जा (२) अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे जाव सम्मत्तमेव समभिजाणिया ॥सू० २१८॥ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-एगे अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सवि, एवं से एगागिणमेव अप्पाणं समभिजाणिज्जा, लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जाव समभिजाणिया ॥सू० २१९॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा (४) आहारेमाणे नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारिज्जा आसाएमाणे, दाहिणाओ वामं हणुयं नो संचारिज्जा आसाएमाणे (आढायमाणे) से अणासायमाणे लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जमेयं भगवया पवेइयं तमेवं अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए सम्मत्तमेव अ(सम)भिजाणिया ॥सू० २२०॥ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-से गिलामि च खलु अहं इमंमि समये इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टिज्जा, अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टित्ता कसाए पयणुए किच्चा समाहियच्चे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खू अभिनिवुडच्चे ॥सू० २२१॥ अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा खेडं वा कब्बडं वा मडंबं वा पट्टणं वा दोणमुहं वा आगरं वा आसमं वा सन्निवेसं वा नेगमं वा रायहाणिं वा तणाइं जाइज्जा तणाइं जाइत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा, एगंतमवक्कमित्ता अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडासंताणए पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) तणाइं संथरिज्जा, तणाइं संथरित्ता इत्थवि समए इत्तरियं कुज्जा, तं सच्चं सच्चवाई ओए तिन्ने छिन्नकहंकहे आईयट्ठे अणाईए चिच्चाण भेउरं कायं संविहूय विरु-

वरूवे परीसहोवसग्गे अस्सिं विस्संभणयाए भेरवमणुचिन्ने तत्थवि तस्स कालपरियाए जाव आणुगामियं त्ति बेमि ॥सू० २२२॥

॥ इति षष्ठ उद्देशकः ॥८-६॥

॥ अध्ययनं-८ :: उद्देशकः-७ ॥

जे भिक्खू अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए सीयफासं अहियासित्तए तेउफासं अहियासित्तए दंसमसगफासं अहियासित्तए एगयरे अन्नतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए हिरिपडिच्छायणं चऽहं नो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पेइ कडिबंधणं धारित्तए ॥सू० २२३॥ अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति दंसमसगफासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेइ, अचेले लाघवियं आगममाणे जाव समभिजाणिया ॥सू० २२४॥ जस्स णं भिक्खूस्स एवं भवइ-अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा (४) आहट्टु दलइस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि १, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा (४) आहट्टु दलइस्सामि आहडं च नो साइस्सामि २, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-अहं च खलु असणं वा (४) आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि ३, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-अहं च खलु अन्नेसि भिक्खूणं असणं वा (४) आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि ४, अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण अहेसणिज्जेण अहापरिग्गहिएणं असणेण वा (४) अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए, अहं वावि तेण अहाइरित्तेण अहेसणिज्जेण अहापरिग्गहिएणं असणेण वा (४) अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि लाघवियं आगममाणे जाव सम्मत्तमेव समभिजाणिया ॥सू० २२५॥ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-से

गिलामि खलु अहं इमम्मि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेणं परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टिज्जा (२) कसाए पयणुए किच्चा समाहियच्चे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा तणाइं जाइज्जा जाव सन्थरिज्जा, इत्थवि समए कायं च जोगं च ईरियं च पच्चक्खाइज्जा, तं सच्चं सच्चावाई ओएतिन्ने छिन्नकहंकहे आईयट्ठे अणाईए चिच्चाणं भेउरं कायं संविहुणिय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अस्सिं विस्संभणाए भेरवमणुचिन्ने तत्थवि तस्स कालपरियाए, सेवि तत्थ विअन्तिकारए, इच्चेयं विमोहायययणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं तिबेमि ॥सू० २२६॥

॥ इति सप्तमोद्देशकः ॥ ८-७ ॥

॥ अध्ययनं-८ :: उद्देशकः-८ ॥

अणुपुव्वेण विमोहाइं, जाइं धीरा समासज्ज वसुमन्तो मइमन्तो, सव्वं नच्चा अणेलिसं ॥१॥ दुविहंपि विइत्ता णं, बुद्धा धम्मस्स पारगा । अणुपुव्वीइ संखाए, आरंभाओ (य) (कम्मुणा उ) तिउट्टइ ॥२॥ कसाए पयणू किच्चा, अप्पाहारे तितिक्खए । अह भिक्खू गिलाइज्जा, आहारस्सेव अन्तियं ॥३॥ जीवियं नाभिकंखिज्जा, मरणं नोवि पत्थए; दुहओऽवि न सज्जिज्जा, जिवीए मरणे तहा ॥४॥ मज्झत्थो निज्जरापेही, समाहिमणुपालए अन्तो बहिं विऊसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ॥५॥ जं किंचुवक्कमं जाणे, आउखेमस्समप्पणो । तस्सेव अन्तरद्धाए, खिप्पं सिक्खिज्ज पंडिए ॥६॥ गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया । अप्पपाणं तु विन्नाय, तणाइं संथरे मुणी ॥७॥ अणाहारो तुयट्टिज्जा, पुट्ठो तत्थऽहियासए । नाइवेलं उवचरे, माणुस्सेहि विपुट्ठवं ॥८॥ संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहाचरा । भुंजन्ति मंससोणियं, न छणे न पमज्जए ॥९॥ पाणा देहं विहिंसन्ति, ठाणाओ नवि उब्भमे आसवेहिं विवित्तेहि, तिप्पमाणोऽहियासए ॥१०॥

गन्थेहिं विवित्तेहिं, आउकालस्स पारए पग्गहियतरगं चेयं, दवियस्स वियाणओ ॥११॥ अयं से अवरे धम्मे, नायपुत्तेण साहिए। आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ॥१२॥ हरिएसु न निवज्जिज्जा, थंडिलं मुणिया सए। विओसिज्ज अणाहारो, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥१३॥ इन्दिएहिं गिलायन्तो, समियं आहरे मुणी । तहावि से अगरिहे, अचले जे समाहिए ॥१४॥ अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए । कायसाहारणट्ठाए, इत्थं वावि अचेयणो ॥१५॥ परिक्कमे परिकिलन्ते, अदुवा चिट्ठे अहायए। ठाणे ण परिकिलन्ते, निसीइज्जा य अंतसो ॥१६॥ आसीणेऽणेलिसं मरणं, इन्दियाणि समीरए। कोलावासं समासज्ज वितहं पाउरे सए ॥१७॥ जओ वज्जं समुप्पज्जे, न तत्थ अवलम्बए; तउ उक्कसे अप्पाणं, फासे तत्थऽहियासए ॥१८॥ अयं चाययतरे सिया, जो एवमणुपालए सव्वगायनिरोहेऽवि, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥१९॥ अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे । अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥२०॥ अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं। वोसिरे सव्वसो कायं, न मे देहे परीसहा, ॥२१॥ जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा इति संखया संवुडे देह भेयाए, इय पन्नेऽहियासए ॥२२॥ भेउरेसु न रज्जिज्जा, कामेसु बहुतरेसुवि (बहुलेसुवि) इच्छा लोभं न सेविज्जा, धुववन्नं सपेहिया ॥२३॥ सासएहिं निमन्तिज्जा, दिव्वमायं न सद्दहे । तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विहूणिया ॥२४॥ सव्वट्ठेहिं अमुच्छिए, आउकालस्स पारए। तितिक्खं परमं नच्चा, विमोहन्नयरं हियं ॥२५॥ त्तिबेमि ॥

॥ इति अष्टमोद्देशकः ८-८ ॥ इति अष्टममध्ययनम् ॥८॥

॥ उपधानश्रुताख्यमध्ययनं ९ :: उद्देशकः १ ॥

अहासुयं वइस्सामि जहा से समणे भगवं उट्ठाए। संखाए तंसि हेमंते अहुणो पव्वइए रीइत्था ॥१॥ णो चेविमेण वत्थेण पिहिस्सामि तंसि हेमं-

ते। से पारए आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ॥२॥ चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म। अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥३॥ संवच्छरं साहियं मासं जं न रिक्कासि वत्थगं भगवं। अचेलए तओ चाइ तं वोसिज्ज वत्थमणगारे ॥४॥ अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं, चक्खुमासज्ज अन्तसो झायइ। अह चक्खुभीया संहिया ते, हन्ता हन्ता बहवे कंदिंसु ॥५॥ सयणेहिं वितिमिस्सेहिं इत्थिओ तत्थ से परिन्नाय सागारियं न सेवेइ य, से सयं पवेसिया झाइ ॥६॥ जे के इमे अगारत्था मीसीभावं पहाय से झाइ। पुट्ठोवि नाभिभासिंसु गच्छइ नाइवत्तइ अंजू (पुट्ठो व सो अपुट्ठो व नो अणुन्नाइ पावगं भगवं) ॥७॥ णो सुकरमेयमेगेसिं नाभिभासे य अभिवायमाणे। हयपुव्वे तत्थ दंडेहिं लूसियपुव्वे अप्पपुण्णेहिं ॥८॥ फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं अइअच्च मुणी परक्कममाणे। आघाय नट्ट-गीयाइं दण्डजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं ॥९॥ गढिए मिहुकहासु समयंमि नायसुए विसोगे अदक्खु। एयाइं से उरालाइं गच्छइ नायपुत्ते असरणयाए ॥१०॥ अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभुच्चा निक्खन्ते। एगत्तगए पिहियच्चे से अहिन्नायदंसणे सन्ते ॥११॥ पुढविं च आउकायं च तेउकायं च वाउकायं च। पणगाइं बीयहरियाइं तसकायं च सव्वसो नच्चा ॥१२॥ एयाइं सन्ति पडिलेहे, चित्तमन्ताइं से अभिन्नाय। परिवज्जिय विहरित्था इय संखाय से महावीरे ॥१३॥ अदु थावरा य तसत्ताए, तसा य थावरत्ताए। अदुवा सव्वजोणिया सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ॥१४॥ भगवं च एवम-न्नेसिं सोवहिए हु लुप्पइ बाले। कम्मं च सव्वसो नच्चा तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥१५॥ दुविहं समिच्च मेहावी किरीयमक्खायऽणेलिसं नाणी। आयाण सोयमइवायसोयं जोगं च सव्वसो णच्चा ॥१६॥ अइवत्तियं अणाउट्टिं सयमन्नेसिं अकरणयाए। जस्सित्थिओ परिन्नाया सव्वकम्मावहाउ से अदक्खु ॥१७॥ अहाकडं न से सेवे सव्वसो कम्म (कम्मुणा) अद-

क्खू । जं किंचि पावगं भगवं तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ॥१८॥ णो सेवइ य परवत्थं परपाएवि से न भुंजित्था । परिवज्जियाण उमाणं गच्छइ संखडिं असरणाया ए ॥१९॥ मायण्णे असणपाणस्स नाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने । अच्छिंपि नो पमज्जिज्जा नोवि य कंडूयए मुणी गायं ॥२०॥ अप्पं तिरियं पेहाए अप्पं पिट्ठओ पेहाए । अप्पं बुइएऽपडिभाणी पंथपेही चरे जयमाणे ॥२१॥ सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने तं वोसिज्ज वत्थमणगारे । पसारित्तु बाहुं परक्कमे नो अवलम्बियाण कंधंमि ॥२२॥ एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मइमया । बहुसो अपडिन्नेण भगवया एव रियंति ॥२३॥ त्तिबेमि ॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥९-१॥

॥ अध्ययनं ९ :: उद्देशकः २ ॥

चरियासणाइं सिज्जाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ । आइक्ख ताइं सयणासणाइं जाइं सेवित्था से महावीरे ॥१॥ आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो । अदुवा पलियठाणेसु पलालपुंजेसु एगया वासो ॥२॥ आगन्तारे आरामागारे तह य नगरे व एगया वासो । सुसाणे सुण्णगारे वा रुक्खमूले व एगया वासो ॥३॥ एएहिं मुणी सयणेहिं समणे आसि पतेरसवासे । राइं दिवंपि जयमाणे अपमत्ते समाहिए झाइ ॥४॥ णिद्दंपि नो पगामाए, सेवइ भगवं उट्ठाए । जग्गावइ य अप्पाणं इसिं साइ य अपडिन्ने ॥५॥ संबुज्झमाणे पुणरवि आसिंसु भगवं उट्ठाए । निक्खम्म एगया राओ बहि चंकमिया मुहुत्तागं ॥६॥ सयणेहिं तत्थुवसग्गा भीमा आसी अणेगरूवा य । संसप्पगा य जे पाणा अदुवा जे पक्खिणो उवचरन्ति ॥७॥ अदु कुचरा उवचरन्ति गामरक्खा य सत्ति-हत्था य । अदु गामिया उवसग्गा इत्थी एगइया पुरिसा य ॥८॥ इहलोइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं । अवि सुब्भि दुब्भिगन्धाइं सद्दाइं अणेगरूवाइं ॥९॥ अहियासए सया समिए

फासाइं विरूवरूवाइं । अरइं रइं अभिभूय रीयइ माहणे अबहुवाई ॥१०॥ स जणेहिं तत्थ पुच्छिंसु एगचरावि एगया राओ । अव्वाहिए कसाइत्था पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥११॥ अयमंतरंसि को इत्थ ? अहमंसित्ति भिक्खु आहट्टु । अयमुत्तमे से धम्मे तुसिणीए कसाइए झाइ ॥१२॥ जंसिप्पेगे पवेयन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते । तंसिप्पेगे अणगारा हिमवाए निवायमेसन्ति ॥१३॥ संघाडीओ पवेसिस्सामो एहा य समादहमाणा । पिहिया व सक्खामो अइदुक्खे हिमगसंफासा ॥१४॥ तंसि भगवं अपडिन्ने अहे विगडे अहियासए । दविए निक्खम्म एगया राओ ठाइए भगवं समियाए ॥१५॥ एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया । बहुसो अपडिण्णेण भगवया एवं रीयन्ति ॥१६॥ त्तिबेमि ।

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ९-२ ॥

॥ अध्ययनं ९ :: उद्देशकः ३ ॥

तणफासे सीयफासे य तेउफासे य दंसमसगे य । अहियासए सया समिए फासाइं विरूवरूवाइं ॥१॥ अह दुच्चरलाढमचारी वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च । पंतं सिज्जं सेविंसु आसणगाणि चेव पंताणि ॥२॥ लाढेहिं तस्सुवसग्गा बहवे जाणवया लूसिंसु । अह लूहदेसिए भत्ते कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु निवइंसु ॥३॥ अप्पे जणे निवारेइ लूसणए सुणए दसमाणे छुच्छुकारिंति आहंसु समणं कुक्कुरा दसंतुत्ति ॥४॥ एलिक्खए जणा (जणे) भुज्जो बहवे वज्जभूमि फरुसासी । लट्ठिं गहाय नालियं समणा तत्थ य विहरिंसु ॥५॥ एवंपि तत्थ विहरन्ता पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणिएहिं । संलुंचमाणा सुणएहिं दुच्चराणि तत्थ लाढेहिं ॥६॥ निहाय दण्डं पाणेहिं तं कायं वोसज्जमणगारे । अह गामकण्टए भगवन्ते अहियासए अभिसमिच्चा ॥७॥

नागो संगामसीसे वा पारए तत्थ से महावीरे । एवंपि तत्थ लाढेहिं अलद्धपुव्वोवि एगया गामो ॥८॥ उवसंकमन्तमपडिन्नं गामं तियम्मि अप्पत्तं । पडिनिक्खमितु लूसिंसु एयाओ परं पलेहित्ति ॥९॥ हयपुव्वो तत्थ दण्डेण अदुवा मुट्ठिणा अदु कुन्तफलेण । अदु लेलुणा कवालेण हन्ता हन्ता बहवे कन्दिंसु ॥१०॥ मंसाणि (मंसूणि) छिन्नपुव्वाणि उट्ठंभिया एगया कायं । परीसहाइं लुंचिंसु अदुवा पंसुणा उवकरिंसु ॥११॥ उच्चालइय निहणिंसु अदुवा आसणाउ खलइंसु । वोसट्ठकायपणयाऽऽसी दुक्खसहे भगवं अपडिन्ने ॥१२॥ सूरो संगामसीसे वा संवुडे तत्थ से महावीरे । पडिसेवमाणे फरुसाइं अचले भगवं रीयित्था ॥१३॥ एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मइमया । बहुसो अपडिण्णेण भगवया एवं रीयंति ॥१४॥ त्ति बेमि ॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ ९-३ ॥

॥ अध्ययनं ९ :: उद्देशकः ४ ॥

ओमोयरियं चाएइ अपुट्ठेवि भगवं रोगेहिं । पुट्ठे वा अपुट्ठे वा नो से साइज्जइ तेइच्छं ॥१॥ संसोहणं च वमणं च गायब्भंगणं च सिणाणं च । संबाहणं च न से कप्पे दन्तपक्खालणं च परिन्नाए(य) ॥२॥ विरए गामधम्मेहिं रीयइ माहणे अबहुवाइ । सिसिरंमि एगया भगवं छायाए झाइ आसीय ॥३॥ आयावइ य गिम्हाणं अच्छइ उक्कुडुए अभित्तावे । अदु जाव इत्थ लूहेणं ओयणमंथुकुम्मासेणं ॥४॥ एयाणि तिन्नि पडिसेवे अट्ठमासे अ जावयं भगवं । अपि इत्थ एगया भगवं अद्धमासं अदुवा मासंपि ॥५॥ अवि साहिए दुवे मासे छप्पि मासे अदुवा विहरित्था (अपिबित्ता) । राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलाणमेगया भुंजे ॥६॥ छट्ठेण एगया भुंजे अदुवा अट्ठमेण दसमेणं । दुवालसमेण एगया भुंजे पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने

॥७॥ णच्चा णं से महावीरे नोऽविय पावगं सयमकासी । अन्नेहिं वा ण कारित्था कीरंतंपि नाणुजाणित्था ॥८॥

गामं पविसे नगरं वा घासमेसे कडं परट्ठाए । सुविसुद्धमेसिया भगवं आयतजोगयाए सेवित्था ॥९॥ अदु वायसा दिगिंछत्ता जे अन्ने रसेसिणो सत्ता । घासेसणाए चिट्ठंति सययं निवइए य पेहाए ॥१०॥ अदुवा माहणं च समणं वा गामपिण्डोलगं च अतिहिं वा । सोवागमूसियारिं वा कुक्कुरं वावि विट्ठियं पुरओ ॥११॥ वित्तिच्छेयं वज्जन्तो तेसिमप्पत्तियं परिहरन्तो । मन्दं परक्कमे भगवं अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥१२॥ अवि सूइयं वा सुक्कं वा सीयं पिंडं पुराणकुम्मासं । अदु बुक्कसं पुलागं वा लद्धे पिंडे अलद्धे दविए ॥१३॥ अवि झाइ से महावीरे आसणत्थे अकुक्कुए झाणं । उड्ढं अहे तिरियं च पेहमाणे समाहिमपडिन्ने ॥१४॥ अकसाइ विगयगेही य सद्दरूवेसु अमुच्छिए झाइ । छउमत्थोऽवि परक्कममाणो न पमायं सइंपि कुव्वित्था ॥१५॥ सयमेव अभिसमागम्म आयतजोगमायसोहीए । अभिनिव्वुडे अमाइल्ले आवकहं भगवं समियासी ॥१६॥ एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मइमया । बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयन्ति ॥१७॥ त्तिबेमि

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥ ९-४ ॥ इति नवममध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥ प्रथमो ब्रह्मचर्य-श्रुतस्कंधः समाप्तः ॥



॥ अथ द्वितीयोऽग्र-श्रुतस्कंधः ॥

॥ चूलिका १ ॥ पिण्डेसणाध्ययनं १ :: उद्देशकः १ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा-असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पाणेहिं वा पणगेहि वा बीएहिं वा हरिएहिं वा संसत्तं उम्मिस्सं सीओदएण वा ओसित्तं रयसा वा परिघासियं (परिवासियं) वा तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभेऽवि संते नो पडिग्गाहिज्जा॥ से य आहच्च पडिग्गहे सिया से तं आयाय एगंतमवक्कमिज्जा, एगंतमवक्कमित्ता अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणगदग-मट्टिय-मक्कडासंताणए विगिंचिय (२) उम्मीसं विसोहिय (२) तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा, जं च नो संचाइज्जा भुत्तए वा पायए वा से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा, अहे झामथंडिलंसि वा अट्ठिरासिंसि वा किट्टरासिंसि वा तुसरासिंसि वा गोमयरासिंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठविज्जा ॥सू० १॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण ओसहीओ जाणिज्जा-कसिणाओ सासियाओ अविदलकडाओ अतिरिच्छच्छिन्नाओ अवुच्छिन्नाओ तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंतभज्जियं पेहाए अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते नो पडिग्गाहिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण ओसहीओ जाणिज्जा-अकसिणाओ असासियाओ विदलकडाओ तिरिच्छच्छि-

न्नाओ वुच्छिन्नाओ तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए फासुयं एसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते पडिग्गाहिज्जा २ ॥सू० २॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा पिहुयं वा बहुरयं वा भुंजियं वा मंथुं वा चाउलं वा चाउलपलंबं वा सइं संभज्जियं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा १॥ से भिक्खू वा(२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा-पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा असइं भज्जियं दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा भज्जियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा २ ॥सू० ३॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं जाव पविसिउकामे नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अप्परिहारिएणं सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा १॥ से भिक्खू वा (२) बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा २॥ से भिक्खू वा(२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो अन्नउत्थिएण वा जाव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ३ ॥सू० ४॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे समाणे नो अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा परिहारिओ वा अपरिहारियस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दिज्जा वा अणुपवइज्जा वा ॥ सू० ५ ॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे जाव असणं वा (४) अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तं तहप्पगारं असणं वा (४) पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया नीहडं वा अनीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा, एवं बहवे साहम्मिया एगा

साहम्मिणी बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥सू० ६॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवणवणीमए पगणिय २ समुद्दिस्स पाणाइं वा ४ समारब्भ जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥सू० ७॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवणवणीमए समुद्दिस्स जाव चेएइ तं तहप्पगारं असणं वा (४) अपुरिसंतरकडं वा अबहियानीहडं अणत्तट्ठियं अपरिभुत्तं अणासेवियं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव नो पडिग्गाहिज्जा १ अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं बहियानीहडं अत्तट्ठियं परिभुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा ॥सू० ८॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा-इमेसु खलु कुलेसु निइए पिंडे दिज्जइ अग्गपिंडे दिज्जइ नियए भाए दिज्जइ नियए अवड्ढभाए दिज्जइ, तहप्पगाराइं कुलाइं निइयाइं निइउमाणाइं नो भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्जं वा १॥ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए त्ति बेमि २ ॥सू० ६॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥ श्रु० २-चू० १-अ० १ उ०-१ ॥

॥ अध्ययन-१ :: उद्देशकः-२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) अट्ठमिपोसहिएसु वा अद्धमासिएसु वा मासिएसु वा दोमासिएसु वा तेमासिएसु वा चाउम्मासिएसु वा पंचमासिएसु वा छम्मासिएसु वा उऊसु वा उउसंधीसु वा उउपरियट्टेसु वा बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए तिहिं उक्खाहिं परिए-

सिज्जमाणे पेहाए कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा संनिहिसंनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा (४) अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवियं अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा १॥ अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं फासुयं पडिग्गाहिज्जा २॥सू० १०॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा, तंजहा-उग्गकुलाणि वा भोगकुलाणि वा राइन्नकुलाणि वा खत्तियकुलाणि वा इक्खागकुलाणि वा हरिवंसकुलाणि वा एसियकुलाणि वा वेसियकुलाणि वा गंडागकुलाणि वा कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बुक्कास-कुलाणि वा पोक्कासाईयकुलाणि अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु असणं वा (४) फासुयं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥सू० ११॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) समवाएसु वा पिंडनियरेसु वा इंदमहेसु वा खंदमहेसु वा एवं रुद्दमहेसु वा मुगुंदमहेसु वा भूयमहेसु वा जक्खमहेसु वा नागमहेसु वा थूभमहेसु वा चेइयमहेसु वा रुक्खमहेसु वा गिरिमहेसु वा दरिमहेसु वा अगडमहेसु वा तलागमहेसु वा दहमहेसु वा नइमहेसु वा सरमहेसु वा सागरमहेसु वा आगरमहेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु बहवे समणमाहण-अतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं जाव संनिहिसंनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा (४) अपुरिसंतरकडं जाव नो पडिग्गाहिज्जा १॥ अह पुण एवं जाणिज्जा दिन्नं जं तेसिं दायव्वं, अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए गाहावइभारियं वा गाहावइभगिणिं वा गाहावइपुत्तं वा धूयं वा सुण्हं वा धाइं वा दासं वा दासिं वा कम्मकरं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसित्ति वा भगिणित्ति वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयणजायं, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा (४) आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा (४) सयं वा पुण

जाइज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं जाव पडिगाहिज्जा २ ॥सू० १२॥ से भिक्खू वा (२) परं अद्धजोयणमेराए संखडिं नच्चा संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए १॥ से भिक्खू वा (२) पाइणं संखडिं नच्चा पडीणं गच्छे अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं नच्चा पाइणं गच्छे अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं नच्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे उइणं संखडिं नच्चा दाहिणं गच्छे अणाढायमाणे, जत्थेव सा संखडि सिया तंजहा—गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा नेगमंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए २। केवली बूया—आयाणमेयं (आययणमेयं) संखडिं संखडिपडियाए अभिधारेमाणे आहाकम्मियं वा उद्देसियं वा मीसजायं वा कीयगडं वा पामिच्चं वा अच्छिज्जं वा अणिसिट्ठं वा अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं भुंजिज्जा३॥ अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियदुवारियाओ महल्लिदुवारियाओ कुज्जा, महल्लियदुवारियाओ खुड्डियदुवारियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ निवायाओ कुज्जा, निवायाओ सिज्झाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय छिंदिय दालिय दालिय संथारगं संथारिज्जा, एस विलुंगयामो सिज्जाए, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, ४। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स जाव सया जए त्ति बेमि ॥सू० १३॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥२-१-१-२॥

।। अध्ययनं--१ :: उद्देशकः-३ ।।

से एगइओ अन्नयरं संखडिं आसित्ता पिबित्ता छड्डिज्ज वा वमिज्ज वा भुत्ते वा से नो सम्मं परिणामिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुप्पज्जिज्जा केवली बूया आयाणमेयं ।।सू० १४।। इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा गाहावईणीहि वा परिवायएहि वा परिवाइयाहि वा एगज्जं सद्धिं सुंडं पाउं भो वइमिस्सं हुरत्था वा उवस्सयं पडिलेहेमाणो नो लभिज्जा तमेव उवस्सयं संमिस्सीभावमावज्जिज्जा, अन्नमणे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा किलीबे वा तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया--आउसंतो समणा अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा राओ वा वियाले वा गामधम्मनियंतियं कट्टु रहस्सियं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो, तं चेवेगइओ सातिज्जिज्जा-अकरणिज्जं चेयं संखाए एए आयाणा (आयतणाणि) संति संविज्जमाणा पच्चवाया भवंति, तम्हा से संजये नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ।।सू० १५।। से भिक्खु वा (२) अन्नयरिं संखडिं सुच्चा निसम्म संपहावइ उस्सुयभूएणं, अप्पाणेणं, धुवा संखडी, नो संचाएइ तत्थ इयरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिग्गाहित्ता आहारं आहारित्तए माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा१।। से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं समुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा२।। (सू० १६) से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडी सिया तंपि य गामं वा जाव रायहाणिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए १ ।। केवली बूया-आयाणमेयं आइन्नाऽवमा णं संखडिं अणुपविस्समाणस्स पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे

भवइ, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वेण वा भवइ, सीओदएण वा उस्सित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे भवइ, अणेसणिज्जे वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अन्नेसिं वा दिज्जमाणे पडिग्गाहियपुव्वे भवइ, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं आइन्नावमा णं संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥सू० १७॥ से भिक्खू व (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) एसणिज्जे सिया अणेसणिज्जे सिया वितिगिछसमावन्नेण अप्पाणेण असमाहडाए लेसाए तहप्पगारं असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥सू० १८॥ से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा १ ॥ से भिक्खू वा (२) बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा सव्वं भंडगमायाए बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा २॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ३॥ ॥सू० १९॥ से भिक्खू वा (२) अह पुण एवं जाणिज्जा तिव्वदेसियं वासं वासेमाणं पेहाए तिव्वदेसियं महियं संनिचयमाणं पेहाए महवाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा संथडा संनिचयमाणा पेहाए से एवं नच्चा नो सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥सू० २०॥ से भिक्खू वा (२) से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा तं जहा खत्तियाण वा राइण वा कुराइण वा रायपेसियाण वा रायवंसट्ठियाण वा अंतो वा बाहिं वा गच्छंताण वा संनिविट्ठाण वा निमंतेमाणाण वा अनिमंतेमाणाण वा असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥सू० २१॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ २-१-१-३ ॥

॥ अध्ययनं–१ :: उद्देशकः–४ ॥

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा मच्छखलं वा आहेणं वा पहेणं वा हिंगोलं वा संमेलं वा हीरमाणं पेहाए अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीआ बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंग—पणगदगमट्टीय–मक्कडासंताणया बहवे तत्थ समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा उवागया उवागमिस्संति (उवागच्छंति) तत्थाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए नो पन्नस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, से एवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडिआए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा जाव हीरमाणं वा पेहाए अंतरा से मग्गा अप्पा पाणा जाव संताणगा नो जत्थ बहवे समण० जाव उवागमिस्संति अप्पाइन्ना वित्ती पन्नस्स निक्खमणपवेसाए पन्नस्स वायणपुच्छणपरियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा० अभिसंधारिज्जा गमणाए २॥सू० २२॥ से भिक्खू वा (२) जाव पविसिउकामे से जं पुण जाणिज्जा खीरिणीयाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा (४) उवसंखडिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पजूहिए सेवं नच्चा नो गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा १॥ से तमादाय एगंतमवक्कमिज्जा अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा अह पुण एवं जाणिज्जा-खीरिणियाओ गावीओ खीरियाओ पेहाए असणं वा (४) उवक्खडियं पेहाए पुराए जूहिए सेवं नच्चा तओ संजयामेव गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा २-२॥सू० २३॥ भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु–समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे खुड्डाए खलु अयं गामे संनिरुद्धाए नो महालए से हंता भयंतारो बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए

वयह, संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा—गाहावइ वा गाहावइणीओ वा गाहावइपुत्ता वा गाहावइधूयाओ वा गाहावइसुराहाओ धाइओ वा दासा वा दासीओ वा कम्मकरा वा कम्मकरीओ वा तहप्पगराइं कुलाइं पुरेसंथुयाणि वा पच्छासंथुयाणि वा पुव्वामेव भिक्खारियाए अणुपविसिस्सामि १। अविय इत्थ लभिस्सामि पिंडं वा लोयं वा खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा घयं वा गुल्लं वा तिल्लं वा महुं वा मज्जं वा मंसं वा सक्कुलिं वा फाणियं वा पूयं वा सिहिरिणिं वा, तं पुव्वामेव भुच्चा पिच्चा पडिग्गहं च संलिहिय संमज्जिय तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविस्सिस्सामि वा निक्खमिस्सामि वा, माइट्ठाणं संफासे, तं नो एवं करिज्जा २॥ से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा, ३। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए त्तिबेमि ४ ॥सू० २४॥

॥ इति चतुर्थ उद्देशकः २-१-१-४॥

॥ अध्ययनं-१ :: उद्देशकः-५ ॥

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—अग्गपिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं निक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं हीरमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभुंजमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिट्ठविज्जमाणं पेहाए पुरा असिणाइ वा अवहाराइ वा पुरा जत्थऽण्णे समण-माहण-अतिहिकिवण-वणीमगा खद्धं (२) उवसंकमंति से हंता अहमवि खद्धं (२) उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा ॥सू० २५॥ भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा सति परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा

नो उज्जुयं गच्छिज्जा १। केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा पक्खलेज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाले वा पक्खलेज्ज-माणे वा पवडमाणे वा, तत्थ से काए उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा उवलित्ते सिया, तहप्पगारं कायं नो अणंतरहियाए पुढवीए नो ससिणि-द्धाए पुढवीए नो ससरक्खाए पुढवीए नो चित्तमंताए सिलाए नो चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे जाव ससंताणए नो आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा संहिलिज्ज वा निलिहिज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टिज्ज वा आयाविज्ज वा पयाविज्ज वा २। से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा जाइज्जा, जाइत्ता से तमायय एगंतमवक्क-मिज्जा २ अहे झामथंडिलंसि वा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिले-हिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा ३ ॥सू० २६॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा गोणं वियालं पडिपहे पेहाए महिसं वियालं पडिपहे पेहाए एवं मणुस्सं आसं हत्थिं सीहं वग्घं विगं दीवियं अच्छं तरच्छं परिसरं सियालं विरालं सुणयं कोलसुणयं कोकंतियं चित्ताचिल्लडयं वियालं पडिपहे पेहाए सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छिज्जा १। से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से उवाओ वा खाणुए वा कंटए वा घसी वा भिलुगा वा विसमे वा विज्जले वा परियावज्जिज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव, नो उज्जुयं गच्छिज्जा २। ॥सू० २७॥ से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलस्स दुवा-रबाहं कंटगबुंदियाए परिपिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अप्पमज्जिय नो अवंगुणिज्ज वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा ॥सू० २८॥

से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो तेसिं संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, (केवली बूया-आयाणमेयं पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा, अह भिक्खुणं पुव्वोवइट्ठं एस पइन्ना एस उवएसो जं नो तेसिं संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा) से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा (२) अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा १। से से परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा (४) आहट्टु दलइज्जा, से य एवं वइज्जा आउसंतो समणा इमे भे असणे वा (४) सव्वजणाए निसट्ठे तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं, तं चेगइओ पडिगाहित्ता तुसिणीओ उवेहिज्जा, अवियाइं एयं ममेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा २। से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा (२) से पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसंतो समणा! इमे भे असणे वा (४) सव्वजणाए निसिट्ठे तं भुंजह वा णं जाव परिभाएह वा णं, सेणमेवं वयंतं परो वइज्जा-आउसंतो समणा! तुमं चेव णं परिभाएहि से तत्थ परिभाएमाणे नो अप्पणो खद्धं (२) डायं (२) ऊसढं (२) रसियं (२) मणुन्नं (२) निद्धं (२) लुक्खं (२) से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अग(ना)ढिए अणज्झोववन्ने बहुसममेव परिभाइज्जा ३। से णं परिभाएमाणं परो वइज्जा-आउसंतो समणा, मा णं तुमं परिभाएहि सव्वे वेगइआ ठिआ उ भुक्खामो वा ४ पाहामो वा। से तत्थ भुंजमाणे नो अप्पणा खद्धं खद्धं जाव लुक्खं, से तत्थ अमुच्छिए (४) बहुसममेव भुंजिज्जा वा पाइज्जा वा ५ ॥सू० २१॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो ते उवाइक्कम्म पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा (२) अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुणेवं जाणिज्जा-पडिसेहिए वा दिन्ने वा तओ तंमि नियत्तिए संजयामेव पवि-

सिज्ज वा ओभासिज्ज वा एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जएज्जासित्ति बेमि ॥सू० ३०॥

॥ इति पंचमोद्देशकः ॥२-१-१-५॥

॥ अध्ययनं-१ :: उद्देशकः ६॥

से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा—रसेसिणो बहवे पाणा घासेसणाए संथडे संनिवइए पेहाए, तं जहा कुक्कुडजाइयं वा सूयरजाइयं अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा संनिवइया पेहाए सइ परक्कमे संजया नो उज्जुयं गच्छिज्जा ॥सू० ३१॥ से भिक्खू वा (२) जाव नो गाहावइकुलस्स वा दुवारसाहं अवलंबिय २ चिट्ठिज्जा, नो गाहावइकुलस्स वा दगच्छड्डणमत्तए चिट्ठिज्जा नो गाहावइकुलस्स वा चंदणिउयए चिट्ठिज्जा, नो गाहावइकुलस्स वा सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, नो अलोयं वा थिग्गलं वा संधिं वा दगभवणं वा बाहाओ पगिज्झिय (२) अंगुलियाए वा उद्दिसिय (२) उणामिय (२) अवनमिय (२) निज्झाइज्जा, नो गाहावइअंगुलियाए उद्दिसिय (२) जाइज्जा, नो गाहावइअंगुलिए चालिय (२) जाइज्जा, नो गाहावइअंगुलिए तज्जिय (२) जाइज्जा, नो गाहावइअंगुलिए उक्खुलंपिय (उक्खलुंदिय) (२) जाइज्जा, गाहावइं वंदिय (२) जाइज्जा नो वयणं फरुसं वइज्जा ।सू० ३२॥ अह तत्थ कंचि भुंजमाणं पेहाए गाहावइं वा जाव कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोति वा भइणित्ति वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयणजायं ? १। से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा मत्तं वा दव्विं वा भायणं वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पहोइज्ज वा २। से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा एयं तुमं हत्थं वा (४) सीओदगवियडेण वा (२) उच्छोलेहि वा (२), अभिकंखसि मे दाउं एवमेव दलयाहि ३। से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा (४) सीओदग

वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलित्ता पहोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारेणं पुरेकम्मकएणं हत्थेण वा (४) असणं वा (४) अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ४। अह पुण एवं जाणिज्जा नो पुरेकम्मकएणं उदउल्लेणं तहप्पगारेणं वा उदउल्लेण वा हत्थेण वा (४) असणं वा (४) अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ५॥ अहं पुणेवं जाणिज्जा–उदउल्लेण ससिणिद्धे ण सेसं तं चेव ६। एवं–ससरक्खे उदउल्ले, ससिणिद्धे मट्टिया उसे ॥ हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥१॥ गेरुय वन्निय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुस उक्कुट्ठसंसट्ठेण ७। अह पुणेवं जाणिज्जा नो असंसट्ठे संसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा (४) असणं वा (४) फासुयं जाव पडिगाहिज्जा ८ ॥सू० ३३॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा पिहुयं वा बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं वा असंजए भिक्खूपडियाए चित्तमंताए सिलाए जाव संताणाए कुट्टिंसु वा कुट्टिंति वा कुट्टिस्संति वा उप्फणिंसु वा (३) तहप्पगारं पिहुयं वा बहुरयं वा जाव अप्फासुयं नो पडिगाहिज्जा ॥सू० ३४॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अस्संजए जाव संताणाए भिंदिंसु (३) रुचिंसु (३) बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अफासुयं नो पडिगाहिज्जा ॥सू० ३५॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) अगणि निक्खित्तं तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं नो पडिगाहिज्जा केवली बूया आयाणमेय, अस्संजए भिक्खुपडियाए उस्सिंचमाणे वा निस्सिंचमाणे वा आमज्जमाणे वा पमज्जमाणे वा ओयारेमाणे वा उव्वत्तमाणे वा अगणिजीवे हिंसिज्जा १। अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पइन्ना एस हेऊ एस कारणे एसुवएसे जं तहप्पगारं असणं वा (४) अगणि निक्खित्तं अफासुयं नो पडिगाहिज्जा २। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि ३। ॥सू० ३६॥

॥ इति षष्ठ उद्देशकः ॥२–१–१–६॥

॥ अध्ययनं १ :: उद्देशकः ७ ॥

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) खंधंसि वा थंभंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मियतलंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवनिक्खित्ते सिया तहप्पगारं मालोहडं असणं वा (४) अफासुयं नो पडिगाहिज्जा १। केवली बूया आयाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूहलं आहट्टु उस्सविय दुरूहिज्जा, से तत्थ दुरूहमाणे पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा २। से तत्थ पयलमाणे वा (२) हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा उदरं वा सीसं वा अन्नयरं वा कायंसि इंदियजालं लूसिज्ज वा पाणाणि वा (४) अभिहणिज्ज वा वित्तासिज्ज वा लेसिज्ज वा संघसिज्ज वा संघट्टिज्ज वा परियाविज्ज वा किलामिज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामिज्ज वा, तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) कुट्ठियाओ वा कोलेज्जाउ वा अस्संजए भिक्खुपडियाए उक्कुज्जिय अवउज्जिय ओहरिय आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ३ ॥सू० ३७॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा असणं वा मट्टियाउलित्तं तहप्पगारं असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा १। केवली बूया आयाणमेयं अस्संजए भिक्खुपडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा ४ उब्भिंदमाणे पुढवीकायं समारंभिज्जा तह तेउवाउवणस्सइ-तसकायं समारंभिज्जा पुणरवि उल्लिंपमाणे पच्छाकम्मं करिज्जा २। अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पइन्ना एस हेउ एस कारणे एसुवएसे जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा (४) लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ३। से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) पुढविकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं वा नो पडिगाहिज्जा ४।

से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) आउकायपइट्ठियं चेव, एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ५। केवली बूया आयाणमेअं अस्संजए भिक्खुपडियाए अगणि उस्सक्किय निस्सक्किय ओहरिय आहट्टु दलइज्जा अह भिक्खूणं जाव नो पडिगाहिज्जा ।।सू० ३८।। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) अच्चुसिणं अस्संजए भिक्खुपडियाए सुप्पेण वा विहुयणेणं वा तालियंटेण वा पत्तेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमिज्ज वा वीइज्ज वा १ । से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा मा एतं तुमं असणं वा (४) अच्चुसिणं सुप्पेण वा जाव फुमाहि वा वीयाहि वा अभिकंखसि मे दाउं, एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सुप्पेण वा जाव वीइत्ता आहट्टु दलइज्जा तप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं वा नो पडिगाहिज्जा २ ।।सू० ३६।। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) वणस्सइकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा (४) वणस्सइकायपइट्ठियं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा एवं तसकाएवि ।।सू० ४०।। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—उस्सेइमं वा १ संसेइमं वा २ चाउलोदगं वा ३ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजायं अहुणाधोयं अणंबिलं अव्वुक्कंतं अपरिणयं अविद्धत्थं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा १ । अह पुण एवं जाणिज्जा चिराधोयं अंबिलं वुक्कंतं परिणयं विद्धत्थं फासुयं पडिगाहिज्जा २ । से भिक्खू वा (२) से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—तिलोदगं वा ४ तुसोदगं वा ५ जवोदगं वा ६ आयामं वा ७ सोवीरं वा ८ सुद्धवियडं वा ६ अन्नयरं वा तहप्पगारं वा पाणगजायं पुव्वामेव आलोइज्जा, आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पाणगजायं ! से सेवं वयंतस्स परो वइज्जा-आउसंतो समणा ! तुमं चेवेयं पाणगजायं पडि-

ग्गहेण वा उस्सिंचिया णं उयत्तिया णं गिराहाहि, तहप्पगारं पाणगजायं सयं वा गिरिहज्जा परो वा से दिज्जा, फासुयं लाभे संते पडिगाहिज्जा २ ।।सू० ४१।। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण पाणगं जाणिज्जा अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए उद्धट्टु (२) निक्खित्ते सिया, असंजए भिक्खुपडियाए उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा सकसाएण वा मत्तेण वा सीओदगेण वा संभोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पाणगजायं अफासुयं नो पडिगाहिज्जा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि ।।सू० ४२।।

।। इति सप्तम उद्देशकः ।।२-१-१-७।।

।। अध्ययनं-१ :: उद्देशकः ८ ।।

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—अंबपाणगं वा १० अंबाडगपाणगं वा ११ कविट्ठपाणगं वा १२ माउलिंगपाणगं वा १३ मुद्दियापाणगं वा १४ दालिमपाणगं वा १५ खज्जुरपाणगं वा १६ नालियेरपाणगं वा १७ करीरपाणगं वा १८ कोलपाणगं वा १९ आमलपाणगं वा २० चिंचापाणगं वा २१ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजातं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए भिक्खुपडियाए छब्बेण वा दूसेण वा वालगेण वा अविलियाण परिवीलियाण परिसावियाण आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं पाणगजायं अफासुअं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ।।सू० ४३।। से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइगिहेसु वा परियावसहेसु वा अन्नगंधाणि वा पाणगंधाणि वा सुरभिगंधाणि वा आघाय (२) से तत्थ आसायपडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अहो गंधो (२) नो गंधमाघाइज्जा ।।सू० ४४।। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा सालुयं वा विरालियं वा सासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं अफासुअं नो

पडिगाहिज्जा १। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा पिप्पलिं वा पिप्पलचुण्णं वा मिरियं वा मिरियचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं वा आमगं वा असत्थपरिणयं अफासुयं नो पडिगाहिज्जा २, से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण पलंबजायं जाणिज्जा, तंजहा—अंबपलंबं वा अंबाडगपलंबं वा तालपलंबं वा झिज्झिरिपलंबं वा सुरहिपलंबं वा सल्लरपलंबं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं पलंबजायं आमगं असत्थपरिणयं अफासुअं नो पडिगाहिज्जा ३। से भिक्खू वा २ जाव से जं पुण पवालजायं जाणिज्जा, तं जहा—आसोट्ठपवालं वा निग्गोहपवालं वा पिलुंखुपवालं वा निपू(पू)रपवालं वा सल्लइपवालं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं पवालजायं आमगं असत्थपरिणयं अफासुअं नो पडिगाहिज्जा ४। से भिक्खु वा (२) जाव से जं पुण सरडुयजायं जाणिज्जा, तंजहा—सरडुयं वा (अंबसरडुयं वा अंबाडसरडुयं वा) कविट्ठसरडुयं दाडिमसरडुयं बिल्लसरडुयं अन्नयरं वा तहप्पगारं सरडुयजायं आमं असत्थपरिणयं अफासुअं जाव नो पडिगाहिज्जा ५। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा तंजहा—उंबरमंथुं वा नग्गोहमंथुं वा पिलुंखुमंथुं वा आसोत्थमंथुं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं वा मंथुजायं आमयं दुरुक्कं साणुबीयं अफासुयं नो पडिग्गाहिज्जा ६ ॥सू० ४५॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा आमडागं वा पूइपिन्नागं वा महुं वा मज्जं वा सप्पिं वा खोलं वा पुराणगं वा इत्थ पाणा अणुप्पसूयाइं जायाइं संवुड्ढाइं अव्वुक्कंताइं अपरिणया इत्थ पाणा अविद्धत्था नो पडिगाहिज्जा ॥सू० ४६॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा उच्छुमेरगं वा अंकरेलुगं वा कसेरुगं वा सिंघाडगं वा पूइआलुगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं जाव नो पडिगाहिज्जा १। से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा उप्पलं वा उप्पलनालं वा भिसं वा भिसमुणालं वा पुक्खलं वा पुक्खल-

विभंगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं जाव नो पडिगाहिज्जा २ ॥सू० ४७॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा अग्गबीयाणि वा मूलबीयाणि वा खंधबीयाणि वा पोरबीयाणि वा अग्गजायाणि वा मूलजायाणि वा खंधजायाणि वा पोरजायाणि वा नन्नत्थ तक्कलिमत्थएण वा तक्कलिसीसेण वा नालियेरमत्थएण वा खज्जुरीमत्थएण वा तालमत्थएण वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं जाव नो पडिगाहिज्जा १। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा उच्छुं वा काणगं वा अंगारियं वा संमिस्सं विगदूमियं वित(त्त)ग्गगं वा कंदलीऊसुगं अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं जाव नो पडिगाहिज्जा २। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा लसुणं वा लसुणपत्तं वा लसुणनालं वा लसुणकंदं वा लसुणचोयगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं जाव नो पडिगाहिज्जा ३। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा अच्छियं वा कुंभिपक्कं तिंदुगं वा वेलुगं वा कासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ४। से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा कणं वा कणकुंडगं वा कणपूयलियं वा चाउलं वा चाउलपिट्ठं वा तिलं वा तिलपिट्ठं वा तिलपप्पडगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं जाव लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ५। एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव मया जएज्जासि त्ति बेमि० ६ ॥सू० ४८॥

॥ इति अष्टम उद्देशकः ॥२-१-१-८ ॥



॥ अध्ययनं १ :: उद्देशकः ९ ॥

इह खलु पाइणं वा (४) संतेगइया सड्ढा भवंति, गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ–जे इमे भवंति समणा भगवंता सीलवंतो वयवंतो गुणवंतो संजया संवुडा बंभयारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा (४) भुत्तए वा पायए वा १। से जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए निट्ठियं तं असणं सव्वमेयं समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो अट्ठाए असणं वा (४) चेइस्सामो २। एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पगर असणं वा अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ३ ॥सू० ४१॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा राय-हाणिंसि वा संतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा-गाहावई वा जाव कम्मकरी वा तहप्पगाराइं कुलाइं नो पुव्वामेव भत्ताए वा निक्खमिज्ज वा पविसेज्ज वा (२) १। केवली बूया–आयाणमेयं, पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा (४) उवकरिज्ज वा उवक्खडिज्ज वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा (४) जं नो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा (२) २। से तमायाय एगंतम-वक्कमिज्जा (२,) अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से तत्थ कालेणं अणुपविसि-ज्जा (२) तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारिज्जा सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा उवकरिज्ज वा उवक्खडिज्ज वा तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा ३। से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसोत्ति वा भइणित्ति वा नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा (४) भुत्तए वा पायए वा, मा उवकरेहि मा उवक्खडेहि; से सेवं

वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा (४) उवक्खडावित्ता आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं जाव लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ४ ॥सू० ५०॥ से भिक्खू वा (२) जाव से जं पुण जाणिज्जा मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं पेहाए तिल्लपूयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए नो खद्धं (२) उवसंकमित्तु ओभासिज्जा, नन्नत्थ गिलाणणीसाए ॥सू० ५१॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता सुब्भि सुब्भि भुच्चा दुब्भि २ परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा । सुब्भि वा दुब्भि वा सव्वं भुंजिज्जा नो किंचिवि परिट्ठविज्जा (सव्वं भुञ्जे न छड्डुए) ॥सू० ५२॥ से भिक्खु वा (२) जाव समाणे अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता पुप्फं २, आविइत्ता कसायं २, परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा, १ ॥ पुप्फं पुप्फेइ वा कसायं कसाइ वा सव्वमेयं भुंजिज्जा, नो किंचिवि परिट्ठवेज्जा २ ॥सू० ५३॥ से भिक्खू वा (२) बहुपरियावन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता बहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणालोइया अणामंते परिट्ठवेइ माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा १ । से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा (२) से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसंतो समणा ! इमे मे असणे वा पाणे वा (४) बहुपरियावन्ने तं भुंजह णं २ । से सेवं वयंतं परो वइज्जा-आउसंतो समणा ! आहारमेयं असणं वा (४) जावइयं (२) सरइ तावइयं (२) भुक्खामो वा पाहामो वा सव्वमेयं परिसडइ सव्वमेयं भुक्खामो वा पाहामो वा ३ ॥सू० ५४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा असणं वा (४) परं समुद्दिस्स बहिया नीहडं जं परेहिं असमणुन्नायं अणिसिट्ठं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा जं परेहिं समणुन्नायं सम्मं णिसिट्ठं फासुयं जाव पडिगाहिज्जा, १ । एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि २ ॥सू० ५५॥

॥ इति नवम उद्देशकः ॥२-१-१-९॥

॥ अध्ययनं-१ :: उद्देशकः-१० ॥

से एगइयो साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहित्ता ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा १। से तमायाय तत्थ गच्छिज्जा २, एवं वइज्जा—आउसंतो समणा! संति मम पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया तंजहा—आयरिए वा १, उवज्झाए वा २, पवित्ती वा ३, थेरे वा ४, गणी वा ५, गणहरे वा ६, गणावच्छेइए वा ७, अवियाइं एएसिं खद्धं खद्धं दाहामि, सेणेवं वयंतं परो वइज्जा—कामं खलु आउसो! अहापज्जत्तं निसिराहि, जावइयं (२) परो वयइ तावइयं (२) निसिरिज्जा, सव्वमेवं परो वयइ सव्वमेयं निसिरिज्जा २। ॥सू० ५६॥ से एगइओ मणुन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता पंतेण भोयणेण पलिच्छाएइ मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूण सयमाइए आयरिए वा जाव गणावच्छेए वा; १। नो खलु मे कस्सइ किंचि दायव्वं सिया, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा २। से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा, (२) पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु इमं खलुत्ति आलोइज्जा, नो किंचि वि णिगूहिज्जा ३। से एगइयो अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता भद्दयं (२) भुच्चा विवन्नं विरसमाहरइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा ४ ॥सू० ५७॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा अंतरुच्छियं वा उच्छुगंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा सिंबलिं वा सिंबलथालगं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे भोयणजाए बहुउज्झियधम्मिए तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा जाव सिंबलथालगं वा अफासुअं जाव नो पडिगाहिज्जा १॥ से भिक्खू वा २, से जं पुण जाणिज्जा बहुअट्ठियं वा मंसं वा मच्छं वा बहुकंटयं अस्सिं खलु पडिगाहितंसि अप्पे सिया भोयणजाए बहुउज्झियधम्मिए तहप्पगारं बहुअट्ठियं वा मंसं वा मच्छं वा बहुकटयं वा लाभे संते जाव नो पडिगाहिज्जा २। से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया णं परो बहुअट्ठिएणं मंसेण वा मच्छेण

वा उवनिमंतिज्जा—आउसंतो समणा ! अभिकंखसि बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए ? एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा (२) नो खलु मे कप्पइ बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहिगत्तए अभिकंखसि मे दाउं जावइयं तावइयं पुग्गलं दलयाहि, मा य अट्ठियाइं ३। से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि बहुअट्ठियं मंसं परिभाइत्ता निहट्टु दलइज्जा ४। तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते जाव नो पडिगाहिज्जा ५। से आहच्च पडिगाहिए सिया तं नोहित्ति वइज्जा नो अणिहित्ति वइज्जा ६। से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा (२) अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे जाव संताणए मंसगं मच्छगं भुच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा (२) अहे झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय पमज्जिय परट्ठविज्जा ७॥सू०५८॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहे बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा १ । से आहच्च पडिगाहिए सिया तं च नाइदूरगए जाणिज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा (२) पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसोत्ति वा (२) इमं किं ते जाणया दिन्नं उयाहु अजाणया २ । से य भणिज्जा—नो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया दिन्नं, कामं खलु आउसो ! इयाणिं निसिरामि, तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं तं परेहिं समणुन्नायं समणुसट्ठं तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा ३ । जं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए वा साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया, तेसिं अणुप्पयायव्वं सिया, नो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्नं कीरइ तहेव कायव्वं सिया ४ । एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि ५ ॥सू० ५९॥

॥ इति दशम उद्देशकः ॥२-१-१-१०॥

॥ अध्ययनं-१ :: उद्देशकः-११ ॥

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह से य भिक्खू नो भुंजिज्जा तुमं चेव णं भुंजिज्जासि, से एगइओ भोक्खामि त्ति कट्टु पलिउंचिय (२) आलोइज्जा, तं जहा-इमे पिंडे इमे लोए इमे तित्ते इमे कडुयए इमे कसाये इमे अंबिले इमे महुरे, नो खलु इत्तो किंचि गिलाणस्स सयइत्ति माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा १। तहाठियं आलोइज्जा जहाठियं गिलाणस्स सयइत्ति, तं तित्तयं तित्तएत्ति वा कडुयं कडुयं कसायं कसायं अंबिलं अंबिलं महुरं महुरं त्ति वा २ ॥सू० ६०॥ भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु-समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से य भिक्खू गिलाइ से हंदह णं तस्स आहरह, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा आहारिज्जा, से णं नो खलु मे अंतराए आहरिस्सामि, इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म ॥सू० ६१॥ अह भिक्खू जाणिज्जा सत्तपिंडेसणाओ सत्त पाणेसणाओ-तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा-असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते, तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा मत्तेण वा असणं वा (४) सयं वा णं जाइज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं पडिगाहिज्जा, पढमा पिंडेसणा १॥ अहावरा दुच्चा पिंडेसणा-संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, तहेव दुच्चा पिंडेसणा २॥ अहावरा तच्चा पिंडेसणा-इह खलु पाइणं वा (४) संतेगइया सड्ढा भवंति-गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं अन्नयरेसु विरूवरूवेसु भायणजाएसु उवनिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा-थालंसि वा पिढरंसि वा सरगंसि वा परगंसि वा वरगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा-असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे मत्ते, से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहिए वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसोत्ति वा भगिणि त्ति वा, एएण तुमं असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेणं संसट्ठेण

वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण असिंस पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा निहट्टु उचित्तु दलयाहि तहप्पगारं भोयणजायं सयं वा णं जाइज्जा परो वा देज्जा, फासुयं जाव पडिगाहिज्जा, तइया पिंडेसणा ३ ॥ अहावरा चउत्था पिण्डेसणा–से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा असिंस खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा सयं वा णं जाइज्जा जाव पडिगाहिज्जा, चउत्था पिंडेसणा ४ ॥ अहावरा पंचमा पिंडेसणा–से भिक्खू वा (२) उग्गहियमेव भोयणजायं जाणिज्जा, तं जहा–सरावंसि वा डिंडिमंसि वा कोसगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे, तहप्पगारं असणं वा (४) सयं वा णं जाएज्जा जाव पडिगाहिज्जा, पंचमा पिंडेसणा ५ ॥ अहावरा छट्ठा पिंडेसणा–से भिक्खू वा (२) पग्गहियमेव भोयणजायं जाणिज्जा, जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पायपरियावन्नं तं पाणिपरियावन्नं फासुयं पडिगाहिज्जा; छट्ठा पिंडेसणा ६ ॥ अहावरा सत्तमा पिंडेसणा–से भिक्खू वा (२) जाव समाणे बहुउज्झियधम्मियं भोयणजायं जाणिज्जा, जं चऽन्ने बहवे दुपयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिविणवणीमगा नावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं भोयणजायं सयं वा णं जाइज्जा परो वा से दिज्जा जावए फासुअं पडिगाहिज्जा, सत्तमा पिंडेसणा ७। इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ अहावराओ सत्त पाणेसणाओ ८। तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा–असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते, तं चेवं भाणियव्वं, नवरं चउत्थाए नाणत्तं ९-। से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तं जहा–तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा असिंस खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहिज्जा १० ॥सू० ६२॥ इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं सत्तण्हं पाणेसणाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे नो एवं वइज्जा—मिच्छा-

पडिवन्ना खलु एए भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने, जे एए भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ता णं विहरंति जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ता णं विहरामि सव्वेऽवि ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नुन्नसमाहिए, एवं च णं विहरंति, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जामि त्ति बेमि ॥सू० ६३॥

॥ इति एकादशम उद्देशकः ॥ २-१-१-११ ॥

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥श्रु० २-चू० १-अ०१॥

२ः शय्यैषणा-अध्ययनं २ :: उद्देशकः-१

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखिज्जा उवस्सयं एसित्तये अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेइज्जा १। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव अप्पसंताणयं तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा (३) चेइज्जा २। से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं (४) समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविए वा नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ३ ॥ एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ ४। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमए पगणिय (२) समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं ५ ॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, बहवे समणमाहणअतिहिकिविणवणीमए पगणिय (२) समुद्दिस्स पाणाइं (४) जाव चेएन्ति, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा (३) ६। अह पुणेवं

जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव सेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव चेइज्जा ७ ॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अस्संजए भिक्खुपडियाए कडिए वा उक्कंबिए वा छन्ने वा लित्ते वा घट्ठे वा मट्ठे वा संमट्ठे वा संपधूमिए वा तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेइज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव आसेविए पडिलेहित्ता २, तओ चेइज्जा ८ ॥सू० ६४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं संथारिज्जा बहिया वा निन्नक्खु तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए ठाणं वा (३) चेइज्जा, अह पुणेवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता, तओ संजयामेव जाव चेइज्जा १ । से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, अस्संजए भिक्खुपडियाए उदग्गप्पसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरइ बहिया वा निणक्खू तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव नो ठाणं वा (३) चेइज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव चेइज्जा २ । से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूखलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ बहिया वा निणक्खू तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइज्जा ३। अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकरे जाव चेइज्जा ४ ॥सू० ६५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, तंजहा-खंधंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मियतलंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, नन्नत्थ आगाढाणागाढेहिं कारणेहिं ठाणं वा (३) नो चेइज्जा १। से आहच्च चेइए सिया नो तत्थ सीओ-

दगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, हत्थाणि वा पायाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा मुहं वा उच्छोलिज्ज वा पहोइज्ज वा, नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा वंतं वा पित्तं वा पूयं वा सोणियं वा अन्नयरं वा सरीरावयवं वा २ । केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलिज्ज वा पवडेज्ज वा ३ । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नयरं वा कायंसि इंदियजालं लूसिज्ज वा पाणाणि वा (४) अभिहणिज्ज वा जाव ववरोविज्ज वा ४। अथ भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ५ ॥सू० ६६॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा सइत्थियं सखुड्डं सपसुभत्तपाणं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा १। आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा विसूइया वा छड्डी वा उव्वाहिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुपज्जिज्जा, अस्संजए कलुणपडियाए तं भिक्खुस्स गायं तिल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा अब्भंगिज्ज वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण वा कक्केण वा लुद्देण वा वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसिज्ज वा पघंसिज्ज वा उव्वलिज्ज वा उवट्टिज्ज वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा (पहोएज्ज वा) पक्खालिज्ज वा सिणाविज्ज वा सिंचिज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा उज्जालित्ता कायं आयाविज्जा वा पयावेज्जा वा २। अह भिक्खूणं पुव्वोपइट्ठा एस पतिन्ना जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ३ ॥सू० ६७॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा पचंति वा (बंधन्ति वा पचंति वा वहन्ति वा) रुंभंति वा उद्दविंति वा, अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं नियंछिज्जा,

एए खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा अक्कोसंतु जाव मा वा उद्दविंतु; अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पइन्ना जाव जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ॥सू० ६८॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावई अप्पणो सयट्ठाए अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा विज्झविज्ज वा १। अह भिक्खू उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालिंतु वा मा वा पज्जालितु, अविज्झविंतु वा मा वा विज्जविंतु २। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ३ ॥सू० ६९॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइहि सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा गुणे वा मणी वा मुत्तिए वा हिरण्णेसु वा सुवण्णेसु वा कडगाणि वा तुडियाणि वा तिसराणि वा पालंबाणि वा हारे वा अद्धहारे वा एगावली वा कणगावली वा मुत्तावली वा रयणावली वा तरुणीयं वा कुमारिं अलंकियविभूसियं पेहाए, १। अह भिक्खू उच्चावयं मणं नियच्छेज्जा, एरिसिया वा सा नो वा एरिसिया-इय वा बूया इय वा णं मणं साइज्जा २। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सये नो ठाणं वा जाव चेइज्जा ३ ॥सू० ७०॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइणीओ वा गाहावइधूयाओ वा गाहावइ सुण्हाओ वा गाहावइधाईओ वा गाहावइदासीओ वा गाहावइकम्मकरीओ वा तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवन्तो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टित्तए, जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टाविज्जा पुत्तं खलु सा लभिज्जा उयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं संपराइयं आलोयणदरसणिज्जं, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तासिं च णं अन्नयरी सड्ढी तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणधम्मपडियारणाए आउट्टाविज्जा १। अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए

ना ठाणं वा (३) चेइज्जा २। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि ३ ॥सू० ७१॥

॥ इति प्रथम उद्देशकः ॥२-१-२-१॥

॥ अध्ययनं- २ :: उद्देशकः-२ ॥

गाहावइ नामेगे सुइसमायारा भवंति, से भिक्खू य असिणाणाए मोय-समायारे से तग्गंधे दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, जं पुव्वं कम्मं तं पच्छा कम्मं, जं पच्छा कम्मं तं पुरे कम्मं, तं भिक्खुपडियाए वट्टमाणा करिज्जा वा नो करिज्जा वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव ज तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा (२) जाव चेइज्जा ॥सू० ७२॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइहिं सद्धिं संवसमाणस्स इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवे भोयणजाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खुपडियाए असणं वा (४) उवक्खडिज्ज वा उवकरिज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखिज्जा भुत्तए वा पायए वा वियट्टित्तए वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव जं नो तहप्पगारे उवस्सए ठाणं वा (३) चेइज्जा ॥सू० ७३॥ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संवसमाणस्स इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्नपुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदिज्ज वा किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पज्जालेज्ज वा तत्थ भिक्खू अभिकंखिज्जा आयावित्तए वा पयावित्तए वा वियट्टित्तए वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव जं नो तहप्पगारे उवस्सए ठाणं वा (३) चेइज्जा ॥सू० ७४॥ से भिक्खू वा (२) उच्चारपासवणेण उव्वाहिज्जमाणे राओ वा वियाले वा गाहावइकुलस्स दुवारबाहं अवंगुणिज्जा, तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसिज्जा, तस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ एवं वइत्तए—अयं तेणो पविसइ वा नो वा पविसइ, उवल्लियइ वा नो वा

उवल्लियइ, आवयइ वा नो वा आवयइ, वयइ वा नो वा वयइ, तेण हडं अन्नेण हडं तस्स हडं अन्नस्स हडं अयं तेणो अयं उवचरए अयं हंता अयं इत्थमकासी, तं तवस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणंति संकइ, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव नो ठाणं वा (२) चेइज्जा ॥सू० ७५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा (३) चेइज्जा १ । से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा अप्पंडे जाव चेइज्जा २ ॥सू० ७६॥ से आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अभिक्खणं २ साहम्मिएहिं उवयमाणेहिं नो उवइज्जा ॥सू० ७७॥ से आगंतारेसु वा (४) जे भयंतारो उडु(उ)बद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवाइणित्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो संवसंति, अयमाउसो ! कालाइक्कंतकिरियावि भवति १ ॥ ॥सू० ७८॥ से आगंतारेसु वा (४) जे भयंतारो उडु(उ)बद्धियं वासावासियं वा कप्पं उवाइणावित्ता तं दुगुणा दु(ति)गुणेण वा अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो संवसंति अयमाउसो ! उवट्ठाणकिरिया यावि भवति २ ॥सू० ७९॥ इह खलु पाइणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवइ, तं सद्दहमाणेहिं पत्तियमाणेहिं रोयमाणेहिं बहवे समण—माहण—अतिहि—किवणवणीमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा आयतणाणि वा देवकुलाणि वा सहाओ वा पवाणि वा पणियगिहाणि वा पणियसालाओ वा जाणगिहाणि वा जाणसालाओ वा सुहाकम्मंताणि वा दब्भकम्मंताणि वा वद्धकम्मंताणि वा वक्कयकम्मंताणि वा वणकम्मंताणि वा इंगालकम्मंताणि वा कट्ठकम्मंताणि सुसाणकम्मंताणि वा सुण्णागार-गिरिकंदर-संतिसेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा भवणगिहाणि वा, जे भयंतारो

तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा तेहिं उवयमाणेहिं उवयंति अयमाउसो ! अभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ३ ॥सू० ८०॥ इह खलु पाइणं वा (४) जाव रोयमाणेहिं बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणिमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि जाव भवणगिहाणि वा तेहि अणोवयमाणेहि उवयंति अयमाउसो ! अणभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ४॥ ॥सू० ८१॥ इह खलु पाइणं वा (४) जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसि भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए, से जाणि इमाणि अम्हं अप्पणो सयट्ठाए चेइयाइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवण-गिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सयट्ठाए चेइस्सामो; तंजहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अय-माउसो ! वज्जकिरियावि भवइ ५॥ ॥सू० ८२॥ इह खलु पाइणं वा (४) सतेग-इया सड्ढा भवंति, तेसिं च णं आयारगोयरे जाव तं रोयमाणेहि बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे पगणिय (२) समुद्दिस्स तत्थ (२) अगा-रीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, उवागच्छंति इयराइयरेहि पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो ! महावज्जकिरियावि भवइ ६ ॥सू० ८३॥ इह खलु पाइणं वा (४) संतेगइया जाव तं सद्दहमा-णेहिं तं पत्तियमाणेहि तं रोयमाणेहि बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे पगणिय (२) समुद्दिस्स तत्थ (२) अगाराइं चेइयाइं भवंति तंजहा—आएस-

णाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, जे भयंतारो तहप्पगाराणि आएस-णाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं, अयमाउसो ! सावज्जकिरिया यावि भवइ ७ ॥सू० ८४॥ इह खलु पाइणं वा (४) जाव तं रोयमाणेहिं एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ (२) अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तंजहा—आएसणाणि जाव गिहाणि वा महया पुढवीकाय-समारंभेण जाव महया तसकायसमारंभेण महया विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं, तंजहा छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ सीओदए वा परट्ठवियपुव्वे भवइ, अगणिकाये वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतरो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं, पाहुडेहिं वट्टंति दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! महासावज्जकिरिया यावि भवइ ८ ॥सू० ८५॥ इह खलु पाइणं वा जाव तं रोयमाणेहिं अप्पणो सयट्ठाए तत्थ (२) अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा-आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्जकिरिया यावि भवइ ९ ॥ एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव सया जएज्जासि त्ति बेमि ॥सू० ८६॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ २-१-२-२ ॥

॥ अध्ययनं-२ :: उद्देशक-३: ॥

से य नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे नो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ पिंडवाए-सणाओ, से य भिक्खू चरियारए ठाणरए निसीहियारए सिज्जासंथार-पिंडवाएसणारए, संति भिक्खुणो एवमक्खाइणो उज्जुया नियागपडिवन्ना

अमायं कुव्वमाणा वियाहिया, संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं निक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरेइ? हंता भवइ ॥सू० ८७॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा खुड्डियाओ खुड्डदुवारियाओ निययाओ संनिरुद्धाओ भवन्ति, तहप्पगारे उवस्सए राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा पुरा हत्थेण वा पच्छा पाएण वा तओ संजयामेव निक्खमिज्ज वा (२) १। केवली बूया आयाणमेयं, जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा मत्तए वा दंडए वा लट्ठिया वा भिसिया वा नालिया वा चेले वा चिलिमिली वा चम्मए वा चम्मकोसए वा चम्मछेयणए वा दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले भिक्खू य राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा (२) पयलिज्ज वा पवडेज्ज वा २। से तत्थ पयलमाणे वा पवडेमाणे वा हत्थं वा पायं वा जाव इंदियजायं वा लूसिज्ज वा पाणाणि वा (४) अभिहणेज्ज वा जाव ववरोविज्ज वा ३। अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठं जाव जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेण वा पच्छा पाएणं वा तओ संजयामेव निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ४॥सू० ८८॥ से आगंतारेसु वा अणुवीय उवस्सयं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समहिट्ठाए ते उवस्सयं अणुन्नविज्जा कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिन्नायं वसिस्सामो जाव आउसंतो! जाव आउसंतस्स उवस्सए जाव साहम्मियाइं ततो उवस्सयं गिण्हिस्सामो तेण परं विहरिस्सामो ॥सू० ८९॥ से भिक्खू वा (२) जस्सुवस्सए संवसिज्जा तस्स पुव्वामेव नामगुत्तं जाणिज्जा, तओ पच्छा तस्स गिहे निमंतेमाणस्स वा अनिमंतेमाणस्स वा असणं वा (४) अफासुयं जाव नो पडिगाहेज्जा ॥सू० ९०॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, ससागारियं सागणियं सउदयं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए जावऽणुचिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सेज्जं वा

निसीहियं वा चेइज्जा ॥सू० ११॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथए पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव चिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइज्जा ॥सू० १२॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, इह खलु गाहावई वा कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति वा नो पन्नस्स जाव चिंताए सेवं नच्चा तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा जाव चेइज्जा ॥सू० १३॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा इह खलु गाहावई वा कम्मअरीओ वा अन्नमन्नस्स गायं तिल्लेण वा नवनीएण वा घएण वा वसाए वा अब्भंगेति वा मक्खेति वा नो पण्णस्स जाव चिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा जाव चेइज्जा ॥सू० १४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा-इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अन्नमन्नस्स गायं सिणाणेण वा कक्केण वा लुद्धेण वा (वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा उव्वलंति वा उव्वट्टिंति वा) नो पन्नस्स निक्खमण जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा जाव चेइज्जा ॥सू० १५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, इह खलु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिंति वा पहोयंति वा सिंचंति वा सिणावंति वा नो पन्नस्स जाव नो ठाणं वा जाव चेइज्जा ॥सू० १६॥ से भिक्खू वा वा से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा निगिणा ठिया निगिणा उल्लीणा मेहुणधम्मं विन्नविंति रहस्सियं वा मंतं मंतंति नो पन्नस्स जाव नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ॥सू० १७॥ से भिक्खू वा (२) से ज पुण उवस्सयं जाणिज्जा आइन्नसंलिक्खं नो पन्नस्स जाव चिंताए जाव नो ठाणं वा (३) चेइज्जा ॥सू० १८॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा संथारगं एसित्तए, से जं पुण संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव

ससंताणयं, तहप्पगारं संथारं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण संथारयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव संताणगगरुयं तहप्पगारं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण संथारयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव संताणयं लहुयं अपाडिहारियं तहप्पगारं नो पडिगाहिज्जा ३॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण संथारगं जाणिज्जा, अप्पंडं जाव अप्पसंताणगं लहुअं पाडिहारिअं नो अहाबद्धं तहप्पगारं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ४ ॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण संथारगं जाणिज्जा अप्पंडं जाव संताणगं लहुअं पाडिहारिअं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारगं लाभे संते पडिगाहिज्जा ५ ॥सू० ९९॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम–अह भिक्खू जाणिज्जा इमाइं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा–से भिक्खू वा (२) उद्दिसिय (२) संथारगं जाइज्जा, तंजहा– इक्कडं वा कढिणं वा जंतुयं वा परगं वा मोरगं वा तणगं वा सोरगं वा कुसं वा कुच्चगं वा पिप्पलगं वा पलालगं वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा--आउसोत्ति वा भइणीत्ति वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं संथारगं ? तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाइज्जा, परो वा देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा, पढमा पडिमा ॥ १ ॥सू० १००॥ अहावरा दुच्चा पडिमा--से भिक्खू वा (२) पेहाए संथारगं जाइज्जा, तंजहा–गाहावइं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसो त्ति वा भइणी त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं संथारगं ? तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा, फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा, दुच्चा पडिमा २ ॥ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा (२) जस्सुवस्सए संवसिज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए, तंजहा--इक्कडे इ वा जाव पललेइ वा तस्स लाभे संवसिज्जा तस्सालाभे उक्कुडुए वा नेसज्जिए वा विहरिज्जा, तच्चा पडिमा ३ ॥सू० १०१॥ अहावरा चउत्था पडिमा--से भिक्खू वा (२) अहासंथडमेव संथारगं जाइज्जा,

तंजहा—पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव, तस्स लाभे संते संव-सिज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा (२) विहरिज्जा, चउत्था पडिमा ४ ॥सू० १०२॥ इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अन्नोऽन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥सू० १०३॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए, से जं पुण संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्पगारं संथारगं नो पच्चप्पिणिज्जा ॥सू० १०४॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए से जं पुण संथारगं जाणिज्जा, अप्पंडं तहप्पगारं जाव संताणगं संथारगं पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) आयाविय (२) विहुणिय (२) तओ संजयामेव पच्चप्पिणिज्जा ॥सू० १०५॥ से भिक्खू वा (२) समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव पन्नस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहिज्जा, केवली बूया आयाणमेयं-अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, से भिक्खू वा (२) राओ वा वियाले वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलिज्ज वा पवडेज्ज वा से तत्थ पयलमाणे वा (२) हत्थं वा पायं वा जाव लूसेज्ज वा पाणाणि वा (४) जाव ववरोविज्जा; अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव जं पुव्वामेव पन्नस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहिज्जा ॥सू० १०६॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा सिज्जासंथारगभूमिं पडिलेहित्तए नन्नत्थ आयरियेण वा उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेएण वा बालेण वा वुड्ढेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आएसेण वा अंतेण वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा निवाएण वा, तओ संजयामेव पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) तओ संजयामेव बहुफासुयं सिज्जासंथारगं संथरिज्जा ॥सू० १०७॥ से भिक्खू वा (२) बहुफासुयं सेज्जा संथारगं संथरित्ता अभिकंखिज्जा बहुफा-सुए सिज्जासंथारए दुरूहित्तए ॥ से भिक्खू (२) बहुफासुए सेज्जासंथारए दुरूहमाणे से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय (२) तओ संज-

यापेव बहुफासुए सेज्जासंथारगे दुरूहित्ता तत्रो संजयामेव, बहुफासुए सेज्जासंथारए सइज्जा ॥सू० १०८॥ से भिक्खू वा (२) बहुफासुए सेज्जा-संथारए सयमाणे नो अन्नमन्नस्स हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा से अणासायमाणे तत्रो संजयामेव बहुफासुए सिज्जासंथारए सइज्जा ॥ से भिक्खू वा (२) उस्सासमाणे वा नीसासमाणे वा कासमाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे वा उड्डोए वा वायनिसग्गं वा करेमाणे पुव्वामेव आसयं वा पोसयं वा पाणिणा परिपेहित्ता तत्रो संजयामेव ऊससिज्जा वा जाव वायनिसग्गं वा करेज्जा ॥सू० १०९॥ से भिक्खू वा (२) समा वेगया सिज्जा भविज्जा, विसमा वेगया सिज्जा भविज्जा, पवाया वेगया सिज्जा भविज्जा, निवाया वेगया सिज्जा भविज्जा, ससरक्खा वेगया सिज्जा भविज्जा, अप्पससरक्खा वेगया सिज्जा भविज्जा, सदंसम-सगा वेगया सिज्जा भविज्जा, अप्पदंसमसगा वेगया सिज्जा भविज्जा, सपरि-साडा वेगया सिज्जा भविज्जा, अपरिसाडा वेगया सिज्जा भविज्जा, सउवसग्गा वेगया सिज्जा भविज्जा, निरुवसग्गा वेगया सिज्जा भविज्जा, तहप्पगाराहिं सिज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहियतरागं विहारं विहरिज्जा नो किंचिवि गिलाइज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जए त्ति बेमि ॥सू० ११०॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ २-१-२-३ ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ श्रु०२-चू०१-अ०२ ॥

॥ ३ः ईर्या-अध्ययनं ३ :: उद्देशकः १ ॥

अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे बहवे पाणा अभिसंभूया बहवे बीया अहुणाभिन्ना अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया जाव ससंता-णगा अणभिक्कंता पंथा, नो विन्नाया मग्गा, सेवं नच्चा नो गामाणुगामं दूइज्जिज्जा, तत्रो संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा ॥सू० १११॥ से

भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा नो महई विहारभूमी नो महई वियारभूमी नो सुलभे पीढफलगसिज्जासंथारगे नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे जत्थ बहवे समणमाहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य अच्चाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणे जाव चिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा नो वासावासं उवल्लिइज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव वा महई विहारभूमी महई वियारभूमी सुलभे जत्थ पीढफलग-सिज्जासंथारगे सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे नो जत्थ बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा उवागया उवागमिस्संति वा अप्पाइना वित्ती जाव रायहाणिं वा तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा ॥सू० ११२॥ अह पुणेवं जाणिज्जा—चत्तारि मासा वासावासाणं वीइक्कंता हेमंताण य पंचदसरायकप्पे परिवुसीए, अंतरा से मग्गे बहुपाणा जाव ससंताणगा नो जत्थ बहवे जाव उवागमिस्संति, सेवं नच्चा नो गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ अह पुणेवं जाणिज्जा—चत्तारि मासा वासावासाण वीईक्कंता, हेमंताणं य पंचदसराय कप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे अप्पंडा जाव ससंताणगा बहवे जत्थ समणमाहण-अतिहिकवणवणीगा उवागया उवागमिस्संति, सेवं नच्चा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्ज ॥सू० ११३॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायाए(यं) पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा, वितिरिच्छं वा कट्टु पायं रीइज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १ ॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा उदए वा मट्टिआ वा अविद्धत्थे सइ परक्कमे जाव नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं

दूइज्जिज्जा ॥सू० ११४॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दुइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिगाणि दसुगाययाणि मिलक्खूणि अणायरियाणि दुसन्नप्पाणि दुप्पन्नवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोइणि सइ लाढे विहाराए संथरमाणेहिं जाणवएहि नो विहारवडियाए(वत्तियाए) पवज्जिज्जा गमणाए १। केवली बूया-आयाणमेयं, तेणं बाला अयं तेणे अयं उवचरए अयं ततो आगएत्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसिज्ज वा जाव उद्दविज्ज वा वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंच्छणं अच्छिंदिज्ज वा भिंदिज्ज वा वा अवहरिज्ज वा परिट्ठविज्ज वा २। अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगाराइं विरूवरूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायत्तणाणि जाव विहारवत्तियाए नो पवज्जिज्ज वा गमणाए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥सू० ११५॥ से भिक्खू वा (२) दूइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा गणारायाणि वा जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विरुद्धरज्जाणि वा सइ लाढे विहाराए संथरमाणेहि जणवएहिं नो विहारवडियाए पवज्जेज्ज गमणाए; केवली बूया आयाणमेयं, ते णं बाला अयं तेणे तं चेव जाव गमणाए तओ संजयामेव गामाणुगामं, दूइज्जिज्जा ॥सू० ११६॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा एगाहेण वा दुआहेण वा तिआहेण वा चउआहेण वा पंचाहेण वा पाउणिज्ज वा नो पाउणिज्ज वा तहप्पगारं विहं अणेगायगमणिज्जं सइ लाढे जाव गमणाए, केवली बूया आयाणमेयं, अंतरा से वासे सिया पाणेसु वा पणएसु वा बीएसु वा हरिएसु- वा उदएसु वा मट्टियाए वा अविद्धत्थाए, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा जाव ज तहप्पगारं अणेगाहगमणिज्जं जाव नो पवज्जेज्ज गमणाए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥सू० ११७॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से नावासंतारिमे उदए सिया, से जं पुण नावं जाणिज्जा, असंजए अ भिक्खुपडियाए किणिज्ज वा पामिचेज्ज वा नावाए नावं परि-

णामं कट्टु थलाओ वा नावं जलंसि ओगाहिज्जा जलाओ वा नावं थलंसि उक्कसिज्जा पुरणं वा नावं उस्सिंचिज्जा सन्नं वा नावं उप्पीलाविज्जा तहप्पगारं नावं उड्ढगामिणिं वा अहेगामिणिं तिरियगामिणिं परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्पतरे वा भुज्जतरे वा नो दूरुहिज्जा गमणाए १। से भिक्खू वा (२) पुव्वामेव तिरिच्छसंपाइमं नावं जाणिज्जा, जाणित्ता से तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा २, भंडगं पडिलेहिज्जा २, एगओ भोयणभंडगं करिज्जा २, ससीसोवरियं कायं पाए पमज्जिज्जा सागारं भत्तं पच्चक्खाइज्जा, एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ संजयामेव नावं दूरुहिज्जा २ ॥ सू० ११८॥ से भिक्खू वा (२) नावं दुरुहमाणे नो नावाए पुरओ दुरुहिज्जा नो नावाए अग्गओ दुरुहिज्जा नो नावाए मज्झओ दुरुहिज्जा नो बाहाओ पगिज्झिय (२) अंगुलियाए उद्दिसिय (२), ओणमिय (२), उन्नमिय (२), निज्झाइज्जा १। सेणं परो नावागओ नावागयं वइज्जा-आउसंतो समणा ! एयं ता तुमं नावं उक्कसाहि वा वुक्कसाहि वा खिवाहि वा रज्जूयाए वा गहाय आकसाहि, नो से तं परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणीओ उवेहिज्जा २। से णं परो नावागओ नावागय वइज्जा-आउसंतो समणा ! नो संचाएसि तुमं नावं उक्कसित्तए वा (३) रज्जूयाए वा गहाय आकसित्तए वा आहर एयं नावाए रज्जूयं सयं चेव णं वयं नावं उक्कसिस्सामो वा जाव रज्जूए वा गहाय आकस्सिसामो नो से तं परिन्नं परियाणेज्जा तुसिणीओ उवेहेज्जा ३। से णं परो नावागओ नावागयं वइज्जा आउसंतो समणा, एअं ता तुमं नावं आलित्तेण वा पीढएण वा वंसेण वा वलएण वा अवलुएण वा वाहेहि, नो से तं परिण्णं परिजाणिज्जा तुसिणीओ उवेहेज्जा ४। से णं परो नावागओ नावागयं वइज्जा, एयं ता तुमं नावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा नावाउस्सिंचणेण उस्सिंचाहि, नो से तं परिण्णं परिजाणिज्जा, से णं परो नावागओ नावा-

गयं वएज्जा आउसंतो समणा ! एयं तुमं नावाए उत्तिगं हत्थेण वा पाएण वा बाहुणा वा ऊरुणा वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा उस्सिचणेण वा चेलेण वा मट्टियाए वा कुसपत्तएण वा कुविंदएण वा पिहेहि, नो से तं परिणणं परिजाणिज्जा ५ । से भिक्खू वा (२) नावाए उत्तिगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवरिं नावं कज्जलावेमाणिं पेहाए नो परं उवसंकमित्तु एवं बूया—आउसंतो ! गाहावइ एयं ते नावाए उदयं उत्तिगेण आसवइ उवरुवरिं नावा वा कज्जलावेइ, एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा, अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे एगंतगएण अप्पाणं विउसेज्जा, समाहीए, तओ संजयामेव नावासंतारिमे उदए अहारियं रीइज्जा, ६ । एयं खलु जाव सया जइज्जा सि त्तिबेमि, ७ ॥सू० ११९॥

॥ इति प्रथम उद्देशकः ॥२-१-३-१॥

॥ अध्ययनं-३ :: उद्देशकः २ ॥

से णं परो णावागओ नावागयं वइज्जा—आउसंतो समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा गिणहाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा पज्जेहि, नो से तं परिणणं परिजाणिज्जा तुसिणीओ उवेहज्जा ॥सू० १२०॥ से णं परो नावागओ नावागयं वएज्जा-आउसंतो ! एस णं समणे नावाए भंडभारिए भवइ, से णं बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिविज्जा, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से य चीवरधारी सिया खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्ज वा निवेढिज्ज वा उप्फेसं वा करिज्जा १ । अह पुण एवं जाणिज्जा, अभिकंतकूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिविज्जा, से पुव्वामेव वइज्जा—आउसंतो गाहावइ ! मा मेत्तो बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं नावाओ उदगंसि ओगाहिस्सामि २ । से णेव

वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय उदयगंसि पक्खिविज्जा, तं नो सुमणो सिया नो दुम्मणो सिया नो उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, नो तेसिं बालाणं घायाए वहाए समुट्ठिज्जा अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव उदगंसि पवज्जिज्जा ३ ॥सू० १२१॥ से भिक्खू वा (२) उदगंसि पवमाणो नो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायणाए अणासायमाणो तओ संजयामेव उदगंसि पविज्जा १। से भिक्खू वा (२) उदगंसि पवमाणो नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करिज्जा, मा मेयं उदगं कन्नेसु वा अच्छीसु वा नक्कंसि वा मुहंसि वा परियावज्जिज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पविज्जा २ ॥ से भिक्खू वा (२) उदगंसि पवमाणो दुब्बलियं पाउणिज्जा खिप्पामेव उवहिं विगिंचिज्ज वा विसोहिज्ज वा, नो चेव णं साइज्जिज्जा ३ । अह पुण एवं जाणिज्जा, पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठिज्जा ४ ॥ से भिक्खू वा (२) उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं नो आमज्जिज्जा वा पमज्जिज्जा वा वा संलिहिज्जा वा निल्लिहिज्जा वा उव्वलिज्जा वा उवट्टिज्जा वा आयाविज्ज वा पयाविज्ज वा ५ । अह पुण एवं जाणिज्जा, विगओदओ मे काए छिन्नसिणेहे काए तहप्पगारं कायं आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ६ ॥सू० १२२॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणो नो परेहिं सद्धिं परिजविय (२) गामाणुगामं दूइज्जिज्जा, तओ संजयामेव गामानुगामं दूइज्जिज्जा ॥सू० १२३॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणो अंतरा से जंघासंतारिमे उदगे सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिज्जा २, एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदगंसि अहारियं रीएज्जा १ । ॥ से भिक्खू वा (२) जंघासंतारिमे अहा-

रियं रीयमाणे नो हत्थेण हत्थं पादेण वा पादं काएण वा कायं आसाएज्जा, से अणासाइए अणासायमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे नो सायावडियाए नो परिदाहपडियाए महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ३। अह पुण एवं जाणिज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएण दगतीरए चिट्ठिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२) उदउल्लं वा कायं ससिणिद्धं वा कायं नो आमज्जिज्ज वा नो पमज्जेज्ज वा ५। अह पुण एवं जाणिज्जा विगओदए मे काए छिन्नसिणेहे तहप्पगारं कायं आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ६ ॥सू० १२४॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो मट्टियागएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय (२), विकुज्जिय (२), विफालिय (२), उम्मग्गेण हरियवहाए गच्छिज्जा, जमेयं पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहिज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १। से भिक्खु वा (२), गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाहाणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा गड्डाओ वा दरीओ वा सइ परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जुयं गच्छेज्जा २। केवली बूया—आयाणं एयं, से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पवडेमाणे वा रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय (२) उत्तरिज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाइज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय (२) उत्तरिज्जा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ३ ॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं

दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि वा सगडाणि वा रहाणि वा सचक्काणि वा परचक्काणि वा से णं वा विरूवरूवं संनिरुद्धं पेहाए सइ परक्कमे संजयामेव नो उज्जुयं गच्छिज्जा, ४। से णं परो सेणागओ वइज्जा-आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिनिवारियं करेइ, से णं बाहाए गहाय आगसह, से णं परो बाहाहिं गहाय आगसिज्जा, तं नो सुमणे सिया जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ५ ॥सू० १२५॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिवहिया एवं वइज्जा—आउसंतो समणा ! केवइए एस गामे वा जाव रायहाणी वा केवइया इत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसंति, से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छिज्जा, एयप्पगराणि पसिणाणि पुट्ठे वा अपुट्ठे वा नो वागरिज्जा १। एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जि बेमि २ ॥सू० १२६॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ २-१-३-२ ॥

॥ अध्ययनं ३ :: उद्देशकः ३ ॥

से भिक्खू वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा जाव दरीओ वा जाव कूडागाराणि वा पासायाणि वा नूमगिहाणि वा रुक्खगिहाणि वा पव्वयगिहाणि वा रुक्खं वा चेइयकडं थुभं वा चेइयकडं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा नो बाहाओ पगिज्झिय (२), अंगुलिआए उद्दिसिय (२), ओणमिय (२), उन्नमिय (२), निज्झाइज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १। से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा नूमाणि वा वलयाणि वा गहणाणि वा गहणविदुग्गाणि वणाणि वा वणपव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि वा पव्वयगिहाणि वा, अगडाणि वा तलागाणि वा दहाणि वा नइओ वा

वावीओ वा पुक्खरिणीओ वा दीहियाओ वा गुंजालियाओ वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा नो बाहाओ पगिज्झिय (२); जाव निज्झाइज्जा २। केवली बूया आयाणमेयं, जे तत्थ मिगा वा पसू वा पक्खी वा सरीसिवा वा सीहा वा जलचरा वा थलचरा वा खहचरा वा सत्ता ते उत्तसिज्ज वा वित्तसिज्ज वा वाडं वा सरणं वा कंखिज्जा, चारित्ति मे अयं समणे ३। अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा पतिराणा जं नो बाहाओ पगिज्झिय (२) निज्झाइज्जा; तओ संजयामेव आयरिउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ४ ॥सू० १२७॥ से भिक्खू वा (२) आयरिउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो आयरियउवज्झायस्स हत्थेण वा हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरिउवज्झाएहिं सद्धिं जाव दूइज्जिज्जा १॥ से भिक्खू वा आयरियउवज्झाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिपाहिया से एवं वइज्जा—आउसंतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा गच्छिहिह ?, जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासिज्ज वा वियागरिज्ज वा, आयरिउवज्झायस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतराभासं करिज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा २। से भिक्खू वा (२) अहाराइणियं गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो राइणियस्स हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव अहाराइणियं गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ३। से भिक्खू वा (२) अहाराइणिअं गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वइज्जा—आउसंतो ! समणा ! के तुब्भे ?, जे तत्थ सव्वराइणिए से भासिज्ज वा वागरिज्ज वा, रायणियस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतरा भासं भासिज्जा, तओ संजयामेव अहाराइणियाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ४॥ ॥सू० १२८॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं

वइज्जा---आउसंतो समणा ! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह, तंजहा-मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खिं वा सरीसिवं वा जलयरं वा से आइक्खह दंसेह, तं नो आइक्खिज्जा नो दंसिज्जा, नो तस्स तं परिन्नं परिजाणिज्जा, । तुसिणीए उवेहिज्जा, जाणं वा नो जाणंति वइज्जा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १ । से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वइज्जा---आउसंतो समणा ! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह उदग-पसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया उदगं वा संनिहियं अगणिं वा संनिखित्तं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वइज्जा-आउसंतो समणा ! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह जवसाणि वा जाव से णं वा विरूवरूवं संनिविट्ठं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ३॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा पाडिपहिया एवं वइज्जा-आउसंतो समणा ! केवइए इत्तो गामे वा जाव रायहाणिं वा से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२), गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया एवं वइज्जा-आउसंतो समणा ! केवइ ए इत्ता गामस्स नगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे से आइक्खह, तहेव जाव दूइज्जिज्जा ५॥ ॥सू० १२१॥ से भिक्खू (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से गोणं वियालं पडिवहे पेहाए जाव चित्तचिल्लडं वियालं पडिपहे पेहाए नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा, नो मग्गाओ उम्मग्गं संकमिज्जा, नो गहणं वा वणं वा दुग्गं वा अणुपविसिज्जा, नो रुक्खंसि दूरुहिज्जा, नो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा, नो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखिज्जा, अप्पुसुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२)

गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवगरणपडियाए संपिंडिया गच्छिज्जा, नो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छिज्जा जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा २॥ ॥सू० १३०॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छिज्जा, ते णं आमोसगा एवं वइज्जा-आउसंतो समणा! आहर एयं वत्थं वा पायं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा, देहि निक्खिवाहि, तं नो दिज्जा निक्खिविज्जा, नो वंदिय (२) जाइज्जा, नो अंजलिं कट्टु जाइज्जा, नो कलुणपडियाए जाइज्जा, धम्मियाए जायणाए जाइज्जा, तुसिणीयभावेण वा उवेहिज्जा, ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं तिकट्टु अक्कोसंति वा जाव उद्दविंति वा वत्थं वा (४) अच्छिंदिज्ज वा जाव परिट्ठविज्ज वा, तं नो गामसंसारियं कुज्जा, नो रायसंसारियं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो गाहावइ! एए खलु आमोसगा उवगरणपडियाए सयं करणिज्जं तिकट्टु अक्कोसंति वा जाव परिट्ठवंति वा, एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जइज्जासि त्ति बेमि ॥सू० १३१॥

॥ इति तृतीयोद्देशकः ॥ २-१-३-३ ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ २-१-३ ॥

॥ ४: भाषाजात-अध्ययनं ४ :: उद्देशकः १ ॥

से भिक्खू वा (२) इमाइं वयायाराइं सुच्चा निसम्म इमाइं अणायाराइं अणारियपुव्वाइं जाणिज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजति, जे माणा वा, जे मायाए वा, जे लोभा वा वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति, सव्वं चेयं सावज्जं वज्जिज्जा विवेगमायाए, धुवं चेयं

जाणिज्जा, अधुवं चेयं जाणिज्जा, असणं वा (४) लभिय नो लभिय भुंजिय नो भुंजिय, अदुवा आगओ अदुवा नो आगओ, अदुवा एइ अदुवा नो एइ, अदुवा एहिइ अदुवा नो एहिइ, इत्थवि आगए इत्थवि नो आगए, इत्थवि एइ इत्थवि नो एति, इत्थवि एहिति इत्थवि नो एहिति १॥ अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, तंजहा—एगवयणं १, दुवयणं २, बहुवयणं ३, इत्थिवयणं ४, पुरिसवयणं ५, नपुंसगवयणं ६, अज्झत्थवयणं ७, उवणीयवयणं ८, अवणीयवयणं ९, उवणीय-अवणीयवयणं १०, अवणीयउवणीयवयणं ११, तीयवयणं १२, पडुप्पन्नवयणं १३, अणागयवयणं १४, पच्चक्खवयणं १५, परुक्खवयणं १६, से एगवयणं वइस्सामीति एगवयणं वइज्जा जाव परुक्खवयणं वइस्सामिति परुक्खवयणं वइज्जा, इत्थी वेस पुरिसो वेस नपुसगं वेस एयं वा चेयं अन्नं वा चेयं अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, इच्चेयाइं आययणाइं उवातिकम्म २॥ अह भिक्खूणं जाणिज्जा चत्तारि भासज्जायाइं तंजहा—सच्चमेगं पढमं भासज्जायं १, बीयं मोसं २, तइयं सच्चामोसं ३, जं नेव सच्चं नेव मोसं नेव सच्चामोसं असच्चामोसं नाम तं चउत्थं भासजायं ४॥ से बेमि ३। जे अइया जे य पडुपन्ना जे अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा पन्नविंसु वा पराणव्वंति वा पराणविसंति वा ४, सव्वाइं च णं एयाइं अचित्ताणि वराणमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चओवचइयाइं विप्परिणामधम्माइं भवंतीति अक्खायाइं ५॥ ॥सू० १३२॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवीइक्कंता च णं भासिया भासा अभासा १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा जा य भासा सच्चा १, जा य भासा मोसा २, जा य भासा सच्चामोसा ३, जा य भासा असच्चमोसा ४, तह-

प्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अराहयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परियावणकरिं उद्दवणकरिं भूत्र्योवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा २॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण जाणिज्जा, जा य भासा सच्चा सुहुमा जा य भासा असच्चामोसा तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूत्र्योवघाइयं अभिकंख भासं भासिज्जा ३॥ ॥सू० १३३॥ से भिक्खू वा (२) पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा-होलित्ति वा गोलित्ति वा वसुलेत्ति कुपक्खेत्ति वा घडदासित्ति वा साणेत्ति वा तेणित्ति वा चारिएत्ति वा माइत्ति वा मुसावाइत्ति वा, एयाइं तुमं ते जणगा वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूत्र्योवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप्पडिसुणेमाणे एवं वइज्जा—अमुगे इ वा आउसोत्ति वा आउसंतारोत्ति वा सावगेत्ति वा उवासगेत्ति वा धम्मिएत्ति धम्मपिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणीमाणी नो एवं वइज्जा—होली इ वा गोलीति वा इत्थीगमेणं नेयव्वं ३॥ से भिक्खू वा (२) इत्थिं आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणी एवं वइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा भोइत्ति वा भगवइति वा साविगेति वा उवासिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मप्पिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ४॥ ॥सू० १३४॥ से भिक्खू वा (२) नो एवं वइज्जा-नभोदेवित्ति वा गज्जदेवित्ति वा विज्जुदेवित्ति वा पवुट्ठदेवेत्ति वा निवुट्ठदेवेत्ति वा पडउ वा वासं मा वा पडउ, निप्फज्जउ वा सस्सं मा वा निप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ वा मा जयउ, नो एयप्पगारं भासं भासिज्जा पन्नवं १। से भिक्खू वा (२) अंतलिक्खेत्ति वा गुज्झाणुचरिएत्ति वा संमुच्छिए वा निवइए वा पत्र्यो वइज्जा

वुड्ढवलाहगेत्ति वा २। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जइज्जासि त्तिबेमि ३ ॥सू० १३५॥

॥ इति प्रथम उद्देशकः ॥ २-१-४-१ ॥

॥ अध्ययनं-४ :: उद्देशकः- २ ॥

से भिक्खू वा (२) जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा गंडी गंडीति वा कुट्ठी कुट्ठीति वा जाव महुमेहुणीति वा हत्थच्छिन्नं हत्थच्छिन्नेत्ति वा एवं पायच्छिन्नेत्ति वा नक्कछिराणेइ वा कराणछिन्नेइ वा उट्ठछिन्नेति वा जेयावन्ने तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं बूइया (२) कुप्पंति माणवा ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख नो भासिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं एवं वइज्जा तंजहा- ओयंसी ओयंसित्ति वा, तेयंसी तेयंसीति वा, जसंसी जसंसीइ वा, वच्चंसी वच्चंसीइ वा, अभिरूयंसी (२), पडिरूवंसी (२) पासाइयं (२), दरिसणिज्जं दरिसणीयत्ति वा, जे यावन्ने तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाइं बुइया २ नो कुप्पंति माणवा तेयावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख भासिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा-वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा, तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा–सुक्कडे इ वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ३॥ से भिक्खू वा (२) जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा--वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा-आरंभकडे इ वा, सावज्जकडे इ वा, पयत्तकडे इ वा, पासाइयं पासाइए वा, दरिसणीयं दरिसणीयंति वा, अभिरूवं अभिरूवंति वा, पडिरूवं पडिरूवंति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ४॥ ॥सू० १३६॥ से भिक्खू वा (२) असणं वा (४) उवक्खडियं पेहाए, तहाविहं नो एवं वइज्जा तंजहा-

सुकडेत्ति वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२), असणं वा (४) उवक्खडियं पेहाय एवं वइज्जा, तंजहा-आरंभकडेत्ति वा सावज्जकडेत्ति वा पयत्तकडे इ वा, भद्दयं भद्देति वा ऊसढं ऊसढे इ वा, रसियं (२), मणुन्नं (२), एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा २॥ ॥सू० १३७॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा मिगं वा पसुं वा पक्खिं वा सरीसिवं वा जलचरं वा से तं परिवूढकायं पेहाए नो एवं वइज्जा—थूले इ वा पमेइले इ वा वट्टे इ वा वज्झे इ वा पाइमे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा १॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा जाव जलयरं वा सेत्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वइज्जा—परिवूढकाएत्ति वा उवचियकाएत्ति वा थिरसंघयणेत्ति वा चियमंससोणिएत्ति वा बहुपडिपुन्नइंदिइए-त्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) विरूवरूवाओ गाओ पेहाए नो एवं वइज्जा, तंजहा—गाओ दुज्झाओत्ति वा दम्मेत्ति वा गोरहत्ति वा वाहमत्ति वा रहजोग्गत्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ३॥ से भिक्खू वा (२) विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा—जुवंगवित्ति वा धेणुत्ति वा रसवइत्ति वा हस्से इ वा महल्ले इ वा महव्वए इ वा संवहणित्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ४॥ से भिक्खु वा (२) तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि वा रुक्खा महल्ले पेहाए नो एवं वइज्जा, तंजहा—पासायजोग्गात्ति वा तोरणजोग्गाइ वा गिहजोग्गाइ वा फलिहजोग्गाइ वा अग्गलजोग्गाइ वा नावाजोग्गाइ वा उदगजोग्गाइ वा दोणजोग्गाइ वा पीढ-चंगबेर-नंगलकुलिय-जंतलट्ठी-नाभि(लि)गंडीआसणजोग्गाइ वा सयणजाणउवस्सयजोगाइं वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ५॥ से भिक्खू वा (२) तहेव गंतुमुज्जाणाइं

पव्वयाणि वणाणि य रुक्ख महल्ला पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा—जाइमंता इ वा दीहवट्टा इ वा महालया इ वा पयायसाला इ वा विडिमसाला इ वा पासाइया इ वा जाव पडिरूवाति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ६॥ से भिक्खू वा (२) बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते नो एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा पायखज्जा इ वा, वेलोइया इ वा, टाला इ वा, वेहिया इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ७॥ से भिक्खू वा (२) बहुसंभूया वणफला अंबा पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा—असंथडा इ वा बहुनिवट्टिमफला इ वा बहुसंभूया इ वा भूयरुवित्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ८॥ से बहुसंभूया ओसही पेहाए तहावि ताओ न एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा, नीलीया इ वा, छवीइया इ वा, लाइमा इ वा, भज्जिमा इ वा बहुखज्जा इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ९॥ से भिक्खू वा (२) बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि एवं वइज्जा; तंजहा—रूढा इ वा, बहुसंभूया इ वा, थिरा इ वा, ऊसढा इ वा, गब्भिया इ वा, पसूया इ वा; ससारा इ वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा १०॥ ॥सू० १३८॥ से भिक्खू वा (२) तहप्पगाराइं सद्दाइं सुणिज्जा तहावि एयाइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—सुसद्दे त्ति वा, दुसद्दे त्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं नो भासिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा—सुसद्दं सुसद्दित्ति वा दुसद्दं दुसद्दित्ति वा एयप्पगारं असावज्जं जाव भासिज्जा, एवं रूवाइं किण्हेत्ति वा ५, गंधाइं सुरभि-गंधित्ति वा (२) रसाइं तित्ताणि वा (५) फासाइं कक्खडाणि वा (८) २॥ ॥सू० १३९॥ से भिक्खू वा (२) वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च अणुवीइ निट्ठाभासी निसम्मभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा ५॥ एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा जाव सया जइज्जासि त्तिबेमि ॥सू० १४०॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ २-१-४-२ ॥ ॥ इति चतुर्थमध्ययनं ॥२-१-४॥

॥५॥ वस्त्रैषणा–अध्ययनं–५ :: उद्देशकः–१ ॥

से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा वत्थं एसित्तए, से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, तं जहा जंगियं वा भंगियं वा साणियं वा पोत्तगं वा, खोमियं वा तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं वा जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारिज्जा नो बीयं, जा निग्गंथि सा चत्तारिसंघाडीओ धारिज्जा, एगं दुहत्थवित्थारं दो तिहत्थवित्थाराओ एगं चउहत्थवित्थारं, तहप्पगारेहि वत्थेहिं असंधिज्जमाणेहि, अह पच्छा एगमेगं संसिविज्जा ॥सू० १४१॥ से भिक्खू वा (२) परं अद्धजोयणमेराए वत्थपडियाए नो अभिसंधारिज्ज गमणाए ॥सू० १४२॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाई जहा पिंडेसणाए भाणियव्वं ॥ एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणा तहेव पुरिसंतरकडा जहा पिंडेसणाए ॥सू० १४३॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, असंजए भिक्खुपडियाए कीयं वा धोयं वा रत्तं वा घट्ठं वा मट्ठं वा संपधूमियं वा तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं जाव नो पडिग्गाहिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा, पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहिज्जा ॥सू० १४४॥ से भिक्खू वा (२) से जाइं पुण वत्थाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा–आइणगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणाणि वा आयाणि वा कायाणि वा खोमियाणि वा दुगुल्लाणि वा पट्टाणि वा मलयाणि वा पन्नुन्नाणि वा अंसुयाणि वा चीणंसुयाणि वा देसरागाणि वा अमिलाणि वा गज्जफलाणि वा फालियाणि वा कोयवाणि वा कंबलगाणि वा पावराणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं महद्धण-मुल्लाइं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा १। से भिक्खू वा (२) आइणपाउरणाणि वत्थाणि जाणिज्जा, तंजहा–उद्दाणि वा पेसाणि वा पेसलाणि वा किराहमिगाइणगाणि वा नीलमिगाईणगाणि वा गोरमि-

गाईणगाणि कणागाणि वा कणागकंताणि वा कणागपट्टाणि वा कणागखइयाणि वा कणागफुसियाणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणी वा (विगाणि वा) आभरणाणि वा आभरणविचित्ताणि वा, अन्नयराणि तहप्पगाराणि आईणपाउरणाणि वत्थाणि लाभे संते नो पडिग्गाहिज्जा-२ ॥सू० १४५॥ इच्चेइयाइं आयतणाइं उवाइकम्म अह भिक्खू जाणिज्जा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा, से भिक्खू वा (२) उद्देसिय, वत्थं जाइज्जा, तं जहा—जंगियं वा जाव तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाइज्जा, परो वा णं देज्जा, फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिगाहिज्जा, पढमा पडिमा १। अहावरा दुच्चा पडिमा से भिक्खू वा (२) पेहाए वत्थं जाइज्जा गाहावइ वा जाव कम्मकरी वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा २ दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं वत्थं ? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाइज्जा, परो वा देज्जा जाव फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिग्गाहिज्जा, दुच्चा पडिमा २। अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा (२) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, तंजहा अंतरिज्जं वा उत्तरिज्जं वा तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाइज्जा जाव पडिगाहिज्जा, तच्चा पडिमा ३। अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा (२) उज्झियधम्मियं वत्थं जाइज्जा जं चन्ने वहवे समण-माहण-अतिहि किवण वणीमगा नावकंखंति तहप्पगारं उज्झियधम्मियं वत्थं सयं वा णं जाइज्जा, परो वा से दिज्जा, फासुयं जाव पडिग्गाहिज्जा, चउत्था पडिमा ४।॥ इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं जहा पिंडेसणाए १॥ सिया णं एताए एसणाए एसमाणं परो वइज्जा—आउसंतो समणा ! इज्जाहि तुमं मासेण वा दसराएण वा पंचराएण वा सुते सुततरे वा तो ते वयं अन्नयरं वत्थं दाहामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणि त्ति वा, नो खलु मे कप्पइ एयप्पगारं संगारं पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं इयाणिमेव दलयाहि; से सेवं वयंतं परो वइज्जा—आउसंतो समणा ! अणुग-

च्छाहि तो ते वयं अन्नयरं वत्थं दाहामो, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउ-सोत्ति वा भइणि त्ति वा णो खलु मे कप्पइ संगारवयणे पडिसुणित्तए अभिकंखसि मे दाउं इयाणिमेव दलयाहि, से सेवं वयंतं परो नेया वइज्जा आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो, अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं (४) समारंभ समुद्दिस्स जाव चेइस्सामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पगारं वत्थं अफासुअं जाव नो पडिगाहिज्जा २॥ सिया णं परो नेता वइज्जा—आउसोत्ति वा (२) आहर एयं वत्थं सिणाणेण वा (४) जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा समणस्स णं दाहामो; एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भयणित्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा जाव पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं, एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा पघंसित्ता दलइज्जा तहप्पग्गारं वत्थं अफासुयं नो पडिगाहिज्जा ३। से णं परो नेत्ता वइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! आहर एयं वत्थं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, उच्छोलेत्ता वा पहोलेत्ता वा समणस्स णं दाहामो, एयप्पगारं निग्घोसं तहेव नवरं मा एयं तुमं वत्थं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेहि वा पहो-लेहि वा, अभिकंखसि, सेसं तहेव जाव नो पडिगाहिज्जा ४॥ से णं परो नेत्ता वत्थं निसिरिज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणि त्ति वा ! आहरेयं वत्थं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दाहामो, एयप्पगारं वत्थं निग्घोसं तहेव, नवरं मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव विसोहेहि, नो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहि-त्तए, से सेवं वयंतस्स परो जाव विसोहित्ता दलइज्जा, तहप्पग्गारं वत्थं अफासुअं जाव नो पडिगाहिज्जा ५॥ सिया से परो नेता वत्थं निसिरिज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणि त्ति वा ! तुमं चेव णं

संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जिस्सामि, केवली बूया आयाणमेयं-वत्थंतेण वद्धे सिया कुंडले वा गुणे वा हिरण्णे वा सुवण्णे वा मणी वा जाव रयणावली वा पाणे वा बीए वा हरिए वा, अह भिक्खू णं पुव्वोवइट्ठा जाव जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ६ ॥ ॥सू० १४६॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, सअंडं जाव ससंताणं तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा १। से भिक्खू वा (२) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, अप्पंडं जाव संताणगं अनलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जं तं न रुच्चइ तह अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा २॥ से भिक्खू वा (१) से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, अप्पंडं जाव संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं फासुयं जाव पडिगाहिज्जा ३। से भिक्खू वा (२) नो नवए मे वत्थेत्ति कट्टु नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा जाव पघंसिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२) नो नवए मे वत्थेत्ति कट्टु नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा तहेव सीओदगवियडेण वा (२) जाव पहोइज्जा ५॥ से भिक्खू वा (२) दुब्भिगंधे मे वत्थित्ति कट्टु नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा तहेव, बहुसीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा जाव पहोइज्जा ६॥ आलावओ ॥सू० १४७॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्ज वत्थं आयावित्तए वा पयावित्तए वा, तहप्पगारं वत्थं नो अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणाए आयाविज्ज वा पयाविज्ज वा (२) से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा वत्थं आयावित्तए वा पयावित्तए वा, तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा गिहेलुगंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा अन्नयरे तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले नो आयाविज्ज वा नो पयाविज्ज वा २ से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा आयावित्तए वा (२) तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि वा भित्तंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अन्नयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए जाव नो आयाविज्ज वा

पयाविज्ज वा ३॥ से भिक्खू वा (२) वत्थं अभिकंखेज्जा आयावित्तए वा पयावित्तए वा तहप्पगारं वत्थं खंधंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मियतलंसि वा अन्नयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खज्जाए जाव नो आयाविज्ज वा पयाविज्ज वा ४। से तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा (२), अहे झामथंडिल्लंसि वा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिल्लंसि पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) तओ संजयामेव वत्थं आयाविज्ज वा पयाविज्ज वा (५) एयं खलु तस्स जाव सया जइज्जासि त्ति बेमि ६॥ सू० १४८॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥२-१-५-१ ॥

॥ अध्ययन - ५ :: उद्देशकः-२ ॥

से भिक्खू वा (२) अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्जा नो धोइज्जा नो रएज्जा नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारिज्जा अपलिउंचमाणो गामंतरेसु ओमचेलिए, एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गिअं १॥ से भिक्खु वा गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइकुलं निक्खमिज्ज वा, पविसिज्ज वा, एवं बहिय विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा गामाणुगामं वा दूइज्जिज्जा, २। अह पुण एवं जाणिज्जा, तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहापिडेसणाए नवरं सव्वं चीवरमायाए ३। ॥सू० १४९॥ से एगइओ मुहुत्तगं (२) पाडिहारियं वत्थं जाइज्जा जाव एगाहेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण वा पंचाहेण वा विप्पवसिय (२) उवागच्छिज्जा नो तह वत्थं अप्पणो गिण्हिज्जा नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण वत्थपरिणामं करिज्जा, नो परं उवसंकमित्ता एवं वइज्जा—आउसंतो समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ? थिरं वा संतं नो पलिच्छिदिय (२) परट्ठविज्जा, तहप्पगारं वत्थं ससंधियं वत्थं तस्स चेव निसिरिज्जा नो णं साइज्जिज्जा १॥ से एगइयो एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि

वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं (२) जाव एगाहेण वा (५) विप्पवसिय (२) उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि नो अप्पणा गिराहंति, नो अन्नमन्नस्स दलयंति तं चेव जाव नो साइज्जंति, बहुवयणेणं भाणियव्वं, से हंता अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा (५) विप्पवसिय (२) उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं ममेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा २ ॥सू० १५०॥ से भिक्खू वा (२) नो वराणमंताइं वत्थाइं विवराणाइं करिज्जा, विवराणाइं न वराणमंताइं करिज्जा, अन्नं वा वत्थं लभिस्सामि त्तिकट्टु नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण वत्थपरिणामं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—आउसंतो समणा ! समभिकंखसि मे वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ! थिरं वा संतं नो पलिछिंदिय (२) परिट्ठविज्जा, जहा मेयं वत्थं पावगं परो मन्नइ, परं च णं अदत्तहारी पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स नियाणाय नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा, जाव अप्पुस्सुए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थपडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो समणा ! आहरेयं वत्थं देहि णिक्खिवाहि जहा रियाए णाणत्तं वत्थपडियाए ३। एयं खलु जाव सया जइज्जासि त्ति बेमि ४॥सू० १५१॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ २-१-५-२ ॥

॥ इति पंचममध्ययनम् ॥ २-१-५ ॥

॥ ६ : पात्रैषणा-अध्ययनं ६ :: उद्देशकः १ ॥

से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा पायं एसित्तए, से जं पुण पादं जाणिज्जा, तंजहा—अलाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा तहप्पगारं पायं जे निग्गंथे तरुणे जाव थिरसंघयणे से एगं पायं धारिज्जा नो बिईयं १॥ से भिक्खू वा (२) परं अद्धजोयणमेराए पायपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए २॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण पायं धरिज्जा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं (४) जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा, पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिय (२) तहेव ३॥ से भिक्खू वा (२) अस्सं-जए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणा वत्थेसणाऽऽलावओ ४॥ से भिक्खू वा (२) से जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा—अयपायाणि वा तउपायाणि वा तंबपायाणि वा सीसगपायाणि वा हिरण्णपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा रीरिअपायाणि वा हारपुडपायाणि वा मणिकायकंसपायाणि वा संखसिंगपायाणि वा दंतपायाणि वा चेलपायाणि वा सेलपायाणि वा चम्मपायाणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं मह-द्धणमुल्लाइं पायाइं अफासुयाइं जाव नो पडिगाहिज्जा ५ ॥१५१॥ से भिक्खू वा (२) से जाइं पुण पायाइं विरूवरूवाइं महद्धणबंधणाइं तंजहा—अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि वा, अन्नयराइं तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं अफासुयाइं जाव नो पडिगाहिज्जा १। इच्चेयाइं आयत्तणाइं उवाइकम्म अह भिक्खू जाणिज्जा चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा (२) उद्दिसिय (२) पायं जाएज्जा, तंजहा—अलाउयपायं वा ३ तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाइज्जा जाव पडिगाहिज्जा। पढमा पडिमा १। अहावरा दोच्चा पडिमा, से भिक्खु वा पेहाए पायं जाइज्जा, तंजहा—गाहावइं वा कम्मकरीं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भइणीत्ति वा ? दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पादं तंजहा—लाउयपायं वा ३, तहप्पगारं पायं सयं वा जाव पडि-

गाहिज्जा, दुच्चा पडिमा २ ॥ ग्रहावरा तच्चा पडिमा, से भिक्खू वा (२) से जं पुण पायं जाणिज्जा संगइयं वा वेजइयंतियं वा तहप्पगारं पायं सयं वा जाव पडिगाहिज्जा, तच्चा पडिमा ३ । ग्रहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा (२) उज्झियधम्मियं जाएज्जा जावऽन्ने बहवे समणा जाव नावकंखंति तहप्पगारं जाएज्जा जाव पडिगाहिज्जा, चउत्था पडिमा ४ । इच्चेइयाणं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं जहा पिंडेसणाए २॥ से णं एयाए एसणाए एसमाणं पासित्ता परो वइज्जा, आउसंतो समणा ! एज्जासि तुमं मासेण वा जहा वत्थेसणाए, से णं परो नेता वदेज्जा,—आउसोत्ति वा भइणीत्ति वा ? आहारेयं पायं तिल्लेण वा घएण वा नवनीएण वा वसाए वा अब्भंगित्ता वा तहेव सिणाणादि तहेव सीओदगाइं कंदाइं तहेव ३॥ से णं परो नेत्ता वदेज्जा—आउसंतो समणा ! मुहुत्तगं (२) जाव अच्छाहि ताव अम्हे असणं वा उवकरेंसु वा उवक्खडेंसु वा, तो ते वयं आउसो ? सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दाहामो, तुच्छए पडिग्गहे दिन्ने समणस्स नो सुट्ठु साहु भवइ, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणीत्ति वा ? नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा (४) भुत्तए वा; मा उवकरेहि मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा (४) उवकरित्ता उवक्खडित्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा४॥ सिया से परो उवणित्ता पडिग्गहगं निसिरिज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भइणीत्ति वा ? तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि २। केवली बूया आयाणमेयं, अंतो पडिग्गहगंसि पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पतिराणा जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा, सअंडाइं सव्वे आलावगा भाणियव्वा जहा वत्थेसणाए, नाणत्तं तिल्लेण वा घएण वा नवनीएण वा

वसाए वा सिणाणादि जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) तओ संजयामेव आमज्जिज्जा ६। एवं खलु जाव सया जएज्जा त्तिबेमि ७ ॥सू० १५२॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥२-१-६-१॥

॥ अध्ययनं-६ :: उद्देशकः-२॥

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठे समाणे पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं तओ संजयामेव, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा केवली बूया, आयाणमेयं ? अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा बीए वा हरिए वा परियावज्जिज्जा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पतिण्णा, जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं, तओ संजयामेव, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा २ ॥सू० १५३॥ से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया से परो आहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा, से य आहच्च पडिग्गहिए सिया खिप्पामेव उदगंसि साहरिज्जा, से पडिग्गहमायाए पाणं परिट्ठविज्जा, ससिणिद्धाए वा भूमिए नियमिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा पडिग्गहं नो आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा, अह पुण एवं जाणिज्जा, विगओदए मे पडिग्गहए छिन्नसिणेहे तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा २॥ से भिक्खू वा (२) गाहावाहकुलं, पविसिउकामे पडिग्गहमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा, एवं बहिया वियारभूमिं विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जिज्जा, तिव्वदेसीयाए जहा बिइयाए वत्थेसणाए नवरं इत्थ पडिग्गहे ३। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खु-

णीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएज्जासि त्तिबेमि ४ ॥ ॥सू० १५४॥

॥ इति द्वितीयोद्देशकः ॥ २-१-६-२॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ २--१--६ ॥

॥ ७ः अवग्रहप्रतिमा–अध्ययनं ७ :: उद्देशकः १ ॥

समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्तभोइ पावं कम्मं नो करिस्सामित्ति समुट्ठाए सव्वं भंते ? अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा नेव सयं अदिन्नं गिरिहज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिराहाविज्जा अदिन्नं गिराहंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जेहिंवि सद्धिं संपव्वइए तेसिंपि जाइं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय (२) अपमज्जिय (२) नो उग्गिगिहज्जा वा परिगिगिहज्ज वा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं जाइज्जा अणुन्नविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव उग्गिगिहज्ज वा परिगिगिहज्ज वा ॥सू० १५५॥ से आगंतारेसु वा (४) अणुवीइउग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ इसरे जे तत्थ समहिट्ठए ते उग्गहं अणुन्नविज्जा–कामं खलु आउसो० ? अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ? जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मियाए ताव उग्गहं उग्गिगिहस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो १॥ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए असणे वा (४) तेण ते साहम्मिया (३) उवनिमंतिज्जा, नो चेव णं परवडियाए ओगिज्झिय (२) उवनिमंतिज्जा २ ॥सू० १५६॥ से आगंतारेसु वा (४) जाव से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिआ अन्नसंभोइआ समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए पीढे वा फलए वा सिज्जा वा संथारए वा तेण ते साहम्मिए अन्नसंभोइए समणुन्ने उवनिमंतिज्जा नो चेव णं परवडियाए ओगिज्झिय उवनिमंतिज्जा १॥ से आगंतारेसु वा (४) जाव से किं पुण

तत्थुग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ गाहावइण वा गाहावइपुत्ताण वा सूई वा पिप्पलए वा कणणसोहणए वा नहच्छेयणए वा तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं जाइज्जा नो अन्नमन्नस्स दिज्ज वा अणुपइज्ज वा, सयंकरणिज्जंतिकट्टु २। से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा (२) पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे कट्टु भूमीए वा ठवित्ता इमं खलु इमं खलु त्ति आलोइज्जा, नो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणिज्जा ३ ।।सू० १५७।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए तहप्पगारं उग्गहं नो उगिगिहज्ज वा पगिगिहज्ज वा १।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा, थूणंसि वा (४) तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे जाव नो उगिगिहज्ज वा (२) २।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा, कुलियंसि वा (४) जाव नो उगिगिहज्ज वा (२) ३।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा खंधंसि वा अन्नयरे वा तहप्पगारे जाव नो उग्गहं उगिगिहज्ज वा (२) ४।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा ससागारियं सागणियं सउदयं सइत्थिं सक्खुड्डपसुभत्तपाणं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसे जाव धम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारे उवस्सए ससागारिए जाव सक्खुड्डपसुभत्तपाणे नो उवग्गहं उगिगिहज्ज वा (२) ५।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथे पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव सेवं नच्चा तहप्पगारे उवस्सए नो उग्गहं उगिगिहज्ज वा (२) ६।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा, इह खलु गाहावइ वा जाव कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा तहेव तिल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि निगिणाइ वा जहा सिज्जाए आलावगा, नवरं उग्गहवत्तव्वया ७।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण उग्गहं जाणिज्जा, आइन्नसंलिक्खे नो पन्नस्स जाव चिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो उग्गहं उगिगिहज्ज वा (२)

८॥ एवं खलु जाव सया जएज्जासि त्ति वेमि १॥ ॥सू० १५८॥

॥ इति प्रथमोद्देशकः ॥२-१-७-१॥

॥ अध्ययनं-७ :: उद्देशकः-२ ॥

से आगंतारेसु वा (४) अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ इसरे समाहिट्ठाए ते उग्गहं अणुन्नविज्जा कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मिआए ताव उग्गहं उग्गिरिहस्सामो तेण परं विहरिस्सामो ॥ से किं पुण तत्थ उग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा दंडए वा छत्तए वा जाव चम्मछेदणए वा तं नो अंतोहिंतो बाहिं नीणिज्जा बहियाओ वा नो अंतो पविसिज्जा, सुत्तं वा नो पडिबोहिज्जा, नो तेसि किंचिवि अप्पत्तियं पडिणीयं करिज्जा ॥ सू० १५१ ॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए जे तत्थ इसरे जे तत्थ समाहिट्ठाए, ते उग्गहं अणुजाणाविज्जा—कामं खलु जाव विहरिस्सामो, से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि अह भिक्खू इच्छिज्जा अंबं भुत्तए वा से जं पुण अंबं जाणिज्जा सअंडं ससंताणं तहप्पगारं अंबं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण अंबं जाणिज्जा अप्पंडं अप्पसंताणगं अतिरिच्छछिन्नं अव्वोच्छिन्नं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण अंबं जाणिज्जा, अप्पंडं वा जाव संताणगं तिरिच्छछिन्नं वुच्छिन्नं फासुयं पडिगाहिज्जा ३ ॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा, अंबभित्तगं वा अंबपेसियं वा अंबचोयगं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा भुत्तए वा पायए वा, से जं पुण जाणिज्जा अंबभित्तगं वा (५) सअंडं ससंताणं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा अंबं वा अंबभित्तगं वा अप्पंडं जाव

संताणगं अतिरिच्छछिन्नं वा अवोच्छिन्नं वा अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्ज ५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा अंबडालगं वा अप्पंडं वा (५) तिरिच्छच्छिन्नं वुच्छिन्नं फासुयं जाव पडिगाहिज्जा ६॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ इसरे जाव उग्गहंसि ७॥ अह भिक्खू इच्छिज्जा उच्छुं भुत्तए वा पायए वा, से जं उच्छुं जाणिज्जा सअंडं जाव नो पडिगाहिज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव, तिरिच्छछिन्नेऽवि तहेव ८॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण अभिकंखिज्जा अंतरुच्छुयं वा उच्छुगंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुत्तए वा पायए वा ९। से जं पुण जाणिज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं जाव नो पडिगाहिज्जा १०॥ से भिक्खू वा से जं पुण जाणिज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा अप्पंडं वा जाव नो पडिगाहिज्जा, अतिरिच्छछिन्नं॥ तहेव तिरिच्छछिन्नं पडिगाहिज्जा ११। से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा, ल्हसणवणं उवागच्छित्तए तहेव तिन्निवि आलावगा, नवरं ल्हसुणं १२॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा ल्हसुणं वा ल्हसुणकंदं वा ल्हसुणचोयगं वा ल्हसुणनालगं वा भुत्तए वा (२) से जं पुण जाणिज्जा लसुणं वा जाव लसुणबीयं वा सअंडं जाव नो पडिगाहिज्जा १३। एवं अतिरिच्छच्छिन्नेऽवि तिरिच्छछिन्ने जाव पडिगाहिज्जा ॥सू०१६०॥

से भिक्खू वा (२) आगंतारेसु वा (४) जावोग्गहियंसि जे तत्थ गाहावइण वा गाहावइपुत्ताण वा इच्चेयाइं आयत्तणाइं उवाइक्कम्म, अह भिक्खू जाणिज्जा, इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उग्गहं उग्गिण्हित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा–से आगंतारेसु वा (४) अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा जाव विहरिस्सामो पढमा पडिमा १। अहावरा दुच्चा पडिमा जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं उग्गिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं उग्गहे उग्गहिए उवल्लिसामि, दुच्चा पडिमा २। अहावरा तच्चा पडिमा-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–अहं च खलु अन्नेसिं

भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं उग्गिरिहस्सामि, अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए नो उवल्लिस्सामि, तच्चा पडिमा ३ । अहावरा चउत्था पडिमा-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—अहं च खलु अन्नेसि भिक्खूणं अट्ठाए नो उग्गहं उग्गिरिहस्सामि, अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए उवल्लिस्सामि, चउत्था पडिमा ४ । अहावरा पंचमा पडिमा-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए उग्गहं च उग्गिरिहस्सामि नो दुरहं नो तिराहं नो चउराहं, नो पंचराहं, पंचमा पडिमा ५ । अहावरा छट्ठा पडिमा-से भिक्खू वा (२) जस्स एव उग्गहे उवल्लिइज्जा, जे तत्थ अहासमन्नागए तं जहा-इक्कडे वा जाव पलाले वा तस्स लाभे संवसिज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा नेसज्जिओ वा विहरिज्जा, छट्ठा पडिमा ६ । अहावरा सत्तमा पडिमा-जे भिक्खू वा (२) अहासंथडमेव उग्गहं जाइज्जा, तंजहा--पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहा-संथडमेव तस्स लाभे संते संवसिज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा नेसज्जिओ वा विहरिज्जा, सत्तमा पडिमा ७ । इच्चेयासिं सत्तराहं पडिमाणं अन्नयरं जहा पिंडेसणाए ॥सू० १६१॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहे उग्गहे पन्नत्ते, तंजहा—देविंदउग्गहे १, रायउग्गहे २, गाहावइउग्गहे ३, सागारियउग्गहे ४, साहम्मियउग्गहे ५, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएज्जासि त्तिबेमि, उग्गहपडिमा सम्मत्ता ॥सू० १६२॥

॥ इति द्वितीय उद्देशकः ॥ २-१-७-२ ॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ २-१-७ ॥ मूलतः षोडशमध्ययनम् ॥१६॥

॥ इति प्रथमा चूला ॥ श्रु० २-चू० १ ॥

॥ २: सप्तसप्तिका-द्वितीया चूला ॥

॥ १: स्थान—अध्ययनं १ ॥

से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण ठाणं जाणिज्जा—सअंडं जाव समक्कडासंताणयं तं तहप्पगारं ठाणं अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा, एवं सिज्जागमेण नेयव्वं जाव उदयपसूयाइं ति १॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म (२) अह भिक्खू इच्छिज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए, तत्थिमा पढमा पडिमा॥ अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ (म्मिज्जा) सवियारं ठाणं ठाइस्सामि, पढमा पडिमा। अहावरा दुच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति, दुच्चा पडिमा। अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा अवलंबिज्जा नो काएण विपरिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति, तच्चा पडिमा। अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा अवलंबिज्जा नो काएण नो परक्कमाइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसमंसुलोमनहे संनिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामित्ति, चउत्था पडिमा। इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पग्गहियतरायं विहरिज्जा, नो किंचिवि वइज्जा २। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स जाव जइज्जासि त्तिबेमि ३ ॥सू० १६३॥ ठाणसत्तिक्कयं सम्मत्तं॥

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥ २ श्रु०-२ चू०-१ अ० आदितः ८ ॥

॥ :: निषीधिका--अध्ययनं २ ॥

से भिक्खू वा (२) अभिकंखिज्जा निसीहियं फासुयं गमणाए, से पुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंडं सपाणं जाव मक्कडसंताणयं तहप्पगारं अफासुयं लाभे संते नो चेइस्सामि १॥ से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा निसीहियं गमणाए, से पुण निसीहियं अप्पपाणं अप्पबीअं जाव संताणयं तहप्पगारं निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयव्वं जाव उदयप्पसूआइं २॥ जे तत्थ दुवग्गा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधारिंति निसीहियं गमणाए ते नो अन्नमन्नस्स कायं आलिंगिज्ज वा विलिंगिज्ज वा चुंबिज्ज वा दंतेहिं वा नहेहिं वा अच्छिदिज्ज वा वुच्छिदिज्ज वा ३। एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सया जएज्जा, सेयमिणं मन्निज्जासि त्तिबेमि ४ ॥सू० १६४॥ निसीहियासत्तिक्कयं॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ २-२-२-९ ॥

॥ ३ :: उच्चारप्रश्रवणा-अध्ययनं ३ ॥

से भिक्खू वा (२) उच्चारपासवणकिरियाए उब्बाहिज्जमाणे सयस्स पायपुंछणस्स असइए तओ पच्छा साहम्मियं जाइज्जा १॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिल्लं जाणिज्जा सअंडं सपाणं जाव मक्कडासंताणयं तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिल्लं जाणिज्जा, अप्पपाणं जाव संताणयं तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ३। से भिक्खू वा (२) से जं थंडिल्लं जाणिज्जा, अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स वा, अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स, अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स, अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स, अस्सिंपडियाए बहवे समणमाहणवणीमगा पगणिय (२) समुद्दिस्स पाणाइं (४) जाव उद्देसियं चेएइ

तहप्पगारं थंडिल्लं पुरिसंतरकडं जाव बहियानीहडं वा अनीहडं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं नो वोसिरिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, बहवे समणमाहणकिवण-वणीमग-अतिही-समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव उद्देसियं चेएइ, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरगडं जाव बहियाअनीहडं अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिल्लंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा---अपुरिसंतरगडं जाव बहिया नीहडं अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, असिंसपडियाए कयं वा कारियं वा पामिच्चियं वा छन्नं वा घट्ठं वा मट्ठं वा लित्तं वा संमट्ठं वा संपधूवियं वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ६॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा, इह खलु गाहावइ वा गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा जाव हरियाणि वा अंतराओ वा बाहिं नीहरंति बहियाओ वा अंतो साहरंति अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ७॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा खंधंसि वा पीढंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा (हम्मियतलंसि वा अट्टालंसि वा) अट्टंसि वा पासायंसि वा अन्नयरंसि वा थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ८॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, अणंतरहियाए पुढवीए ससीणिद्धाए पुढवीए ससरक्खाए पुढवीए मट्टियाए मक्कडाए (मट्टियाकम्म-कडाए) चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुयाए कोलावासंसि वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियंसि वा जाव मक्कडासंताणयंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ९॥ ॥सू० १६५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा-इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा जाव बीयाणि वा परिसाडिंसु वा परिसाडिंति वा परिसाडिस्संति वा

अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण जाणिज्जा १॥ इह खलु गाहावई वा गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा कुलत्थाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा पइरिंसु वा पइरिंति वा पइरिस्संति वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा २॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, आमोयाणि वा घासाणि वा भिलुयाणि वा विज्जुलयाणि वा खाणुयाणि वा कडयाणि वा पगडाणि वा दरीणि वा पदुग्गाणि वा समाणि वा २ अन्नयरंसि वा तहप्प-गारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ३॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिल्लं जाणिज्जा माणुसरंधणाणि वा महिसकर-णाणि वा वसहकरणाणि वा अस्सकरणाणि का कुक्कुडकरणाणि वा मक्कडकरणाणि वा हयकरणाणि वा लावयकरणानि वा वट्टय-करणाणि तित्तिरकरणाणि वा कवोयकरणाणि वा कविंजलकरणाणि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ४॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा वेहाणसट्ठाणेसु वा गिद्धपट्ठठाणेसु वा तरुपडणट्ठाणेसु वा मेरुपडणठा-णेसु वा विसभिक्खणयट्ठाणेसु वा अगणिपडणट्ठाणेसु वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ५॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुणं थंडिलं जाणिज्जा, आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वा देवकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि वा नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ६॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ७॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा, तिगाणि

वा चउक्काणि वा चच्चराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ८॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा इंगालदाहेसु खारदाहेसु वा मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि वा थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ९।। से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणेज्जा, नइयायतणेसु वा पंकाययणेसु वा ओवाययणेसु वा सेयणवहंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा १०॥ से भिक्खू वा से जं पुण जाणेज्जा नवियासु वा मट्टियखाणिआसु नावियासु गोप्पहेलियासु वा गवाणीसु वा खाणीसु वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, ११॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, डागवच्चंसि वा सागवच्चंसि वा मूलगवच्चंसि वा हत्थंकरवच्चंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा १२॥ से भिक्खू वा (२) से जं पुण थंडिलं जाणिज्जा, असणवणंसि वा सणवणंसि वा धायइवणंसि वा केयइवणंसि वा अंबवणंसि वा असोगवणंसि वा नागवणंसि वा पुन्नागवणंसि वा चुल्लगवणंसि वा अन्नयरेसु तहप्पगारेसु पत्तोवेएसु वा पुप्फोवेएसु वा फलोवेएसु वा बीओवेएसु वा हरिओवेएसु वा नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा १३। ॥सू० १६६॥ से भिक्खू वा(२) सयपायवं वा परपायवं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि असंलोयंसि अप्पपाणंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावाहंसि जाव संताणयंसि अहारामंसि वा झामथंडिल्लंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिल्लंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, एयं खलु तस्स जाव सया जइज्जासि ॥सू० १६७॥ त्तिबेमि ॥ उच्चारपासवणसत्तिक्कओ सम्मत्तो ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥२-२-३-१०॥

॥ ४ : शब्द-अध्ययनं ४ ॥

से भिक्खू वा (२) मुइंगसद्दाणि वा नंदीसद्दाणि वा झल्लरीसद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाइं सद्दाइं विततारं कन्नसोयणपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए १॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं—वीणासद्दाणि वा विपंचीसद्दाणि वा पिप्पी(बद्धी)सगसद्दाणि वा तूणयसद्दाणि वा वण(वीणि)यसद्दाणि वा तुंबवीणियसद्दाणि वा ढंकुणसद्दाइं अन्नयराइं तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं विततारं कणसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए २॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा-तालसद्दाणि वा कंसतालसद्दाणि वा लत्तियसद्दाणि वा गोधियसद्दाणि वा किरिकिरियासद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाइं सद्दाणि कणसोयपडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ३॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाणि सुणेइ तंजहा—संखसद्दाणि वा वेणुसद्दाणि वा वंससद्दाणि वा खरमुहिसद्दाणि वा परिपिरियासद्दाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं झुसिराइं कन्नसोयपडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ४ ॥सू० १६८॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ तंजहा--वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव सराणि वा सागराणि वा सरसरपंतियाणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कणसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए १॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ तंजहा--कच्छाणि वा णूमाणि वा गहणाणि वा वणाणि वा वणदुग्गाणि पव्वयाणि वा पव्वयदुग्गाणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं सो य पडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए २। से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—गामाणि वा नगराणि वा निगमाणि वा रायहाणाणि वा आसम-

पट्टणासंनिवेसाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिधारेज्जा गमणाए ३॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वा देवकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ४॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—अट्टाणि वा अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ५॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—तियाणि वा चउक्काणि वा चच्चराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ६॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा-महिसकरणट्ठाणाणि वा वसभकरणट्ठाणाणि वा अस्सकरणट्ठाणाणि वा जाव कविंजलकरणट्ठाणाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ७॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ तंजहा-महिसजुद्धाणि वा जाव कविंजलजुद्धाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ८॥ से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ तंजहा--पुव्वजूहियठाणाणि वा हयजूहियठाणाणि वा गयजूहियठाणाणि वा अन्नयराइं तहप्पगाराइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ९ ॥सू० १६१॥ से भिक्खू वा (२) जाव सुणेइ, तंजहा—अक्खाइयठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठाणाणि वा महताऽऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तलताल-तुडिय-पडुप्पवाइयट्ठाणाणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारेज्जा गमणाए १। से भिक्खू वा (२) जाव सुणेइ, तंजहा—कलहाणि वा डिम्बाणि वा डमराणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विरुद्धरज्जाणि अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं नो अभिसंधारेज्जा गमणाए २। से भिक्खू वा (२) जाव सुणेइ, खुड्डियं दारियं परिभूत्तमंडियं अलंकियं निवुज्झमाणिं पेहाए एगं वा पुरिसं वहाए नीणिज्ज-

माणं पेहाए अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ३॥ से भिक्खू वा (२) अन्नयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा तंजहा--बहुसगडाणि वा बहुरहाणि वा बहुमिलक्खूणि वा बहुपच्चंताणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं कन्नसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ४। से भिक्खू वा (२) अन्नयराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणिज्जा, तंजहा--इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा डहराणि वा मज्झिमाणि वा आभरणविभूसियाणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा परिभायंताणि वा विछड्डियमाणाणि वा विगोवयमाणाणि वा अन्नयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं कन्नसोयपडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ५। से भिक्खू वा (२) नो इहलोइएहिं सद्देहिं नो परलोइएहि सद्देहिं नो सुएहिं सद्देहिं नो असुएहिं सद्देहिं नो दिट्ठेहिं सद्देहिं नो अदिट्ठेहिं सद्देहिं नो कंतेहिं सद्देहिं सज्जिज्जा नो गिज्झिज्जा नो मुज्झिज्जा नो अज्झोववज्जिज्जा ६। एयं खलु तस्स जाव जएज्जासि त्ति बेमि ७ ॥सू० १७०॥ सद्दसत्तिक्कओ ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ २-२-४-११ ॥

॥ ५ : रूप—अध्ययनं ५ ॥

से भिक्खु वा (२) अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा–गंथिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा कट्ठकम्माणि वा पोत्थकम्माणि वा चित्तकम्माणि वा मणिकम्माणि वा दंतकम्माणि वा (मालकम्माणि वा) पत्तछिज्जकम्माणि वा विविहाणि वा वेढिमाइं अन्नयराइं तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं चक्खुदंसणपडियाए नो अभिसंधारिज्ज गमणाए, एवं नायव्वं जहा सद्दपडिमा सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडिमावि ॥सू० १७१॥ पंचमं सत्तिक्कयं ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥ २-२-५-१२ ॥

॥ ६ : परक्रिया—अध्ययनं ६ ॥

परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं नो तं सायए नो तं नियमे, सिया से परो पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे १। से सिया परो पायाइं संबाहिज्ज वा पलिमद्दिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे २। से सिया परो पायाइं कुसिज्ज वा रइज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे ३। से सिया परो पायाइं तिल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खिज्ज वा अब्भिंगिज्ज वा नो तं सायए (२) ४। से सिया परो पायाइं लुद्धेण वा कक्केण वा चुन्नेण वा वरागेण वा उल्लोढिज्ज दा उव्वलिज्ज वा नो तं सायए (२) ५। से सिया परो पायाइं सीओदगवियडेण वा २ उच्छोलिज्ज वा पहोलिज्ज वा नो तं सायए (२) ६। से सिया परो पायाइं अन्नयरेण विलेवणजाएण आलिंपिज्ज वा विलिपिज्ज वा नो तं सायए (२) ७। से सिया परो पायाइं अन्नयरेण धूवणजाएण धूविज्ज वा पधूविज्ज वा नो तं सायए (२) ८। से सिया परो पायाओ आणुयं वा कंटयं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) ९। से सिया परो पायाओ पूयं वा सोणियं वा नोहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) १०। से सिया परो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो त सायए नो तं नियमे ११। से सिया परो कायं लोट्टेण वा संवाहिज्ज वा पलिमदिज्ज वा नो तं सायए (२) १२। से सिया परो कायं तिल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खिज्ज वा अब्भंगिज्ज वा नो तं सायए (२) १३। से सिया परो कायं लुद्धेण वा कक्केण वा चुराणे-ण वा वराणेण वा उल्लोढिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं सायए (२) १४। से सिया परो कायं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छो-लिज्ज वा पधोविज्ज वा नो तं सायए (२) १५। से सिया परो कायं अन्नयरेण विलेवणजाएण आलिंपिज्ज वा विलिपिज्ज वा नो तं सायए (२)

१६। से सिया परो कायं अन्नयरेण धूवणजाएण धूविज्ज वा पविज्ज वा नो तं सायए (२) १७। से सिया परो कायंसि वणं आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए (२) से सिया परो कायंसि वणं संवाहिज्ज वा पलिमहिज्ज वा नो तं सायए (२) १८। से सिया परो कायंसि वणं तिल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खिज्ज वा अब्भंगिज्ज वा नो तं सायए (२) १९। से सिया परो कायंसि वणं लुद्धेण वा (४) उल्लोढिज्ज वा उव्वलेज्ज वा नो तं सायए (२) २०। से सिया परो कायंसि वणं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पधोविज्ज वा नो तं सायए २१। से सिया परो कायंसि वणं वा गंडं वा अरइं वा पुलयं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिंदिज्ज वा विच्छिंदिज्ज वा नो तं सायए (२) २२। से सिया परो अन्नयरेणं सत्थजाएण आच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) २३। से सिया परो कायंसि गंडं वा अरइं वा पुलइयं वा भगंदलं वा आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए (२) २४। से सिया परो कायंसि गंडं वा (४) संवाहिज्ज वा पलिमद्दिज्ज वा नो तं सायए (२) २५। से सिया परो कायंसि गंडं वा (४) तिल्लेण वा (३) मक्खिज्ज वा अभिंगिज्ज वा नो तं सायए (२) २६। से सिया परो गंडं वा (४) लुद्धेण वा (४) उल्लोढिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं सायए (२) २७ से सिया परो गंडं वा (४) सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पधोविज्ज वा नो तं सायए (२) २८। से सिया परो कायंसि गंडं वा (४) अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिंदिज्ज वा विच्छिंदिज्ज वा अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) २९। से सिया परो कायंसि सेयं वा जल्लं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) ३०। से

सिया परो अच्छिमलं वा कराणमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) ३१। से सिया परो दीहाइं वालाइं दीहाइं वा रोमाइं दीहाइं भमुहाइं दीहाइं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पिज्ज वा संठविज्ज वा नो तं सायए (२) ३२। से सिया परो सीसाओ लिक्खं वा जूयं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं सायए (२) ३३। से सिया परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता पायाइं आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा, एवं हिट्ठिमो गमो पायाइणं भाणियव्वो (२) ३४। से सिया परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता हारं वा अद्धहारं वा उरत्थं वा गेवेयं वा मउडं वा पालंबं वा सुवन्नसुत्तं वा आविहिज्ज वा पिणहिज्ज वा नो तं सायए (२) ३५। से सिया परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा नीहरित्ता वा पविसित्ता वा पायाइं आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए (२) ३६। एवं नेयव्वा अन्नमन्नकिरियावि ३७ ॥सू० १७२॥ से सिया परो सुद्धेणं वइबलेण वा तेइच्छं आउट्टे, से सिया परो असुद्धेणं वइबलेणं तेइच्छं आउट्टे १॥ से सिया परो गिलाणस्स सचित्ताणि वा कंदाणि वा मूलाणि वा तयाणि वा हरियाणि वा खणित्तु कड्ढित्तु वा कड्ढावित्तु वा तेइच्छं आउट्टाविज्ज नो तं साइए (२) २। कडुवेयणा पाणभूय-जीवसत्ता वेयणं वेइंति २। एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा साम-ग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सया जए सेयमिणं मन्निज्जासि ३। ॥सू० १७३॥ त्तिबेमि ॥ छट्ठओ सत्तिक्कओ ॥

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ २--२--६--१३ ॥



॥ ७ : अन्योन्यक्रिया-अध्ययनं ७ ॥

से भिक्खू वा (२) अन्नमन्नकिरियं अज्झत्थियं संसेइयं नो तं सायए (२)। से अन्नमन्नं पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं साइए (२)। सेसं तं चेव, एयं खलु जाव जइज्जासि त्तिबेमि ॥सू० १७४॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ श्रु०२-चू०२-अ०७ मूलतः २३ ॥

॥ इति द्वितीया चूला ॥ २-२ ॥

॥ तृतीय चूलिका-भावना अध्ययनं १ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि हुत्था, तंजहा–हत्थुत्तराइं चुए, चइत्ता गब्भं वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए, हत्थुत्तराहि जाए, हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुन्ने अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा भगवं परिनिव्वुए ॥सू० १७५॥ समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसम–दुस्समाए समाए वीइक्कंताए, दूसमसुसमाए समाए बहु विइक्कंताए, पन्नहत्तरीए वासेहिं मासेहिं य अद्धनवमेहिं सेसेहिं जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं महाविजयसिद्धत्थं पुप्फुत्तरवरपुंडरीयदिसासोवत्थियवद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं पालयित्ता, आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं चुए चइत्ता, इह खलु जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसंमि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरस्स गुत्ताए सीहुब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसि गब्भं वक्कंते १। समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए

यावि हुत्था, चइस्सामित्ति जाणइ चुएमित्ति जाणइ चयमाणे न याणेइ, सुहुमे णं से काले पन्नत्ते २। तओ णं समणे भगवं महावीरे हियाणुकंपएणं (अणुकंपएणं) देवेणं जीयमेयंतिकट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं बासीहिं राइंदिएहिं वइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसंसि नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगुत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करित्ता सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करित्ता कुच्छिंसि गब्भं साहरइ, जे वि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स देवानंदए माहणीए जालंधरायणगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भं साहरइ ३। समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था-साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ साहरिज्जमाणे न याणइ साहरिएमित्ति जाणइ समणाउसो ४। तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसलाए खत्तियाणीए अहऽन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं जे से गिम्हाणं पढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगाएणं-समणं भगवं महावीरं अरोग्गा अरोग्गं पसूया ५। जणणं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तणणं राइं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहिं देवीहिं य उवयंतेहिं उप्पयंतेहिं संपयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवकहक्कहए उप्पिंजलगभूए यावि हुत्था ६। जणणं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया तणणं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च १ गंधवासं च २ चुन्नवासं

च ३ पुप्फवासं च ४ हिरन्नवासं च ५ रयणवासं च ६ वासिंसु ७। जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं भवणवइ-वाणमंतरजोइसियविमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सूइकम्माइं तित्थयराभिसेयं च करिंसु ८। जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भं आग(हु)ए तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवन्नेणं धणेणं धन्नेणं माणिक्केणं मुत्तिएणं संखसिलप्पवालेणं अईव (२) परिवड्ढइ ९। तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणित्ता निव्वत्तदसाहंसि वुक्कंतंसि सुइभूयंसि विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडाविंति (२) मित्तनाइसयणसंबंधिवग्गं उवनिमंतंति उवनिमंतित्ता बहवे समणमाहण-किवण-वणीमगाहिं भिच्छुंडगपंडरगाइण विच्छड्डेंति विग्गोविंति विस्साणिंति दायारेसु दाणं, पज्जभाइंति विच्छड्डित्ता विग्गोवित्ता विस्साणित्ता दायारेसु णं दायं पज्जभाइत्ता मित्तनाइसयणसंबंधिवग्गं भुंजाविंति मित्तनाइसयसयणसंबंधिवग्गं भुंजावित्ता मित्तनाइसयणसंबंधिवग्गेण इमेयारूवं नामधिज्जं कारविंति-जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे आहूए तओ णं पभिइ इमं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं संखसिलप्पवालेणं अतीव (२) परिवड्ढइ ता होउ णं कुमारे वद्धमाणे १०। तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधाइ-परिवुडे, तंजहा-खीरधाइए १ मज्जणधाइए २ मंडणधाइए ३ खेलावणधाइए ४ अंकधाइए ५, अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकुट्टिमतले गिरिकंदरसमुल्लीणेविव चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ ११। तओ णं समणे भगवं महावीरे विन्नायपरिणयमित्ते विणियत्तबालभावे अप्पुस्सुयाइं उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं परियारेमाणे एवं च णं विहरइ १२॥ ॥सू० १७६॥ समणे भगवं महावीरे कासवगुत्ते तस्स णं इमे तिन्नि

नामधिज्जा एवमहिज्जंति, तंजहा—अम्मापिउसंति वद्धमाणे १ सहसंमुइए समणे २, भीमं भयभेरवं उरालं अवेलयं परीसह—सहत्तिकट्टु देवेहि से नामं कयं समणे भगवं महावीरे ३-१ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेणं तस्स णं तिन्नि नामधिज्जा एवमाहिज्जंति तंजहा—सिद्धत्थे इ वा, सिज्जंसे इ वा, जसंसे इ वा, २। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठस्स गुत्ता तीसे णं तिन्नि नामधिज्जा एवमाहिज्जंति तंजहा—तिसलाइ वा, विदेहदिन्ना इ वा, पियकारिणी इ वा ३। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए, सुपासे कासवगुत्तेणं ४। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जिट्ठे भाया नंदिवद्धणे कासवगुत्तेणं ५। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा भइणी सुदंसणा कासवगुत्तेणं ६। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा जसोया कोडिन्नागुत्तेणं ७। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं, तीसे णं दो नामधिज्जा एवमाहिज्जंति—अणुज्जा इ वा, पियदंसणा इ वा ८। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स नत्तूइ कोसिया गुत्तेणं, तीसे णं दो नामधिज्जा अवमाहिज्जंति तंजहा—सेसवइ इ वा, जसवइ इ वा ९ ॥सू० १७७॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि हुत्था, ते णं बहुइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता छण्हं जीवनिकायाणं सारक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरिहित्ता पडिकमित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्ताइं पडिवज्जित्ता कुससंथारगं दुरूहित्ता भत्तं पच्चक्खायंति (२) अपच्छिमाए मारणंतियाए संलेहणासरीरए झुसियसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ना, तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं चुए चइत्ता महाविदेहे वासे चरमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥सू० १७८॥ तेणं कालेणं (२) समणे भगवं महावीरे नाए

नायपुत्ते नायकुलनिव्वत्ते विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूमाले तीसं वासाइं विदेहंसित्ति(हेत्ति)कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं संमत्तपइन्ने चिच्चा हिरन्नं, चिच्चा सुवन्नं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धणकणगरयण–संतसारसावइज्जं विच्छड्डित्ता विग्गोवित्ता विस्साणित्ता दायारेसु णं दाइत्ता परिभाइत्ता संवच्छरं दलइत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तएणं जोगोवगएणं अभिनिक्खमणाभिप्पाए यावि हुत्था १। संवच्छरेण होहिइ अभिनिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स । तो अत्थसंपयाणं पवत्तइ पुव्वसूराओ ॥ १ ॥ एगा हिरन्नकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयमाइयं दिज्जइ जा पायरासुत्ति ॥२॥ तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥३॥ वेसमणकुंडधारी देवा लोगंतिया महिड्ढीया । बोहिंति य तित्थयरं पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥४॥ बंभंमि य कप्पंमी बोधव्वा कण्हराइणो मज्झे । लोगंतिया विमाणा अट्ठसु वत्था असंखिज्जा ॥५॥ एए देवनिकाया भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं । सव्वजगज्जीवहियं अरिहं । तित्थं पवत्तेहि ॥६॥ २ । तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिनिक्खमणाभिप्पायं जाणित्ता भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं (२) रूवेहि, सएहि (२) नेवत्थेहिं, सएहिं (२) चिंधेहिं सव्विड्ढीए सव्वजुइए सव्वबलसमुदएणं, सयाइं (२) जाणविमाणाइं दुरूहंति सयाइं (२), जाणविमाणाइं दुरूहित्ता अहाबायराइं पुग्गलाइं परिसाडंति (२), अहासुहुमाइं पुग्गलाइं परियाइंति (२), उड्ढं उप्पयंति उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगइए अहेणं ओवयमाणा (२), तिरिएणं असंखिज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीइक्कममाणा (२), जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति (२), जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुरसं-

निवेसे तेणेव उवागच्छंति (२) जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए तेणेव झत्ति वेगेण ओवइया ३। तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं (२) जाणविमाणं पट्ठवेति सणियं (२) जाणविमाणं पट्ठवेत्ता सणियं (२) जाणविमाणाओ पचोरुहइ (२) सणियं (२) एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमित्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणइ (२) एगं महं नाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तं सुभं चारु कंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वइ ४। तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं नाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारु कंतरूवं सीहासणं विउव्वइ (२) जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ (२) समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ (२) समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ (२) समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छइ ५। सणियं (२) पुरत्थाभिमुहं सीहासणे णिसीयावेइ सणियं (२) निसीयावित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेइ (२) गंधकासाइएहि उल्लोलेइ (२) सुद्धोदएण मज्जावेइ (२) जस्स णं मुल्लं सयसहस्सेणं तिपडोलतित्तिएणं साहिएणं सीतेण गोसीसरत्त—चंदणेणं अणुलिपइ (२) इसिं निस्सासवायवोज्झं वरनयरपट्टणुग्गयं कुसलनरपसंसियं अस्सलालापेलवं छेयारियकणगखइयंतकम्मं हंसलक्खणं पट्टजुयलं नियंसावेइ (२) हारं अद्धहारं उरत्थं नेवत्थं एगावलिं पालंबसुत्तं पट्टमउडरयणमालाउ आविंधावेइ आविंधावित्ता गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समलंकरेइ (२) त्ता दुच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ (२) एगं महं चंदप्पहं सिबियं सहस्सवाहणियं विउव्वति ६। तंजहा—ईहामिग–उसभ–तुरग–नर–मकर–विहग-वानर-कुंजर--रुरु--सरभ--चमर--सद्दूल-सीह-वणलय भत्ति-चित्त—लयविज्जाहरमिहुण-जुयल—जंत-जोग—जुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं सुनिरूवियं मिसिमिसिंतरूवग--सहस्स--कलियं इसिं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लो-

यणालेसं मुत्ताहलमुत्ताजालंतरोवियं तवणीय-पवरलंबूस-पलंबंत-मुत्तदामं हारद्धहारभूसण-समोणयं अहियपिच्छणिज्जं पउमलयभत्तिचित्तं असोगलय-भत्तिचित्तं कुंदलयभत्तिचित्तं नाणालयभत्तिविरइयं सुभं चारु कंतरूवं नाणाम-णिपंचवन्न--घंटा-पडायपडिमंडियग्गसिहरं पासाइयं दरिसणिज्जं सुरूवं, ७।

सीया उवणीया जिणवरस्स-जरमरण-विप्पमुक्कस्स ।
ओसत्तमल्लदामा जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥ १ ॥
सिबियाइ मज्झयारे दिव्वं वररयणरूवचिंचइयं ।
सीहासणं महरिहं सपायपीढं जिणवरस्स ॥ २ ॥
आलइयमालमउडो भासुरबुंदी वराभरणधारी ।
खोमियवत्थनियत्थो जस्स य मुल्लं सयसहस्सं ॥ ३ ॥
छट्ठेण उ भत्तेणं अज्झवसाणेण सुंदरेण जिणो ।
लेसाहि विसुज्झंतो आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ४ ॥
सीहासणे निविट्ठो सक्कीसाणा य दोहि पासेहिं ।
वीयंति चामराहिं मणिरयणविचित्त-दंडाहिं ॥ ५ ॥
पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टु रोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति देवा सुरअसुरा गरुलनागिंदा ॥ ६ ॥
पुरओ सुरा वहंती असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
अवरे वहंति गरुला नागा पुण उत्तरे पासे ॥ ७ ॥
वणसंडं व कुसुमियं पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
सोहइ कुसुमभरेणं इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥ ८ ॥
सिद्धत्थवणं व जहा कणयारवणं व चंपयवणं वा ।
सोहइ कुसुमभरेणं इय गगणयले सुरगणेहिं ॥ ९ ॥
वरपडहभेरिझल्लरि-संखसय-सहस्सिएहिं तूरेहिं ।
गयणयले धरणियले तूरनिनाओ परमरम्मो ॥ १० ॥

ततविततं घणझुसिरं आउज्जं चउव्विहं बहुविहीयं।
वाइंति तत्थ देवा बहूहिं आनट्टगसएहिं ॥ ११॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तरानक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाइणगामिणीए छायाए वियत्ताए बिइयाए पोरिसीए छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाडगमायाए चंदप्पभाए सिवियाए सहस्सवाहिणियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जमाणे उत्तरखत्तिय–कुंडपुरसंनिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निगच्छइ (२) जेणेव नायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ (२) इसिं रयणिप्पमाणं अच्छोप्पेणं भूमिभाएणं सणियं (२) चंदप्पभं सिबियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ (२), सणियं (२) चंदप्पभाओ सीयाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ (२), सणियं (२) पुरत्थाभिमुहे सीहासणे निसीयइ आभरणालंकारं ओमुयइ ९। तओ णं वेसमणे देवे भत्तुव्वायपडिओ भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ, १०। तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ११। तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नवायपडिए वइरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ (२) अणुजाणेसि भंते त्तिकट्टु खीरोयसागरं साहरइ, १२। तओ णं समणे जाव लोयं करित्ता सिद्धाणं नमुक्कारं करेइ (२), सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं त्तिकट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ २ देवपरिसं च मणुयपरिसं च आलिक्खचित्तभूयमिव ठवेइ १३। दिव्वो मणुस्सघोसो तुरियनिनाओ य सक्कवयणेणं। खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ॥१॥ पडिवज्जित्तु चरित्तं अहोनिसं सव्वपाणभूयहियं। साहट्टु लोमपुलया सव्वे देवा निसामिंति ॥ २–१९। तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवनाणे

नामं नाणे समुप्पन्ने अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ १५। तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइए समाणे मित्तनाइं सयणसंबंधिवग्गं पडिविसज्जेइ, (२), इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—बारस वासाइं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा–दिव्वा वा माणुस्सा वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहिआसइस्सामि १६। तओ णं समणे भगवं महावीरे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता वोसिट्ठचत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कुम्मारगामं समणुपत्ते १७। तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसिट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं एवं संजमेणं पग्गहेणं संवरेणं तवेणं बंभचेरवासेणं खंतीए मुत्तीए समिइए गुत्तीए तुट्ठीए ठाणेणं कमेणं सुचरियफलनिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, एवं वा विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति—दिव्वा वा माणुस्सा वा त्तिरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाउले अव्वहिए अदीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ १८। तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वीइक्कंता तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दुच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वेसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाइणगामिणीए छायाए वियत्ताए पोरिसीए जंभियगामस्स नगरस्स बहिया नइए उज्जुवालियाए उत्तरकूले सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि उड्ढंजाणूअहोसिरस्स झाणकोट्ठोवगयस्स वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे सालरुक्खस्स अदूरसामंते उक्कुडुयस्स गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स

निव्वाणे कसिणे पडिपुन्ने अव्वाहए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने १९। से भगवं अरहं जिणे (जाणए) केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पज्जाए जाणइ, तंजहा--आगइं गइं ठिइं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आविकम्मं, रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं जाणमाणे पासमाणे एवं च णं विहरइ २०। जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कसिणे (तच्चएणो, निच्चणेए) जाव समुप्पन्ने तण्णं दिवसं भवणवइवाणमंतर-जोइसियविमाणवासिदेवेहि य देवीहिं उवयंतेहिं जाव उप्पिंजलगब्भूए यावि हुत्था २१। तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नवरनाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमिक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खइ २२। ततो पच्छा मणुस्साणं, तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे गोयमाइणं समणाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकाया आतिक्खति भासइ परूवेइ, तं-पुढवीकाए जाव तसकाए, पढमं भंते ! महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणाइवायं करिज्जा (३) जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि २३। तस्सिमाओ पंचभावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा-इरियासमिए से निग्गंथे नो अणइरियासमिएत्ति, केवली बूया--अणइरियासमिए से निग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणिज्ज वा वत्तिज्ज वा परियाविज्ज वा लेसिज्ज वा उद्दविज्ज वा, इरियासमिए से निग्गंथे नो इरिया-असमिइत्ति पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणा-मणं परियाणइ से निग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे अहिगरणिए पाउसिए पारियाविए पाणाइवाइए भूओवघाइए, तहप्पगारं मणं नो पधारिज्जा गमणाए, मणं परिजाणइ से निग्गंथे, जे य मणे अपावएत्ति दुच्चा

भावणा २। अहावरा तच्चा भावणा--वइं परिजाणइ से निग्गंथे, जा य वइ पाविया सावज्जा सकिरिया जाव भूओवघाइया तहप्पगारं वइं नो उच्चारिज्जा, जे वइं परिजाणइ से निग्गंथे, जाव वइ अपावियत्ति तच्चा भावणा ३। अहावरा चउत्था भावणा--आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, से निग्गंथे, नो अणायभंडमत्त-निक्खेवणासमिए, केवली बूया--आयाण--भंडमत्तनिक्खेवणाअसमिए से निग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणिज्जा वा जाव उद्दविज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए से निग्गंथे, नो आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा--असमिएत्ति चउत्था भावणा ४। अहावरा पंचमा भावणा-आलोइय-पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणालोइय-पाणभोयणभोइ केवली बूया-अणालोइयपाणभोयणभोइ से निग्गंथे पाणाणि वा (४) अभिहणिज्ज वा जाव उद्दविज्ज वा, तम्हा आलोइय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणालोइयपाणभोयणभोइति पंचमा भावणा ५। २४। एयावता महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ, पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं २५॥ अहावरं दुच्चं महव्वयं पच्चक्खामि, सव्वं मुसावायं वइदोसं, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं भासिज्जा नेवन्नेणं मुसं भासाविज्जा अन्नंपि मुसं भासंतं न समणुमन्निज्जा तिविहं तिविहेण मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि जाव वोसिरामि २६॥ तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति-तत्थिमा पढमा भावणा-अणुवीइभासी से निग्गंथे नो अणणुवीइभासी केवली बूया-अणणुवीइभासी से निग्गंथे समावज्जिज्ज मोसं वयणाए, अणुवीइभासी से निग्गंथे नो अणणुवीइभासित्ति पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणा कोहं परियाणइ से निग्गंथे नो कोहणे सिया, केवली बूया--कोहप्पत्ते कोहत्तं समावइज्जा मोसं वयणाए, कोहं परियाणइ से निग्गंथे न य कोहणे सियत्ति दुच्चा भावणा २। अहावरा तच्चा

भावणा-लोभं परियाणइ से निग्गंथे नो अ लोभणाए सिया, केवली बूया-लोभपत्ते लोभी समावइज्जा मोसं वयणाए, लोभं परियाणइ से निग्गंथे नो य लोभणाए सियत्ति तच्चा भावणा ३। अहावरा चउत्था भावणा-भयं परिजाणइ से निग्गंथे नो भयभीरुए सिया, केवली बूया-भयपत्ते भीरूसमावइज्जा मोसं वयणाए, भयं परिजाणइ से निग्गंथे नो भयभीरुए सिया चउत्था भावणा ४। अहावरा पंचमी भावणा-हासं परियाणइ से निग्गंथे नो य हासणाए सिया, केवली बूया-हासपत्ते हासी समावइज्जा मोसं वयणाए, हासे परियाणइ से निग्गंथे नो हासणाए सियत्ति पंचमी भावणा ५-२७। एतावता दोच्चे महव्वए सम्मं काएण फासिए जाव आणाए आराहिए यावि भवइ दुच्चे भंते महव्वए २८। अहावरं तच्चं भंते! महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं, से गामे वा नगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं अन्नंपि गिण्हंतं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए जाव वोसिरामि २९। तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा-अणुवीइ मिउग्गहं जाइ से निग्गंथे नो अणणुवीइ मिउग्गहं जाइ से निग्गंथे, केवली बूया-अणणुवीइ मिउग्गहं जाइ निग्गंथे, अदिन्नं गिण्हेज्जा, अणुवीइ मिउग्गहं जाइ से निग्गंथे नो अणणुवीइ मिउग्गहं जाइत्ति पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणा-अणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणणुन्नविय पाणभोयणभोइ, केवली बूया अणणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे अदिन्नं भुंजिजा, तम्हा अणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणणुन्नविय पाणभोयणभोइत्ति दुच्चा भावणा २। अहावरा तच्चा भावणा-निग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि एतावताव उग्गहणसीलए सिया, केवली बूया-निग्गंथेणं उग्गहंसि अणुग्गहियंसि एतावता अणुग्गहणसीले अदिन्नं ओगिण्हि-

ज्जा; निग्गंथेणं उग्गहं उग्गहियंसि एतावताव उग्गहणसीलएति तच्चा भावणा ३। अहावरा चउत्था भावणा--निग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं (२) उग्गहणसीलए सिया, केवली बूया निग्गंथेणं उग्गहंसि उ अभिक्खणं (२) अणुग्गहणसीले अदिन्नं गिण्हिज्जा, निग्गंथे उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं (२) उग्गहणसीलएत्ति चउत्था भावणा ४। अहावरा पंचमा भावणा--अणुवीइ मिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु, नो अणणुवीइ मिउग्गहजाइ; केवली बूया--अणणुवीइ मिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु अदिन्नं उगिण्हिज्जा अणुवीइ-मिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु नो अणणुवीइ मिउग्गहजाती इइ पंचमा भावणा ५--३०। एतावया तच्चे महव्वए सम्मं काएण फासिए जाव आणाए आराहए यावि भवइ, तच्चं भंते! महव्वयं ३१। अहावरं चउत्थं महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा तं चेवं अदिन्नादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि ३२। तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा--नो निग्गंथे अभिक्खणं (२) इत्थीणं कहं कहित्तए सिया, केवली बूया--निग्गंथे णं अभिक्खणं (२) इत्थीणं कहं कहेमाणे संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा, नो निग्गंथेणं अभिक्खणं (२) इत्थीणं कहं कहित्तए सियत्ति पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणा--नो निग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं (२) इंदियाइं आलोइत्तए निज्झाइत्तए सिया, केवली बूया-निग्गंथेणं इत्थीणं मणोहराइं (२) इंदियाइं आलोएमाणे निज्झाएमाणे संतिभेया संतिविभंगा जाव धम्माओ भंसिज्जा, नो निग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं (२) इंदियाइं आलोइत्तए निज्झाइत्तए सियत्ति दुच्चा भावणा २। अहावरा तच्चा भावणा--नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरित्तए सिया, केवली बूया--निग्गंथेणं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे संतिभेया

जाव भंसिज्जा, नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सियत्ति तच्चा भावणा ३। अहावरा चउत्था भावणा--नाइमत्तपाणभोयणभोइ से निग्गंथे न पणीयरभोयणभोई से निग्गंथे, केवली बूया-अइमत्तपाणभोयणभोयणभोई से निग्गंथे पणियरसभोयणभोइ संतिभेया जाव भंसिज्जा, नाइमत्तपाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो पणीयरसभोयणभोइ त्ति चउत्था भावणा ४। अहावरा पंचमा भावणा—नो निग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया, केवली बूया-निग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे संति-भेया जाव भंसिज्जा, नो निग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सियत्ति पंचमा भावणा ५-२३। एतावया चउत्थे महव्वए सम्मं काएण फासिए जाव आराहिए यावि भवइ, चउत्थं भंते ! महव्वयं ३४॥ अहावरं पंचमं भंते ! महव्वयं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतमचित्तं वा नेव सयं परिग्गहं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं गिण्हाविज्जा अन्नंपि परिग्गहं गिण्हंतं न समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि ३५। तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा-सोयओ णं जीवे (मणुन्ना) मणुन्नाइं सद्दाइं सुणेइ मणुन्नामणुन्नेहिं सद्देहिं नो सज्जिज्जा नो रज्जिज्जा नो गिज्झेज्जा नो मुज्झि(च्छे)ज्जा नो अज्झोवव-ज्जिज्जा नो विणिघायमावज्जेज्जा, केवली बूया—निग्गंथे णं मणुन्नामणुन्नेहिं सद्देहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया संतिवि-भंगा संतिकेवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा; न सक्का न सोउं सद्दा, सोतविसयमागया। रागदोसा उ जे तत्थ, से भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ सोयओ जीवे मणुन्नामणुन्नाइं सद्दाइं सुणेइ पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणा—चक्खूओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं रूवाइं पासइ मणुन्नामणुन्नेहिं रूवेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा, न सक्का रूवमदट्ठु, चक्खूविसयमागयं । रागदोसा उ जे

तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ चक्खूओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं रूवाइं पासइ, दुच्चा भावणा । अहावरा तच्चा भावणा—घाणओ जीवे मणुन्नामणुन्नाइं गंधाइं अग्घायइ मणुन्नामणुन्नेहिं गंधेहिं नो सज्जिज्जा नो रज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा, केवली बूया-मणुन्नामणुन्नेहिं गंधेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा, न सक्का गंधमग्घाउं; नासाविसयमागयं । रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥१॥ घाणओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं गंधाइं अग्घाइत्ति तच्चा भावणा ३ । अहावरा चउत्था भावणा—जिब्भाओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं रसाइं अस्साएइ, मणुन्नामणुन्नेहिं रसेहिं नो सज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा, केवली बूया—निग्गंथेणं मणुन्नामणुन्नेहिं रसेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा,—न सक्का रसमस्साउं, जीहाविसयमागयं । रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ जीहाओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं रसाइं अस्साएइत्ति चउत्था भावणा ४ । अहावरा पंचमा भावणा—फासओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं फासाइं पडिसेवेएइ मणुन्नामणुन्नेहिं फासेहिं नो सज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा, केवली बूया—निग्गंथे णं मणुन्ना—मणुन्नेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा, न सक्का फासमवेएउं, फासविसयमागयं । रागदोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ फासओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं फासाइं पडिसेवेएति पंचमा भावणा ५ । ३६। एतावता पंचमे महव्वते सम्मं अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ, पंचमं भंते ! महव्वयं ३७। इच्चेएहिं पंचमहव्वएहिं पणवीसाहि य भावणाहिं संपन्ने अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता पालित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहित्ता यावि भवइ ३८ ॥सू० १७९॥

॥ इति तृतीयचूला-भावनाऽध्ययनम् ॥ श्रु० २ चू०-३ मूलतः-२४ ॥

॥ चतुर्थं चूला-विमुक्त्यध्ययनं ॥

अणिच्चमावासमुविंति जंतुणो, पलोयए सुच्चमिणं अणुत्तरं ।
उविसिरे विन्नु अगारबंधणं, अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥१॥

तहागयं भिक्खुमणंतसंजयं, अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं ।
तुदंति वायाहि अभिद्दवं नरा, सरेहिं संगामगयं व कुंजरं ॥२॥

तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए, ससद्दफासा फरुसा उइरिया ।
तितिक्खए नाणी अदुट्ठचेयसा गिरिव्व वाएण न संपवेयए ॥३॥

उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे, अकंतदुक्खी तसथावरा दुही ।
अलूसए सव्वसहे महामुणी, तहा हि से सुस्समणे समाहिए ॥४॥

विऊनए धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो य पन्ना य जसो य वड्ढइ ॥५॥

दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा, महव्वया खेमपया पवेइया ।
महागुरू निस्सयरा उइरिया, तमेव तेउत्तिदिसं पगासगा ॥६॥

सिएहिं भिक्खू असिए परिव्वए, असज्जमित्थीसु चइज्ज पूयणं ।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं, न मिज्जइ कामगुणेहिं पंडिए ॥७॥

तहा विमुक्कस्स परिन्नचारिणो, धिइमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।
विसुज्झइ जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥८॥

से हु परिन्नासमयंमि वट्टइ, निरासंसे उवरय मेहुणा चरे ।
भुयंगमे जुन्नतयं जहा चए विमुच्चइ से दुहसिज्ज माहणे ॥९॥

जमाहु ओहं सलिलं अपारयं, महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं ।
अहे य णं परिजाणाहि पंडिए, से हु मुणी अंतकडेत्ति वुच्चइ ॥१०॥

जहा हि बद्धं इह माणवेहिं, जहा य तेसिं तु विमुक्खआहिए ।
अहा तहा बंध विमुक्ख जे विऊ, से हु मुणी अंतकडेत्ति वुच्चइ ॥११॥

इमंमि लोए परए य दोसुवि, न विज्जइ बंधण जस्स किंचि वि ।
से हु निरालंबणमप्पइट्ठिए, कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥१२॥ त्तिबेमि

॥ इति चतुर्थ-चूला- विमुक्त्यध्ययनम् ॥श्रु०२--चू०४- मूलतः--२६

॥ इति द्वितीय-श्रुतस्कन्धः ॥ २ ॥

॥ इति श्रीमदाचारांग-सूत्रम् ॥

॥ ग्रंथाग्रं–२५५४ ॥



॥ अर्हम् ॥

गणधरदेव श्रीमत्सुधर्मस्वामिनिर्मितं

॥ श्रीमत्सूत्रकृताङ्गम् ॥

॥ अथ समयाख्ये प्रथमाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥

बुज्झिज्जति तिउ(तिकु)ट्टिज्जा, बंधणं परिजाणिया । किमाह बंधणं वीरो, किंवा जाणं तिउट्टई ? ॥१॥ चित्तमन्तमचित्तं वा, परिगिज्झ किसामवि । अन्नं वा अणुजाणाइ, एवं दुक्खा ण मुच्चइ ॥२॥ सयं तिवायए पाणे, अदुवाऽन्नेहिं घायए । हणंतं वाऽणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥३॥ जस्सिं कुले समुप्पन्ने, जेहिं वा संवसे नरे । ममाइ लुप्पई बाले, अराणे अराणेहि मुच्छिए ॥४॥ वित्तं सोयरिया चेव, सव्वमेयं न ताणइ । संखाए जीविअं चेवं, कम्मुणा उ तिउट्टइ ॥५॥ एए गंथे विउक्कम्म, एगे समणमाहणा । अयाणंता विउस्सित्ता, सत्ता कामेहि माणवा ॥६॥ संति पंच महब्भूया, इहमेगेसिमाहिया । पुढवी आउ तेऊ वा, वाउ आगासपंचमा ॥७॥ एए पंच महब्भूया, तेब्भो एगोत्ति आहिया । अह तेसिं विणासेणं, विणासो होइ देहिणो ॥८॥ जहा य पुढवीथूभे, एगे नाणाहि दीसइ । एवं भो ! कसिणे लोए, विन्नू नाणाहि दीसइ (वड्ढइ) ॥९॥ एवमेगेत्ति जप्पंति, मंदा आरंभणिस्सिआ । एगे किच्चा सयं पावं, तिव्वं दुक्खं (तेणं तिव्वं) नियच्छइ ॥१०॥ पत्तेअं कसिणे आया, जे बाला जे अ पंडिआ । संति पिच्चा न ते संति, नत्थि सत्तोववाइया ॥११॥ नत्थि पुण्णे व पावे वा, नत्थि लोए इतो वरे । सरीरस्स विणासेणं, विणासो होइ देहिणो ॥१२॥ कुव्वं च कारयं चेव, सव्वं कुव्वं न विज्जई । एवं अकारओ अप्पा, एवं ते उ पगब्भिआ ॥१३॥ जे ते उ वाइणो एवं, लोए तेसिं कओ सिय ! । तमाओ ते तमं जंति, मंदा आरंभ

निस्सिया ॥१४॥ संति पंच महब्भूया, इहमेगेसि आहिया। आयछट्ठो पुणो आहु, आया लोगे य सासए ॥१५॥ दुहओ ण विणस्संति, नो य उप्पज्जए असं। सव्वेऽवि सव्वहा भावा, नियत्तीभावमागया ॥१६॥ पंच खंधे वयंतेगे, बाला उ खणजोइणो। अगणो अणणणो णेवाहु, हेउयं च अहेउयं ॥१७॥ पुढवी आउ तेऊ य, तहा वाऊ य एगओ। चत्तारि धाउणो रूवं, एवमाहंसु आवरे ॥१८॥ अगारमावसंतावि, अरणा वावि पव्वया। इमं दरिसणमावरणा, सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥१९॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते ओहंतराऽऽहिया ॥२०॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते संसारपारगा ॥२१॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते गब्भस्स पारगा ॥२२॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते जम्मस्स पारगा ॥२३॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते दुक्खस्स पारगा ॥२४॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते मारस्स पारगा ॥२५॥ नाणाविहाइं दुक्खाइं, अणुहोंति पुणो पुणो। संसारचक्कवालंमि, मच्चुवाहिजराकुले ॥२६॥ उच्चावयाणि गच्छंता, गब्भमेस्संति णंतसो। नायपुत्ते महावीरे, एवमाह जिणोत्तमे ॥२७॥ इति बेमि ॥

॥ इति प्रथमाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥१-१ ॥

॥ अथ प्रथमाध्ययने द्वितीय उद्देशकः ॥

आघायं पुण एगेसिं, उववण्णा पुढो जिया। वेदयंति सुहं दुक्खं, अदुवा लुप्पंति ठाणओ ॥१॥ न तं सयं कडं दुक्खं, कओ अन्नकडं च णं?। सुहं वा जइवा दुक्खं, सेहियं वा असेहियं ॥२॥ सयं कडं न

अरणोहिं, वेदयंति पुढो जिया । संगइअं तं तहा तेसिं, इहमेगेसि आहिअं ॥३॥ एवमेयाणि जंपंता, बाला पंडिअमाणिणो । निययानिययं संतं, अयाणंता अबुद्धिया ॥४॥ एवमेगे उ पासत्था, ते भुज्जो विप्पगब्भिआ । एवं उवट्ठि(पवट्टि)आ संता, ण ते दुक्खविमोक्खया ॥५॥ जविणो मिगा जहा संता, परितारोण वज्जिआ । असंकियाइं संकंति, संकिआइं असंकिणो ॥६॥ परियाणिआणि संकंता, पासिताणि असंकिणो । अराणाणभयसंविग्गा, संपलिंति तहिं तहिं ॥७॥ अह तं पवेज्ज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए मुच्चेज्ज पयपासाओ (पयपासाई), तं तुमं दे ण देहए ॥८॥ अहिअप्पाऽहियपराणाणे, विसमंतेणुवागते । स बद्धे पयपासेणं, तत्थ घायं नियच्छइ ॥९। एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिआ । असंकिआइं संकंति, संकिआइं असंकिणो ॥१०॥ धम्मपराणवणा जा सा, तं तु संकंति मूढगा । आरंभाइं न संकंति, अविअत्ता अकोविआ ॥११॥ सव्वप्पगं विउक्कस्सं, सव्वं णूमं विहूणिआ । अप्पत्तिअं अकम्मंसे, एयमट्ठं मिगे चुए ॥१२॥ जे एयं नाभिजाणंति, मिच्छदिट्ठी अणारिया । मिगा वा पासबद्धा ते, घायमेसंति णंतसो ॥१३॥ माहणा समणा एगे, सव्वे नाणं सयं वए । सव्वलोगेऽवि जे पाणा, न ते जाणंति किंचण ॥१४॥ मिलक्खू अमिलक्खुस्स, जहा वुत्ताणुभासए ण हेउं से विजाणाइ, भासिअं तऽणुभासए ॥१५॥ एमवन्नाणिया नाणं, वयंतावि सयं सयं । निच्छयत्थं न याणंति, मिलक्खुव्व अबोहिया ॥१६॥ अन्नाणियाणं वीमंसा, अराणाणे ण (नाणे नो व) विनियच्छइ । अप्पणो य परं नालं, कुतो अन्नाणुसासिउं ? ॥१७॥ वणे मूढे जहा जंतू, मूढे णेयाणुगामिए । दोवि एए अकोविया, तिव्वं सोयं नियच्छइ ॥१८॥ अंधो अंधं पहं णिंतो, दूरमद्धाणु गच्छइ । आवज्जे उप्पहं जंतू, अदुवा पंथाणुगामिए ॥१९॥ एवमेगे णियायट्ठी, धम्ममाराहगा वयं । अदुवा अहम्ममावज्जे, ण ते सव्वज्जुयं वए ॥२०॥ एवमेगे वियक्काहिं, नो अन्न पज्जुवासिया ।

अप्पणो य वियक्काहिं, अयमंजूहिं दुम्मई ॥२१॥ एवं तक्काइ साहिंता, धम्माधम्मे अकोविया। दुक्खं ते नाइतुट्टंति, सउणी पंजरं जहा ॥२२॥ सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं । जे उ तत्थ विउस्संति, संसारं ते विउस्सिया ॥२३॥ अहावरं पुरक्खायं, किरियावाइदरिसणं । कम्मचिंतापणट्ठाणं दुक्खखंधस्स वद्धणं (संसारस्स पवद्धणं) ॥२४॥ जाणं काएणऽणाउट्टी, अबुहो जं च हिंसति। पुट्ठो संवेदइ परं, अवियत्तं खु सावज्जं ॥२५॥ संतिमे तउ आयाणा, जेहिं कीरइ पावगं । अभिकम्मा य पेसा य, मणसा अणुजाणिया ॥२६॥ एते उ तउ आयाणा, जेहिं कीरइ पावगं । एवं भावविसोहीए, निव्वाणमभिगच्छइ ॥२७॥ पुत्तं पिया समारब्भ, आहारेज्ज असंजए । भुंजमाणो य मेहावी, कम्मणा नोवलिप्पइ ॥२८॥ मणसा जे पउस्संति, चित्तं तेसिं ण विज्जइ। अणवज्जमतहं तेसिं, ण ते संवुडचारिणो ॥२९॥ इच्चेयाहि य दिट्ठीहिं, सातागारवणिस्सिया। सरणंति मन्नमाणा, सेवंती पावगं जणा ॥३०॥ जहा अस्साविणिं णावं, जाइअंधो दुरूहिया । इच्छई (इच्छिज्जा) पारमागंतुं, अंतरा य विसीयई ॥३१॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया। संसारपारकंखी ते, संसारं अणुपरियट्टंति ॥३२॥

त्तिबेमि ॥ गाथाग्रं ॥५९॥ इति प्रथमाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥१-२॥

॥ अथ प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥

जं किंचि उ पूइकडं, सड्ढीमागंतुमीहियं । सहस्संतरियं भुंजे, दुपक्खं चेव सेवइ ॥ १ ॥ तमेव अवियाणंता, विसमंसि अकोविया। मच्छा वेसालिया चेव, उदगस्सऽभियागमे ॥ २ ॥ उदगस्स पभावेणं, सुक्कं सिग्घं तमिंति उ(सुक्कंमि घातमिति उ) ढंकेहि य कंकेहि य, आमिसत्थेहिं ते दुही ॥ ३ ॥ एवं तु समणा एगे, वट्टमाणसुहेसिणो । मच्छा वेसालिया चेव, घातमेस्संति णंतसो ॥ ४ ॥ इणमन्नं तु अन्नाणं, इहमेगेसि आहियं । देवउत्ते अयं

लोए, बंभउत्तेति आवरे ॥ ५ ॥ ईसरेण कडे लोए, पहाणाइ तहावरे। जीवाजीवसमाउत्ते, सुहदुक्खसमन्निए ॥ ६ ॥ सयंभुणा कडे लोए, इति वुत्तं महसिणा। मारेण संथुया माया, तेण लोए असासए ॥ ७ ॥ माहणा समणा एगे, आह अंडकडे जगे। असो तत्तमकासी य, अयाणंता मुसं वदे ॥ ८ ॥ सएहिं परियाएहिं, लोयं बूया कडेति य। तत्त ते ण विजाणंति (नाभिजाणंति) ण विणासी कयाइवि ॥ ९ ॥ अमणुन्नसमुप्पायं, दुक्खमेव विजाणिया। समुप्पायमजाणंता, कहं नायंति संवरं? ॥ १० ॥ सुद्धे अपावए आया, इहमेगेसिमाहियं। पुणो किड्डापदोसेणं, सो तत्थ अवरज्झई ॥ ११॥ इह संवुडे मुणी जाए, पच्छा होइ अपावए। वियडंबु जहा भुज्जो, नीरयं सरयं तहा ॥ १२ ॥ एताणुवीति मेधावी, बंभचेरेण ते वसे। पुढो पावाउया सव्वे, अक्खायारो सयं सयं ॥ १३ ॥ सए सए उवट्ठाणे, सिद्धिमेव न अन्नहा। अहो इहेव वसवत्ती, सव्वकामसमप्पिए ॥ १४ ॥ सिद्धा य ते अरोगा य, इहमेगेसिमाहियं। सिद्धिमेव पुरो काउं, सासए गढिआ नरा ॥ १५ ॥ असंवुडा अणादीयं, भमिहिंति पुणो पुणो। कप्पकालमुवज्जंति, ठाणा आसुरकिब्बिसिया ॥ १६ ॥

॥ इति बेमि ॥ ग्रं० ७५॥ इति प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशकः १-३॥

॥ अथ प्रथमाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः ॥

एते जिया भो! न सरणं, बाला पंडियमाणिणो (जत्थ बालेऽवसीयति)। हिच्चा णं पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा ॥ १ ॥ तं च भिक्खू परिन्नाय, वियं तेसु ण मुच्छए। अणुक्कस्से अप्पलीणे, मज्झेण मुणि जावए ॥ २ ॥ सपरिग्गहा य सारंभा, इहमेगेसिमाहियं। अपरिग्गहा अणारंभा, भिक्खू ताणं परिव्वए ॥ ३ ॥ कडेसु घासमेसेज्जा, विऊ दत्तेसणं चरे। अगिद्धो विप्पमुक्को अ, ओमाणं परिवज्जए ॥ ४ ॥ लोगवायं णिसामिज्जा,

इहमेगेसिमाहियं। विपरीयपन्नमंभूयं, अन्नउत्तं तयाणुयं ॥५॥ अणंते निइए लोए, सासए ण विणस्सती । अंतवं णिइए लोए, इति धीरोऽतिपासइ ॥ ६ ॥ अपरिमाणं वियाणाई, इहमेगेसिमाहियं । सव्वत्थ सपरिमाणं, इति धीरोऽतिपासई ॥७॥ जे केइ तसा पाणा, चिट्ठंति अदु थावरा । परियाए अत्थि से अंजू, जेण ते तसथावरा ॥ ८ ॥ उरालं जगतो जोगं, विवज्जासं पलिंति य । सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिंसिता ॥ ९ ॥ एयं खु नाणिणो सारं, जन्न हिंसइ किंचण । अहिंसासमयं चेव, एतावन्तं वियाणिया ॥ १० ॥ वुसिए य विगयगेही (विगयगिद्धी य) आयाणीयं संरक्खए (आयाणं सं (सम्म)रक्खए) । चरिआसणसेज्जासु, भत्तपाणे अ अंतसो ॥११॥ एतेहिं तिहिं ठाणेहिं, संजए सततं मुणी । उक्कसं जलणं णूमं, मज्झत्थं च विगिंचए ॥१२॥ समिए उ सया साहु, पंचसंवरसंवुडे । सिएहि असिए भिक्खू, आमोक्खाय परिव्वएज्जासि ॥१३॥ त्तिबेमि ॥

॥ इति प्रथमाध्ययने चतुर्थोद्देशकः ॥१-४॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥१॥

॥ अथ वैतालीयाख्ये द्वितीयाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥

संबुज्झह किं न बुज्झह ?, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा । णो हूवणमंति राइओ, नो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥१॥ डहरा बुड्ढा य पासह गब्भत्था वि चयंति माणवा । सेणे जह वट्टयं हरे एवं आउखयंमि तुट्टई (जीवाण जीवियं) ॥२॥ मायाहि पियाहिं लुप्पइ, नो सुलहा सुगई य पेच्चओ । एयाइं भयाइं पेहिया, आरम्भा विरमेज्ज सुव्वए सुट्ठिए ॥३॥ जमिणं जगती पुढो जगा, कम्मेहि लुप्पंति पाणिणो । सयमेव कडेहिं गाहइ, णो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठयं ॥४॥ देवा गंधव्वरक्खसा, असुरा भूमिचरा सरिसिवा । राया नरसेट्ठिमाहणा, ठाणा तेऽवि चयंति दुक्खिया ॥५॥ कामेहिं ण संथवेहि गिद्धा (कामे हि य संथवे हि य) कम्मसहा कालेण जंतवो । ताले जह

बंधणाच्चुए, एवं आउखयंमि तुट्टती ॥६॥ जे यावि बहुस्सुए सिया (सुई), धम्मिय माहणभिक्खुए सिया। अभिणूमकडेहिं मुच्छिए, तिव्वं ते कम्मेहिं किच्चती ॥७॥ अह पास विवेगमुट्ठिए, अवितिन्ने इह भासई धुवं। णाहिसि आरं कओ परं वेहासे कम्मेहिं किच्चती ॥८॥ जइ वि य णिगणे किसे चरे, जइविय भुंजिय मासमंतसो। जे इह मायाइ मिज्जई, आगंता गब्भाय णंतसो ॥९॥ पुरिसोरम पावकम्मुणा, पलियंतं मणुयाण जीवियं। सन्ना इह काममुच्छिया, मोहं जंति नरा असंवुडा ॥१०॥ जययं विहराहि जोगवं अणुपाणा पंथा दुरुत्तरा। अणुसासणमेव पक्कमे, वीरेहिं संमं पवेइयं ॥११॥ विरया वीरा समुट्ठिया, कोहकायरियाइपीसणा। पाणे ण हणंति सव्वसो, पावाओ विरयाऽभिनिव्वुडा ॥१२॥ णवि ता अहमेव लुप्पए, लुप्पंती लोअंसि पाणिणो। एवं सहिएहि पासए, अणिहे से पुट्ठे अहियासए ॥१३॥ धुणिया कुलियं व लेववं, किसए देहमणासणा इह। अविहिंसामेव पव्वए, अणुधम्मो मुणिणा पवेदितो ॥१४॥ सउणी जह पंसुगुंडिया, विहुणिय धंसयई सियं रयं। एवं दविओवहाणवं, कम्मं खवइ तवस्सिमाहणे ॥१५॥ उट्ठियमणगारमेसणं, समणं ठाणठिअं तवस्सिणं। डहरा वुड्ढा य पत्थए, अवि सुस्से ण य तं लभेज्ज णो ॥१६॥ जइ कालुणियाणि कासिया, जइ रोयंति य पुत्तकारणा। दवियं भिक्खु समुट्ठियं, णो लब्भंति ण संठवित्तए ॥१७॥ जइविय कामेहि लाविया, जइ णेज्जाहि ण बंधिउं घरं। जइ जीविय नावकंखए, णो लब्भंति ण संठ(सराण)वित्तए ॥१८॥ सेहंति य णं ममाइणो, माय पिया य सुया य भारिया। पोसाहि ण पासओ तुमं, लोग परंपि जहासि पोसणो ॥१९॥ अन्ने अन्नेहिं मुच्छिया, मोहं जंति णरा असंवुडा। विसमं विसमेहिं गाहिया, ते पावेहिं पुणो पगब्भिया ॥२०॥ तम्हा दवि इक्ख पंडिए, पावाओ विरतेऽभिणिव्वुडे। पणए वीरं महाविहिं, सिद्धिपहं णेआउयं धुवं ॥२१॥ वेयालियमग्गमागओ, मणवयसाकायेण

संवुडो। चिच्चा वित्तं च णायओ, आरंभं च सुसंवुडे चरे ॥२२॥
त्तिबेमि ॥ गाथाग्रं १२० ॥ इति द्वितीयाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥२-१॥

॥ अथ द्वितीयाध्ययने द्वितीय उद्देशकः ॥

तयसं व जहाइ से रयं, इति संखाय मुणी ण मज्जई। गोयन्नतरेण माहणे (जे विऊ) अहसेयकरी अनेसी(सि) इंखिणी ॥१॥ जो परिभवइ परं जणं, संसारे परिवत्तई महं (चिरं)। अदु इंखिणिया उ पाविया, इति संखाय मुणी ण मज्जई ॥२॥ जे यावि अणायगे सिया, जेविय पेसगपेसए सिया। जे मोणपयं उवट्ठिए, णो लज्जे समयं सया(ऽऽ)यरे ॥३॥ सम अन्नयरम्मि संजमे, संसुद्धे समणे परिव्वए। सिअ (जे) आवकहा समाहिए, दविए कालमकासि पंडिए ॥४॥ दूरं अणुपस्सिया मुणी, तीतं धम्ममणागयं तहा। पुट्ठे परुसेहिँ माहणे, अवि हणू समयंमि रीयइ (समयाहियासए) ॥५॥ पराणसमत्ते (पाहसमत्थे) सया जए, समताधम्ममुदाहरे मुणी। सुहुमे उ सया अलूसए, णो कुज्झे (कुप्पे) णो माणि माहणे ॥६॥ बहुजणणमणंमि संवुडो, सव्वट्ठेहिं णरे अणिस्सिए। हरए व सया अणाविले, धम्मं पादुरकासि कासवं ॥७॥ बहवे पाणा पुढो सिया, पत्तेयं समयं समी(उवे)हिया। जो मोणपदं उवट्ठिते, विरतिं तत्थ अकासि पंडिए ॥८॥ धम्मस्स य पारए मुणी, आरंभस्स य अंतए ठिए। सोयंति य णं ममाइणो, णो लब्भंति णियं परिग्गहं सोउण तयं उवट्ठियं, केइ गिही विग्घेण उट्ठिया। धम्मंमि अणुत्तरे मुणी, तंपि जिणिज्ज इमेण पंडिए) ॥९॥ इहलोगदुहावहं विऊ, परलोगे य दुहं दुहावहं। विद्धंसणधम्ममेव तं, इति विज्जं कोऽगारमावसे? ॥१०॥ महयं पलिगोव जाणिया, जावि य वंदणपूयणा इहं। सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे, विउमंता पयहिज्ज संथवं (पलिमंथ महं वियाणिया, जाविय वंदणपूयणा इहं। सुहुमं सल्लं दुरुद्धरं, तंपि जिणे एएण पंडिए) ॥११॥ एगे चरे ठाणमासणे,

सयणे एगे समाहिए सिया। भिक्खू उवहाणवीरिए, वइगुत्ते अज्झत्तसंवुडो ॥१२॥ णो पीहे ण यावपगुणे, दारं सुन्नघरस्स संजए। पुट्ठे ण उदाहरे वयं, ण समुच्छे णो संथरे तणं ॥१३॥ जत्थऽत्थमिए अणाउले, समविसमाइं मुणीऽहियासए। चरगा अदुवावि भेरवा, अदुवा तत्थ सरीसिवा सिया ॥१४॥ तिरिया मणुया य दिव्वगा, उवसग्गा तिविहाऽहियासिया। लोमादीयं ण हारिसे, सुन्नागारगओ महामुणी ॥१५॥ णो अभिकंखेज्ज जीवियं, नोऽविय पूयणपत्थए सिया। अब्भत्थमुविंति भेरवा, सुन्नागारगयस्स भिक्खुणो ॥१६॥ उवणीयतरस्स ताइणो, भयमाणस्स विविक्कमासणं। सामाइयमाहु तस्स जं, जो अप्पाण भए ण दंसए ॥१७॥ उसिणोदगतत्तभोइणो, धम्मट्ठि-यस्स मुणिस्स हीमतो। संसग्गि असाहु राइहिं, असमाही उ तहागयस्सवि ॥१८॥ अहिगरणकडस्स भिक्खुणो, वयमाणस्स पसज्झ दारुणं। अट्ठे परिहायती बहु, अहिगरणं न करेज्ज पंडिए ॥१९॥ सीओदग पडि दुगु-छिणो, अपडिण्णस्स लवावसप्पिणो। सामाइयमाहु तस्स जं, जो गिहिम-त्तेऽसणं उ भुंजती ॥२०॥ ण य संखयमाहु जीवियं, तहविय बालजणो पगब्भइ। बाले पापेहिं मिज्जती, इति संखाय मुणी ण मज्जती ॥२१॥ छंदेण पले इमा पया, बहुमाया मोहेण पाउडा। वियडेण पलिंति माहणे, सीउण्हं वयसाऽहियासए ॥२२॥ कुजए अपराजिए जहा, अक्खेहि कुसलेहिं दीवयं। कडमेव गहाय णो कलिं, नो तीयं नो चेव दावरं ॥२३॥ एवं लोगंमि ताइणा, बुइए जे धम्मे अणुत्तरे। तं गिण्ह हियंति उत्तमं, कडमिव सेसऽवहाय पंडिए ॥२४॥ उत्तर मणुयाण आहिया, गामधम्मा इइ मे अणुस्सुयं। जंसी विरता समुट्ठिया, कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥२५॥ जे एय चरंति आहियं, नाएणं महया महेसिणा। ते उट्ठिय ते समुट्ठिया, अन्नोन्नं सारंति धम्मओ ॥२६॥ मा पेह पुरा पणामए, अभिकंखे उवहिं धुणित्तए। जे दूमण तेहिं णो णया, ते जाणंति समाहिमाहियं ॥२७॥ णो काहिएँ होज्ज संजए, पासणिए

ण् य संपसारए। नच्चा धम्मं अणुत्तरं, कयकिरिए णयावि मामए ॥२८॥ छन्नं च पसंस णो करे, न य उक्कोस पगास माहणे। तेसिं सुविवेगमाहिए, पणया जेहिं सुजोसिअं धुयं ॥२९॥ अणिहे (अणहे) सहिए सुसंवुडे, धम्मट्ठी उवहाणवीरिए। विहरेज्ज समाहिइंदिए, अत्तहिअं खु दुहेण लब्भइ ॥३०॥ ण हि णूण पुरा अणुस्सुतं (अवितहं), अदुवा तं तह णो समुट्ठियं। मुणिणा सामाइआहितं, नाएणं जगसव्वदंसिणा ॥३१॥ एवं मत्ता महंतरं, धम्ममिणं सहिया बहू जणा। गुरुणो छंदाणुवत्तगा, विरया तिन्न महोघमाहितं ॥३२॥ तिबेमि ॥ (गाथाग्रम् १५२)

॥ इति द्वितीयाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥२-२॥

॥ अथ द्वितीयाध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥

संवुडकम्मस्स भिक्खुणो, जं दुक्खं पुट्ठं अबोहिए। तं संजमओऽवचिज्जई, मरणं हेच्च वयंति पंडिया ॥ १ ॥ जे विन्नवणाहिऽजोसिया, संतिन्नेहिं समं वियाहिया। तम्हा उड्ढंति पासहा (उड्ढं तिरियं अहे तहा), अदक्खु कामाइ रोगवं ॥ २ ॥ अग्गं वणिएहिं आहियं, धारंती राईणिया इहं। एवं परमा महव्वया, अक्खाया उ सराइभोयणा ॥ ३ ॥ जे इह सायाणुगा नरा, अज्झोववन्ना कामेहि मुच्छिया। किवणेण समं पगब्भिया, न वि जाणंति समाहिमाहितं ॥ ४ ॥ वाहेण जहा व विच्छए, अबले होइ गवं पचोइए। से अंतसो अप्पथामए, नाइवहइ अबले विसीयति ॥ ५ ॥ एवं कामेसणं विऊ, अज्ज सुए पयहेज्ज संथवं। कामी कामे ण कामए, लद्धे वावि अलद्ध कण्हुई ॥ ६ ॥ मा पच्छ असाधुता भवे, अच्चेही अणुसास अप्पगं। अहियं च असाहु सोयती, से थणती परिदेवती बहुं ॥ ७ ॥ इह जीवियमेव पासहा, तरुणे एव (दुब्बल) वाससयस्स तुट्टती। इत्तरवासे य बुज्झह, गिद्धनरा कामेसु मुच्छिया ॥८॥ जे इह आरंभनिस्सिया आतदंडा एगं-

तलूमगा । गंता ते पावलोगयं, चिररायं आसुरियं दिसं ॥ ९ ॥ ण य संखयमाहु जीवितं, तहवि य बालजणो पगब्भई । पच्चुप्पन्नेण कारियं, को दट्ठुं परलोयमागते ? ॥ १० ॥ अदक्खुव दक्खुवाहियं, (तं) सद्दहसु अदक्खुदंसणा ! । हंदि हु सुनिरुद्धदंसणे, मोहणिज्जेण कडेण कम्मुणा ॥ ११ ॥ दुक्खी मोहे पुणो पुणो, निव्विदेज्ज सिलोगपूयणं । एवं सहितेऽहिपासए, आयतुलं पाणेहिं संजए ॥ १२ ॥ गारंपिअ आवसे नरे, अणुपुव्वं पाणेहिं संजए । समता सव्वत्थ सुव्वते, देवाणं गच्छे सलोगयं ॥१३॥ सोच्चा भगवाणुसासणं, सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं । सव्वत्थ विणीयमच्छरे, उञ्छं भिक्खु विसुद्धमाहरे ॥ १४ ॥ सव्वं नच्चा अहिट्ठए, धम्मट्ठी उवहाणवीरिए । गुत्ते जुत्ते सदाजए, आयपरे परमायतट्ठिते ॥ १५ ॥ वित्तं पसवो य नाइओ, तं बाले सरणं ति मन्नइ । एते मम तेसुवी अहं, नो ताणं सरणं न विज्जई ॥ १६ ॥ अब्भागमितंमि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतिए । एगस्स गती य आगती, विदुमंता सरणं ण मन्नई ॥ १७ ॥ सव्वे सयकम्मकप्पिया, अवियत्तेण दुहेण पाणिणो । हिंडंति भयाउला सढा, जाइजरामरणेहिऽभिद्दुता ॥ १८ ॥ इणमेव खणं वियाणिया, णो सुलभं बोहिं च आहितं । एवं सहिएऽहिपासए, (अहियासए) आह जिणे इणमेव सेसगा ॥ १९ ॥ अभविंसु पुरावि भिक्खुवो, आएसावि भवंति सुव्वता । एयाइं गुणाइं आहु ते, कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥ २० ॥ तिविहेणवि पाण मा हणे, आयहिते अणियाण संवुडे । एवं सिद्धा अणंतसो, संपइ जे अ अणागयावरे ॥ २१ ॥ एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ २२ ॥ त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं. १७४)

॥ इति द्वितीयाध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥ २-३ । इति द्वितीयमध्ययनम् ।२।

॥ अथोपसर्गपरिज्ञाख्ये तृतीयाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥

सूरं मणइ अप्पाणं, जाव जेयं न पस्सती । जुज्झंतं दढधम्माणं, सिसुपालो व महारहं ॥१॥ पयाता सूरा रणसीसे, संगामंमि उवट्ठिते । माया पुत्तं न याणाइ, जेएण परिविच्छए ॥२॥ एवं सेहेवि अप्पुट्ठे, भिक्खायरियाअकोविए । सूरं मणति अप्पाणं, जाव लूहं न सेवए ॥३॥ जया हेमंतमासंमि, सीतं फुसइ सवायगं (सव्वगं) । तत्थ मंदा विसीयंति, रज्जहीणा व खत्तिया ॥४॥ पुट्ठे गिम्हाहितावेणं, विमणे सुपिवासिए । तत्थ मंदा विसीयंति, मच्छा अप्पोदए जहा ॥५॥ सदा दत्तेसणा दुक्खा, जायणा दुप्पणोल्लिया । कम्मत्ता दुब्भगा चेव, इच्चाहंसु पुढोजणा ॥६॥ एते सद्दे अचायंता, गामेसु णगरेसु वा । तत्थ मंदा विसीयंति, संगामंमिव भीरुया ॥७॥ अप्पेगे खुधियं भिक्खुं, सुणी डंसति लूसए । तत्थ मंदा विसीयंति, तेउपुट्ठा व पाणिणो ॥८॥ अप्पेगे पडिभासंति, पडिपंथियमागता ॥ पडियारगता एते, जे एते एव जीविणो ॥९॥ अप्पेगे वइ जुंजंति, नगिणा पिंडोलगाहमा । मुंडा कंडूविणट्ठंगा, उज्जल्ला असमाहिता ॥१०॥ एवं विप्पडिवन्नेगे, अप्पणा उ अजाणया । तमाओ ते तमं जंति, मंदा मोहेण पाउडा ॥११॥ पुट्ठो य दंसमसएहिं, तणफासमचाइया । न मे दिट्ठे परे लोए, जइ परं मरणं सिया ॥१२॥ संतत्ता केसलोएणं, बंभचेरपराइया । तत्थ मंदा विसीयंति, मच्छा विट्ठा व (पविट्ठा) केयणे ॥१३॥ आयदंडसमायारे, मिच्छासंठियभावणा । हरिसप्पओसमावन्ना, केई लूसंतिऽनारिया ॥१४॥ अप्पेगे पलियंते सि, चारो चोरोत्ति सुव्वयं । बंधंति भिक्खुयं बाला, कसायवयणेहि य ॥१५॥ तत्थ दंडेण संवीते, मुट्ठिणा अदु फलेण वा । नातीणं सरती बाले, इत्थी वा कुद्धगामिणी ॥१६॥ एते भो ! कसिणा फासा, फरुसा दुरहियासया । हत्थी वा सरसंवित्ता, कीवाऽवस गया गिहं

(तिव्वसड्ढे गया गिहं) ॥१७॥

॥ निबेमि ॥ इति तृतीयाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥३-१॥ (गाथाग्रं० १९१)

॥ अथ तृतीयाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥

अहिमे सुहुमा संगा, भिक्खुणं जे दुरुत्तरा। जत्थ एगे विसीयंति, ण चयंति जवित्तए ॥१॥ अप्पेगे नायओ (नायगा) दिस्स, रोयंति परिवारिया। पोस णो ताय ! पुट्ठोऽसि, कस्स ताय ! जहासि णो ? ॥२॥ पिया ते थेरओ तात !, ससा ते खुड्डिया इमा। भायरो ते सगा तात !, सोयरा कि जहासि णो ? ॥३॥ मायरं पियरं पोस, एवं लोगो भविस्सति। एवं खुलोइयं ताय !, जे पालंति य मायरं ॥४॥ उत्तरा (उत्तमा) महुरुल्लावा, पुत्ता ते तात ! खुड्डया। भारिया ते णवा तात !, मा सा अन्नं जणं गमे ॥५॥ एहि ताय ! घरं जामो, मा य कम्मे सहा वयं। बितियंपि ताय ! पासामो, जामु ताव सयं गिहं ॥६॥ गंतुं ताय ! पुणो गच्छे, ण तेणासमणो सिया। अकामगं परिक्कम्मं, को ते वारेउमरिहति ? ॥७॥ जं किंचि अणगं तात !, तंपि सव्वं समीकतं (उत्तारितं)। हिरण्णं ववहाराइ, तंपि दाहामु ते वयं ॥८॥ इच्चेव णं सुसेहंति, कालुणीयसमुट्ठिया। विबद्धो नाइसंगेहिं, ततोऽगारं पहावइ ॥९॥ जहा रुक्खं वणे जायं, मालुया पडिबंधई। एव णं पडिबंधंति, णातओ असमाहिणा ॥१०॥ विबद्धो नातिसंगेहिं, हत्थीवावी नवग्गहे। पिट्ठतो परिसप्पंति, सुयगोव्व अदूरए ॥११॥ एते संगा मणूसाणं, पाताला व अतारिमा। कीवा जत्थ य किस्संति, नाइसंगेहिं मुच्छिया ॥१२॥ ॥१२॥ तं च भिक्खू परिन्नाय, सव्वे संगा महासवा। जीवियं नावकंखिज्जा, सोच्चा धम्ममणुत्तरं ॥१३॥ अहिमे (अहो इमे) संति आवट्टा, कासवेणं पवेइया। बुद्धा जत्थावसप्पंति, सीयंति अबुहा जहिं ॥१४॥ रायाणो रायऽमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया। निमंतयंति भोगेहिं, भिक्खूयं साहुजीविणं

॥१५॥ हत्थऽस्सरहजाणेहि, विहारगमणेहि य । भुंज भोगे इमे सग्घे, महरिसी ! पूजयामु तं ॥१६॥ वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य । भुंजाहिमाइं भोगाइं, आउसो ! पूजयामु तं ॥१७॥ जो तुमे नियमो चिण्णो, भिक्खुभावंमि सुव्वया ! । अगारमावसंतस्स, सव्वो संविज्जए तहा ॥१८॥ चिरं दूइज्जमाणस्स, दोसो दाणिं कुतो तव ? । इच्चेव णं निमंतेंति, नीवारेण व सूयरं ॥१९॥ चोइया भिक्खचरियाए, अचयंता जवित्तए । तत्थ मंदा विसीयंति, उज्जाणंसि व दुब्बला ॥२०॥ अचयंता व लूहेणं, उवहाणेण तज्जिया । तत्थ मंदा विसीयंति, उज्जाणंसि जरग्गवा ॥२१॥ एवं निमंतणं लद्धुं, मुच्छिया गिद्ध इत्थीसु । अज्झोववन्ना कामेहिं चोइज्जंता गया गिहं ॥२२॥

॥ तिबेमि ॥ इति तृतीयाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥३-२॥

॥ अथ तृतीयाध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥

जहा संगामकालंमि पिट्ठतो भीरु वेहइ । वलयं गहणं णूमं, को जाणइ पराजयं ? ॥ १ ॥ मुहुत्ताणं मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ तारिसो । पराजियाऽवसप्पामो, इति भीरू उवेहई ॥ २ ॥ एवं तु समणा एगे, अबलं नच्चाण अप्पगं । अणागयं भयं दिस्स, अवि(अव)कप्पंतिमं सुयं ॥ ३ को जाणइ विऊ(या)वातं, इत्थीओ उदगाउ वा । चोइज्जंता पवक्खामो, ण णो अत्थि पकप्पियं ॥ ४ ॥ इच्चेव पडिलेहंति, वलया (वलाइ) पडिलेहिणो । वितिगिच्छसमावन्ना, पंथाणं च अकोविया ॥ ५ ॥ जे उ संगामकालंमि, नाया सूरपुरंगमा । णो ते पिट्ठमुवेहिंति, किं परं मरणं सिया ? ॥ ६ ॥ एवं समुट्ठिए भिक्खू, वोसिज्जाऽगारबंधणं । आरंभं तिरियं कट्टु, अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ७ ॥ तमेगे परिभासंति, भिक्खूयं साहुजीविणं । जे एवं परिभासंति, अंतए ते समाहिए ॥ ८ ॥ संबद्धसमकप्पा उ, अन्नमन्नेसु मुच्छिया ।

पिंडवायं गिलाणस्स, जं सारेह दलाह य ॥ ९ ॥ एवं तुब्भे सरागत्था, अन्नमन्नमणुव्वसा । नट्ठसप्पहसब्भावा, संसारस्स अपारगा ॥ १० ॥ अह ते परिभासेज्जा, भिक्खू मोक्खविसारए । एवं तुब्भे पभासंता, दुपक्खं चेव सेवह ॥ ११ ॥ तुब्भे भुंजह पाएसु, गिलाणो अभिहडंमि या । तं च बीओदगं भोच्चा, तमुद्दिस्सादि जं कडं ॥ १२ ॥ लित्ता तिव्वाभितावेणं, उज्झिया असमाहिया । नातिकंडूइयं सेयं, अरुयस्सावरज्झती ॥ १३ ॥ तत्तेण अणुसिट्ठा ते, अपडिन्नेण जाणया । ण एस णियए मग्गे, असमिक्खा वती किती ॥ १४ ॥ एरिसा जा वई एसा, अग्गवेणुव्व करिसिता । गिहिणो अभिहडं सेयं, भुंजिउं ण उ भिक्खुणं ॥ १५ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा, सारंभा ण विसोहिया । ण उ एयाहिं दिट्ठीहिं, पुव्वमासि पग्गप्पिअं ॥ १६ ॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, अचयंता जवित्तए । ततो वायं णिराकिच्चा, ते भुज्जोवि पगब्भिया ॥ १७ ॥ रागदोसाभिभूयप्पा, मिच्छत्तेणं अभिद्दुता । आउस्से सरणं जंति, टंकणा इव पव्वयं ॥ १८ ॥ बहुगुणप्पगप्पाइं, कुज्जा अत्तसमाहिए । जेणऽन्ने णो विरुज्झेज्जा, तेण तं तं समायरे ॥ १९ ॥ इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेइयं । कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥ २० ॥ संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २१ ॥ त्तिबेमि

॥ इति तृतीयाध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥३-३॥ (गाथाग्रं २३४)

॥ अथ तृतीयाध्ययने चतुर्थोद्देशकः ॥

आहंसु महापुरिसा, पुव्विं तत्ततवोधणा । उदएण सिद्धिमावन्ना, तत्थ मदो विसीयति ॥ १ ॥ अभुंजिया नमी विदेही, रामगुत्ते य भुंजिआ । बाहुए उदगं भोच्चा, तहा नारायणे रिसी ॥ २ ॥ आसिले देविले चेव, दीवायण महारिसी । पारासरे दगं भोच्चा, बीयाणि हरियाणि य ॥ ३ ॥

एते पुव्वं महापुरिसा, आहिता इह संमता। भोच्चा बीओदगं सिद्धा, इति मेयमणुस्सुयं ॥ ४ ॥ तत्थ मंदा विसीअंति, वाहच्छिन्ना व गद्दभा। पिट्ठतो परिसप्पंति, पिट्ठसप्पी य संभमे ॥ ५ ॥ इहमेगे उ भासंति (मन्नंति), सातं सातेण विज्जती। जे तत्थ आरियं मग्गं, परमं च समाहिए (यं) ॥ ६ ॥ मा एयं अवमन्नंता, अप्पेणं लुंपहा बहुं। एतस्स (उ) अमोक्खाए, अओहारिव्व जूरह ॥ ७ ॥ पाणाइवाते वट्टंता, मुसावादे असंजता। अदिन्नादाणे वट्टंता, मेहुणे य परिग्गहे ॥ ८ ॥ एवमेगे उ पासत्था, पन्नवंति अणारिया। इत्थीवसं गया बाला, जिणसासणपरम्मुहा ॥ ९ ॥ जहा गंडं पिलागं वा, परिपीलेज्ज मुहुत्तगं। एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिया ? ॥ १० ॥ जहा मंधादए नाम, थिमिअं भुंजती दगं। एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिआ ? ॥ ११ ॥ जहा विहंगमा पिंगा, थिमियं भुंजती दगं। एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिआ ! ॥१२॥ एवमेगे उ पासत्था, मिच्छादिट्ठी अणारिया। अज्झोववन्ना कामेहिं, पूयणा इव तरुणए ॥१३॥ अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा। ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउंमि जोव्वणे ॥१४॥ जेहिं काले परिक्कंतं, न पच्छा परितप्पए। ते धीरा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥१५॥ जहा नई वेयरणी, दुत्तरा इह संमता। एवं लोगंसि नारीओ, दुरुत्तरा अमईमया ॥१६॥ जेहिं नारीण संजोगा, पूयणा पिट्ठतो कता। सव्वमेयं निराकिच्चा, ते ठिआ सुसमाहिए ॥१७॥ एते ओघं तरिस्संति, समुद्दं ववहारिणो। जत्थ पाणा विसन्नासि, किच्चंती सयकम्मुणा ॥१८॥ तं च भिक्खू परिन्नाय, सुव्वते समिते चरे। मुसावायं च वज्जिज्जा अदिन्नादाणं च वोसिरे ॥१९॥ उड्ढमहे तिरियं वा, जे केई तसथावरा। सव्वत्थ विरतिं कुज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥२०॥ इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं। कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥२१॥ संखाय पेसलं धम्मं,

दिट्ठिमं परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥२२॥
त्तिबेमि ॥ इति तृतीयाध्ययने चतुर्थोद्देशकः ॥३-४॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥३॥

॥ अथ चतुर्थे स्त्रीपरिज्ञाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥

जे मायरं च पियरं च, विप्पजहाय पुव्वसंजोगं । एगे सहिते चरिस्सामि, आरतमेहुणो विवित्तेसु (विवित्तेसि) ॥१॥ सुहुमेणं तं परिक्कम्म, छन्नपएण इत्थिओ मंदा । उव्वायंपि ताउ जाणसु (जाणंति), जहा लिस्संति भिक्खुणो एगे ।।२॥ पासे भिसं णिसीयंति अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति। कायं अहेवि दंसंति, बाहू उद्धट्टु कक्खमणुव्वजे ॥३॥ सयणासणेहिं जोगेहि इत्थिओ एगता णिमंतंति । एयाणि चेव से जाणे, पासाणि विरूवरूवाणि ॥४॥ नो तासु चक्खु संधेज्जा, नोविय साहसं समभिजाणे । णो सहियंपि विहरेज्जा, एवमप्पा सुरक्खिओ होइ॥५॥ आमंतिय उस्सविया भिक्खु आयसा निमंतंति । एताणि चेव से जाणे, सद्दाणि विरूवरूवाणि ॥६॥ मणबंधणेहिं णेगेहिं, कलुण विणीयमुवगसित्ताणं । अदु मंजुलाइं भासंति, आणवयंति भिन्नकहाहिं ॥७॥ सीहं जहा व कुणिमेणं, निब्भयमेगचरंति पासेणं । एविथियाउ बंधंति, संवुडं एगतियमणगारं ॥८॥ अह तत्थ पुणो णमयंती, रहकारो व णेमि आणुपुव्वीए । बद्धे मिए व पासेणं, फंदंते वि ण मुच्चए ताहे ॥९॥ अह सेऽणुतप्पई पच्छा, भोच्चा पायसं व विसमिस्सं । एवं विवे(विवा)गमादाय, संवासो नवि कप्पए दविए ॥१०॥ तम्हा उ वज्जए इत्थी, विसलित्तं व कंटगं नच्चा । ओए कुलाणि वसवत्ती, आघाते ण सेवि णिग्गंथे ॥ ११॥ जे एयं उंछं अणुगिद्धा, अन्नयरा हुंति कुसीलाणं । सुतवस्सिएवि से भिक्खू, नो विहरे सह णमित्थीसु ॥ १२ ॥ अवि धूयराहि सुण्हाहिं, धातीहिं अदुव दासीहिं । महतीहिं वा कुमारीहिं, संथवं से न कुज्जा अणगारे ॥ १३॥ अदु णाइणं च सुहीणं वा, अप्पियं

दट्ठु एगता होति। गिद्धा सत्ता कामेहिं, रक्खणपोसणो मणुस्सोऽसि ॥ १४ ॥ समणंपि दट्ठुदासीणं (समणं दट्ठू णु दासीणं) तत्थवि ताव एगे कुप्पंति । अदुवा भोयणेहिं णत्थेहिं, इत्थीदोसं संकिणो होंति ॥ १५ ॥ कुव्वति संथवं ताहिं, पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं । तम्हा समणा ण समेंति, आयहियाए सण्णिसेज्जाओ ॥ १६ ॥ बहवे गिहाइं अवहट्टु, मिस्सीभावं पत्थुया (पण्णता) य एगे । धुवमग्गमेव पवयंति, वायावीरियं कुसीलाणं ॥ १७ ॥ सुद्धं रवति परिसाए, अह रहस्संमि दुक्कडं करेंति । जाणंति य णं तहाविहा, माइल्ले महासढेऽयंति ॥ १८ ॥ सयं दुक्कडं च न वदति, आइट्ठोवि पकत्थति वाले । वेयाणुवीइ मा कासी, चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो ॥ १९ ॥ ओसियावि इत्थिपोसेसु, पुरिसा इत्थिवेयखेदन्ना । पण्णासमन्निता वेगे, नारीणं वसं उवकसंति ॥ २० ॥ अवि हत्थपादछेदाए, अदुवा वद्धमंसउक्कंते । अवि तेयसाभितावणाणि, तच्छियखारसिंचणाइं च ॥ २१ ॥ अदु कण्णणासच्छेदं, कंठच्छेदणं तितिक्खंती । इति इत्थ पावसंतत्ता, नय विंति पुणो न काहिंति ॥ २२ ॥ सुतमेतमेवमेगेसिं, इत्थीवेदेति हु सुयक्खायं । एवंपि ता वदित्ताणं, अदुवा कम्मुणा अवकरेंति ॥ २३ ॥ अन्नं मणेण चिंतेति, वाया अन्नं च कम्मुणा अन्नं । तम्हा ण सद्दह भिक्खू, बहुमायाओ इत्थिओ णच्चा ॥ २४ ॥ जुवती समणं बूया, विचित्तऽलंकारवत्थगाणि परिहित्ता । विरता चरिस्सहं रुक्खं (मौनं), धम्ममाइक्ख णे भयंतारो ॥ २५ ॥ अदु साविया पवाएणं, अहमंसि साहम्मिणी य समणाणं । जतुकुंभे जहा उवज्जोई, संवासे विदू विसीएज्जा ॥ २६ ॥ जतुकुंभे जोइउवगूढे, आसुऽभितत्ते णासमुवयाइ । एवित्थियाहिं अणगारा, संवासेण णासमुवयंति ॥ २७ ॥ कुव्वंति पावगं कम्मं, पुट्ठा वेगेवमाहिंसु । नोऽहं करेमि पावंति, अंकेसाइणी ममेसत्ति ॥ २८ ॥ बालस्स मंदयं बीयं, जं च कडं अवजाणई भुज्जो । दुगुणं करेइ से पावं, पूयणकामो विसन्नेसी

॥ २९ ॥ संलोकणिज्जमणगारं, आयगयं निमंतणेणाहंसु । वत्थं च ताइ ! पायं वा, अन्नं पाणगं पडिग्गाहे ॥ ३० ॥ णीवारमेवं बुज्भेज्जा, णो इच्छे अगारमागंतुं । बद्धे विसयपासेहिं, मोहमावज्जइ पुणो मंदे ॥ ३१ ॥ त्तिबेमि (गाथाग्रं २८७)

॥ इति चतुर्थाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥ ४-१ ॥

॥ अथ चतुर्थाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥

ओए सया ण रज्जेज्जा, भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा । भोगे समणाण सुणेह, जह भुंजंति भिक्खुणो एगे ॥ १ ॥ अह तं तु भेदमावन्नं, मुच्छितं भिक्खुं काममतिवट्टं । पलिभिंदिया णं तो पच्छा, पादुद्धट्टु मुद्धि पहणंति ॥ २ ॥ जइ केसिआ णं मए भिक्खू, णो विहरे सह णमित्थीए । केसाणऽविह लुंचिस्सं, नन्नत्थ मए चरिज्जासि ॥ ३ ॥ अह णं से होई उवलद्धो, तो पेसंति तहाभूएहिं । अलाउच्छेदं पेहेहि, वग्गुफलाइं आहराहित्ति ॥ ४ ॥ दारूणि सागपागाए अन्नपाणाय, पज्जोओ वा भविस्सती राओ । पाताणि य (पोताणि य) मे रयावेहि, एहि ता मे पिट्ठओमद्दे ॥ ५ ॥ वत्थाणि य मे पडिलेहेहि, अन्नं पाणं च आहराहित्ति । गंधं (गंथं) च रओहरणं च, कासवगं च मे समणुजाणाहि ॥ ६ ॥ अदु अंजणिं अलंकारं, कुक्कययं (कुक्कुइयं–घर्घरं) मे पयच्छाहि । लोद्धं च लोद्धकुसुमं च, वेणुपलासियं च गुलियं च ॥ ७ ॥ कुट्ठं तगरं च अगरुं, संपिट्ठं सम्मं उसिरेणं । तेल्लं मुहभिंजाए (भिगडलिजाए–भिलिजए) वेणुफलाइं सन्निधानाए ॥ ८ ॥ नंदीचुण्णगाइं पाहराहि, छत्तोवाणहं च जाणाहि । सत्थं च सूवच्छेज्जाए, आणीलं च वत्थयं रयावेहि ॥ ९ ॥ सुफणिं च सागपागाए, आमलगाइं दगाहरणं च । तिलगकरणिमंजणसलागं, घिंसु मे विहूणयं विजाणेहि ॥ १० ॥ संडासगं च फणिहं च,

सीहलिपासगं च आणाहि । आदंसगं च पयच्छाहि, दंतपक्खालणं पवेसाहि ॥ ११ ॥ पूयफलं तंबोलयं, सूईसुत्तगं च जाणाहि । कोसं च मोयमेहाए, सुप्पुक्खलगं च खारगालणं च ॥ १२ ॥ चंदालगं च करगं च, वच्चघरं च आउसो ! खणाहि । सरपाययं च जायाए, गोरहगं च सामणेराए ॥ १३ ॥ घडिगं च सडिंडिमयं च, चेलगोलं कुमारभूयाए । वासं समभिआवरणं, आवसहं च जाण भत्तं च ॥ १४ ॥ आसंदियं च नवसुत्तं, पाउल्लाइं संकमट्ठाए । अदु पुत्तदोहलट्ठाए, आणप्पा हवंति दासा वा ॥ १५ ॥ जाए फले समुप्पन्ने, गेण्हसु वा णं अहवा जहाहि । अहं पुत्तपोसिणो एगे, भारवहा हवंति उट्टा वा ॥ १६ ॥ राओवि उट्ठिया संता, दारगं च संठवंति धाई वा । सुहिरामणा वि ते संता, वत्थथोवा हवंति हंसा वा ॥ १७ ॥ एवं बहुहिं कयपुव्वं, भोगत्थाए जेऽभियावन्ना । दासे मिइव पेसे वा, पसुभूतेव से ण वा केई ॥ १८ ॥ एवं खु तासु विन्नप्पं, संथवं संवासं च वज्जेज्जा । तज्जातिआ इमे कामा, वज्जकरा य एवमक्खाए ॥ १९ ॥ एयं भयं ण सेयाय, इइ से अप्पगं निरुंभित्ता । णो इत्थिं णो पसुं भिक्खू, णो सयं पाणिणा णिलिज्जेज्जा ॥ २० ॥ सुविसुद्धलेसे मेहावी, परकिरिअं च वज्जए नाणी । मणसा वयसा कायेणं, सव्वफाससहे अणगारे ॥ २१ ॥ इच्चेवमाहु से वीरे, धुअरए धुअमोहे (धुअराजमग्गे) से भिक्खू । तम्हा अज्झत्थविसुद्धे, सुविमुक्के (विहरे) आमोक्खाए परिव्वएज्जा सि ॥ २२ ॥ त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं ३०१)

॥ इति चतुर्थाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥ ४-२॥ इति चतुर्थाध्ययनम् ४॥



॥ अथ पञ्चमे नरकविभक्त्यध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥

पुच्छिस्सऽहं केवलियं महेसिं, कहं भितावा णरगा पुरत्था ? । अजाणओ मे मुणि बूहि जाणं, कहिं नु बाला नरयं उविंति ? ॥१॥ एवं मए पुट्ठे महाणुभावे, इणमोऽब्बवी कासवे आसुपन्ने । पवेदइस्सं दुहमट्ठदुग्गं, आदीणियं दुक्कडियं (दुक्कडिणं) पुरत्था ॥२॥ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी, पावाइं कम्माइं करंति रुद्दा । ते घोररूवे तमिसंधयारे, तिव्वाभितावे नरए पडंति ॥३॥ तिव्वं तसे पाणिणो थावरे य, जे हिंसती आयसुहं पडुच्चा । जे लूसए होइ अदत्तहारी, ण सिक्खती सेयवियस्स किंचि ॥४॥ पागब्भि पाणे बहुणं तिवाति, अनिव्वते घातमुवेति बाले । णिहो णिसं गच्छति अंतकाले, अहोसिरं कट्टु उवेइ दुग्गं ॥५॥ हण छिंदह भिंदह णं दहेति, सद्दे सुणिता परहम्मियाणं । ते नारगाओ भयभिन्नसन्ना, कंखंति कन्नाम दिसं वयामो ! ॥६॥ इंगालरासिं जलियं सजोतिं, तत्तोवमं भूमिमणुक्कमंता । ते डज्झमाणा कलुणं थणंति, अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठितीया ॥७॥ जइ ते सुया वेयरणी भिदुग्गा, णिसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया । तरंति ते वेयरणीं भिदुग्गां, उसुचोइया सत्तिसु हम्ममाणा ॥ ८ ॥ कीलेहिं विज्झंति असाहुकम्मा, नावं उविंते सइविप्पहूणा । अन्ने तु सूलाहिं तिसूलियाहिं, दीहाहिं विद्धूण अहेकरंति ॥ ९ ॥ केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ, उदगंसि बोलंति महालयंसि । कलंबुयावालुय मुम्मुरे य, लोलंति पच्चंति अ तत्थ अन्ने ॥ १० ॥ अ(आ)सूरियं नाम महाभितावं, अंधंतमं दुप्पतरं महंतं । उड्ढं अहेअं तिरियं दिसासु, समाहिओ (समूसिओ) जत्थऽगणी झियाई ॥ ११ ॥ जंसी गुहाए जलणेऽतिउट्टे, अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो । सया य कलुणं पुण घम्मठाणं, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं ॥ १२ ॥ चत्तारि अगणीओ समारभित्ता, जहिं कूरकम्माऽभितविंति बालं । ते तत्थ चिट्ठंतऽ-

भितप्पमाणा, मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता ॥ १३ ॥ संतच्छणं नाम महाहितावं, ते नारया जत्थ असाहुकम्मा । हत्थेहिं पाएहि य बंधिऊणं, फलगं व तच्छंति कुहाडहत्था ॥ १४ ॥ रुहिरे पुणो वच्चसमुस्सिअंगे, भिन्नुत्तमंगे वरिवत्तयंता । पयंति णं णेरइए फुरंते, सजीवमच्छे व अयोकवल्ले ॥ १५ ॥ नो चेव ते तत्थ मसीभवंति, ण मिज्जती तिव्वभिवेयणाए । तमाणुभागं अणुवेदयंता, दुक्खंति दुक्खी इह दुक्कडेणं ॥१६॥ तहिं च ते लोलणसंपगाढे, गाढं सुतत्तं अगणिं वयंति । न तत्थ सायं लहती भिदुग्गे, अरहिया (अरभिया) भितावा तहवी तविंति ॥ १७ ॥ से सुच्चई नगरवहे व सद्दे, दुहोवणीयाणि पयाणि तत्थ । उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा, पुणो पुणो ते सरहं दुहेंति ॥ १८ ॥ पाणेहिं णं पाव विओजयंति, तं भे पवक्खामि जहातहेणं । दंडेहिं तत्था सरयंति बाला, सव्वेहिं दंडेहि पुराकएहिं ॥१९॥ ते हम्ममाणा णरगे पडंति, पुन्ने दुरूवस्स महाभितावे । ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी, तुट्टंति कम्मोवगया किमीहिं ॥ २० ॥ सया कसिणं पुण घम्मठाणं, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं । अंदूसु पक्खिप्प विहत्तु देहं, वेहेण सीसं सेऽभितावयंति ॥ २१ ॥ छिंदंति बालस्स खुरेण नक्कं, उट्ठेवि छिंदंति दुवेवि कण्णे । जिब्भं विणिक्कस्स विहत्थिमित्तं, तिक्खाहिं सूलाहिऽभितावयंति ॥ २२ ॥ ते तिप्पमाणा तलसंपुडंव, राइंदियं तत्थ थणंति बाला । गलंति ते सोणिअपूयमंसं, पज्जोइया खारपइद्धियंगा ॥ २३ ॥ जइ ते सुता लोहितपूयपाई, बालागणी तेअगुणा परेणं । कुंभी महंताहियपोरसीया, समूसिता लोहियपूयपुण्णा ॥ २४ ॥ पक्खिप्प तासुं पययंति बाले, अट्टस्सरे ते कलुणं रसंते । तण्हाइया ते तउतंबतत्तं, पज्जिज्जमाणाऽट्टतरं रसंति ॥ २५ ॥ अप्पेण अप्पं इह वंचइत्ता, भवाहमे पुव्वसते सहस्से । चिट्ठंति तत्था बहुकूरकम्मा, जहा कडं कम्म तहासि भारे ॥ २६ ॥ समज्जिणित्ता कलुसं अणज्जा, इट्ठेहिं कंतेहि य विप्पहूणा । ते दुब्भिगंधे

कसिणे य फासे, कम्मोवगा कुणिमे आवसंति ॥ २७॥ त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं ३२६)

॥ इति पञ्चमध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥ ५-१॥

॥ अथ पञ्चमाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥

अहावरं सासयदुक्खधम्मं, तं भे पवक्खामि जहातहेणं । बाला जहा दुक्कडकम्मकारी, वेदंति कम्माइं पुरेकडाइं ॥ १ ॥ हत्थेहिं पाएहि य बंधिऊणं, उदरं विकत्तंति खुरासिएहिं । गिण्हित्तु बालस्स विहत्तु देहं, वद्धं थिरं पिट्ठतो उद्धरंति ॥ २ ॥ बाहू पकत्तंति (पकप्पंत्ति) य मूलतो से, थूलं वियासं मुहे आडहंति । रहंसि जुत्तं सरयंति बालं, आरुस्स विज्झंति तुदेण पिट्ठे ॥ ३ ॥ अयंव तत्तं जलियं सजोइ, तऊवमं भूमिमणुक्कमंता । ते डज्झमाणा कलुणं थणंति, उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ॥ ४ ॥ बाला बला भूमिमणुक्कमंता, पविज्जलं लोहपहं च तत्तं । जंसीऽभिदुग्गंसि पवज्जमाणा, पेसेव दंडेहिं पुराकरंति ॥ ५ ॥ ते संपगाढंसि पवज्जमाणा, सिलाहिं हम्मंति निपातिणीहिं । संतावणी नाम चिरट्ठितीया, संतप्पती जत्थ असाहुकम्मा ॥ ६ ॥ कंदूसु पक्खिप्प पयंति बालं, ततोवि दड्ढा पुण उप्पयंति । ते उड्ढकाएहिं पखज्जमाणा, अवरेहिं खज्जंति सणप्फएहिं ॥ ७॥ समूसियं नाम विधूमठाणं, जं सोयतत्ता कलुणं थणंति । अहोसिरं कट्टु विगत्तिऊणं, अयंव सत्थेहिं समोसवेंति ॥ ८ ॥ समूसिया तत्थ विसूणियंगा, पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं । संजीवणी नाम चिरट्ठितीया, जंसी पया हम्मइ पावचेया ॥ ९ ॥ तिक्खाहिं सूलाहि निवाययंति (भितावयंति) वसोगयं सावययं व लद्धं । ते सूलविद्धा कलुणं थणंति, एगंतदुक्खं दुहओ गिलाणा ॥१०॥ सया जलं नाम निहं महंतं, जंसी जलंतो अगणी अकट्ठो । चिट्ठंति बद्धा बहुकूरकम्मा, अरहस्सरा केइ चिरट्ठितीया ॥ ११ ॥ चिया

महंतीउ समारभित्ता, छुब्भंति ते तं कलुणं रसंतं । आवट्टती तत्थ असाहुकम्मा, सप्पी जहा पडि यं जोइमज्झे ॥ १२ ॥ सदा कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं । हत्थेहिं पाएहि य बंधिऊणं, सत्तुव्व डंडेहिं समारभंति ॥ १३ ॥ भंजंति बालस्स वहेण पुट्ठी, सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं । ते भिन्नदेहा फलगंव तच्छा, तत्ताहिं आराहिं णियोजयंति ॥ १४ ॥ अभिजुंजिया रुद्द असाहुकम्मा, उसुचोइया हत्थिवहं वहंति । एगं दुरूहित्तु दुवे ततो वा, आरुस्स विज्झंति ककाणओ से ॥ १५ ॥ बाला बला भूमिमणुक्कमंता, पविज्जलं कंटइलं महंतं । विबद्धतप्पेहिं विवणचित्ते, समीरिया कोट्टबलिं करिंति ॥ १६ ॥ वेतालिए नाम महाभितावे, एगायते पव्वयमंतलिक्खे । हम्मंति तत्था बहुकूरकम्मा, परं सहस्साण मुहुत्तगाणं ॥ १७ ॥ संबाहिया दुक्कडिणो थणंति, अहो य राओ परितप्पमाणा । एगंतकूडे नरए महंते, कूडेण तत्था विसमे हता उ ॥ १८ ॥ भंजंति णं पुव्वमरी सरोसं, समुग्गरे ते मुसले गहेतुं । ते भिन्नदेहा रुहिरं वमंता, ओमुद्धगा धरणितले पडंति ॥ १९ ॥ अणासिया नाम महासियाला, पागब्भिणो तत्थ सयायकोवा । खज्जंति तत्था बहुकूरकम्मा, अदूरगा संकलियाहि बद्धा ॥ २० ॥ सयाजला नाम नदी भिदुग्गा, पविज्जलं लोहविलीणतत्ता । जंसी भिदुग्गंसि पवज्जमाणा, एगायताणुक्कमणं करेंति ॥ २१ ॥ एयाइं फासाइं फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चिरट्ठितीयं । ण हम्ममाणस्स उ होइ ताणं, एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ॥ २२ ॥ जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं, तमेव आगच्छति संपराए । एगंतदुक्खं भवमज्जणित्ता, वेदंति दुक्खी तमणंतदुक्खं ॥ २३ ॥ एताणि सोच्चा णरगाणि धीरे, न हिंसए किंचण सव्वलोए । एगंतदिट्ठी अपरिग्गहे उ, बुज्झिज्ज लोयस्स वसं न गच्छे ॥ २४ ॥ एवं तिरिक्खे मणुयासु(म)रेसुं, चतुरन्तऽणंतं तयणुव्विवागं । स सव्वमेयं इति वेदइत्ता, कंखेज्ज कालं धुयमायरेज्ज ॥ २५ ॥ त्तिबेमि (गाथाग्रं ३६१) ।

॥ इति पञ्चमाध्ययने द्वितियोद्देशकः ॥ ५-२ ॥ ॥ इति पञ्चमाध्ययनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीवीरस्तुत्याख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिश्रा य। से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥ कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुतस्स आसी ?। जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुतं ब्रूहि जहा णिसंतं ॥ २ ॥ खेयन्नए से कुसला-सुपन्ने (कुसले महेसी), अणंतनाणी य अणंतदंसी । जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा। से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठितप्पा। अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥ से भूइपरणे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू। अणुत्तरं तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥ ६ ॥ अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने। इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि णं विसिट्ठे ॥ ७ ॥ से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणंतपारे। । अणाइले वा अकसाइ मुक्के (भिक्खू), सक्केव देवाहिवई जुईमं ॥ ८ ॥ से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे। सुरालए वासि(दि)-मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥ सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते। से जोयणे णवणवते सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥ पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिव-ट्टयंति। से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेदयंती महिंदा ॥ ११ ॥ से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवन्ने । अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥ १२ ॥ महीइ मज्झंमि ठिते णगिंदे, पन्नायते सूरियसुद्धलेसे । एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ

अच्चिमाली ॥ १३ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स । एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदंसणनाणसीले ॥ १४ ॥ गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं । तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ । सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥१६॥ अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता । सिद्धिं गतिं (गते) साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाते जह सामली वा, जस्सिं रतिं वेययती सुवन्ना । वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥ थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे । गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥ जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे । खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ २० ॥ हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा । पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु । खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति । तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा । निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥ पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने । तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥ २५ ॥ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा । एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥ किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं । से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम-

दीहरायं ॥ २७॥ से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए। लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥ २८॥ सोचा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहितं अट्ठपदोवसुद्धं। तं सद्दहाणा (सद्दहंता) य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥ २९ ॥ त्तिबेमि (गाथाग्रं ३१०)

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ ६॥

॥ अथ कुशीलपरिभाषाख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ, तण रुक्ख बीया य तसा य पाणा। जे अंडया जे य जराउ पाणा, संसेयया जे रसयाभिहाणा ॥ १ ॥ एयाइं कायाइं पवेदिताइं, एतेसु जाणे पडिलेह सायं। एतेण(हिं) काएण-(हिं) य आयदंडे, एतेसु या विप्परियासुविंति ॥ २ ॥ जाईपहं अणुपरिवट्टमाणे, तसथावरेहिं विणिघायमेति। से जाति जातिं बहुकूरकम्मे, जं कुव्वती मिज्जति तेण बाले ॥ ३ ॥ अस्सिं च लोए अदुवा परत्था, सयग्गसो वा तह अन्नहा वा। संसारमावन्न परं परं ते, बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि ॥ ४ ॥ जे मायरं वा पियरं च हिच्चा, समणव्वए अगणिं समारभिज्जा। अहाहु से लोए कुसीलधम्मे, भूताइं जे हिंसति आयसाते ॥ ५ ॥ उज्जालओ पाण निवातएज्जा, निव्वावओ अगणि निवायवेज्जा। तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं, ण पंडिए अगणि समारभिज्जा ॥ ६ ॥ पुढवीवि जीवा आऊवि जीवा, पाणा य संपाइम संपयंति। संसेयया कट्ठसमस्सिया य, एते दहे अगणि समारभंते ॥ ७॥ हरियाणि भूताणि विलंबगाणि, आहार देहा य पुढो सियाइं। जे छिंदती आयसुहं पडुच्च, पागब्भि पाणे बहुणं तिवाती ॥ ८॥ जातिं च वुड्ढिं च विणासयंते, बीयाइ अस्संजय आयदंडे। अहाहु से लोए अणज्जधम्मे, बीयाइ जे हिंसति आयसाते ॥ ९ ॥

गब्भाइ मिज्जंति बुयाबुयाणा, णरा परे पंचसिहा कुमारा। जुवाणगा मज्झिम थेरगा (मज्झिम पोरुसा) य, चयंति ते आउखए पलीणा ॥ १० ॥ संबुज्झहा जंतवो! माणुसत्तं, दट्ठुं भयं बालिसेणं अलंभो। एगंतदुक्खे जरिए व लोए, सकम्मुणा विप्परियासुवेइ ॥ ११ ॥ इहेग मूढा पवयंति मोक्खं, आहारसंपज्जणवज्जणेणं (आहारसपंचयवज्जणेणं, आहारओ पंचक-वज्जणेणं)। एगे य सीओदगसेवणेणं, हुएण एगे पवयंति मोक्खं ॥ १२ ॥ पाओसिणाणादिसु णत्थि मोक्खो, खारस्स लोणस्स अणासणेणं। ते मज्ज-मंसं लसणं च भोच्चा, अन्नत्थ वासं परिकप्पयंति ॥ १३ ॥ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति, सायं च पायं उदगं फुसंता। उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी, सिज्झिसु पाणा बहवे दगंसि ॥ १४ ॥ मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य, मग्गू य उट्टा(ट्टा) दगरक्खसा य। अट्टाणमेयं कुसला वयंति, उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति ॥ १५ ॥ उदयं जइ कम्ममलं हरेज्जा, एवं सुहं इच्छामि-त्तमेव। अंधं व णेयारमणुस्सरित्ता, पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा ॥ १६ ॥ पावाइं कम्माइं पकुव्वतो हि, सिओदगं तू जइ तं हरिज्जा। सिज्झिसु एगे दगसत्तघाती, मुसं वयंते जलसिद्धिमाहु ॥ १७ ॥ हुतेण जे सिद्धिमुदाहरंति, सायं च पायं अगणिं फुसंता। एवं सिया सिद्धि हवेज्ज तम्हा, अगणिं फुसंताण कुकम्मिणंपि ॥ १८ ॥ अपरिक्ख दिट्ठं ण हु एव सिद्धी, एहिंति ते घायमबुज्झमाणा। भूएहिं जाणं पडिलेह सातं, विज्जं गहायं तसथा-वरेहिं ॥ १९ ॥ थणंति लुप्पंति तसंति कम्मी, पुढो जगा परिसंखाय भि-क्खू। तम्हा विऊ विरतो आयगुत्ते, दट्ठुं तसे या पडिसंहरेज्जा ॥ २० ॥ जे धम्मलद्धं विणिहाय भुंजे, वियडेण साहट्टु य जे सिणाइं। जे धोवती लूसयतीव वत्थं, अहाहु से णागणियस्स दूरे ॥ २१ ॥ कम्मं परिन्नाय दगंसि धीरे, वियडेण जीविज्ज य आदिमोक्खं। से बीयकंदाइ अभुंज-माणे, विरते सिणाणाइसु इत्थियासु ॥ २२ ॥ जे मायरं च पियरं च हिच्चा,

गारं तहा पुत्तपसुं धणं च । कुलाइं जे धावइ साउगाइं, अहाहु से सामणियस्स दूरे ॥ २३ ॥ कुलाइं जे धावइ साउगाइं, आघाति धम्मं उदराणुगिद्धे । अहाहु से आयरियाण सयंसे, जे लावएज्जा असणस्स हेऊ ॥ २४ ॥ णिक्खम्म दीणे परभोयणंमि, मुहमंगलीए उदराणुगिद्धे । नीवारगिद्धेव महावराहे, अदूरए एहिइ घातमेव ॥ २५ ॥ अन्नस्स पाणस्सिहलोइयस्स, अणुप्पियं भासति सेवमाणे । पासत्थयं चेव कुसीलयं च, निस्सारए होइ जहा पुलाए ॥ २६ ॥ अणातपिंडेणऽहियासएज्जा, णो पूयणं तवसा आवहेज्जा । सद्देहिं रूवेहिं असज्जमाणं, सव्वेहिं कामेहिं विणीय गेहिं ॥ २७ ॥ सव्वाइं संगाइं अइच्च धीरे, सव्वाइं दुक्खाइं तितिक्खमाणे । अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खु अणाविलप्पा ॥ २८ ॥ भारस्स जत्ता (जाता) मुणि भुंजएज्जा, कंखेज्ज पावस्स विवेग भिक्खू । दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा, संगामसीसे व परं दमेज्जा ॥ २९ ॥ अवि हम्ममाणो फलगावतट्ठी, समागमं कंखति अंतकस्स । णिधूय कम्मं ण पवंचुवेइ, अक्खक्खए वा सगडं तिबेमि ॥ ३० ॥ (गाथाग्रं ४०२)

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ ७॥

॥ अथ अष्टमं श्रीवीर्याध्ययनम् ॥

दुहा वेयं सुयक्खायं, वीरियंति पवुच्चई । किं नु वीरस्स वीरत्तं, कहं चेयं पवुच्चई ? ॥ १ ॥ कम्ममेगे पवेदेंति, अकम्मं वावि सुव्वया । एतेहिं दोहि ठाणेहिं, जेहिं दीसति मच्चिया ॥ २ ॥ पमायं कम्ममाहंसु, अप्पमायं तहाऽवरं । तब्भावादेसओ वावि, बालं पंडियमेव वा ॥ ३ ॥ सत्थमेगे तु सिक्खंता (सिक्खंति), अतिवायाय पाणिणं । एगे मंते अहिज्जंति, पाणभूयविहेडिणो ॥ ४ ॥ माइणो कट्टु माया य, कामभोगे समारभे (आरंभाय तिवट्टइ) । हंता छेत्ता पगब्भित्ता, आयसायाणुगामिणो ॥ ५ ॥ मणसा

वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो । आरओ परओ वावि, दुहावि य असं-जया ॥ ६ ॥ वेराइं कुव्वई वेरी, तओ वेरेहिं रज्जती । पावोवगा य आरंभा, दुक्खफासा य अंतसो ॥ ७ ॥ संपरायं णियच्छंति, अत्तदुक्कडकारिणो । रागदोसस्सिया बाला, पावं कुव्वंति ते बहुं ॥ ८ ॥ एयं सकम्मवीरियं, बालाणं तु पवेदितं । इत्तो अकम्मविरियं, पंडियाणं सुणेह मे ॥ ९ ॥ दविए बंधणुम्मुक्के, सव्वओ छिन्नबंधणे । पणोल्ल पावकं कम्मं, सल्लं कंतति अंतसो (सल्लं कंतइ अप्पणो) ॥ १० ॥ नेयाउयं सुयक्खायं, उवादाय समीहए । भुज्जो भुज्जो दुहावासं, असुहत्तं तहा तहा ॥ ११ ॥ ठाणी विविहठाणाणि, चइस्संति ण संसओ । अणियते अयं वासे (अनिइए य संवासे), णायएहिं सुहीहि य ॥ १२ ॥ एवमादाय मेहावी, अप्पणो गिद्धिमुद्धरे । आरियं उवसंपज्जे, सव्वधम्मकोवियं ॥१३॥ सह संमइए णच्चा, धम्मसारं सुणेत्तु वा । समुवट्ठिए उ अणगारे (उवट्ठिए य मेहावी), पच्चक्खायपावए ॥ १४ ॥ जं किंचुवक्कमं जाणे (णच्चा), आउक्खेमस्स अप्पणो । तस्सेव अंतरा खिप्पं, सिक्खं सिक्खेज्ज पंडिए ॥ १५ ॥ जहा कुम्मे सअंगाइं, सए देहे समाहरे । एवं पावाइं मेधावी, अज्झप्पेण समाहरे ॥ १६ ॥ साहरे हत्थपाए य, मणं पंचें(सव्वें)दियाणि य । पावकं च परीणामं, भासादोसं च तारिसं ॥ १७ ॥ अणु माणं च मायं च, तं पडिन्नाय पंडिए (अइमाणं च मायं च तं परिणणाय पंडिए ।), (सुयं मे इहमेगेसिं । एयं वीरस्स वीरियं), (आयतट्ठं सुआदाय, एवं वीरस्स वीरियं), सातागारवणिहुए, उवसंते णिहे चरे ॥१८॥ पाणे य णाइवाएज्जा, अदिन्नंपिय णादए । सादियं ण मुसं बूया, एस धम्मे वुसीमओ ॥१९॥ अतिक्कम्मंति वायाए, मणसा वि न पत्थए । सव्वओ संवुडे दंते, आयाणं सुसमाहरे ॥२०॥ कडं च कज्जमाणं च, आगमिस्सं च पावगं । सव्वं तं णाणुजाणंति, आयगुत्ता जिइंदिया ॥२१॥ जे याबुद्धा महाभागा, वीरा असंमत्तदंसिणो ।

असुद्धं तेसिं परक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो ॥२२॥ जे य बुद्धा महाभागा, वीरा सम्मत्तदंसिणो । सुद्धं तेसिं परक्कंतं, अफलं होइ सव्वसो ॥२३॥ तेसिंपि तवो ण (इ) सुद्धो, निक्खंता जे महाकुला । जन्ने वन्ने वियाणंति, न सिलोगं पवेज्जए ॥२४॥ अप्पपिंडासि पाणासि, अप्पं भासेज्ज सुव्वए । खंतेऽभिनिव्वुडे दंते, वीतगिद्धी सदा जए ॥२५॥ झाणजोगं समाहट्टु, कायं विउसेज्ज सव्वसो । तितिक्खं परमं णच्चा, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥२६॥ (गाथाग्रं० ४४६) त्तिबेमि ॥

॥ इति वीर्याख्यमष्टममध्ययनम् ॥८॥

॥ अथ धर्माख्यं नवममध्ययनम् ॥

कयरे धम्मे अक्खाए, माहणेण मतीमता । अंजु धम्मं जहातच्चं, जिणाणं तं सुणेह मे (जणगा तं सुणेह मे) ॥१॥ माहणा खत्तिया वेस्सा, चंडाला अदु बोक्कसा । एसिया वेसिया सुद्दा, जे य आरंभणिस्सिया ॥२॥ परिग्गहनिविट्ठाणं, पावं (वेरं) तेसिं पवड्ढई । आरंभसंभिया कामा, न ते दुक्खविमोयगा ॥३॥ आघायकिच्चमाहेउं, नाइओ विसएसिणो । अन्ने हरंति तं वित्तं, कम्मी कम्मेहिं किच्चती ॥४॥ माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा । नालं ते तव ताणाय, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥५॥ एयमट्ठं सपेहाए, परमट्ठाणुगामियं । निम्ममो निरहंकारो, चरे भिक्खू जिणाहियं ॥ ६ ॥ चिच्चा वित्तं च पुत्ते य, णाइओ य परिग्गहं । चिच्चा ण अंतगं सोयं, (चिच्चाणऽणंतगं सोयं) निरवेक्खो परिव्वए ॥ ७ ॥ पुढवी उ अगणी वाऊ, तणरुक्खा सबीयगा । अंडया पोयजराऊ, रससंसेयउब्भिया ॥ ८ ॥ एतेहिं छहिं काएहिं, तं विज्जं परिजाणिया । मणसा कायवक्केणं, णारंभी ण परिग्गही ॥ ९ ॥ मुसावायं बहिद्धं च, उग्गहं च अजाइया । सत्थादाणाइं लोगंसि, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १० ॥ पलिउंचणं भयणं च, थंडिल्लु-

यणाणि या । धूणादाणाइं लोगंसि, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ११ ॥ धोयणं रयणं चेव, बत्थीकम्मं विरेयणं । वमणंजण पलीमंथं, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १२ ॥ गंधमल्लसिणाणं च, दंतपक्खालणं तहा । परिग्गहित्थिकम्मं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १३ ॥ उद्देसियं कीयगडं, पामिच्चं चेव आहडं । पूयं अणेसणिज्जं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १४ ॥ आसूणिमक्खिरागं च, गिद्धुवघायकम्मगं । उच्छोलणं च कक्कं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १५ ॥ संपसारी कयकिरिए, पसिणायतणाणि य । सागारियं च पिंडं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥१६॥ अट्ठावयं न सिक्खिज्जा, वेहाईयं च णो वए । हत्थकम्मं विवायं च, त विज्जं परिजाणिया ॥ १७ ॥ पाणहाओ य छत्तं च, णालीयं वालवीयणं । परकिरियं अन्नमन्नं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १८ ॥ उच्चारं पासवणं, हरिएसु ण करे मुणी । वियडेण वावि साहट्टु, णायमेज्जा(वमज्जे) कयाइवि ॥ १९ ॥ परमत्ते अन्नपाणं, ण भुंजेज्ज कयाइवि । परवत्थं अचेलोऽवि, तं विज्जं परिजाणिया ॥ २० ॥ आसंदी पलियंके य, णिसिज्जं च गिहंतरे । संपुच्छणं सरणं वा, तं विज्जं परिजाणिया ॥ २१ ॥ जसं कित्तिं सलोयं च, जा य वंदणपूयणा । सव्वलोयंसि जे कामा, तं विज्जं परिजाणिया ॥ २२ ॥ जेणेहं णिव्वहे भिक्खू, अन्नपाणं तहाविहं । अणुप्पयाणमन्नेसिं, तं विज्जं परिजाणिया ॥ २३ ॥ एवं उदाहु निग्गंथे. महावीरे महामुणी । अणंतनाणदंसी से, धम्मं देसितवं सुतं ॥ २४ ॥ भासमाणो न भासेज्जा, णेव वंफेज्ज मम्मयं । मातिट्ठाणं विवज्जेज्जा, अणुचिंतिय वियागरे ॥ २५ ॥ तत्थिमा तइया भासा, जं वदित्ताऽणुतप्पती । जं छन्नं तं न वत्तव्वं, एसा आणा णियंठिया ॥ २६ ॥ होलावायं सहीवायं, गोयावायं च नो वदे । तुमं तुमंति अमणुन्नं, सव्वसो तं ण वत्तए ॥ २७ ॥ अकुसीले सया भिक्खू, णेव संसग्गियं भए । सुहरूवा तत्थुवस्सग्गा, पडिबुज्झेज्ज ते विऊ ॥२८॥

नन्नत्थ अंतराएणं, परगेहे ण णिसीयए। गामकुमारियं किड्डं, नातिवेलं हसे मुणी ॥ २९ ॥ अणुस्सुओ (अणिस्सिओ) उरालेसु, जयमाणो परिव्वए। चरियाए अप्पमत्तो, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ३० ॥ हम्ममाणो ण कुप्पेज्ज, वुच्चमाणो न संजले। सुमणो अहियासिज्जा, ण य कोलाहलं करे ॥ ३१ ॥ लद्धे कामे ण पत्थेज्जा, विवेगे एव(म)माहिए। आयरियाइं सिक्खेज्जा, बुद्धाणं अंतिए सया ॥३२॥ सुस्सूसमाणो उवासेज्जा, सुप्पन्नं सुतवस्सियं। वीरा जे अत्तपन्नेसी, धितिमन्ता जिइंदिया ॥ ३३ ॥ गिहे दीवमपासंता, पुरिसादाणिया नरा। ते वीरा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥ ३४ ॥ अगिद्धे सद्दफासेसु, आरंभेसु अणिस्सिए। सव्वं तं समयातीतं, जमेतं लवियं बहु ॥ ३५ ॥ अइमाणं च मायं च, तं परिण्णाय पंडिए। गारवाणि य सव्वाणि, णिव्वाणं संधए मुणि ॥ ३६ ॥ (गाथाग्रं ४८२) त्तिबेमि ॥

॥ इति नवममध्ययनम् । ९॥

॥ अथ दशमं श्रीसमाध्याख्यमध्ययनम् ॥

आघं मईमं मणुवीय धम्मं, अंजू समाहिं तमिणं सुणेह। अपडिन्न भिक्खू उ समाहिपत्ते, अणियाण भूतेसु परिव्वएज्जा ॥ १ ॥ उड्ढं अहे यं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा। हत्थेहिँ पाएहिँ य संजमित्ता, अदिन्नमन्नेसु य णो गहेज्जा ॥ २ ॥ सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे, लाढे चरे आयतुले पयासु। आयं न कुज्जा इह जीवियट्ठी, चयं न कुज्जा सुतवस्सि भिक्खू ॥ ३ ॥ सव्विंदियाभिनिव्वुडे पयासु, चरे मुणी सव्वतो विप्पमुक्के। पासाहि पाणे य पुढोवि सत्ते, दुक्खेण अट्टे परितप्पमाणे ॥ ४ ॥ एतेसु बाले य (एवं तु बाले) पकुव्वमाणे, आवट्टती (आउट्टति) कम्मसु पावएसु। अतिवायतो कीरति पावकम्मं, निउंजमाणे उ करेइ कम्मं ॥ ५ ॥ आदीणवित्तीव (आदीणभूईवि) करेति पावं, मंता उ

एगंतसमाहिमाहु । बुद्धे समाहीय रते विवेगे, पाणातिवाता विरते ठियप्पा (ठियच्चि) ॥६॥ सव्वं जगं तू समयाणुपेही, पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा । उट्ठाय दीणो य पुणो विसन्नो, संपूयणां चेव सिलोयकामी ॥७॥ आहाकडं चेव निकाममीणे, नियामचारी य विसरणमेसी । इत्थीसु सत्ते य पुढो य बाले, परिग्गहं चेव पकुव्वमाणे ॥८॥ वेराणुगिद्धे (आरंभसत्तो णिचयं करेति, इओ चुते स इह(से दुह)मट्ठदुग्गं । तम्हा उ मेधावि समिक्ख धम्मं, चरे मुणी सव्वउ विप्पमुक्के ॥९॥ आयं ण कुज्जा इह जीवियट्ठी, असज्जमाणो य परिव्वएज्जा । णिसम्मभासी य विणीय गिद्धिं, हिंसन्नियं वा ण कहं करेज्जा ॥१०॥ आहाकडं वा ण णिकामएज्जा, णिकामयंते य ण संथवेज्जा । धुणे उरालं अणुवेहमाणे, चिच्चाण सोयं अणवेक्खमाणो ॥११॥ एगत्तमेयं अभिपत्थएज्जा, एवं पमोक्खो न मुसंति पासं । एसप्पमोक्खो अमुसे वरेवि, अकोहणे सच्चरते तवस्सी ॥१२॥ इत्थीसु या आरय मेहुणाओ, परिग्गहं चेव अकुव्वमाणे । उच्चावएसु विसएसु ताई, निस्संसयं भिक्खु समाहिपत्ते ॥१३॥ अरइं रइं च अभिभूय भिक्खू, तणाइफासं तह सीयफासं । उण्हं च दंसं चऽहियासएज्जा, सुब्भिं व दुब्भिं व तितिक्खएज्जा ॥१४॥ गुत्तो वईए य समाहिपत्तो, लेसं समाहट्टु परिवएज्जा । गिहं न छाए णवि छायएज्जा, संमिस्सभावं पयहे पयासु ॥१५॥ जे केइ लोगंमि उ अकिरियआया, अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति । आरंभसत्ता गढिता य लोए, धम्मं ण जाणंति विमुक्खहेउं ॥१६॥ पुढो य छंदा इह माणवा उ, किरियाकिरीयं च पुढो य वायं । जायस्स बालस्स पकुव्व देहं (जायाए बालस्स पगब्भणाए), पवड्ढती वेरमसंजतस्स ॥१७॥ आउक्खयं चेव अबुज्झमाणे, ममाति से साहसकारि मंदे । अहो य राओ परितप्पमाणे, अट्टेसु मूढे अजरामरेव्व ॥१८॥ जहाहि वित्तं पसवो य सव्वं, जे बंधवा जे य पिया य मित्ता । लालप्पती सेऽवि य (गंधमुवेंति)

एइ मोहं, अन्ने जणा तंसि हरंति वित्तं ॥ १६ ॥ सीहं जहा खुड्डमिगा चरंता, दूरे चरंती परिसंकमाणा । एवं तु मेहावि समिक्ख धम्मं, दूरेण पावं परिवज्जएज्जा ॥ २० ॥ संबुज्झमाणे उ णरे मतीमं, पावाउ अप्पाण निवट्टएज्जा । हिंसप्पसूयाइं दुहाइं मत्ता, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि (निव्वाणभूए व परिव्वएज्जा) ॥ २१ ॥ मुसं न बूया मुणि अत्तगामी, णिव्वाणमेयं कसिणं समाहिं । सयं न कुज्जा न य कारवेज्जा, करंतमन्नंपि य णाणुजाणे ॥ २२ ॥ सुद्धे सिया जाए न दूसएज्जा, अमुच्छिए ण य अज्झोववन्ने । धितिमं विमुक्के ण य पूयणट्ठी, न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ॥ २३ ॥ निक्खम्म गेहाउ निरावकंखी, कायं विउसेज्ज नियाणछिन्ने । णो जीवियं णो मरणाभिकंखी, चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के ॥ २४ ॥ त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं ५८०)

॥ इति दशममध्ययनम् ॥१०॥

॥ अथ एकादशं श्रीमार्गाध्ययनम् ॥

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेणं मईमता । जं मग्गं उज्जु पावित्ता, ओहं तरति दुत्तरं ॥१॥ तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं । जाणासि णं जहा भिक्खू !, तं णो बूहि महामुणी ॥२॥ जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज ? कहाहि णो ॥३॥ जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे (तेसिं तु इमं मग्गं, आइक्खेज्ज सुणेह मे) ॥४॥ अणुपुव्वेण महाघोरं, कासवेण पवेइयं । जमादाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥५॥ अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया । तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥६॥ पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी । वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥७॥ अहावरा तसा पाणा, एवं

छक्काय आहिया । एतावए (इत्ताव एव जीवकाए, नावरे विज्जती काए (कऐ) (णावरे कोइ विज्जई) ॥८॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिमं पडिलेहिया । सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया ॥९॥ एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसति कंचण । अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया ॥१०॥ उड्ढं अहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा । सव्वत्थ विरतिं विज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥११॥ पभू दोसे निराकिच्चा (निरिविखत्ता), ण विरुज्भेज्ज केणई । मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥१२॥ संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे । एसणासमिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं ॥१३॥ भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा (भूयाइं समारंभ, समुद्दिस्सा) य जं कडं । तारिसं तु ण गिण्हज्जा, अन्नपाणं सुसंजए ॥१४॥ पूईकम्मं न सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ । जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं न कप्पए ॥१५॥ हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए । ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु नगरेसु वा ॥१६॥ तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए । अहवा णत्थि पुण्णंति, एवमेयं महब्भयं ॥१७॥ दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तसथावरा । तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थित्ति णो वए ॥१८॥ जेसिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणं तहाविहं । तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थित्ति णो वए ॥१९॥ जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं । जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥२०॥ दुहओवि ते ण भासंति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो । आयं रयस्स हेच्चा णं, निव्वाणं पाउणंति ते ॥२१॥ निव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा । तम्हा सदा जए दंते, निव्वाणं संधए मुणी ॥२२॥ वुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा । आघाति साहु तं दीवं, पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥२३॥ आयगुत्ते सया दंते, छिन्नसोए अणासवे । जे धम्मं सुद्धमक्खाति, पडिपुन्नमणेलिसं ॥२४॥ तमेव अविजाणंता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो । बुद्धा मोत्ति य मन्नंता,

अंत एते समाहिए ॥२५॥ ते य बीओदगं चेव, तमुद्दिस्सा य जं कडं । भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्नाऽ[अ]समाहिया ॥२६॥ जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही । मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाधमं ॥२७॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया । विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥२८॥ सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मती । उम्मग्ग(ग्गेण)गता दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ॥२९॥ जहा आसाविणिं नावं, जाइअंधो दुरूहिया । इच्छई पारमागंतुं, अंतरा य विसीयति ॥३०॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया । सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥३१॥ इमं च धम्ममादाय कासवेण पवेदितं । तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए (कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए समाहिए) ॥३२॥ विरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा । तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥३३॥ अइमाणं च, तं परिन्नाय पंडिए । सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥३४॥ संधए (सद्दहे) साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे । उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए (च वज्जए) ॥३५॥ जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया । संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगती जहा ॥३६॥ अह णं वयमावन्नं, फासा उच्चावया फुसे । ण तेसु विणिहणेज्जा, वाएण व महागिरी ॥३७॥ संवुडे से महापन्ने, धीरे बुद्धे दत्तेसणं चरे । निव्वुडे कालमाकंखी, एयं केवलिणो मयं ॥३८॥ तिबेमि । (गाथाग्रं ५४६)

॥ इति एकादशमध्ययनम् ॥११॥



॥ अथ द्वादशं श्रीसमवसरणाध्ययनम् ॥

चत्तारि समोसरणाणिमाणि, पावादुया जाइं पुढो वयंति । किरियं अकिरियं विणियंति तइयं, अन्नाणमाहंसु चउत्थमेव ॥१॥ अणाणिया ता कुसलावि संता, असंथुया णो वितिगिच्छतिन्ना । अकोविया आहु अकोवियेहिं, अणाणुवीइत्तु मुसं वयंति ॥२॥ सच्चं असच्चं इति चिंतयंता, असाहु साहुत्ति उदाहरंता । जेमे जणा वेणइया अणेगे, पुट्ठावि भावं विणइंसु णाम ॥३॥ अणोवसंखा इति ते उदाहू, अट्ठे स ओभासइ अम्ह एवं । लवावसंकी य अणागएहिं, णो किरियमाहंसु अकिरियवादी ॥४॥ सम्मिस्सभावं च गिरा गहीए, से मुम्मुई होइ अणाणुवाई । इमं दुपक्खं इममेगपक्खं, आहंसु छलायतणं च कम्मं ॥५॥ ते एवमक्खंति अबुज्झमाणा, विरूवरूवाणि अकिरियवाई । जे मायइत्ता बहवे मणूसा, भमंति संसारमणोवदग्गं ॥६॥ णाइच्चो उएइ ण अत्थमेति, ण चंदिमा वड्ढति हायती वा । सलिला ण संदंति ण वंति वाया, वंझो णियतो कसिणे हु लोए ॥७॥ जहाहि अंधे सह जोतिणावि, रूवाइं णो पस्सति हीणणेत्ते । संतंपि ते एवमकिरियवाई, किरियं ण पस्संति निरुद्धपन्ना ॥८॥ संवच्छरं सुविणं लक्खणं च, निमित्तदेहं च उप्पाइयं च । अट्ठंगमेयं बहवे अहित्ता, लोगंसि जाणंति अणागताइं ॥९॥ केई निमित्ता तहिया भवंति, केसिंचि तं विप्पडिएति णाणं (माणं) । ते विज्जभावं अणहिज्जमाणा, आहंसु विज्जापरिमोक्खमेव (जाणासु लोगंसि वयंति मंदा) ॥१०॥ ते एवमक्खंति समिच्च लोगं, तहा तहा (गया)समणा माहणा य । सयं कडं णऽन्नकडं च दुक्खं, आहंसु विज्जाचरणं पमोक्खं ॥११॥ ते चक्खु लोगंसिह णायगा उ, मग्गाणुसासंति हितं पयाणं । तहा तहा सासयमाहु लोए, जंसी पया माणव ! संपगाढा ॥१२॥ जे रक्खसा वा जमलोइया वा, जे वा सुरा गंधव्वा य काया । आगास-

गामी य पुढोसिया जे, पुणो पुणो विप्परियासुवेंति ॥१३॥ जमाहु ओहं सलिलं अपारगं, जाणाहि णं भवगहणं दुमोक्खं। जंसी विसन्ना विसयं-गणाहिं, दुहओऽवि लोयं अणुसंचरंति ॥१४॥ न कम्मुणा कम्म खवेंति बाला, अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा। मेधाविणो लोभमयावतीता, संतो-सिणो नो पकरेंति पावं (संतोसिणो लोभमयावतीता) ॥१५॥ ते तीयउप्पन्न-मणागयाइं, लोगस्स जाणंति तहागयाइं। णेतारो अन्नेसि अणन्नणेया, बुद्धा हु ते अंतकडा भवंति ॥१६॥ ते णेव कुव्वंति ण कारवंति, भूताहि-संकाइ दुगुंछमाणा। सया जता विप्पणमंति धीरा, विण्णत्ति(गणाय) धीरा य हवंति (वीरा य भवंति) एगे ॥१७॥ डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे, ते आत्तओ पासइ (तुल्लए) सव्वलोए। उव्वेहती लोगमिणं महंतं, बुद्धेऽपमत्तेसु परिव्वएज्जा ॥१८॥ जे आयओ परओ वावि णच्चा, अलमप्पणो होंति अलं परेसिं। तं जोइभूतं च सयावसेज्जा, जे पाउकुज्जा अणुवीति धम्मं ॥१९॥ अत्ताण जो जाणति जो य लोगं, गइं च जो जाणइ णागइं च। जो सासय जाण असासयं च, जातिं मरणं च जणोववायं ॥२०॥ अहोऽवि सत्ताण विउट्टणं च, जो आसवं जाणति संवरं च। दुक्खं च जो जाणति निज्जरं च, सो भासिउमरिहइ किरियवादं ॥२१॥ सद्देसु रूवेसु असज्ज-माणो, गंधेसु रसेसु अदुस्समाणे। णो जीवितं णो मरणाहिकंखी, आया-णगुत्ते वलया विमुक्के ॥२२॥ त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं ५६८)

॥ इति द्वादशममध्ययनम् ॥१२॥

॥ अथ त्रयोदशं श्रीयाथातथ्याध्ययनम् ॥

आहत्तहीयं तु पवेयइस्सं, नाणप्पकारं पुरिसस्स जातं। सओ अ धम्मं असओ असीलं, संतिं असंतिं करिस्सामि पाउं ॥ १ ॥ अहो य राओ अ समुट्ठिएहिं, तहागएहिं पडिलब्भ धम्मं। समाहिमाघातमजोसयंता,

सत्थारमेवं फरुसं वयंति ॥ २ ॥ विसोहियं ते अणुकाहयंते, जे आतभावेण वियागरेज्जा । अट्ठाणिए होइ बहूगुणाणं (होंति बहुनिवेसो), जे णाणसंकाइ मुसं वदेज्जा ॥ ३ ॥ जे यावि पुट्ठा पलिउंचयंति, आयाणमट्ठं खलु वंचयित्ता (यन्ति) । असाहुणो ते इह साहुमाणी, मायण्णि एसंति अणंतघातं ॥ ४ ॥ जे कोहणे होइ जगट्ठभासी, विओसियं जे उ उदीरएज्जा । अंधे व से दंडपहं गहाय, अविओसिए धासति पावकम्मी ॥ ५ ॥ जे विग्गहीए अन्नायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते । ओ(उ)वायकारी य हरीमणे य, एगंतदिट्ठी (एगंतसड्ढी) य अमाइरूवे ॥ ६ ॥ से पेसले सुहुमे पुरिसजाए, जच्चन्निए चेव सुउज्जुयारे । बहुंपि अणुसासिए जे तहच्चा, समे हु से होइ अझंझपत्ते ॥ ७ ॥ जे आवि अप्पं वसुमंति मत्ता, संखाय वायं अपरिक्ख कुज्जा । तवेण वाऽहं सहिउत्ति मत्ता, अण्णं जणं पस्सति बिंबभूयं ॥ ८ ॥ एगंतकूडेण उ से पलेइ, ण विज्जती मोणपयंसि गोत्ते । जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा, वसुमन्नतरेण अबुज्झमाणे ॥ ९ ॥ जे माहणे खत्तियजायए वा, तहुग्गपुत्ते तह लेच्छई वा । जो पव्वईए परदत्तभोई, गोत्ते ण जे थंभति (थंभभि) माणबद्धे ॥ १० ॥ न तस्स जाई व कुलं व ताणं, णण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं । णिक्खम्म से सेवइऽगारिमग्गं(कम्मं), ण से पारए होइ विमोयणाए ॥ ११ ॥ णिक्किंचणे भिक्खु सुलूहजीवी, जे गारवं होइ सलोगगामी । आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो, पुणो पुणो विप्परियासुवेंति ॥ १२ ॥ जे भासवं भिक्खु सुसाहुवादी, पडिहाणवं होइ विसारए य । आगाढपण्णे सुविभावियप्पा, अन्नं जणं पन्नया परिहवेज्जा ॥ १३ ॥ एवं ण से होइ समाहिपत्ते, जे पन्नवं भिक्खु विउक्कसेज्जा । अहवाऽवि जे ला(लो)भमयावलित्ते, अन्नं जणं खिंसति बालपन्ने ॥ १४ ॥ पन्नामयं चेव तवोमयं च, णिन्नामए गोयमयं च भिक्खू । आजीवगं चेव चउत्थमाहु, से पंडिए उत्तमपोग्गले से ॥ १५ ॥ एयाइं मयाइं विगिंच धीरा, ण ताणि सेवंति सुधीरधम्मा

धम्मा । ते सव्वगोत्तावगया महेसी, उच्चं अगोत्तं च गतिं वयंति ॥ १६ ॥ भिक्खू मुयच्चे तह(सूय)दिट्ठधम्मे, गामं च णगरं च अणुप्पविस्सा । से एसणं जाणमणेसणं च, अन्नस्स पाणस्स अणाणुगिद्धे ॥ १७ ॥ अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू, बहूजणे वा तह एगचारी । एगंतमोणेण वियागरेज्जा, एगस्स जंतो गतिरागती य ॥ १८ ॥ सयं समेच्चा अदुवाऽवि सोच्चा, भासेज्ज धम्मं हियर्यं पयाणं । जे गरहिया सणियाणप्पओगा, ण ताणि सेवंति सुधीरधम्मा ॥ १९ ॥ केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं, खुद्दं पि गच्छेज्ज असद्दहाणे । आउस्स कालाइयारं वघाए, लद्धाणुमाणे य परेसु अट्ठे ॥ २० ॥ कम्मं च छंदं च विगिंच धीरे, विणइज्ज उ सव्वओ (सुव्वओ) पाव(आय)भावं । रूवेहिँ लुप्पंति भयावहेहिं, विज्जं गहाया तसथावरेहिं ॥ २१ ॥ न पूयणं चेव सिलोयकामी, पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा । सव्वे अणट्ठे परिवज्जयंते, अणाउले या अकसाइ भिक्खू ॥ २२ ॥ आहत्तहीयं समुपेहमाणे सव्वेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं । णो जीवियं णो मरणाहिकंखी, मेहावि वलयविप्पमुक्के (परिव्वएज्जा वलयाविमुक्के) ॥ २३ ॥

त्तिबेमि ॥ (गाथाग्रं-५९१) इति त्रयोदशमध्ययनम् ॥ १३॥

॥ अथ ग्रन्थनामकं चतुर्दशमध्ययनम् ॥

गंथं विहाय इह सिक्खमाणो, उट्ठाय सुबंभचेरं वसेज्जा । ओवायकारी विणयं सुसिक्खे, जे छेय विप्पमायं न कुज्जा ॥१॥ जहा दियापोतमपत्तजातं, सावासगा पविउं मन्नमाणं । तमचाइयं तरुणमपत्तजातं, ढंकाइ अव्वत्तगमं हरेज्ज। ॥२॥ एवं तु सेहंपि अपुट्ठधम्मं, निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा । दियस्स छायं व अपत्तजायं, हरिंसु णं पावधम्मा अणेगे ॥३॥ ओसाणमिच्छे मणुए समाहिं, अणोसिए णंतकरिंति णच्चा । ओभासमाणे दवियस्स वित्तं, ण णिक्कसे बहिया आसुपन्नो ॥४॥ जे ठाणओ य सयणा-

सणे य, परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते। समितीसु गुत्तीसु य आयपन्ने, वियागरिते य पुढो वएज्जा ॥५॥ सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि, अणासवे तेसु परिव्वएज्जा। निद्दं च भिक्खू न पमाय कुज्जा, कहंकहं वा वितिगिच्छतिन्ने ॥६॥ डहरेण वुड्ढेणऽणुसासिए उ, रातिणिएणावि समव्वएणं। सम्मं तयं (समं गतं) थिरतो णाभिगच्छे, णिज्जंतए वादि अपारए से ॥७॥ विउट्ठितेणं समयाणुसिट्ठे, डहरेण वुड्ढेण उ चोइए य। अच्चुट्ठियाए घडदासिए वा, अगारिणं वा समयाणुसिट्ठे ॥८॥ ण तेसु कुज्झे ण य पव्वहेज्जा, ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा। तहा करिस्संति पडिस्सुणेज्जा, सेयं खु मेयं ण पमाय कुज्जा ॥९॥ वणंसि मूढस्स जहा अमूढा, मग्गाणुसासंति हितं पयाणं। तेणेव (तेणावि) मज्झं इणमेव सेयं, जं मे बुहा समणुसासयंति ॥१०॥ अहातेण मूढेण अमूढगस्स, कायव्व पूया सविसेसजुत्ता। एओवमं तत्थ उदाहु वीरे, अणुगम्म अत्थं उवणेति सम्मं ॥११॥ णेता जहा अंधकारंसि राओ, मग्गं ण जाणाति अपस्समाणे। से सूरिअस्स अब्भुग्गमेणं, मग्गं वियाणाइ पगासियंसि ॥१२॥ एवं तु सेहेवि अपुट्ठधम्मे, धम्मं न जाणाइ अबुज्झमाणे। से कोविए जिणवयणेण पच्छा, सूरोदए पासति चक्खुणेव ॥१३॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावरा जे य पाणा। सया जए तेसु परिव्वएज्जा, मणप्पओसं अविकंपमाणे ॥१४॥ कालेण पुच्छे समियं पयासु, आइक्खमाणो दवियस्स वित्तं। तं सोयकारी य पुढो पवेसे, संखा इमं केवलियं समाहिं ॥१५॥ अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण तायी, एएसु या संति निरोहमाहु। ते एवमक्खंति तिलोगदंसी, ण भुज्जमेयंति पमायसंगं ॥१६॥ निसम्म से भिक्खु समीहियट्ठं, पडिभाणवं होइ विसारए य। आयाणअट्ठी वोदाणमोणं, उवेच्च सुद्धेण उवेति मोक्खं (न उवेइ मारं) ॥१७॥ संखाइ धम्मं च वियागरंति, बुद्धा हु ते अंतकरा भवंति। ते पारगा दोण्हवि मोयणाए, संसोधितं पण्हमुदाहरंति ॥१८॥ णो छायए

णोऽविय लूसएज्जा, माणं ण सेवेज्ज पगासणं च । ण यावि पन्ने परिहास कुज्जा, ण याऽऽसियावाय वियागरेज्जा ॥१९॥ भूताभिसंकाइ दुगुंछमाणे, ण णिव्वहे मंतपदेण गोयं । ण किंचि मिच्छे मणुए पयासुं, असाहु-धम्माणि ण संवएज्जा ॥२०॥ हासं पि णो संधति पावधम्मे, ओए तहीयं फरुसं वियाणे । णो तुच्छए णो य विकंथइज्जा, अणाइले या अकसाइ भिक्खू ॥२१॥ संकेज्ज याऽसंकितभाव भिक्खू, विभज्जवायं च वियागरेज्जा । भासादुयं धम्मसमुट्ठितेहिं, वियागरेज्जा समया सुपन्ने ॥२२॥ अणुगच्छ-माणे वितहं विजाणे, तहा तहा साहु अकक्कसेणं । ण कत्थई भास विहिं-सइज्जा, निरुद्धगं वावि न दीहइज्जा ॥२३॥ समालवेज्जा पडिपुन्नभासी, निसामिया समियाअट्ठदंसी । आणाइ सुद्धं वयणं भिउंजे, अभिसंधए पावविवेग भिक्खू ॥२४॥ अहाबुइयाइं सुसिक्खएज्जा, जइज्जया णातिवेलं वदेज्जा । से दिट्ठिमं दिट्ठि ण लूसएज्जा, से जाणई भासिउं तं समाहिं ॥२५॥ अलूसए णो पच्छन्नभासी, णो सुत्तमत्थं च करेज्ज ताई । सत्था-रभत्ती अणुवीइ वायं, सुयं च सम्मं पडिवाययेज्जा(यंति) ॥२६॥ से सुद्धसुत्ते उवहाणवं च, धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ । आदेज्जवक्के कुसले वियत्ते, स अरिहइ भासिउं तं समाहिं ॥ २७ ॥ तिबेमि ॥ (गाथाग्रं ५१८)

॥ इति चतुर्दशमध्ययनम् ॥ १४॥

॥ अथ आदानीयनामकं पञ्चदशमध्ययनम् ॥

जमतीतं पडुपन्नं, आगमिस्सं च णायओ । सव्वं मन्नति तं ताई, दंसणावरणंतए ॥ १ ॥ अंतए वितिगिच्छाए, से जाणति अणेलिसं । अणेलिसस्स अक्खाया, ण से होइ तहिं तहिं ॥ २ ॥ तहिं तहिं सुय-क्खायं, से य सच्चे सुआहिए । सया सच्चेण संपन्ने, मित्तिं भूएहि कप्पए ॥ ३ ॥ भूएहिं न विरुज्झेज्जा, एस धम्मे बुसीमओ । बुसिमं जगं

परिन्नाय, अस्सिं जीवितभावणा ॥ ४॥ भावणाजोगसुद्धप्पा, जले णावा व आहिया । नावा व तीरसंपन्ना, सव्वदुक्खा तिउट्टइ ॥ ५ ॥ तिउट्टई उ मेधावी, जाणं लोगंसि पावगं । तुट्टंति पावकम्माणि, नवं कम्ममकुव्वओ ॥ ६ ॥ अकुव्वओ णवं णत्थि, कम्मं नाम विजाणइ । विन्नाय से महावीरे, जेण जाई ण मिज्जई ॥ ७ ॥ ण मिज्जई महावीरे, जस्स नत्थि पुरेकडं । वाउव्व जालमच्चेति, पिया लोगंसि इत्थिओ ॥ ८ ॥ इत्थिओ जे ण सेवंति, आइमोक्खा हु ते जणा । ते जणा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥ ९ ॥ जीवितं पिट्ठओ किच्चा, अंतं पावंति कम्मुणं । कम्मुणा संमुहीभूता, जे मग्गमणुसासई ॥ १० ॥ अणुसासणं पुढो पाणी, वसुमं पूयणासु (स) ते । अणासए जते दंते, दढे आरयमेहुणे ॥ ११ ॥ णीवारे व ण लीएज्जा, छिन्नसोए अणाविले । अणाइले सया दंते, संधिं पत्ते अणेलिसं ॥ १२ ॥ अणेलिसस्स खेयन्ने, ण विरुज्झिज्ज केणइ । मणसा वयसा चेव, कायसा चेव चक्खुमं ॥ १३ ॥ से हु चक्खू मणुस्साणं, जे कंखाए य अंतए । अंतेण खुरो वहती, चक्कं अंतेण लोट्टती ॥ १४ ॥ अंताणि धीरा सेवंति, तेण अंतकरा इह । इह माणुस्सए ठाणे, धम्ममाराहिउं णरा ॥ १५ ॥ णिट्ठियट्ठा व देवा वा, उत्तरीए इयं सुयं । सुयं च मेयमेगेसिं अमणुस्सेसु णो तहा ॥ १६ ॥ अंतं करंति दुक्खाणं, इहमेगेसि आहियं । आघायं पुण एगेसिं, दुल्लभेऽयं समुस्सए ॥ १७ ॥ इओ विद्धंसमाणस्स, पुणो संबोहि दुल्लभा दुल्लहाओ तहच्चाओ, जे धम्मट्ठं वियागरे ॥ १८ ॥ जे धम्मं सुद्धमक्खंति, पडिपुन्नमणेलिसं । अणेलिसस्स जं ठाणं, तस्स जम्मकहा कओ ? ॥ १९ ॥ कओ कयाइ मेधावी, उप्पज्जंति तहागया । तहागया अप्पडिन्ना, चक्खू लोगस्सणुत्तरा ॥ २० ॥ अणुत्तरे य ठाणे से, कासवेण पवेदिते । जं किच्चा णिव्वुडा एगे, निट्ठं पावंति पंडिया ॥ २१ ॥ पंडिए वीरियं लद्धुं, निग्घायाय पवत्तगं । धुणे पुव्वकडं कम्मं, णवं वाऽवि ण कुव्वती ॥ २२ ॥

ण् कुव्वती महावीरे, अणुपुव्वकडं रयं। रयसा संमुहीभूता, कम्मं हेचाण जं मयं ॥२३॥ जं मयं सव्वसाहूणं, तं मयं सल्लगत्तणं। साहइत्ताण तं तिन्ना, देवा वा अभविसु ते ॥२४॥ अभविंसु पुरा वी(धी)रा, आगमिस्सावि सुव्वता। दुन्निबोहस्स मग्गस्स, अंतं पाउकरा तिन्ने ॥२५॥ त्तिबेमि। (गाथाग्रं ६४२)

॥ इति पञ्चदशमध्ययनम् ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडशं श्रीगाथाध्ययनम् ॥

अहाह भगवं—एवं से दंते दविए वोसट्ठकाएत्ति वच्चे माहणेत्ति वा १ समणेत्ति वा २ भिक्खूत्ति वा ३ णिग्गंथेत्ति वा ४ पडिआह—भंते! कहं नु दंते दविए वोसट्ठकाएत्ति वच्चे माहणेत्ति वा समणेत्ति वा भिक्खूत्ति वा णिग्गंथेत्ति वा? तं नो बूहि महामुणी! ॥ इतिविरिए सव्वपावकम्मेहिं पिज्जदोसकलह० अब्भक्खाण० पेसुन्न० परपरिवाय० अरतिरति० मायामोस० मिच्छादंसणसल्लविरए समिए सहिए सया जए णो कुज्झे णो माणी माहणेत्ति वच्चे १ ॥ एत्थवि समणे अणिस्सिए अणियाणे आदाणं च अतिवायं च मुसावायं च बहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पिज्जं च दोसं च इच्चेव जओ जओ आदाणं अप्पणो पद्दोसहेऊ तओ तओ आदाणातो पुव्वं पडिविरते पाणाइवायाओ सिआदंते दविए वोसट्ठकाए समणेत्ति वच्च २ ॥ एत्थवि भिक्खू अणुन्नए विणीए नामए दंते दविए वोसट्ठकाए संविधुणीय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा संखाए परदत्तभोई भिक्खूत्ति वच्चे ३ ॥ एत्थवि णिग्गंथे एगे एगविऊ बुद्धे संछिन्नसोए सुसंजते सुसमिते सुसामाइए आयवायपत्ते विऊ दुहओवि सोयपलिच्छिन्ने णो पूयासक्कारलाभट्ठी धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवन्ने समि(म)यं चरे दंते दविए वोसट्ठकाए निग्गंथेत्ति वच्चे ४ ॥ से एवमेव जाणह जमहं भयंतारो ॥ त्तिबेमि।

॥ इति षोडशममध्ययनम् ॥१६॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥१॥

अथ श्री सूत्रकृतांगे द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ।

॥ अथ प्रथमं पौण्डरीकाख्याध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु पोंडरीए णामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते—से जहाणामए पुक्खरिणी सिया बहुउदगा बहुसेया बहुपुक्खला लद्धट्ठा पुंडरिकिणी पासादीया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया, अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता पासादीया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए, अणुपुव्वुट्ठिए उस्सिते रुइले वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादीए जाव पडिरूवे १। सव्वावंति च णं तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला जाव पडिरूवा, सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगं महं पउमवरपोंडरीए बुइए अणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे २॥सू० १॥ अह पुरिसे पुरित्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणीं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं ऊसियं जाव पडिरूवं १। तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिते वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्ति कट्टु इति बुया (वुच्चा) से पुरिसे अभिक्कमेति तं पुक्खरिणीं, जावं जावं च णं अभिक्कमेइ तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि निसण्णे पढमे पुरिसजाए। २॥सू० २॥ अहावरे

दोच्चे पुरिसजाए, अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं (महन्तं) एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं पासादीयं जाव पडिरूवं १। तं च एत्थ एगं पुरिसजातं पासति पहीणतीरं अपत्तपउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि णिसन्नंसु, तए णं से पुरिसे (तं पुरिसं) एवं वयासी—अहो णं इमे (अयं) पुरिसे अखेयन्ने अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेहावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू जन्नं एस पुरिसे, अहं खेयन्ने कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिस्सामि ३। णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवियव्वं जहा णं एस पुरिसे मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिए वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिस्सामित्तिकट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं, जावं जावं च णं अभिक्कमेइ तावं तावं च णं हिते उदए महंते सेए पहीणे तीरं अपत्ते पउमरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि णिसन्ने दोच्चे पुरिसजाते ४॥ २ ॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाते, अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं एगं महं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं १। ते तत्थ दोन्नि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए जाव सेयंसि णिसन्ने २। तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना अकुसला अपंडिया अवियत्ता अमेहावी बाला णो मग्गत्था णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू जं णं एते पुरिसा एवं मन्ने—अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो ३। नो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवेतव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिए वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ

मग्गस्स गतिपरक्कमराणू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्ति कट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं जावं जावं च णं अभिक्कमे तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए जाव अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि णिन्स, नेतच्चे पुरिसजाए ४॥ सूत्रं ४ ॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए, अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं, तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं १। ते तत्थ तिन्नि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं अपत्ते जाव सेयंसि णिसन्ने २। तए णं से पुरिसे एवं वयासी–अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव णो मग्गस्स गतिपरक्कमराणू जरणं एते पुरिसा एवं मन्ने–अम्हे एतं पउमवर-पोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामो ३। णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्नि-क्खेवेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने जाव मग्गस्स गतिपरक्कमराणू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्ति कट्टु इति वुच्चा से पुरिसे तं पुक्खरिणिं जावं जावं च णं अभिक्कमे तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए जाव णिसन्ने, चउत्थे पुरिसजाए ४॥ सूत्रं ५ ॥ अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गतिपरक्कमराणू अन्नतराओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं जाव पडिरूवं १। ते तत्थ चत्तारि पुरिस-जाए पासति पहीणे तीरं अपत्ते जाव पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पुक्खरिणीए सेयंसि णिसन्ने २। तए णं से भिक्खू एवं वयासी–अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव णो मग्गस्स गतिपरक्कमराणू, जं एते पुरिसा एवं मन्ने अम्हे एयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामो ३। णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवेतव्वं जहा णं एते पुरिसा मन्ने, अहमंसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव मग्गस्स गतिपरक्कमराणू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उणिणक्खिविस्सामित्ति कट्टु इति वुच्चा से

भिक्खू णो अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा सद्दं कुज्जा–उप्पयाहि खलु भो पउमवरपोंडरीया ! उप्पयाहि अह से उप्पतिते पउमवरपोंडरीए ४॥ सूत्रं ६॥ किट्टिए नाए समणाउसो !. अट्ठे पुण से जाणितव्वे भवति, भंतेत्ति समणं भगवं महावीरं निग्गंथा य निग्गंथीओ य वंदंति नमंसंति वंदेत्ता नमंसित्ता एवं वयासि–किट्टिए नाए समणाउसो !. अट्ठं पुण से ण जाणामो समणाउसोत्ति, समणे भगवं महावीरे ते य बहवे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी–हंत समणाउसो ! आइक्खामि विभावेमि किट्टेमि पवेदेमि सअट्ठं सहेउं सनिमित्तं भुज्जो भुज्जो उवदंसेमि से बेमि ॥ ॥सूत्रं ७॥ लोयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! सा पुक्खरिणी बुइया, कम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उदए बुइए, कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सेए बुइए, जणं जाणवयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया, रायाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए, अन्नउत्थिया य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते चत्तारि पुरिसजाया बुइया, धम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से भिक्खू बुइए, धम्मतित्थं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से तीरे बुइए. धम्मकहं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सद्दे बुइए, निव्वाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उप्पाए बुइए, एवमेयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एवमेयं बुइयं ॥सूत्रं ८॥ इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगतिया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं उववन्ना, तंजहा–आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोत्ता वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवन्ना वेगे दुव्वन्ना वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे १। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवइ, महया(महा)हिमवंत-मलय-मंदरमहिंदसारे अच्चंतविसुद्धरायकुलवंसप्पसूते निरंतररायलक्खणविराइयंगमंगे बहुयणबहुमाणपूइए सव्व-

गुणसमिद्धे खत्तिए मुदिए मुद्धाभिसित्ते माउपिउसुजाए दयप्पिए सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसपवरे पुरिससीहे पुरिसआसीविसे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्नविउल-भवणसयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधणबहुजातरूवरतए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउर-भत्तपाणे बहुदासीदास-गोमहिस-गवेलगप्पभूते पडिपुण्णकोसकोट्ठागाराउहागारे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तू निहयसत्तू मलियसत्तू उद्धियसत्तू निज्जियसत्तू पराइय-सत्तू ववगयदुब्भिक्ख-मारिभयविप्पमुक्कं रायवन्नओ जहा उववाइए जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति २। तस्स णं रन्नो परिसा भवइ-उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता इक्खागाइ इक्खागाइपुत्ता नाया नायपुत्ता कोरव्वा कोरव्वपुत्ता भट्टा भट्टपुत्ता माहणा माहणपुत्ता लेच्छइ लेच्छइपुत्ता पसत्थारो पसत्थपुत्ता सेणावई सेणावइपुत्ता ३। तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए, तत्थ अन्नतरेणं धम्मेणं पन्नत्तारो वयं इमेणं धम्मेणं पन्नवइस्सामो से एवमायाणह भयंतारो जहा मए एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ, तंजहा-उड्ढं पादतला अहे केसग्गमत्थया तिरियं तयपरियंते जीवे एस आयापज्जवे कसिणे एस जीवे जीवति एस मए णो जीवइ, सरीरे धरमाणे धरइ विणट्ठंमि य णो धरइ, एयंतं जीवियं भवति, आदहणाए परेहिं निज्जइ, अगणिझामिए सरीरे कवोतवन्नाणि अट्ठीणि भवंति, आसंदीपंचमा पुरिसा गामं पच्चागच्छंति ४। एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं असंते असंविज्जमाणे तेसिं तं सुयक्खायं भवति-अन्नो भवति जीवो अन्नं सरीरं, तम्हा, ते एवं नो विपडिवे-देंति-अयमाउसो ! आया दीहेति वा हस्सेति वा परिमंडलेति वा वट्टेति वा तंसेति वा चउरंसेति वा आयतेति वा छलंसिएति वा अट्ठंसेति वा, किण्हेति

वा णीलेति वा लोहियहालिद्दे जाव सुक्किल्लेति वा, सुब्भिगंधेति वा दुब्भिगंधेति वा, तित्तेति वा कडुएति वा कसाएति वा अंबिलेति वा जाव महुरेति वा, कक्खडेति वा मउएति वा गुरुएति वा लहुएति वा सिएति वा उसिणेति वा निद्धेति वा लुक्खेति वा, ५। एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं सुयक्खायं भवति–अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, तम्हा ते णो एवं उवलब्भंति से जहाणामए केइ पुरिसे कोसीओ असिं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! असी अयं कोसी, एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेइ (उवदंसेत्तारो) अयमाउसो ! आया इयं सरीरं ६। से जहाणामए केइ पुरिसे मुंजाओ इसियं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! मुंजे इयं इसियं, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं ७। से जहाणामए केइ पुरिसे मंसाओ अट्ठिं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो। मंसे अयं अट्ठी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं ८। से जहाणामए केइ पुरिसे करयलाओ आमलकं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! करतले अयं आमलए, एवमेव णत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं। से जहाणामए केइ पुरिसे दहिओ नवनीयं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! नवनीयं अयं तु दही, एवमेव णत्थि केइ पुरिसे जाव सरीरं ९। से जहाणामए केइ पुरिसे तिलेहिंतो तिल्लं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! तेल्लं अयं पिन्नाए, एवमेव जाव सरीरं १०। से जहाणामए केइ पुरिसे इक्खूतो खोतरसं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! खोतरसे अयं छोए, एवमेव जाव सरीरं ११। से जहाणामए केइ पुरिसे अरणीतो अग्गिं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! अरणी अयं अग्गी, एवमेव जाव सरीरं १२। एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं सुयक्खायं भवति, तंजहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तम्हा ते मिच्छा १३॥ से हंता तं हणह खणह छणह

डहह पयह आलु पह विलुं पह सहसाकारेह विपरामुसह, एतावताव जीवे गात्थि परलोए, ते गो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा—किरियाइ वा अकिरियाइ वा सुक्कडेइ वा दुक्कडेइ वा कल्लागोइ वा पावएइ वा साहुइ वा असाहुइ वा सिद्धीइ वा असिद्धीइ वा निरएइ वा अनिरएइ वा, एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए १४॥ एवं एगे पागब्भिया गिक्खम्म मामगं धम्मं पन्नवेंति, तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साहु सुयक्खाए समणेति वा माहणेति वा कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामि, तंजहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु तत्थेगे पूयणाए निकाइंसु १५॥ पुव्वमेव तेसिं णायं भवति—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता (अपत्ता) अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ते अप्पणा अप्पडिविरया भवंति, सयमाइयंति अन्नेवि आदियावेंति अन्नंपि आयतंतं समणुजाणंति, एवमेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववन्ना लुद्धा रागदोसवसट्टा, ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति ते णो परं समुच्छेदेंति ते णो अराणाइं पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति, पहीणा पुव्वसंजोगं आयरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए अंतरा कामभोगेसु विसन्ना इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतच्छरीरएत्ति आहिए १६ ॥ सूत्रं ६ ॥ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पंचमहब्भूतिएत्ति आहिज्जइ, इह खलु पाइणं वा (६) संतेगतिया मणुस्सा, भवंति अणुपुव्वेणं लोयं उववन्ना, तंजहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे एवं जाव दुरूवा वेगे, तेसिं च णं महं एगे राया भवइ महया० एवं चेव णिरवसेसं जाव सेणावइपुत्ता, तेसिं च णं एगतिए सड्ढी भवति कामं तं समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए, तत्थ अन्नयरेणं धम्मेणं पन्नत्तारो वयं इमेणं धम्मेणं पन्नवइस्सामो से एवमायाणह

भयंतारो । जहा मए एस धम्मे सुअक्खाए (जाव) सुपन्नत्ते भवति १॥ इह खलु पंच महब्भूता, जेहिं नो विज्जइ किरियाति वा अकिरियाति वा, सुक्कडेति वा दुक्कडेति वा, कल्लाणेति वा पावएति वा, साहुति वा असाहुति वा, सिद्धीति वा असिद्धीति वा, जाव णिरएति वा, अणिरएति वा, अवि अंतसो तणमायमवि २॥ तं च पिहुद्दे सेणं पुढोभूतसमवातं जाणेज्जा, तंजहा–पुढवी एगे महब्भूते आऊ दुच्चे महब्भूते तेऊ तच्चे महब्भूते वाऊ चउत्थे महब्भूते आगासे पंचमे महब्भूते, इच्चेते पंच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्माविता अकडा णो कित्तिमा णो कडगा अणाइया अणिहणा अवंझा अपुरोहिता सतंता सासता आयछट्ठा, पुण एगे एवमाहु–सतो णत्थि विणासो असतो णत्थि संभवो ३॥ एतावताव जीवकाए, एतावताव अत्थिकाए, एतावताव सव्वलोए, एतं मुहं लोगस्स करणयाए, अवियंतसो तणमायमवि ४॥ से किणं किणावेमाणे हणं घायमाणे पयं पयावेमाणे अवि अंतसो पुरिसमवि कीणित्ता घायइत्ता एत्थंपि जाणाहि णत्थित्थदोसो, ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा-किरियाइ वा जावऽणिरएइ वा, एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए, एवमेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा जाव इति, ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु जाव विसण्णा, दोच्चे पुरिसजाए पंचमहब्भूतिएत्ति आहिए ५॥ सूत्रं १०॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाए ईसरकारणिए इति आहिज्जइ, इह खलु पांदीणं वा (६) सतेगतिया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोयं उववन्ना, तं०–आरिया वेगे जाव तेसिं च णं महंते एगे राया भवइ जाव सेणावइपुत्ता, तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ, कामं तं समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए जाव जहा मए एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ १॥ इह खलु धम्मा पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिमसंभूया पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागया पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए गंडे

सिया सरीरे जाए सरीरे संवुड्ढे सरीरे अभिसमरणागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मा पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति २ । से जहाणामए अरई सिया सरीरे जाया सरीरे संवुड्ढा सरीरे अभिसमरणागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ३ । से जहाणामए वम्मिए सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमरणागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ४ । से जहाणामए रुक्खे सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमरणागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ५ । से जहाणामए पुक्खरिणी सिया पुढविजाया जाव पुढविमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ६ । से जहाणामए उदगपुक्खले सिया उदगजाए जाव उदगमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ७ । से जहाणामए उदगबुब्बुए सिया उदगजाए जाव उदगमेव अभिभूय चिट्ठति, एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ८ ॥ जंपिय इमं समणाणं णिग्गंथाणं उद्दिट्ठं पणीयं वियंजियं दुवालसंगं गणिपिडयं, तंजहा–आयारो सूयगडो जाव दिट्ठिवातो, सव्वमेवं मिच्छा, ण एयं तहियं, ण एयं आहातहियं, इमं सच्चं इमं तहियं इमं आहातहियं, ते एवं सन्नं कुव्वंति, ते एवं सन्नं संठवेंति, ते एवं सन्नं सोवट्ठवयंति, तमेवं ते तज्जाइयं दुक्खं णातिउट्टंति सउणी पंजरं जहा ६ ॥ ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा–किरिया इ वा जाव अणिरए इ वा, एवामेव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए, एवामेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना एवं सद्दहमाणा जाव इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसरणेत्ति, तच्चे पुरिसजाए

ईसरकारणिएत्ति आहिए १० ॥सूत्रं ११॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए णिय-तिवाइएत्ति आहिज्जइ, इह खलु पाईणं वा (६) तहेव जाव सेणावइपुत्ता वा, तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ, कामं तं समणा य माहणा य संपहारिंसु गमणाए जाव मए एस धम्मे सुअक्खाए सुपन्नत्ते भवइ १॥ इह खलु दुवे पुरिसा भवंति–एगे पुरिसे किरियमाइक्खइ एगे पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ, जे य पुरिसे किरियमाइक्खइ जे य पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ दोवि ते पुरिसा तुल्ला एगट्ठा, कारणमावन्ना २॥ बाले पुण एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा अहमेयमकासि परो वा जं दुक्खइ वा सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा परितप्पइ वा परो एवमकासि, एवं से बाले सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने ३॥ मेहावी पुण एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने–अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा, णो अहं एवमकासि, परो वा जं दुक्खइ वा जाव परितप्पइ वा णो परो एवमकासि, एवं से मेहावी सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने, ४॥ से बेमि पाईणं वा (६) जे तसथावरा पाणा ते एवं संघायमागच्छंति ते एवं विपरियासमावज्जंति ते एवं विवेगमागच्छंति ते एवं विहाणमगच्छंति ते एवं संगतियंति उवेहाए, णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा–किरियाति वा जाव (णिरएति वा) अणिरएति वा, एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए ५॥ एवमेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना तं सद्दहमाणा जाव इति ते णो हव्वाए णो पाराए अंतरा कामभोगेसु विसण्णा ६। चउत्थे पुरिसजाए णियइवाइएत्ति आहिए, ॥ इच्चेते चत्तारि पुरिसजाया णाणापन्ना णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाअज्झवसाणसंजुत्ता पहीणपुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए

अंतरा कामभोगेसु विसएणा ८॥सूत्रं १२॥ से बेमि पाईणं वा (६) संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीया-गोया वेगे, कायमंता वेगे, रहस्समंता वेगे, सुवन्ना वेगे, दुवन्ना वेगे, सुरूवा वेगे। दुरूवा वेगे १। तेसिं च णं जणजाणवयाइं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवंति, तं० अप्पयरा वा भुज्जयरा वा, तहप्पगारेहिं कूलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिता सतो वावि एगे णायओ य (अणायओ) य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिता असतो वावि एगे णायओ (अणायओ) य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिता, [जे ते सतो वा असतो वा णायओ य अणायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खाय-रियाए समुट्ठिता] २। पुव्वमेव तेहिं णायं भवइ, तंजहा—इह खलु पुरिसे अन्नमन्नं ममट्ठाए एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—खेत्तं मे वत्थू मे हिरणणं मे सुवन्नं मे धणं मे धरणं मे कंसं मे दूसं मे विपुलधण-कणगरयण-मणि-मोत्तिय-संखसिलप्पवाल-रत्तरयणसंतसारसावतेयं मे सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे, एते खलु मे कामभोगा अहमवि एतेसिं ३॥ से मेहावी पुव्वामेव अप्पणो एवं समभिजाणेज्जा, तंजहा—इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुन्ने अमणामे दुक्खे णो सुहे से हंता भयंतारो! कामभोगाइं मम अन्नयरं दुक्खं रोया-तंकं परियाइयह अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुन्नं अमणामं दुक्खं णो सुहं, ताऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा इमाओ मे अणणयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडि-मोयह अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुन्नाओ अमणा-माओ दुक्खाओ णो सुहाओ, एवामेव णो लद्धपुव्वं भवइ ४। इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा, पुरिसे वा एगता पुव्विं काम-भोगे विप्पजहति, कामभोगा वा एगता पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति, अन्ने

खलु कामभोगा अन्नो अहमंसि, से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो ?, इति संखाए णं वयं च कामभोगेहिं विप्पजहिस्सामो ५। से मेहावी जाणेज्जा बहिरंगमेतं, इणमेव उवणीयतरागं, तंजहा—माया मे पिता मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे धूता मे पेसा मे नत्ता मे सुण्हा मे सुही मे पिया मे सहा मे सयणसंगंथसंथुया मे, एते खलु मम णायओ अहमवि एतेसिं, एवं से मेहावी पुव्वामेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा ६। इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे जाव दुक्खे णो सुहे, से हंता भयंतारो ! णायओ इमं मम अन्नयरं दुक्खं रोयातंकं परियाइयह अणिट्ठं जाव णो सुहं ७। ताऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जाव परितप्पामि वा, इमाओ मे अन्नयरातो दुक्खाओ रोयातंकाओ परिमोएह अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ, एवमेव णो लद्धपुव्वं भवइ, तेसिं वावि भयंताराणं मम णाययाणं अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुपज्जेज्जा अणिट्ठे जाव णो सुहे, से हंता अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अन्नयरं दुक्खं रोयातंकं परियाइयामि अणिट्ठं जाव णो सुहं ८। मा मे दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु वा, इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खातो रोयातंकाओ परिमोएमि अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ, एवमेव णो लद्धपुव्वं भवइ, अन्नस्स दुक्खं अन्नो न परियाइयति अन्नेण कडं अन्नो नो पडिसंवेदेति पत्तेयं जायति पत्तेयं मरइ पत्तेयं चयइ पत्तेयं उववज्जइ पत्तेयं झंझा पत्तेयं सन्ना पत्तेयं मन्ना एवं विन्नू वेदणा ९। इह खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा, पुरिसे वा एगता पुव्विं णातिसंजोए विप्पजहति, णातिसंजोगा वा एगता पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति, अन्ने खलु णातिसंजोगा अन्नो अहमंसि, से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं णातिसंजोगेहिं मुच्छामो ?, इति संखाए णं वयं णातिसंजोगं विप्पजहिस्सामो १०। से मेहावी जाणेज्जा बहिरंगमेयं, इणमेव उवणीयतरागं, तंजहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे

सीसं मे सीलं मे आऊ मे बलं मे वरणो मे तया मे छाया मे सोयं मे चक्खू मे घाणं मे जिब्भा मे फासा मे ममाइज्जइ, वयाउ पडिजूरइ, तंजहा–आउओ बलाओ वरणाओ तयाओ छायाओ सोयाओ जाव फासाओ, सुसंधितो संधी विसंधीभवइ, वलियतरंगे गाए भवइ, किरहा केसा पलिया भवंति, तंजहा–जंपि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवइयं एयंपि य अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति ११। एयं संखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तंजहा–जीवा चेव अजीवा चेव, तसा चेव थावरा चेव १२ ॥ सूत्रम् १३ ॥

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, जे इमे तसा थावरा पाणा ते सयं समारंभति अन्नेणवि समारंभावेंति अरणंपि समारभंतं समणुजाणंति १॥ इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते सयं परिगिराहंति अन्नेणवि परिगिराहावेंति अन्नंपि परिगिराहंतं समणुजाणंति २ ॥ इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे, जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव निस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो, कस्स णं तं हेउं ?, जहा पुव्वं तहा अवरं जहा अवरं तहा पुव्वं, अंजू एते अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव ३ ॥ जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, दुहतो पावाइं कुव्वंति इति संखाए दोहिवि अंतेहिं अदिस्समाणो इति भिक्खू रीएज्जा ४ ॥ से बेमि पाईणं वा ६ जाव एवं से परिरागायकम्मे, एवं से ववेयकम्मे, एवं से विअंतरकारए भवतीति मक्खायं ५ ॥सूत्रं १४॥

तत्थ खलु भगवता छज्जीवनिकाय हेऊ पराणत्ता, तंजहा—पुढवीकाए जाव तसकाए, से जहाणामए मम अस्सायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आउट्टिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परियाविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि १। इच्चेवं जाण सव्वे जीवा सव्वे भूता सव्वे पाणा सव्वे सत्ता दंडेण वा जाव कवालेण वा आउट्टिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परियाविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति, एवं नच्चा सव्वे पाणा जाव सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा २ ॥ से बेमि जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहंता भगवंतो सव्वे ते एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पराणवेंति एवं परूवेंति—सव्वे पाणा जाव सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयवा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा एस धम्मे धुवे णीतिए सासए समिच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेदिए, एवं से भिक्खू विरते पाणातिवायातो जाव विरते परिग्गहातो णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा णो अंजणं णो वमणं णो धूवणे णो तं परिआविएज्जा ३॥ से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिनिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विन्नाएण वा इमेण वा सुचरियतवनियमबंभचेरवासेण इमेण वा जायामायावत्तिएणं धम्मेणं इओ चुए पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती सिद्धे वा अदुक्खमसुभे एत्थवि सिया एत्थवि णो सिया ४ ॥ से भिक्खू सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं अमुच्छिए विरए कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ

दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते से भिक्खू ५ ॥ जे इमे तसथावरा पाणा भवंति ते णो सयं समारंभइ णो वऽणेहिं समारंभावेंति अन्ने समारभंतेवि न समणुजाणंति इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते से भिक्खू ६ ॥ जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते णो सयं परिगिराहति णो अन्नेणं परिगिराहावेति अन्नं परिगिराहंतंपि ण समणुजाणंति इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते से भिक्खू ७ ॥ जंपिय इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ, णो तं सयं करेति णो अराणाणं कारवेति अन्नंपि करेंतं ण समणुजाणइ इति, से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ८ ॥ से भिक्खू जाणेज्जा असणं वा ४ अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ समुद्दिस्स कीतं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं तं चेतियं सिया तंजहा अप्पणो पुत्ताईणट्ठाए जाव आएसाए पुढो पहेणाए सामासाए पायरासाए संणिहिसंणिचओ किज्जइ, इहएतेसिं माणवाणं भोयणाए (अह पुण एवं जाणेज्जा विज्जति तेसिं परक्कम जस्सट्ठाए चेइअं सिआ तंजहा—अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुराहाणं धाईणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं पुढोपहेणाए सामासाए पातरासाए सन्निहीसन्निचए किज्जइ इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए) णो सयं भुंजइ णो अराणेणं भुंजावेति अन्नंपि भुंजंतं ण समणुजाणइ इति, से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ९ ॥ तत्थ भिक्खू परकडं परणिट्ठितमुग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थाईयं सत्थपरिणामियं अविहिंसियं एसियं वेसियं सामुदाणियं पत्तमसणं कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजणवणलेवणभूयं संजमजायामायावत्तियं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा अन्नं अन्नकाले पाणं पाणकाले

वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले १०॥ से भिक्खू मायन्ने अन्नयरं दिसं अणुदिसं वा पडिवन्ने धम्मं आइक्खे विभए किट्टे उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए, संतिविरतिं उवसमं निव्वाणं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूताणं जाव सत्ताणं अणुवाइं किट्टए धम्मं ११॥ से भिक्खू धम्मं किट्टमाणे णो अन्नस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो अन्नेसिं विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा, नन्नत्थ कम्मनिज्जरट्ठाए धम्ममाइक्खेज्जा १२॥ इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया ते एवं सव्वोवगता ते एवं सव्वोवर(ग)ता ते एवं सव्वोवसंता ते एवं सव्वत्ताए परिनिव्वुडत्तिबेमि १३॥ एवं से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे से जहेयं बुतियं अदुवा पत्ते पउमवरपोंडरीयं अदुवा अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, एवं से भिक्खू परिण्णायकम्मे परिण्णायसंगे परिण्णायगेहवासे उवसंते समिए सहिए सया जए, सेवं वयणिज्जे, (वत्तव्वे) तंजहा–समणेति वा माहणेति वा खंतेति वा दंतेति वा गुत्तेति वा मुत्तेति वा इसीति वा मुणीति वा कतीति वा विऊति वा भिक्खूति वा लूहेति वा तीरट्ठीति वा चरणकरणपारविउत्तिबेमि १४ ॥सूत्र-१५॥

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥ श्रुतस्कंधः २ः अ०१ ॥



॥ अथ द्वितीयं क्रियास्थानाख्याध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु किरियाठाणे णामज्झयणे पराणत्ते, तस्स णं अयमट्ठे-इह खलु संजूहेणं दुवे ठाणे एवमाहिज्जंति, तंजहा-धम्मे चेव अधम्मे चेव उवसंते चेव अणुवसंते चेव १॥ तत्थ णं जे से पढमस्स ठाणस्स अहम्मपक्खस्स विभंगे तस्स णं अयमट्ठे पराणत्ते, इह खलु पाईणं वा ६ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवराणा वेगे दुव्वराणा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे २॥ तेसिं च णं इमं एतारूवं दंडसमादाणं संपेहाए तंजहा-णेरइएसु वा तिरिक्खजोणिएसु वा मणुस्सेसु वा देवेसु वा जे यावन्ने तहप्पगारा पाणा विन्नू वेयणं वेयंति ३॥ तेसिं पि य णं इमाइं तेरस किरियाठाणाइं भवंतीति एवमक्खायं, तंजहा-अट्ठादंडे १ अणट्ठादंडे २ हिंसादंडे ३ अकम्हादंडे ४ दिट्ठीविपरियासियादंडे ५ मोसवत्तिए ६ अदिन्नादाणवत्तिए ७ अज्झत्थवत्तिए ८ माणवत्तिए ९ मित्तदोसवत्तिए १० मायावत्तिए ११ लोभवत्तिए १२ इरियावहिए १३ ॥सूत्रं १६॥

पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा मित्तहेउं वा णागहेउं वा भूतहेउं वा जक्खहेउं वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहि सयमेव णिसिरिति अणोणवि णिसिरावेति अणणंपि णिसिरंतं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रं १७॥

अहावरे दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति ते णो अच्चाए णो अजिणाए

णो मंसाए णो सोणियाए एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए णहाए ण्हारुणिए अट्ठीए अट्ठिमंजाए णो हिंसिंसु मेत्ति णो हिंसंति मेत्ति णो हिंसिस्संति मेत्ति णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणयाए णो अगारपरिवूहणताए णो समणमाहणवत्तणाहेउं णो तस्स सरीरगस्स किंचि विप्परियादित्ता भवंति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति, अणट्ठादंडे १॥ से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवंति, तंजहा—इक्कडा इ वा कडिणा इ वा जंतुगा इ वा परगा इ वा मोक्खा इ वा तणा इ वा कुसा इ वा कुच्छगा इ वा पव्वगा इ वा पलाला इ वा, ते णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणाए णो अगारपडिवूहणयाए णो समणमाहणपोसणयाए णो तस्स सरीरगस्स किंचि विपरियाइत्ता भवंति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति, अणट्ठादंडे २॥ से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा तणाइं ऊसविय ऊसविय सयमेव अगणिकायं णिसिरति अएणेणवि अगणिकायं णिसिरावेति अएणंपि अगणिकायं णिसिरिंतं समणुजाणइ अणट्ठादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जन्ति आहिज्जइ, दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिए ३॥ सूत्रम् १८ ॥

अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे ममं वा ममिं वा अन्नं वा अन्निं वा हिंसिंसु वा हिंसइ वा हिंसिस्सइ वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहि सयमेव णिसिरति अएणेणवि णिसिरावेति अन्नपि णिसिरंतं समणुजाणइ हिंसादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रम् १९ ॥

अहावरे चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मात् दंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा जाव वण(पव्वय)विदुग्गंसि वा मियवत्तिए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एए मियत्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसुं आयामेत्ता णं णिसिरेज्जा, स मियं वहिस्सामित्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा चडगं वा लावगं वा कवोयगं वा कविं वा कविजलं वा विंधित्ता भवइ, इह खलु से अन्नस्स अट्ठाए अण्णं फुसति अकम्हादंडे १॥ से जहाणामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा परगाणि वा रालाणि वा णिलिज्जमाणे अन्नयरस्स तणस्स वहाए सत्थं णिसिरेज्जा, से सामगं (मयणगं मुगुणगं) तणगं कुमुदुगं वीहीऊसियं कलेसुयं तणं छिंदिस्सामित्ति कट्टु सालिं वा वीहिं वा कोद्दवं वा कंगुं वा परगं वा रालयं वा छिंदित्ता भवइ, इति खलु से अन्नस्स अट्ठाए अन्नं फुसति अकम्हादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जे आहिज्जइ, चउत्थे दंडसमादाणे अकम्हादंडवत्तिए आहिए २॥ सूत्रम् २०॥

अहावरे पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूताहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे मित्तं अमित्तमेव मन्नमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादंडे ॥ से जहाणामए केइ पुरिसे गामघायंसि वा णगरघायंसि वा खेड० कब्बड० मडंबघायंसि वा दोणमुहघायंसि वा पट्टणघायंसि वा आसमघायंसि वा सन्निवेसघायंसि वा निग्गमघायंसि वा रायहाणिघायंसि वा अतेणं तेणमिति मन्नमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रम् २१॥

अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा सयमेव मुसं वयति अण्णेणावि मुसं वाएइ मुसं वयंतंपि अण्णं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रम् २२ ॥

अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा जाव परिवारहेउं वा सयमेव अदिन्नं आदियइ अन्नेणावि अदिन्नं आदियावेति अदिन्नं आदियंतं अन्नं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रम् २३ ॥

अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे णत्थि णं केइ किंचि विसंवादेति सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ, तस्स णं अज्झत्थया असंसइया चत्तारि ठाणा एवमहिज्जइ (ज्जंति) तंजहा—कोहे माणे माया लोहे, अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिएत्ति आहिए ॥ सूत्रम् २४ ॥

अहावरे णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे जातिमएण वा कुलमएण वा बलमएण वा रूवमएण वा तवमएण वा सुयमएण वा लाभमएण वा इस्सरियमएण वा पन्नामएण वा अन्नतरेण वा मयट्ठाणेणं मत्ते समाणे परं हीलेति निंदति खिंसति गरहति परिभवइ अवमण्णेति, इत्तरिए अयं, अहमंसि पुण विसिट्ठजाइकुलबलाइगुणोववेए, एवं अप्पाणं समुक्कसे, देहच्चुए कम्मबितिए अवसे पयाइ, तंजहा—गब्भाओ गब्भं ४ जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं चंडे थद्धे चवले

मणी यावि भवइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, णवमे किरियाठाणे मायावत्तिएत्ति आहिए ॥सूत्रम् २५॥

अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पितीहिं वा भाईहिं वा भइणीहिं वा भज्जाहिं वा धूयाहिं वा पुत्तेहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे तेसिं अन्नयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति, तंजहा–सीओदगवियडंसि वा कायं उच्छोलित्ता भवति, उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता भवति, अगणिकाएणं कायं उवडहित्ता भवति, जोत्तेण वा वेत्तेण वा वा णेत्तेण वा तयाइ वा [कण्णेण वा छियाए वा] लयाए वा अन्नयरेण वा दवरएण पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणा भवति, पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए दंडपासी दंडगुरुए दंडपुरक्कडे अहिए इमंसि लोगंसि अहिए परंसि लोगंसि संजलणे कोहणे पिट्ठिमंसि यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जति, दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिएत्ति आहिए ॥सूत्रम् २६॥

अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिएत्ति आहिज्जइ, जे इमे भवंति–गूढायारा तमोकसिया उलुगपत्तलहुया पव्वयगुरुया ते आयरियावि संता अणारियाओ भासाओवि पउज्जंति, अन्नहासंतं अप्पाणं अन्नहा मन्नंति, अन्नं पुट्ठा अन्नं वागरंति, अन्नं आइक्खियव्वं अन्नं आइक्खंति १ ॥ से जहाणामए केइ पुरिसे अंतोसल्ले तं सल्लं णो सयं णिहरति णो अन्नेण णिहरावेति णो पडिविद्धंसेइ, एवमेव निण्हवेइ, अविउट्टमाणे अंतो-अंतो रियइ २ । एवमेव माई मायं कट्टु णो आलोएइ णो पडिक्कमेइ णो णिंदइ णो गरहइ णो विउट्टइ णो विसोहेइ णो अकरणाए अब्भुट्ठेइ णो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ, माई अस्सिं लोए पच्चायाइ माइ

परंसि लोए पुणो पुणो पच्चायाइ निंदइ गरहइ पसंसइ णिच्चरइ नियट्टइ णिसिरियं दंडं छाएति, माई असमाहडसुहलेस्से यावि भवइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिएत्ति आहिए ३ ॥ सूत्रं २७ ॥

अहावरे बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिज्जइ, जे इमे भवंति, तंजहा—आरन्निया आवसहिया गामंतिया कराहुईरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूतजीवसत्तेहिं ते अप्पणो सच्चामोसाइं एवं विउंजंति, अहं ण हंतव्वो अन्ने हंतव्वा अहं ण अज्जावेयव्वो अन्ने अज्जावेयव्वा अहं ण परिघेतव्वो अन्ने परिघेतव्वा अहं ण परितावेयव्वो अन्ने परितावेयव्वा अहं ण उद्दवेयव्वो अन्ने उद्दवेयव्वा १। एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया गरहिया अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु आसुरिएसु किव्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति २। ततो विप्पमुच्चमाणे भुज्जो भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए पच्चायंति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिए ३ ॥ इच्चेयाइं दुवालस किरियट्ठाणाइं दविएणं समणेण वा माहणेण वा सम्मं सुपरिजाणिअव्वाइं भवंति ४ ॥सूत्रं २८॥

अहावरे तेरसमे किरियट्ठाणे ईरियावहिएत्ति आहिज्जइ, इह खलु अत्तत्ताए संवुडस्स अणगारस्स ईरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वयसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वयगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स गुत्तबंभयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स आउत्तं चिट्ठमाणस्स आउत्तं णिसीयमाणस्स आउत्तं तुयट्टमाणस्स आउत्तं भुंजमाणस्स आउत्तं भासमाणस्स आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं

णिसीयमाणस्स वा णिक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हणिवायमवि अत्थि विमाया सुहुमा किरिया ईरियावहिया नाम कज्जइ १। सा पढमसमए बद्धा पुट्ठा बितीयसमए वेइया तइयसमए णिज्जिराणा सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया णिज्जिराणा सेयकाले अकम्मे यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, तेरसमे किरियट्ठाणे ईरियावहिएत्ति आहिज्जइ २ ।। से बेमि जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहंता भगवंता सव्वे ते एयाइं चेव तेरस किरियट्ठाणाइं भासिंसु वा भासेंति वा भासिस्संति वा पन्नविंसु वा पन्नविंति वा पन्नविस्संति वा, एवं चेव तेरसमं किरियट्ठाणं सेविंसु वा सेवंति वा सेविस्संति वा ३।। सूत्रं २१।।

अदुत्तरं च णं पुरिसविजयं विभंगमाइक्खिस्सामि, इह खलु णाणापन्नाणं णाणाछंदाणं णाणासीलाणं णाणादिट्ठीणं णाणारूईणं णाणारंभाणं णाणाज्झवसाणसंजुत्ताणं णाणाविहपावसुयज्झयणं एवं भवइ, तंजहा—भोमं उप्पायं सुविणं अंतलिक्खं अंगं सरं लक्खणं वंजणं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं गोणलक्खणं मिंढलक्खणं कुक्कुडलक्खणं तित्तिरलक्खणं वट्टगलक्खणं लावयलक्खणं चक्कलक्खणं छत्तलक्खणं चम्मलक्खणं दंडलक्खणं असिलक्खणं मणिलक्खणं कागिणिलक्खणं सुभगाकरं दुब्भगाकरं गब्भकरं मोहणकरं आहव्वणिं पागसासणिं दव्वहोमं खत्तियविज्जं चंदचरियं सूरचरियं सुक्कचरियं बहस्सइचरियं उक्कापायं दिसादाहं मियचक्कं वायसपरिमंडलं पंसुवुट्ठिं केसवुट्ठिं मंसवुट्ठिं रुहिरवुट्ठिं वेतालिं अद्धवेतालिं ओसोवणिं तालुग्घाडणिं सोवागिं सोवरिं दामिलिं कालिंगिं गोरिं गंधारिं ओवतणिं उप्पयणिं जंभणिं थंभणिं लेसणिं आमयकरणिं विसल्लकरणिं पक्कमणिं अंतद्धाणिं आयमिणिं, एवमाइयाओ विज्जाओ अन्नस्स हेउं पउंजंति, पाणस्स हेउं पउंजंति वत्थस्स हेउं पउंजंति लेणस्स हेउं पउंजंति सयणस्स हेउं पउंजंति । अन्नेसिं वा विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं पउंजंति,

तिरिच्छं ते विज्जं सेवेंति, ते अणारिया विप्पडिवन्ना कालमासे कालं किच्चा अन्नयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं ठाणाइं उववत्तारो भवंति, ततोऽवि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयताए तमअंधयाए पच्चयंति ॥सूत्रं ३०॥

से एगइओ आयहेउं वा णायहेउं वा सयणहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा नायगं वा सहवासियं वा णिस्साए अदुवा अणुगामिए १ अदुवा उवचरए २ अदुवा पडिपहिए ३ अदुवा संधिच्छेदए ४ अदुवा गंठिच्छेदए ५ अदुता उरब्भिए ६ अदुवा सोवरिए ७ अदुवा वागुरिए ८ अदुवा साउणिए ९ अदुवा मच्छिए १० अदुवा गोघायए ११ अदुवा गोवालए १२ अदुवा सोवणिए (सेयणए) १३ अदुवा सोवणियंतिए १४-१ ॥ से एगइओ आणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगामियाणुगामियं हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उववखाइत्ता भवइ २॥ से एगइओ उवचरयभावं पडिसंधाय तमेव उवचरियं हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उववखाइत्ता भवइ ३॥ से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव पाडिपहे ठिच्चा हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उववक्खाइत्ता भवइ ४॥ से एगइओ संधिछेदगभावं पडिसंधाय तमेव संधिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उववखाइत्ता भवइ ५॥ से एगइओ गंठिछेदगभावं पडिसंधाय तमेव गंठिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहि अत्ताणं उववखाइत्ता भवइ ६॥ से एगइओ उरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता जाव उववखाइत्ता भवइ । एसो अभिलावो सव्वत्थ ७॥ से एगइओ सोयरियभावं पडिसंधाय महिसं वा अण्णतरं वा तसं पाणं जाव उववखाइत्ता भवइ ८॥ से एगइओ वागुरियभावं पडिसंधाय मियं वा अण्णतरं वा तसं पाणं

हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ ९॥ से एगइओ सउणियभावं पडिसंधाय सउणिं वा अगणतरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ १०॥ से एगइओ मच्छियभावं पडिसंधाय मच्छं वा अगणतरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ ११॥ से एगइओ गोघायभावं पडिसंधाय तमेव गोणं वा अगणयरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ १२॥ से एगइओ गोवालभावं पडिसंधाय तमेव गोवालं (गोणं) वा परिजविय परिजविय हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ १३॥ से एगइओ सोवणियभावं पडिसंधाय तमेव सुणगं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ १४॥ से एगइओ सोवणियंतियभावं पडिसंधाय तमेव मणुस्सं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हंता जाव आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ १५॥ सूत्रं ३१ ॥

से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठित्ता अहमेयं हणामित्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा लावगं वा कवोयगं वा कविंजलं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ १ ॥ से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं सस्साइं झामेइ अन्नेणवि अगणिकाएणं सस्साइं झामावेइ अगणिकाएणं सस्साइं झामंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ २ ॥ से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेति अन्नेणवि कप्पावेति कप्पंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ ३ ॥ से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ

वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ अन्नेणावि झामावेइ झामंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ ४ ॥ से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा कुंडलं वा मणिं वा मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ अन्नेणावि अवहरावइ अवहरंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ ५ ॥ से एगइओ केणइवि आदाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं समणाण वा माहणाण वा छत्तगं वा दंडगं वा भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिं वा भिसिगं वा चेलगं वा चिलिमिलिगं वा चम्मयं वा छेयणगं वा चम्मकोसियं वा सयमेव अवहरति जाव समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ ६ ॥ से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०—गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं ओसहीओ झामेइ जाव अन्नंपि झामंतं समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवति ७ ॥ से एगइओ णो वितिगिंछइ, तं०—गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ अन्नेणावि कप्पावेति अन्नंपि कप्पंतं समणुजाणइ० ८ ॥ से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०—गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा अट्टसालाओ वा जाव गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाहिं पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ जाव समणुजाणइ ९ ॥ से एगइओ णो वितिगिंछइ, तं०—गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ० १० ॥ से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०—समणाण वा माहणाण वा छत्तगं वा दंडगं वा जाव चम्मच्छेदणगं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ ११ ॥ से एगइओ समणं वा माहणं वा दिस्सा णाणाविहेहिं पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा णं अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा णं फरुसं वदित्ता भवइ, कालेणवि से

अणुपविट्ठस्स असणं वा पाणं वा जाव णो दवावेत्ता भवइ १२ ॥ जे इमे भवन्ति वोनमंता भारक्कंता अलसगा वसलगा किवणगा समणगा पव्वयंति ते इणमेव जीवितं धिज्जीवितं संपडिब्रूहेंति, नाइ ते परलोगस्स अट्ठाए किंचिवि सिलीसंति, ते दुक्खंति ते सोयंति ते जूरंति ते तिप्पंति ते पिट्टंति ते परितप्पंति ते दुक्खणजूरणसोयणतिप्पणपिट्टणपरितिप्पणवहबंधणपरिकिले-साओ अप्पडिविरया भवंति, ते महया आरंभेणं ते महया समारंभेणं ते महया आरंभसमारंभेणं विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं उरालाइं माणुस्स-गाइं भोगभोगाइं भुंजित्तारो भवंति, तंजहा-अन्नं अन्नकाले पाणं पाण-काले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसा ण्हाए कंठमालाकडे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तग-मल्लदामकलावे अहतवत्थपरिहिए चंदणोक्खित्तगायसरीरे महतिमहालिया-ए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि सीहासणंसि इत्थीगुम्मसंपरिवुडे सव्व-राइएणं जोइणा झियायमाणेणं महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय-घणमुइंगपडुपवाइयरवेणं उरालाइं मणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विह-रइ १३ । तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति, भणह देवाणुप्पिया ! किं करेमो ? किं आहरेमो ? किं उवणेमो ? किं आचिट्ठामो ! किं भे हिय इच्छियं ? किं भे आसगस्स सयइ ?, १४ ॥ तमेव पासित्ता अणारिया एवं वयंति-देवे खलु अयं पुरिसे, देवसिणाए खलु अयं पुरिसे, अन्नेवि य णं उवजीवंति, तमेव पासित्ता आरिया वयंति-अभिक्कंतकूरकम्मे खलु अयं पुरिसे अतिधुन्ने अइयायरक्खे दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लहबोहि-याए यावि भविस्सइ १५ ॥ इच्चेयस्स ठाणस्स उट्ठिया वेगे अभिगिज्झंति अणुट्ठिया वेगे अभिगिज्झंति अभिज्झंझाउरा अभिगिज्झंति, एस ठाणे

अणारिए अकेवले अप्पडिपुन्ने अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अनिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहु एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए १६ ॥सूत्रं ३२॥

अहावरे दोच्चस्स ट्ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगं एवमाहिज्जइ, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा सतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा—आयरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवन्ना वेगे दुवन्ना वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे, तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवंति, एसो आलावगो जहा पोंडरीए तहा णेतव्वो, तेणेव अभिलावेण जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिनिव्वुडेत्तिबेमि ॥ एस ठाणे आरिए केवले जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतसम्मे साहु, दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥सूत्रं ३३॥

अहावरे तच्चस्स ट्ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ, जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुईरहस्सिता जाव ते तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ता एतमूत्ताए पच्चायंति, एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू, एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एवमाहिए ॥सूत्रं ३४॥

अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा ४ संतेगतिया मणुस्सा भवंति—गिहत्था महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अधम्मिया अधम्माणुया अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपायजीविणो अधम्मपविलोई अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदायारा अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति १ ॥ हण छिंद भिंद विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कुंचणवंचणमायाणियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू, सव्वाओ पाणाइवायाओ

अप्पडिविरया जावज्जीवाए जाव सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दणवण्णगगंधविलेवणसद्दफरिसरसरूवगंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसिया-संदमाणियासयणासणजाणवाहणभोगभोयणपवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधण्णमणिमोत्तियसंखसिलप्पवाला-ओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयणपया-वणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टणपिट्टणतज्जणताडणवह-बंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, २ ॥ जे आवण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा जे अणारिएहिं कज्जंति ततो अप्पडिविरया जावज्जीवाए, से जहाणामए केइ पुरिसे कलममसूरतिल-मुग्गमासनिप्फावकुलत्थआलिसंदगपलिमंथगमादिएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजंति ३ । एवमेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावगकवोतक-विंजलमियमहिसवराहगाहगोहकुम्मसिरिसिवमादिएहि अयते कूरे मिच्छा-दंडं पउंजंति ४ । जावि य से बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा–दासे इ वा पेसे इ वा भयए इ वा भाइल्ले इ वा कम्मकरए इ वा भोगपुरिसे इ वा तेसिंपि य णं अन्नयरंसि वा अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेइ, तंजहा–इमं दंडेह इमं मुंडेह इमं तज्जेह इमं तालेह इमं अदुयबंधणं करेह इमं नियलबंधणं करेह इमं हडिबंधणं करेह इमं चारगबंधणं करेह इमं नियलजुयलसंकोडियमोडियं करेह इमं हत्थच्छिन्नयं करेह इमं पायच्छिन्नयं

करेह इमं कन्नच्छिरणायं करेह इमं नक्कओट्ठसीसमुहच्छिन्नयं करेह वेयगच्छहियं अंगच्छहियं पक्खाफोडियं करेह इमं णयणुप्पाडियं करेह इमं दंसणुप्पाडियं वसणुप्पाडियं जिब्भुप्पाडियं ओलंबियं करेह घसियं करेह घोलियं करेह सूलाइयं करेह सूलाभिन्नयं करेह खारवत्तियं करेह वज्झवत्तियं करेह सीहपुच्छियगं करेह वसभपुच्छियगं करेह दवग्गि(कडग्गि)दड्ढयंगं कागणिमंसखावियगं भत्तपाणनिरुद्धगं इमं जावज्जीवं वहबंधणं करेह इमं अन्नयरेणं असुभेणं कुमारेणं मारेह ५॥ जावि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तंजहा-माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूता इ वा सुण्हा इ वा, तेसिंपि य णं अन्नयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं णिवत्तेइ, सीओदगवियडंसि उच्छोलित्ता भवइ जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिए परंसि लोगंसि, ते दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति ते दुक्खणसोयणजूरणतिप्पणपिट्टणपरितप्पणवहबंधणपरिकिलेसाओ अपडिविरया भवंति ६॥ एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं भुंजित्तु भोगभोगाइं पविसुइत्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहूइं पावाइं कम्माइं उस्सन्नाइं संभारकडेण कम्मणा से जहाणामए अयगोले इ वा सेलगोले इ वा उदगंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ७। एवमेव तहप्पगारे पुरिसजाते वज्जबहुले धूतबहुले पंकबहुले वेरबहुले अप्पत्तियबहुले दंभबहुले णियडिबहुले साइबहुले अयसबहुले उस्संन्नतसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमइवइत्ता अहे णरगतलपइट्ठाणे भवइ ८॥ सूत्रं २५॥ ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधतमसा (णिच्चंधकारतमसा) ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामंसरुहिरपूयपडलचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा कण्हा अगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा

णरगा असुभा णरएसु वेयणाओ १॥ णो चेव णरएसु नेरइया णिद्दायंति वा पयलायंति वा सुइं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंते, ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं णेरइया वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति २ ॥ सूत्रं ३६॥ से जहाणामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए मूले छिन्ने अग्गे गरुए जओ णिण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भातो गब्भं जम्मातो जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवइ १॥ एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए २॥ सूत्रं ३७॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ–इह खलु पाइणं वा ४ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा–अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू सव्वतो पाणातिवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति ततो विपडिविरता जावज्जीवाए १ ॥ से जहाणामए अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिया उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वयसमिया कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुडा अणासवा अग्गंथा छिन्नसोया निरुवलेवा कंसपाइ व मुक्कतोया संखो इव णिरंजणा जीव इव अपडिहयगती गगणतलंपिव निरालंबणा वाउरिव अपडिबद्धा सारदसलिलं व सुद्धहियया पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा कुम्मो इव गुत्तिंदिया विहग इव विप्पमुक्का खग्गिविसाणं व

सुद्धहिअया पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा कुम्भो इव गुत्तिंदिया विहग इव विप्पमुक्का खग्गिविसाणं व एगजाया भारंडपक्खीव अप्पमत्ता कुंजरो इव सोंडीरा वसभो इव जातत्थामा सीहो इव दुद्धरिसा मंदरो इव अप्पकंपा सागरो इव गभीरा चंदो इव सोमलेसा सूरो इव दित्ततेया जच्चकंचणगं (कणगं) व जातरूवा वसुंधरा इव सव्वफासविसहा सुहुयहुयासणो विव तेयसा जलंता ॥ णत्थि णं तेसिं भगवंताणं कत्थवि पडिबंधे भवइ, से पडिबंधे चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—अंडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा जन्नं जन्नं दिसं इच्छंति तन्नं तन्नं दिसं अपडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गंथा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ तेसिं णं भगवंताणं इमा एतारूवा जायामायावित्ती होत्था, तंजहा—चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउदसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए तिमासिए चाउम्मासिए पंचमासिए छम्मासिए अदुत्तरं च णं उक्खित्तचरगा णिक्खित्तचरया उक्खित्तणिक्खित्तचरगा अंतचरगा पंतचरगा लूहचरगा समुदाणचरगा संसट्ठचरगा असंसट्ठचरगा तज्जातसंसट्ठचरगा दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया पुट्ठलाभिया अपुट्ठलाभिया भिक्खलाभिया अभिक्खलाभिया अन्नायचरगा उवनिहिया संखादत्तिया परिमितपिंडवाइया सुद्धेसणिया अंताहारा पंताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अंतजीवी पंतजीवी आयंबिलिया पुरिमड्ढिया निव्विगइया अमज्जमंसासिणो णो णियामरसभोई ठाणाइया पडिमाठाणाइया उक्कडुआसणिया णेसज्जिया वीरासणिया दंडायतिया लगंडसाइणो अप्पाउडा अगत्तया अकंडुया अणिट्ठुहा एवं जहोववाइए धुतकेसमंसुरोमनहा सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्का चिट्ठंति २॥ ते णं एतेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणंति २ बहुबहु आबाहंसि उप्पन्नंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खन्ति पच्चक्खाइत्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए

छेदिंति अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे मुंडभावे अण्हा-णभावे अदंतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धे माणावमाणणाओ हील-णाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहंति, तमट्ठं आराहित्ता चरमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघातं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेंति, समुप्पाडित्ता ततो पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ३॥ एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवंति, अवरे पुण पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा-महड्ढिएसु महज्जुतिएसु महापरक्कमेसु महाजसेसु महाबलेसु महाणु-भावेसु महासुक्खेसु ते णं तत्थ देवा भवंति महड्ढिया महज्जुतिया जाव महासुक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडय-लकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगंधपवर-वत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चाए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति, एस ठाणे आयरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतसम्मे सुसाहू । दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ४ ॥ सूत्रं ३८॥ अहावरे तच्चस्स ठाण-स्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा ४ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा—अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू

एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरता जावजीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरया जाव जे यावरणो तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरितावण-करा कज्जंति ततोवि एगच्चाओ अप्पडिविरया १॥ से जहाणामए समणो-वासगा भवंति अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुराणपावा आसवसंवरवेयणाणि-ज्जराकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसला असहेज्ज(ज्जा)देवासुरनागसुवराणजक्खर-क्खसकिंन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावय-णाओ अणइक्कमणिज्जा इणमेव निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता अयमाउसो। निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे उसियफलिहा अवंगुयदुवारा अचियत्तंतेउरपरघरपवेसा चाउद्द-सट्ठमुद्दिट्ठपुरिणमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपाय-पुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पीठफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति २॥ ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणित्ता आबाहंसि उप्पन्नंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खायंति बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाएत्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेन्ति बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडि-क्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु जाव महासुक्खेसु सेसं तहेव जाव एस ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे साहू। तच्चस्स ठाणस्स मिसगस्स विभंगे एवं आहिए ३॥ अविरइं पडुच्च बाले आहिज्जइ, विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ, विरयाविरइं पडुच्च बालपंडिए आहिज्जइ, तत्थ णं जा सा सव्वतो अविरई एस ठाणे आरंभट्ठाणे

अणारिए जाव असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू, तत्थ णं जा सा सव्वतो विरई एस ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खप्पहीण-मग्गे एगंतसम्मे साहू, तत्थ णं जा सा सव्वओ विरयाविरई एस ठाणे आरंभणोआरंभट्ठाणे एस ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ९॥ सूत्रं ३९॥ एवमेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोअरंति, तंजहा—धम्मे चेव अधम्मे चेव उवसंते चेव अणुवसंते चेव, तत्थ णं जे से पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए, तत्थ णं इमाइं तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायं(याइं), तंजहा—किरिया-वाईणं अकिरियावाईणं अन्नाणियवाईणं वेणइयवाईणं, तेऽवि परिनिव्वाण-माहंसु, तेऽवि मोक्खमाहंसु तेऽवि लवंति, सावगा ! तेऽवि लवंति साव-इत्तारो ॥ सूत्रम् ४०॥ ते सव्वे पावाउया आदिकरा धम्माणं णाणापन्ना णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाण-संजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति १॥ पुरिसे य साग-णियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं अओमएणं संडासएणं गहाय ते सव्वे पावाउए आइगरे धम्माणं णाणापन्ने जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावाउया ! आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाअज्झ-वसाणसंजुत्ता ! इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं गहाय मुहुत्तयं मुहुत्तगं पाणिणा धरेह, णो बहुसंडासगं संसारियं कुज्जा णो बहुअग्गिथंभणियं कुज्जा णो बहु साहम्मियवेयावडियं कुज्जा णो बहुपरध-म्मियवेयावडियं कुज्जा उज्जुया णियागपडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह, इति वुच्चा से पुरिसे तेसिं पावादुयाणं तं सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिंसु णिसिरति २। तए णं ते पावादुया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति, तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावाउए आदिगरे धम्माणं

जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी–हंभो पावादुया ! आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता ! कम्हा णं तुब्भे पाणिं पडिसाहरह ?, पाणिं नो डहिज्जा, दड्ढे किं भविस्सइ ?, दुक्खं दुक्खंति मन्नमाणा पडिसाहरह, एस तुला एम पमाणे एस समासरणे, पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ३। तत्थ णं जे ते समणा माहणा एवमातिक्खंति जाव परूवेंति–सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परितावेयव्वा किलामेतव्वा उद्दवेतव्वा, ते आगंतुछेयाए ते आगंतुभेयाए जाव ते आगंतुजाइजरामरणजोणिजम्मणसंसारपुणब्भवगब्भवासभवपवंचकलंकलीभागिणो भविस्संति ४। ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणाणं तज्जणाणं तालणाणं अंदुबंधणाणं जाव घोलणाणं माइमरणाणं पिइमरणाणं भाइमरणाणं भगिणीमरणाणं भज्जापुत्तधूतसुण्हामरणाणं दारिद्दाणं दोहग्गाणं अप्पियसंवासाणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्खदोम्मणस्साणं आभागिणो भविस्संति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं भुज्जो भुज्जो अणुपरियट्टिस्संति, ते णो सिज्झिस्संति णो बुज्झिस्संति जाव णो सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति, एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ५ ॥ तत्थ णं जे ते समणा माहणा एवमाइक्खंति जाव परूवेंति–सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण उद्दवेयव्वा ते णो आगंतुछेयाए ते णो आगंतुभेयाए जाव जाइजरामरणजोणिजम्मणसंसारपुणब्भवगब्भवासभवपवंचकलंकलीभागिणो भविस्संति, ते णो बहूणं दंडणाणं जाव णो बहूणं मुंडणाणं जाव बहूणं दुक्खदोम्मणस्साणं णो भागिणो भविस्संति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं भुज्जो भुज्जो णो अणुपरियट्टिस्संति, ते सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ६ ॥ सूत्रं ४१॥ इच्चेतेहिं बारसहिं किरियाठाणेहिं वट्टमाणा

जीवा णो सिज्झिसु णो बुज्झिसु णो मुच्चिसु णो परिणिव्वाइंसु जाव णो सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा णो करेंति वा णो करिस्संति वा १॥ एयसि चेव तेरससे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिंसु बुज्झिंसु मुच्चिंसु परिणिव्वाइंसु जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा करंति वा करिस्संति वा २। एवं से भिक्खु आयट्ठी आयहिते आयगुत्ते आयजोगे आयपरक्कमे आयरक्खिए आयाणुकंपए आयनिप्फेडए आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि त्तिबेमि ३॥ ॥ सूत्रं ४२ ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ श्रु०२-अ०२ ॥

॥ अथ द्वितीयश्रुतस्कन्धे तृतीयमाहारपरिज्ञाध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु आहारपरिणाणामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे-इह खलु पाईणं वा ४ सव्वतो सव्वावंति च णं लोगंसि चत्तारि बीयकाया एवमाहिज्जंति, तंजहा-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया, (वणस्सइकाइयाणं पंचविहा बीजवक्कंती एवमाहिज्जइ, तंजहा-अग्गमूलपोरुक्खंधबीयरुहा छट्ठावि एगेंदिया समुच्छिमा बीया जायंते) तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इहगतिया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसंभवा पुढवीवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टंति १ ॥ ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं २ ॥ णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरारं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणायं सारूवियकडं संतं ३ ॥ अवरेऽवि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपुग्गल-

विउव्विता ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतित्तिमक्खायं ४ ॥सूत्रं ४३॥ अहा-वरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जो-णिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा पुढवी-जोणिएहिं रुक्खेहि रुक्खत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं पुढवीजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवण-स्सइसरीरं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विप्परिणामियं सारूविकडं संतं अवरेवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीर-पुग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतीतिमक्खायं ॥सूत्रं ४४॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवण-स्सइसरीरं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति, परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणामियं सारूविकडं संतं अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खज्जोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावन्ना जाव ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतीतिमक्खायं ॥सूत्रं ४५॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंद-त्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहा-रेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवणस्सइसरीरं णाणा-विहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं

सरीरगं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं जाव बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा जाव णाणाविहसरीरपुग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतितीमक्खायं ॥सूत्रं ४६॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोववन्नगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारुहाणं सरीरा णाणावन्ना जावमक्खायं ॥सूत्रं ४७॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा पुढवीसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावन्ना जावमक्खायं ॥सूत्रं ४८॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु (अज्झोरुहेसु) अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारंति पुढविसरीरं आउसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावन्ना जावमक्खायं ॥सूत्रं ४९॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति जाव अवरेऽवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं

जाव बीयाणं सरीरा णाणावन्ना जावमक्खायं ॥सूत्रं ५०॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगत्तिया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा जाव णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा कम्मोववन्ना भवंतीतिमक्खायं ॥सूत्रं ५१॥ एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जावमक्खायं ॥सूत्रं ५२॥ एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति, तणजोणियं तणसरीरं च आहारेंति जावमक्खायं १ ॥ एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा जाव एवमक्खायं २ ॥ एवं ओसहीणवि चत्तारि आलावगा ३ ॥ एवं हरियाणवि चत्तारि आलावगा ४ ॥सूत्रं ५३॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए वायत्ताए कायत्ताए कूहणत्ताए कंदुकत्ताए उव्वेहणियत्ताए निव्वेहणियत्ताए सच्छत्ताए छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए कूरत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति, तेवि जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं आयत्ताणं जाव कूराणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं, एगो चेव आलावगो सेसा तिण्णि णत्थि १ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं २। जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारुहाणवि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के ३॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा

णाणाविहजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलंबुगत्ताए हडत्ताए कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए नलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगंधियत्ताए पोंडरियमहापोंडरियत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए एवं कल्हारकोंकणयत्ताए अरविंदत्ताए तामरसत्ताए भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं, एगो चेव आलावगो ४॥ सूत्रं ५४॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता तेसिं चेव पुढवीजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं मूलेहि जाव बीएहिं रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं अज्झारोहजोणिएहि अज्झारुहेहिं अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं पुढविजोणिएहि तणेहि तणजोजिएहि तणेहिं तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं एवं ओसहीहिवि तिन्नि आलावगा १। एवं हरिएहिवि तिन्नि आलावगा २। पुढविजोणिएहिवि आएहिं काएहिं जाव कूरेहिं उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहि रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं एवं अज्झारुहेहिवि तिण्णि ३। तणेहिंपि तिण्णि आलावगा ४। ओसहीहिंपि तिण्णि ५। हरिएहिंपि तिण्णि ६ उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ६॥ ते जीवा तेसिं पुढवीजोणियाणं उदगजोणियाणं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहीजोणियाणं हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झारुहाणं तणाणं ओसहीणं हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कुरवा(कूरा)णं उदगाणं अवगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति ७। ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं ८। अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजो-

याणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कूरजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावरणा जावमक्खायं १॥ सूत्र ५५ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं मणुस्साणं तंजहा—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खुयाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए एत्थ णं मेहुणवत्तियाए [व] णामं संजोगे समुप्पज्जइ, ते दुहओवि सिणेहं संचिणंति १। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा माओउयं पिउसुक्कं तं तदुभयं संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तं पढमत्ताए आहारमाहारेंति, ततो पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसविहीओ आहारमाहारेति ततो एगदेसेणं ओयमाहारेंति, आणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपागमणुपवन्ना ततो कायातो अभिनिवट्टमाणा इत्थिं वेगया जणयंति पुरिसं वेगया जणयंति णपुंसगं वेगया जणयंति २। ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, आणुपुव्वेणं वुड्ढा ओयणं कुम्मासं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं मणुस्सगाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरद्दीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं सरीरा णाणावरणा भवंतीतिमक्खायं ३॥ सूत्रं ५६ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं जलचराणं पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा—मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडा तहेव जाव ततो एगदेसेणं ओयमाहारेंति, आणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवन्ना ततो कायाओ अभिनिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति पोयं वेगया जणयंति से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति पुरिसं वेगया जणयंति नपुंसगं वेगया जणयंति ते जीवा डहरा समाणा आउसि-

णेहमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सतिकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छाणं सुंसुमाराणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं १॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा–एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्फयाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थिपुरिसस्स य कम्म जाव मेहुणवत्तिए णामं संजोगे समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेहं संचिणंति, तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति, ते जीवा माओउयं पिउसुक्कं एवं जहा मणुस्साणं इत्थिंपि वेगया जणयंति पुरिसंपि नपुंसगंपि, ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं एगखुराणं जाव सणप्फयाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं २। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा–अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिस जाव एत्थ णं मेहुण० एवं तं चेव, नाणत्तं अंडं वेगइया जणयंति पोयं वेगइया जणयंति, से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगइया जणयंति पुरिसंपि णपुंसगंपि, ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरपाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख० अहीणं जाव महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा जावमक्खायं ३ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा-गोहाणं नउलाणं सीहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खराणं घरकोइलियाणं विस्संभराणं, मुसगाणं मंगुसाणं

पयलाइयाणं बिरालियाणं जोहाणं चउप्पाइयाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलयरतिरिक्खाणं तं० गोहाणं जावमक्खायं ४ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तंजहा—चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए जहा उरपरिसप्पाणं, नाणत्तं ते जीवा डहरा समाणा माउगात्तसिणेहमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सतिकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽविय णं तेसिं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चम्मपक्खीणं जावमक्खायं ५ ॥सूत्रं ५७॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पोग्गलाणं सरीरेसु वा सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अणुसूयगाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं ॥ एवं दुरूवसंभवत्ताए ॥ एवं खुरदुगत्ताए ॥सूत्रं ५८॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा तं सरीरगं वायसंसिद्धं वा वायसंगहियं वा वायपरिग्गहियं उड्ढवाएसु उड्ढभागी भवति अहेवाएसु अहेभागी भवति तिरियवाएसु तिरियभागी भवति, तंजहा—ओसा हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं

जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं ओसाणं जाव सुद्धोदगाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं १ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं तसथावर-जोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणा-वण्णा जावमक्खायं २ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणि-याणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदग-जोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावन्ना जावमक्खायं ३ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदग-जोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं ४ ॥सूत्रं ५९॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्म-नियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अगणिकायत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तस-थावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं, सेसा तिन्नि आलावगा जहा उदगाणं १ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणा-विहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टंति, जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा, चत्तारि गमा २ ॥सूत्रं ६०॥

अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु वा सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवित्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ– 'पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे। अय तउय तंव सीसग रुप्प सुवण्णे य वइरे य ॥१॥ हरियाले हिंगुलए मणोसिला सासगंजणपवाले। अब्भपडलब्भवालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जए य रुयए अंके फलिहे य लोहियक्खे य। मरगयमसारगल्ले भुयमोयग इंदणीले य ॥ ३ ॥ चंदण गेरुय हंसगब्भ पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे। चंदप्पभ वेरुलिए जलकंते सूरकंते य ॥ ४ ॥ एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ जाव सूरकंतत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं जाव सूरकंताणं सरीरा णाणावण्णा जावमक्खायं, सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं ॥ सूत्रं ६१ ॥ अहावरं पुरक्खायं सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवुक्कमा सरीरजोणिया सरीरसंभवा सरीरवुक्कमा सरीराहारा कम्मोवगा कम्मनियाणा कम्मगतीया कम्मठिइया कम्मणा चेव विप्परियासमुवेंति ॥ से एवमायाणह से एवमायाणित्ता आहारगुत्ते सहिए समिए सया जए त्तिबेमि ॥ सूत्रं ६२ ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ श्रु० २। अ० ३॥



॥ अथ द्वितीयश्रुतस्कन्धे चतुर्थं प्रत्याख्यानाध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं–इह खलु पच्चक्खाणकिरिया- णामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे पराणत्ते–आया अपच्चक्खाणी यावि भवति, आया अकिरियाकुसले यावि भवति, आया मिच्छासंठिए यावि भवति, आया एगंतदंडे यावि भवति, आया एगंतबाले यावि भवति, आया एगंतसुत्ते यावि भवति, आया अवियारमणवयणकायवक्के यावि भवति. आया अप्प- डिहयअपच्चक्खायपावकम्मे यावि भवति, एस खलु भगवता अक्खाए असं- जते अविरते अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंत- बाले एगंतसुत्ते, से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पस्सति, पावे य से कम्मे कज्जइ ॥ सूत्रं ६२ ॥ तत्थ चोयए पन्नवगं एवं वयासि– असंतएणं मणेणं पावएणं असंतियाए वतीए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयकायवकस्स सुविणमवि अपस्सओ पावकम्मे णो कज्जइ, कस्स णं तं हेउं ?, चोयए एवं बवीति– अन्नयरेणं मणेणं पावएणं मणवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरीए वतिए पावियाए वतिवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरेणं काएणं पावएणं कायवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, हणंतस्स समणक्खस्स सवियारमणवयकायवकस्स सुविण- मवि पासओ एवंगुणजातीऽस्स पावे कम्मे कज्जइ १। पुणरवि चोयए एवं बवीति–तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–असंतएणं मणेणं पावएणं असंतीयाए वतिए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवि- यारमणवयणकायवकस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ, तत्थ णं जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु २॥ तत्थ पन्नवए चोयगं एवं वयासी– तं सम्मं जं मए पुव्वं वुत्तं, असंतएणं मणेणं पावएणं असंतियाए वतिए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियारमण- वयणकायवकस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जति, तं सम्मं, कस्स

णं तं हेउं ?, आचार्य आह–तत्थ खलु भगवया छजीवणिकायहेऊ पराणत्ता, तंजहा–पुढविकाइया जाव तसकाइया, इच्चेएहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे निच्चं पसढविउवातचित्तदंडे, तंजहा–पाणातिवाए जाव परिग्गहे कोहे जाव मिच्छादंसणसल्ले ३॥ आचार्य आह–तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठंते पराणत्ते, से जहाणामए वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रगणो वा रायपुरिसस्स वा खणं निदाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामि (अप्पणो अक्खणयाए तस्स वा पुरिसस्स छिद्दं अलभमाणे णो वहेइ तं जया मे खणो भविस्सइ तस्स पुरिसस्स छिद्दं लभिस्सामि तया मे से पुरिसे अवस्सं वहेयव्वे भविस्सइ एवं मणो पहारेमाणे) पहारेमाणे से किं नु हु नाम से वहए तस्स गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रगणो वा रायपुरिस(पुत्त)स्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामि पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवति ?, एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरे ? चोयए–हंता भवति ४ ॥ आचार्य आह–जहा से वहए तस्स गाहावइस्स वा तस्स गाहावइपुत्तस्स वा रगणो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामित्ति पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे, एवमेव बालेवि सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे, तं०–पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते यावि भवइ, से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ ५ ॥ जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स जाव तस्स वा रायपुरिसस्स पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमादाए

दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवइ, एवमेव बाले सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूते मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवइ ६ ॥ ॥सूत्रं ६४॥ णो इणट्ठे समट्ठे [चोदकः] इह खलु बहवे पाणा० जे इमेणं सरीरसमुस्सएणं णो दिट्ठा वा सुया वा नाभिमया वा विन्नाया वा जेसिं णो पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमायाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूते मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे तंजहा–पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले ॥सूत्रं ६५॥ आचार्य आह–तत्थ खलु भगवया दुवे दिट्ठंता पण्णत्ता, तंजहा–सन्निदिट्ठंते य असन्निदिट्ठंते य, से किं तं सन्निदिट्ठंते ?, जे इमे सन्निपंचिंदिया पज्जत्तगा एतेसिं णं छज्जीवनिकाए पडुच्च तंजहा–पुढवीकायं जाव तसकायं, से एगइओ पुढवीकाएणं किच्चं करेइवि कारवेइवि, तस्स णं एवं भवइ–एवं खलु अहं पुढवीकाएणं किच्चं करेमिवि कारवेमिवि, णो चेव णं से एवं भवइ इमेण वा इमेण वा, से एतेणं पुढवीकाएणं किच्चं करेइवि कारवेइवि से णं तातो पुढवीकायाओ असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे यावि भवइ, एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्वं, से एगइओ छजीवनिकाएहिं किच्चं करेइवि कारवेइवि, तस्स णं एवं भवइ–एवं खलु छजीवनिकाएहिं किच्चं करेमिवि कारवेमिवि, णो चेव णं से एवं भवइ–इमेहिं वा इमेहिं वा, से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं जाव कारवेइवि, से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे तं० पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सुविणमवि अपस्सओ पावे य से कम्मे कज्जइ, से तं सन्निदिट्ठंते १ ॥ से किं तं असन्निदिट्ठंते ?, जे इमे असन्निणो पाणा तंजहा–

पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा, जेसिं णो तक्का इ वा सन्ना ति वा पन्ना ति वा मणा(णो)ति वा वई इ वा, सयं वा करणाए अन्नेहिं वा कारावेत्तए करंतं वा समणुजाणित्तए, तेऽवि णं बाले सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूता मिच्छासंठिया निच्चं पसढविउवातचित्तदंडा तंजहा—पाणाइवाते जाव मिच्छादंसणमल्ले, इच्चेव जाव णो चेव मणो णो चेव वई पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए ते दुक्खणसोयणजावपरितप्पणवहबंधणपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति २ ॥ इति खलु से असन्निणोऽवि सत्ता अहोनिसिं पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति जाव अहोनिसिं परिग्गहे उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति, [एवं भूतवादी] सव्वजोणियावि खलु सत्ता सन्निणो हुच्चा असन्निणो होंति असन्निणो हुच्चा सन्निणो होंति, होचा सन्नी अदुवा असन्नी, तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता असंमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असन्निकायाओ वा सन्निकायं संकमंति सन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमंति, सन्निकायाओ वा सन्निकायं संकमंति असन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमंति, जे एए सन्नि वा असन्नि वा सव्वे ते मिच्छायारा निच्चं पसढविउवायचित्तदंडा, तंजहा—पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पासइ पावे य से कम्मे कज्जइ ३ ॥सूत्रं ६६॥

चोदकः—से किं कुव्वं किं कारवं कहं संजयविरयप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे भवइ ?, आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाय हेऊ पराणत्ता, तंजहा—पुढवीकाइया जाव तसकाइया, से जहाणामए मम अस्सातं डंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा

जाव उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि, इच्चेवं जाण सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता दंडेण वा जाव कवालेण वा आतोडिज्जमाणा वा हम्ममाणे वा तज्जिज्जमाणे वा तालिज्जमाणे वा जाव उवद्दविज्जमाणे वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति, एवं णच्चा सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता न हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा, एस धम्मे धुवे णिइए सासए समिच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेदिए, एवं से भिक्खू विरते पाणाइवायातो जाव मिच्छादंसणसल्लाओ, से भिक्खू णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं णो वमणं णो धूवणित्तं पिआइते, से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे जाव अलोभे उवसंते परिनिव्वुडे, एस खलु भगवया अक्खाए संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिए भवइ त्तिबेमि ॥ सूत्रं ६७ ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ २-४ ॥

॥ अथ पञ्चममाचारश्रुताध्ययनम् ॥

आदाय बंभचेरं च, आसुपन्ने इमं वइं । अस्सिं धम्मे अणायारं, नायरेज्ज कयाइवि ॥१॥ अणादीयं परिन्नाय, अणवदग्गेति वा पुणो । सासयमसासए वा, इति दिट्ठि न धारए ॥२॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई । एएहि दोहि ठाणेहि, अणायारं तु जाणए ॥३॥ समुच्छि(ज्जि)हिंति सत्थारो, सव्वे पाणा अणेलिसा । गंठिगा वा भविस्संति, सासयंति व णो वए ॥४॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जइ । एएहिं दोहिं ठाणेहि, अणायारं तु जाणए ॥५॥ जे केइ खुद्दगा पाणा, अदुवा संति महालया । सरिसं तेहिं वेरंति, असरिसंती य णो वदे ॥६॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई । एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं तु जाणए ॥७॥ अहाकम्माणि (अहाकडाणि) भुंजंति, अण्णमः

णो सकम्मुणा। उवलित्तेति जाणिज्जा, अणुवलित्तेति वा पुणो ॥८॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई। एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं तु जाणए ॥९॥ जमिदं ओरालमाहारं, कम्मगं च तहेव य (तमेव तं)। सव्वत्थ वीरियं अत्थि, णत्थि सव्वत्थ वीरियं ।१०॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई । एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं तु जाणए ॥ ११ ॥ णत्थि लोए आलोए वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि लोए अलोए वा, एवं सन्नं निवेसए ॥ १२ ॥ णत्थि जीवा अजीवा वा, णेवं सन्नं निवेसए । अत्थि जीवा अजीवा वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१३॥ णत्थि धम्मे अधम्मे वा, णेवं सन्नं निवेसए । अत्थि धम्मे अधम्मे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१४॥ णत्थि बंधे व मोक्खे वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि बंधे व मोक्खे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१५॥ णत्थि पुराणे व पावे वा, णेवं सन्नं निवेसए । अत्थि पुराणे व पावे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१६॥ णत्थि आसवे संवरे वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि आसवे संवरे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१७। णत्थि वेयणा णिज्जरा वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि वेयणा णिज्जरा वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१८॥ णत्थि किरिया अकिरिया वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि किरिया अकिरिया वा, एवं सन्नं निवेसए ॥१९॥ णत्थि कोहे व माणे वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि कोहे व माणे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२०॥ णत्थि माया व लोभे वा, णेवं सन्नं निवेसए । अत्थि माया व लोभे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२१॥ णत्थि पेज्जे व दोसे वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि पेज्जे व दोसे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२२॥ णत्थि चाउरंते संसारे, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि चाउरंते संसारे, एवं सन्नं निवेसए ॥२३॥ णत्थि देवो व देवी वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि देवो व देवी वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२४॥ णत्थि सिद्धी असिद्धी वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि

सिद्धी असिद्धी वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२५॥ णत्थि सिद्धी नियं ठाणं, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि सिद्धी नियं ठाणं, एवं सन्नं निवेसए ॥२६॥ णत्थि साहू असाहू वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि साहू असाहू वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२७॥ णत्थि कल्लाण पावे वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि कल्लाण पावे वा, एवं सन्नं निवेसए ॥२८॥ कल्लाणे पावए वावि, ववहारो ण विज्जइ। जं वेरं तं न जाणंति, समणा बाल पंडिया ॥२९॥ असेसं अक्खयं वावि, सव्वदुक्खेति वा पुणो। वज्झा पाणा न वज्झत्ति, इति वायं न नीसरे ॥३०॥ दीसंति निभियप्पाणो (समियायारा), भिक्खुणो साहुजीविणो। एए (तेवि) मिच्छोवजीवंति, इति दिट्ठिं न धारए ॥३१॥ दक्खिणाए पडिलंभो, अत्थि वा णत्थि (अत्थि णत्थि त्ति) वा पुणो। ण वियागरेज्ज मेहावी, संतिमग्गं च वूहए ॥३२॥ इच्चेएहिं ठाणेहिं, जिणदिट्ठेहिं संजए। धारयंते उ अप्पाणं, आमोक्खाए परिवएज्जासि ॥३३॥ त्तिबेमि ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥२-५॥

॥ अथ षष्ठमार्द्रकीयाध्ययनम् ॥

पुराकडं अद्द ! इमं सुणेह, एगंतयारी समणे पुरासी। से भिक्खुणो उवणेत्ता अणेगे, आइक्खतिण्हिं पुढो वित्थरेणं ॥१॥ साऽऽजीविया पट्ठविताऽथिरेणं, सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे। आइक्खमाणो वहुजन्नमत्थं, न संधयाती अवरेण पुव्वं ॥२॥ एगंतमेवं अदुवा वि इण्हिं, दोऽवराणमन्नं न समेति जम्हा। पुव्विं च इण्हिं च अणागतं वा, एगंतमेवं पडिसंधयाति ॥३॥ समिच्च लोगं तसथावराणं, खेमंकरे समणे माहणे वा। आइक्खमाणोवि सहस्स मज्झे, एगंतयं सारयती तहऽच्चे ॥४॥ धम्मं कहंतस्स उ णत्थि दोसो, खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स।

भासाय दोसे य विवज्जगस्स, गुणे य भासाय णिसेवगस्स ॥५॥ महव्वए पंच अणुव्वए य, तहेव पंचासव संवरे य । विरतिं इहस्सामणियंमि पुराणे (पन्ने), लवावसक्की समणेत्तिबेमि ॥६॥ सीओदगं सेवउ बीयकायं, आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एगंतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेति पावं ॥७॥ सीतोदगं वा तह बीयकायं, आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एयाइं जाणं पडिसेवमाणा, अगारिणो अस्समणा भवंति ॥८॥ सिया य बीओदग इत्थियाओ, पडिसेवमाणा समणा भवंतु । अगारिणोऽवी समणा भवंतु, सेवंति उ तेऽवि तहप्पगारं ॥९॥ जे यावि बीओदगभोति भिक्खू, भिक्खं विहं जायति जीवियट्ठी । ते णातिसंजोगमप्पविहाय, कायोवगा णंतकरा भवंति ॥१०॥ इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं, पावाइणो गरिहसि सव्व एव । पावाइणो पुढो किट्टयंता, सयं सयं दिट्ठि करेंति पाउ ॥११॥ ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा, अक्खंति भो समणा माहणा य । सतो य अत्थी असतो य णत्थी, गरहामो दिट्ठिं ण गरहामो किंचि ॥१२॥ ण किंचि रूवेणऽभिधारयामो, सदिट्ठिमग्गं तु करेमु पाउं । मग्गे इमे किट्टिए आरिएहिं, अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अंजू ॥१३॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा । भूयाहिसंकाभि दुगुंछमाणा, णो गरहती बुसिमं किंचि लोए ॥१४॥ आगंतगारे आरामगारे, समणे उ भीते ण उवेति वासं । दक्खा हु सती बहवे मणुस्सा, ऊणातिरित्ता य लवालवा य ॥१५॥ मेहाविणो सिक्खिय बुद्धिमंता, सुत्तेहि अत्थेहि य णिच्छयन्ना (णिच्छियन्नू) । पुच्छिंसु मा णे अणगार एगे (अन्ने), इति संकमाणो ण उवेति तत्थ ॥१६॥ णो कामकिच्चा ण य बालकिच्चा, रायाभिओगेण कुओ भएणं । वियागरेज्ज पसिणं नवावि, सकामकिच्चेणिह आरियाणं ॥१७॥ गंता च तत्था अदुवा अगंता, वियागरेज्जा समियाऽऽसुपन्ने । अणारिया दंसणओ परित्ता, इति संकमाणो ण उवेति तत्थं ॥१८॥ पन्नं जहा वणिए उदयट्ठी, आयस्स हेउं पगरेति संगं । तऊवमे

समणे नायपुत्ते, इच्चेव मे होति मती वियक्का ॥१९॥ नवं न कुज्जा विहुणे पुराणं, चिच्चाऽमइं ताइ य साह एवं । एतोवया बंभवतित्ति वुत्ता, तस्सोदयट्ठी समणेत्तिबेमि ॥२०॥ समारभंते वणिया भूयगामं, परिग्गहं चेव ममायमाणा । ते णातिसंजोगमविप्पहाय, आयस्स हेउं पगरंति संगं ॥२१॥ वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा, ते भोयणट्ठा वणिया वयंति । वयं तु कामेसु अज्झोववन्ना, अणारिया पेमरसेसु गिद्धा ॥२२॥ आरंभगं चेव परिग्गहं च, अविउस्सिया णिस्सिय आयदंडा । तेसिं च से उदए जं वयासी, चउरंतणंताय दुहाय णेह ॥२३॥ णेगंत णच्चंतिव ओदए सो, वयंति ते दो विगुणोदयंमि । से उदए सातिमणंतपत्ते, तमुदयं साहयइ ताइ णाई ॥२४॥ अहिंसयं सव्वपयाणुकंपी, धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं । तमायदंडेहिं समायरंता, अबोहीए ते पडिरूवमेयं ॥२५॥ पिन्नागपिंडीमवि विद्ध सूले, केइ पएज्जा पुरिसे इमेत्ति । अलाउयं वावि कुमारएत्ति, स लिप्पती पाणिवहेण अम्हं ॥२६॥ अहवावि विद्धूण मिलक्खु सूले, पिन्नागबुद्धीइ नरं पएज्जा । कुमारगं वावि अलाबुयंति, न लिप्पइ पाणिवहेण अम्हं ॥२७॥ पुरिसं च विद्धूण कुमारगं वा, सूलंमि केई पए जायतेए । पिन्नाय पिंडं सतिमारुहेत्ता, बुद्धाण तं कप्पति पारणाए ॥२८॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए णियए भिक्खुयाणं । ते पुन्नखंधं सुमहं जिणित्ता, भवंति आरोप्प महंतसत्ता ॥२९॥ अजोगरूवं इह संजयाणं, पावं तु पाणाण पसज्झ काउं । अबोहिए दोण्हवि तं असाहु, वयंति जे यावि पडिस्सुणंति ॥३०॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, विन्नाय लिंगं तसथावराणं । भूयाभिसंकाइ दुगुंछमाणे, वदे करेज्जा व कुओ विहऽत्थी ? ॥३१॥ पुरिसेत्ति विन्नत्ति न एवमत्थि, अणारिए से पुरिसे तहा हु । को संभवो ? पिन्नगपिंडियाए, वायावि एसा बुइया असच्चा ॥३२॥ वायाभियोगेण जमावहेज्जा, णो तारिसं वायमुदाहरिज्जा । अट्ठाणमेयं वयणं गुणाणं, णो दिक्खिए ब्रूय सुरालमेयं ॥३३॥ लद्धे अट्ठे अहो

एव तुब्भे, जीवाणुभागे सुविचिंतिए व । पुव्वं समुद्दं अवरं च पुट्ठे, उलोइए पाणितले ठिए वा ॥३४॥ जीवाणुभागं सुविचिंतयंता, आहारिया अन्नविहीय सोहिं । न वियागरे छन्नपओपजीवि, एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥३५॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए नियए भिक्खुयाणं । असंजए लोहियपाणि से ऊ, णियच्छति गरिहमिहेव लोए ॥३६॥ थूलं उरब्भं इह मारियाणं, उद्दिट्ठभत्तं च पगप्पएत्ता । तं लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता, सपिप्पलीयं पगरंति मंसं ॥३७॥ तं भुंजमाणा पिसितं पभूतं, णो उवलिप्पामो वयं रएणं । इच्चेवमाहंसु अणज्जधम्मा, अणारिया बाल रसेसु गिद्धा ॥३८॥ जे यावि भुंजंति तहप्पगारं, सेवंति ते पावमजाणमाणा । मणं न एयं कुसला करेंती, वायावि एसा बुइया उ मिच्छा ॥३९॥ सव्वेसिं जीवाण दयट्ठयाए, सावज्जदोसं परिवज्जयंता । तस्संकिणो इसिणो नायपुत्ता, उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति ॥४०॥ भूयाभिसंकाएँ दुगुंछमाणा, सव्वेसिं पाणाण निहाय दंडं । तम्हा ण भुंजंति तहप्पगारं, एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥४१॥ निग्गंथधम्मंमि इमं समाहिं, अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा । बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए, अच्चत्थतं (ओ) पाउणाती सिलोगं ॥४२॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए णियए माहणाणं । ते पुन्नखंधे सुमहऽज्जणित्ता, भवंति देवा इति वेयवाओ ॥४३॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए णियए कुलालयाणं । से गच्छति लोलुवसंपगाढे, तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी ॥४४॥ दयावरं धम्म दुगुंछमाणा, वहावहं धम्म पसंसमाणा । एगंपि जे भोययती असीलं, णिवो णिसं जाति कुओ सुरेहिं ? ॥४५॥ दुहओवि धम्मंमि समुट्ठियामो, अस्सिं सुट्ठिच्चा तह एसकालं । आयारसीले बुइएह नाणी, ण संपरायंमि विसेसमत्थि ॥४६॥ अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं, सणातणं अक्खयमव्वयं च । सव्वेसु भूतेसुवि सव्वतो से, चंदो व ताराहिं समत्तरूवे ॥४७॥ एवं ण मिज्जंति ण संसरंती, ण माहणा खत्तिय वेस पेसा ।

कीडा य पक्खी य सरीसिवा य, नरा य सव्वे तह देवलोगा ॥४८॥ लोयं अयाणित्तिह केवलेणं, कहंति जे धम्ममजाणमाणा । णासंति अप्पाण परं च णट्ठा, संसार घोरंमि अणोरपारे ॥४९॥ लोयं विजाणंतिह केवलेणं, पुन्नेण नाणेण समाहिजुत्ता । धम्मं समत्तं च कहंति उ, तारंति अप्पाण परं च तिन्ना ॥५०॥ जे गरहियं ठाणमिहावसंति, जे यावि लोए चरणोववेया । उदाहडं तं तु समं मईए, अहाउसो विप्परियासमेव ॥५१॥ संवच्छरेणावि एगमेगं, बाणेण मारेउ महागयं तु । सेसाण जीवाण दयट्टयाए, वासं वयं वित्ति पकप्पयामो ॥५२॥ संवच्छरेणावि य एगमेगं, पाणं हणंता अणियत्त-दोसा । सेसाण जीवाण वहेण लग्गा, सिया य थोवं गिहिणोऽवि तम्हा ॥५३॥ संवच्छरेणावि य एगमेगं, पाणं हणंता समणव्वएसु । आयाहिए पुरिसे अणज्जे, ण तारिसे केवलिणो भवंति ॥५४॥ बुद्धस्स आणाएँ इमं समाहिं, अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण ताई । तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, आयाणवं धम्ममुदाहरेज्जा ॥५५॥ त्तिबेमि ॥

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ २–६ ॥

॥ अथ सप्तमं नालन्दीयाध्ययनम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धित्थिमित-समिद्धे वण्णओ जाव पडिरूवे, तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तर-पुरच्छिमे दिसीभाए, (एत्थ णं) नालंदानामं बाहिरिया होत्था, अणेगभवण-सयसन्निविट्ठा जाव पडिरूवा ॥सू० ६८॥ तत्थ णं नालंदाए बाहिरियाए लेवे नामं गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविपुलभवणसयणासण-जाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजायरूवरजते आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे बहुदासी दासगोमहिसगवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए (जाव) यावि होत्था ॥ से णं लेवे नामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था, अभि-

गयजीवाजीवे जाव विहरइ, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगहियट्ठे अट्ठिमिंजापेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अयं अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, उस्सियफलिहे अप्पावयदुवारे चियत्तंतेउरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे तहाविहेणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वयगुणविरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे एवं च णं विहरइ ॥सू० ६९॥ तस्स णं लेवस्स गाहावइस्स नालंदाए बाहिरियाए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं सेसदविया नामं उदगसाला होत्था, अणेगखंभसयसन्निविट्ठा पासादीया जाव पडिरूवा, तीसे णं सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए, एत्थ णं हत्थिजामे नामं वणसंडे होत्था, किण्हे वण्णओ वणसंडस्स ॥सू० ७०॥ तेस्सिं च णं गिहपदेसंमि भगवं गोयमे विहरइ, भगवं च णं अहे आरामंसि । अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो ! गोयमा अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, तं च (मे) आउसो ! अहासुयं अहादरिसियं मे वियागरेहि सवायं, भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—अवियाइ आउसो ! सोच्चा निसम्म जाणिस्सामो सवायं, उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी ॥सू० ७१॥ आउसो ! गोयमा अत्थि खलु कुमारपुत्तिया नाम समणा निग्गंथा तुम्हाणं पवयणं पवयमाणा गाहावइं समणोवासगं उवसंपन्नं एवं पच्चक्खावेंति—णण्णत्थ अभिओएणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं, एवं णहं पच्चक्खंताणं दुप्पच्चक्खायं भवइ, एवं णहं पच्चक्खावेमाणाणं दुपच्चक्खावियव्वं भवइ, एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा अतियरंति सयं पतिण्णं, कस्स णं तं हेउं ?, संसारिया खलु

पाणा थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं ॥सू० ७२॥ एवं ण्हं पच्चक्खंताणं सुपच्चक्खायं भवइ, एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं सुपच्चक्खावियं भवइ, एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा णातियरंति सयं पइएणं, णणत्थ अभिओगेणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दंडं, एवमेव सइ भासाए परक्कमे विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा परं पच्चक्खावेंति अयंपि णो उवएसे णो णेआउए भवइ, अवियाइं आउसो ! गोयमा ! तुब्भंपि एवं रोयइ ? ॥सू० ७३॥ सवायं भगवं गोयमे ! उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो ! उदगा नो खलु अम्हे एयं रोयइ, जे ते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खंति जाव परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गंथा वा भासं भासंति, अणुतावियं खलु ते भासं भासंति, अब्भाइक्खंति खलु ते समणे समणोवासए वा, जेहिवि अन्नेहिं जीवेहिं पाणेहिं भूएहिं सत्तेहिं संजमयंति ताणवि ते अब्भाइक्खंति, कस्स णं तं हेउं ?, संसारिया खलु पाणा, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं तसकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं अवत्तं ॥सू. ७४॥ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—कयरे खलु ते आउसंतो गोयमा ! तुब्भे वयह तसा पाणा तसा आउ अन्नहा ?. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो उदगा ! जे तुब्भे वयह तसभूता पाणा, तसा ते वयं वयामो तसा पाणा, जे वयं वयामो तसा पाणा ते तुब्भे वयह तसभूया पाणा, एए संति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा. किमाउसो ! इमे भे सुप्पणीयतराए भवइ तसभूया पाणा

तसा, इमे भे दुप्पणीयतराए भवइ—तसा पाणा तसा, ततो एगमाउसो ! पडिकोसह एक्कं अभिणंदह, अयंपि भेदो से णो णेआउए भवइ १ ॥ भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, सावयं णहं अणुपुव्वेणं गुत्तस्स लिसिस्सामो, ते एवं संखवेंति ते एवं संखं ठवयंति ते एवं संखं ठावयंति नन्नत्थ अभिओएणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं निहाय दंडं, तंपि तेसिं कुसलमेव भवइ २ ॥सू० ७५॥ तसावि वुच्चंति तसा तससंभारकडेणं कम्मुणा णामं च णं अब्भुवगयं भवइ, तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति १ । थावरावि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेणं कम्मुणा णामं च णं अब्भुवगयं भवइ, थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो परलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया २ ॥सूत्रं ७६॥ सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो गोयमा ! णत्थि णं से केइ परियाए जणं समणोवासगस्स एगपाणातिवायविरएवि दंडे निक्खित्ते, कस्स णं तं हेउं ?, संसारिया खलु पाणा, थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं थावरकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं घत्तं ॥१॥ सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-णो खलु आउसो ! अस्माकं वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवादेणं अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे निक्खित्ते भवइ, कस्स णं तं हेउं ?,

संसारिया खलु पाणा, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं तसकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं अघत्तं, ते पाणावि वुच्चति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया ते चिरट्ठिइया, ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवति, ते अप्पयरागा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ, से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जन्नं तुब्भे वा अन्नो वा एवं वदह-णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाएवि दंडे णिक्खित्ते, अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ २॥ सूत्रं ७७॥ भगवं च णं उदाहु नियंठा खलु पुच्छियव्वा-आउसंतो ! नियंठा इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तेसिं च एवं वुत्तपुव्वं भवइ-जे इमे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, एसिं च णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, जे इमे अगारमावसंति एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते, केई च णं समणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता अगारमावसेज्जा ?, हंतावसेज्जा, तस्स णं तं गारत्थं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे भंगे भवइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवमेव समणोवासगस्सवि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते, तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे णो भंगे भवइ, से एवमायाणह ? णियंठा !, एवमायाणियव्वं १॥ भगवं च णं उदाहु नियंठा खलु पुच्छियव्वा-आउसंतो नियंठा ! इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्तो वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मं सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ?, हंता उवसंकमेज्जा, तेसिं च णं तहप्पगाराणं धम्मं आइक्खियव्वे ?, हंता आइक्खियव्वे, किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा-इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं संसुद्धं णेयाउयं

सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं, एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, तमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसियामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठामो तहा उट्ठाए उट्ठेमोत्ति पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामोत्ति वएज्जा ?, हंता वएज्जा, किं ते तहप्पगारा कप्पंति, पव्वावित्तए ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावित्तए ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावित्तए ?. हंता कप्पंति, कि ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावित्तए ?, हंता कप्पंति, तेसिं च णं तहप्पगाराणं सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?, हंता निक्खित्ते, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छट्ठद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जेत्ता अगारं वएज्जा ?, हंता वएज्जा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जे से जीवे जस्स परेणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते, से जे से जीवे जस्स आरेणं सव्वपाणेहि जाव सत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते, से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ, परेणं असंजए आरेणं संजए, इयाणिं असंजए, असंजयस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ, से एवमायाणह ? णियंठा !, से एवमायाणियव्वं २॥ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो ! नियंठा इह खलु परिव्वाइया वा परिव्वाइयाओ वा अन्नयरेहिंतो तित्थाययणेहिंतो आगम्म धम्मं सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ? हंता उवसंकमेज्जा, किं तेसिं तहप्पगारेणं धम्मे आइक्खियव्वे ?, हंता आइक्खियव्वे, तं चेव उवट्ठावित्तए जाव कप्पंति ? हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ? हंता कप्पंति, तेणं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा तं चेव जाव अगारं वएज्जा ?,

हंता वएज्जा, ते णं तहप्पगारा कप्पंति संभुजित्तए ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जे से जीवे जे परेणं नो कप्पंति संभुजित्तए, से जे से जीवे आरेणं कप्पंति संभुजित्तए, से जे से जीवे जे इयाणीं णो कप्पंति संभुजितए, परेणं अस्समणो आरेणं समणो, इयाणिं अस्समणो, अस्समणेणं सद्धिं णो कप्पंति समणाणं निग्गंथाणं मंभुजितए, से एवमायाणह ? णियंठा !, से एवमायाणियव्वं ३॥ सूत्रं ७८ ॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ–णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो, थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो, एवं थूलगं मुसावायं थूलगं अदिन्नादाणं थूलगं मेहुणं थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो, दुविहं तिविहेणं, मा खलु ममट्ठाए किंचि करेह वा करावेह वा तत्थवि पच्चक्खाइस्सामो, ते णं अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढीयाओ पच्चारुहित्ता, ते तहा कालगया किं वत्तव्वं सिया–सम्मं कालगत्तत्ति ?, वत्तव्वं सिया, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया, ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते अप्पयरागा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ, इति से महयाओ जराणं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ १॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ, णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा विहरित्तए, वयं णं अपच्छिममारणांतियं संलेहणाजूसणाजूसिया भत्तपाणं पडियाइक्खिया जाव कालं अणवकंखमाणा विहरिस्सामो, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो तिविहं तिविहेणं, मा खलु ममट्ठाए किंचिवि

जाव आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता एते तहा कालगया, किं वत्तव्वं सिया सम्मं कालगयत्ति ?, वत्तव्वं सिया, ते पाणावि वुच्चंति जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ २॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा–महइच्छा महारंभा महापरिग्गहा अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते ततो आउगं विप्पजहंति, ततो भुज्जो सगमादाए दुग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ते बहुयरगा आयाणसो, इति से महयाओ णं जण्णं तुब्भे वदह तं चेव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ३॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा–अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते ते तओ आउगं विप्पजहंति ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ ४॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा–अप्पेच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, ततो भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ ५॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा–आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुई रहस्सिया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ, णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया पाणभूयजीवसत्तेहिं, अप्पणा सच्चामोसाइं एवं एवं विउंजंति (विप्पडिवेदेंति) अहं ण हंतव्वो अन्ने हंतव्वा, जाव कालमासे कालं किच्चा अन्नयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो भवंति, तओ विप्पमुच्चमाणा

भुज्जो एलमुयत्ताए तमोरूवत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ ६॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा दीहाउया जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते पुव्वामेव कालं करेंति, करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ते दीहाउया ते बहुयरगा, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, जाव णो णेयाउए भवइ७॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा समाउया जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते सयमेव कालं करेंति करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते समाउया ते बहुयरगा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, जाव णो णेयाउए भवइ ८॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते पुव्वामेव कालं करेंति करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते अप्पाउया ते बहुयरगा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, जाव णो णेयाउए भवइ ९॥ भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ-णो खलु वयं संचाएमो मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालित्तए, णो खलु वयं संचाएमो अपच्छिमं जाव विहरित्तए, वयं च णं सामाइयं देसावगासियं पुरत्था पाईणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा एतावता जाव सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं खेमंकरे अहमंसि, तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स

आयाणसो जाव तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ १० । सूत्रं ७१॥ तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जाव थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते ते पाणावि वुच्चंति ते तसा ते चिरट्ठिइया जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ १ ॥ तत्थ जे आरेणं तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे निक्खित्ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ परेणं जे तसा थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे निक्खित्ते ते जाव तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ २ ॥ तत्थ जे आरेणं थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए निक्खित्ते ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव तेसु पच्चायंति तेसु समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ३ ॥ तत्थ जे ते आरेणं जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए अणट्ठाए ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ४॥ तत्थ जे ते आरेणं थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ परेणं जे तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स

आयाणसो आमरणांताए जाव तेसु पच्चायंति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ५॥ तत्थ जे ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणांताए जाव ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणांताए जाव तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ६॥ तत्थ जे ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणांताए जाव ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते जाव ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ७॥ तत्थ ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणांताए जाव ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता ते तत्थ परेणं चेव जे तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणांताए जाव तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ८॥ भगवं च णं उदाहु णं एतं भूयं ण एतं भव्वं ण एतं भविस्संति जण्णं तसा पाणा वोच्छिज्जिहिंति थावरा पाणा भविस्संति, थावरा पाणावि वोच्छिज्जिहिंति तसा पाणा भविस्संति, अवोच्छिन्नेहिं तसथावरेहिं पाणेहिं जण्णं तुब्भे वा अन्नो वा एवं वदह-णत्थि णं से केइ परियाए जाव णो णेयाउए भवइ ९॥ सूत्रं ८०॥ भगवं च णं उदाहु आउसंतो! उदगा जे खलु समणं वा माहणं वा परिभासेइ मित्ति मन्नंति आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगपलिमंथत्ताए चिट्ठइ, जे खलु समणं वा माहणं वा णो परिभासइ मित्ति मन्नंति आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं

आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ, तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए १ ॥ भगवं च णं उदाहु आउसंतो उदगा! जे खलु तहाभूतस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तरं जोगखेमपयं लंभिए समाणे सोवि ताव तं आढाइ परिजाणेति वंदति नमंसति सक्कारेइ संमाणेइ जाव कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति २ ॥ तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी–एतेसि णं भंते! पदाणं पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं असुयाणं अमुयाणं अविन्नायाणं अव्वोगडाणं अणिगूढाणं अविच्छिन्नाणं अणिसिट्ठाणं अणिवूढाणं अणुवहारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहियं णो पत्तियं णो रोइयं, एतेसि णं भंते! पदाणं एण्हिं जाणयाए सवणयाए बोहिए जाव उवहारणयाए एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि एवमेव से जहेयं तुब्भे वदह ३ ॥ तए णं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी–सद्दहाहि णं अज्जो! पत्तियाहि णं अज्जो! रोएहि णं अज्जो! एवमेयं जहणं अम्हे वयामो, तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमण धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ४ ॥ तए णं से भगवं गोयमे उदयं पेढालपु गहाय जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्त तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करित्ता वंदइ नमंसति, वंदि त्ता नमंसित्ता एवं वयासी– इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्त ५ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे उदयं एवं वयासी– अहासुहं देवा

पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ त्तिबेमि ६ ॥ सूत्रं ८१ ॥ इति नालंदइज्जं सत्तमं अज्झयणं समत्तं। इति सूयगडांगबीयसुयक्खंधो समत्तो ॥ग्रंथाग्रं० २१००॥

। इति सप्तममध्ययनम् ॥२७॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥२॥

इति द्वितीयं सूत्रकृताङ्गम् ॥२॥



॥ अर्हम् ॥

॥ गणधरदेव श्रीमत्सुधर्मस्वामिनिर्मितम् ॥

॥ श्रीमत्स्थानाङ्गसूत्रम् ॥

॥ अथ प्रथममेकस्थानाख्यमध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवता एवमक्खायं ॥सू० १॥ एगे आया ॥सू० २॥ एगे दंडे ॥सू० ३॥ एगा किरिया ॥सू० ४॥ एगे लोए ॥सू० ५॥ एगे अलोए ॥सू० ६॥ एगे धम्मे ॥सू० ७॥ एगे अधम्मे ॥सू० ८॥ एगे बंधे ॥सू० ९॥ एगे मोक्खे ॥सू० १०॥ एगे पुराणे ॥सू० ११॥ एगे पावे ॥सू० १२॥ एगे आसवे ॥सू० १३॥ एगे संवरे ॥सू० १४॥ एगा वेयणा ॥सू० १५॥ एगा निज्जरा ॥सू० १६॥ ॥१॥ एगे जीवे पाडिक्कएणं (पडिक्खएणं) सरीरएणं ॥सू० १७॥ एगा जीवाणं अपरियाइत्ता विगुव्वणा ॥सू० १८॥ एगे मणे ॥सू० १९॥ एगा वई ॥सू० २०॥ एगे कायवायामे ॥सू० २१॥ एगा उप्पा ॥सू० २२॥ एगा वियती ॥सू० २३॥ एगा वियच्चा ॥सू० २४॥ एगा गती ॥सू० २५॥ एगा आगती ॥सू० २६॥ एगे चयणे ॥सू० २७॥ एगे उववाए ॥सू० २८॥ एगा तक्का ॥सू० २९॥ एगा सन्ना ॥सू० ३०॥ एगा मन्ना ॥सू० ३१॥ एगा विन्नू ॥सू० ३२॥ एगा वेयणा ॥सू० ३३॥ एगा छेयणा ॥सू० ३४॥ एगा भेयणा ॥सू० ३५॥ एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं ॥सू० ३६॥ एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते ॥सू० ३७॥ एगे(गे)दुक्खे (एगदुक्खे) जीवाणं एग(गे)भूए ॥सू० ३८॥ एगा अहम्मपडिमा जं से (जंसि) आया परिकिलेसति ॥सू० ३९॥ एगा धम्मपडिमा जं से आया-पज्जवजाए ॥सू० ४०॥ एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि एगा-वई एगे कायवायामे ॥सू० ४१॥ एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपर-

क्मे देवासुरमणुयाणं तंसि २ समयंसि ॥सू० ४२॥ एगे नाणे, एगे दंसणे, एगे चरित्ते ॥सू० ४३॥ एगे समए ॥सू० ४४॥ एगे पएसे एगे परमाणू ॥सू० ४५॥ एगा सिद्धी । एगे सिद्धे । एगे परिनिव्वाणे । एगे परिनिव्वुए ॥सू० ४६॥ एगे सद्दे । एगे रूवे । एगे गंधे। एगे रसे । एगे फासे । एगे सुब्भिसद्दे । एगे दुब्भिसद्दे । एगे सुरूवे । एगे दुरूवे। एगे दीहे । एगे हस्से (रहस्से) । एगे वट्टे । एगे तंसे । एगे चउरंसे । एगे पिहुले । एगे परिमंडले । एगे किराहे । एगे णीले । एगे लोहिए । एगे हलिद्दे । एगे सुक्किले। एगे सुब्भिगंधे । एगे दुब्भिगंधे । एगे तित्ते । एगे कडुए। एगे कसाए। एगे अंबिले। एगे महुरे । एगे कक्खडे जाव लुक्खे ॥सू० ४७॥ एगे पाणातिवाए जाव एगे परिग्गहे । एगे कोधे जाव लोभे । एगे पेज्जे एगे दोसे जाव एगे परपरिवाए । एगा अरतिरती । एगे मायामोसे । एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥सू० ४८॥ एगे पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे । एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे ॥सू० ४९॥ एगा ओसप्पिणी । एगा सुसमसुसमा जाव एगा दूसमदूसमा। एगा उस्सप्पिणी एगा दुस्समदुस्समा जाव एगा सुसमसुसमा । ॥सू० ५०॥ एगा नेरइयाणं वग्गणा एगा असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसदंडओ जाव वेमाणियाणं वग्गणा । एगा भवसिद्धीयाणं वग्गणा एगा अभवसिद्धीयाणं वग्गणा एगा भवसिद्धिनेरइयाणं वग्गणा एगा अभवसिद्धियाणं णेरतियाणं वग्गणा, एवं जाव एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा । एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा । एगा सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा । एगा सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं जाव थणियकुमाराणं वग्गणा । एगा मिच्छादिट्ठियाणं पुढविकाइयाणं वग्गणा एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । एगा सम्मद्दिट्ठियाणं

बेइंदियाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एवं तेइंदियाणंपि चउरिंदियाणवि । सेसा जहा नेरइया जाव एगा सम्ममिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ एगा कराहपक्खियाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा, एगा कराहपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं चउवीस(स्रा)दंडओ भाणियव्वो । एगा कराहलेसाणं वग्गणा एगा नीललेसाणं वग्गणा एवं जाव सुक्कलेसाणं वग्गणा, एगा कराहलेसाणं नेरइयाणं वग्गणा जाव काउलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं जस्स जइ लेसाओ, भवणवइवाणमंतरपुढविआउवणस्सइकाइयाणं च चत्तारि लेसाओ तेउवाउबेइंदियतिइंदिअचउरिंदियाणं तिन्नि लेसाओ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेसाओ, जोतिसियाणं एगा तेऊलेसा, वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेसाओ । एगा कराहलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा, एगा कराहलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा एवं छसुवि लेसासु दो दो पयाणि भाणियव्वाणि । एगा कराहलेसाणं भवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा कराहलेसाणं अभवसिद्धिआणं णेरइयाणं वग्गणा एवं जस्स जत्ति लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियव्वाओ जाव वेमाणियाणं । एगा कराहलेसाणं सम्मद्दिट्ठिआणं वग्गणा, एगा कराहलेसाणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा, एगा कराहलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा, एवं छसुवि लेसासु जाव वेमाणियाणं जेसिं जदि दिट्ठीओ । एगा कराहलेसाणं कराहपक्खियाणं वग्गणा, एगा कराहलेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा, जाव वेमाणियाणं जस्स जति लेसाओ एए अट्ठ चउवीसदंडया ॥ एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा, एवं जाव एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा एगा अणिक्कसिद्धाणं वग्गणा एगा पढमसमयसिद्धाणं (अपढमसमयसिद्धाणं) वग्गणा एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा ॥ एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा एवं जाव एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं

वग्गणा। एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एगा एगसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव असंखेज्जसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एगा एगगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा, जाव एगा असंखेज्ज० एगा अणंतगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एवं वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा जाव एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एगा उक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। एगा अजहन्नुक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एवं जहन्नोगाहणयाणं उक्कोसोगाहणगाणं अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठितियाणं उक्कस्सठितियाणं अजहन्नुक्कोसठितियाणं जहणगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालयाणं अजहन्नुक्कस्सगुणकालगाणं एवं वण्णगंधरसफासाणं वग्गणा भाणियव्वा, जाव एगा अजहन्नुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥सू० ५१॥ एगे जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं ॥ सू० ५२ ॥ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ सू० ५३॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥सू० ५४॥ अद्दाणक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते चित्ताणक्खत्ते एगतारे पं० सातीणक्खत्ते एगतारे पं० ॥ ५५॥ एगपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता, एवमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता, जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता ॥ सू० ५६॥

एगट्ठाणं समत्तं

॥ अथ द्वितीयं द्विस्थानकाख्यमध्ययनम् ॥

जदत्थि (जहित्थं) णं लोगे तं सव्वं दुपओआरं (दुपडोयारं) तंजहा—जीवच्चेव, अजीवच्चेव । तसे चेव थावरे चेव १, सजोणियच्चेव अजोणियच्चेव २, साउयच्चेव अणाउयच्चेव ३, सइंदियच्चेव, अणिंदिए चेव ४, सवेयगा चेव अवेयगा चेव ५, सरूवि चेव अरूवि चेव ६, सपोग्गला चेव अपोग्गला चेव ७, संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ८, सासया चेव असासया चेव ९, ॥ सू० ५७॥ आगासा चेव नोआगासा चेव । धम्मे चेव अधम्मे चेव ॥ सू० ५८ ॥ बंधे चेव मोक्खे चेव १ पुन्ने चेव पावे चेव २ आसवे चेव संवरे चेव ३ वेयणा चेव निज्जरा चेव ४ ॥ सू० ५९ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव (चिय) १, जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव २, अजीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—इरियावहिया चेव संपराइगा चेव ३, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—काइया चेव अहिगरणिया चेव ४, काइया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—अणुवरयकायकिरिया चेव, दुप्पउत्तकायकिरिया चेव ५, अहिकरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संजोयणाधिकरणिया चेव णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव ६, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—पाउसिया चेव पारियावणिया चेव ७, पाउसिया किरिया दुविहा पन्नत्ताओ तंजहा—जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव ८, पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया चेव ९, दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा—पाणातिवायकिरिया चेव अपच्चक्खाणकिरिया चेव १०, पाणातिवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—सहत्थपाणातिवायकिरिया चेव परहत्थपाणातिवायकिरिया चेव ११, अप-

क्खाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव १२, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—आरंभिया चेव परिग्गहिया चेव १३, आरंभिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीवआरंभिया चेव अजीवआरंभिया चेव १४, एवं परिग्गहियावि १५, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—मायावत्तिया चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव १६, मायावत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—आयभाववंकणता चेव परभाववंकणता चेव १७, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव १८, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चेव, १९, दिट्ठिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव २०, एवं पुट्ठियावि २१, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा-पाडुच्चिया चेव सामंतोवणिवाइया चेव २२, पाडुच्चिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीवपाडुच्चिया चेव अजीवपाडुच्चिया चेव २३, एवं सामंतोवणिवाइयावि २४, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—साहत्थिया चेव णेसत्थिया चेव २५, साहत्थियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव २६, एवं णेसत्थियावि २७, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—आणवणिया चेव वेयारणिया चेव २८, जहेव णेसत्थियाओ २९–३०, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा-अणाभोगवत्तिया चेव अणवकंखवत्तिया चेव ३१, अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा-अणाउत्तआइयणता चेव अणाउत्तपमज्जणता चेव ३२, अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा-आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव ३३, दो किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा-पिज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ३४, पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा-मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ३५, दोसवत्तिया किरिया दुविहा

पन्नत्ता तंजहा-कोहे चेव माणे चेव ३६, ॥सू० ६०॥ दुविहा गरिहा पन्नत्ता तंजहा-मणसा वेगे (मणसाऽवेगे) गरहति। वयसा वेगे गरहति । अहवा गरहा दुविहा पन्नत्ता तंजहा-दीहं वेगे अद्धं गरहति, रहस्सं वेगे अद्धं गरहति ॥सू० ६१॥ दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तंजहा-मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति, अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाति रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति ॥सू० ६२॥ दोहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणादीयं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवतेज्जा, तंजहा-विज्जाए चेव चरणेण चेव ॥सू० ६३॥ दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तंजहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव १, दो ठाणाइं अपरियादित्ता आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा तंजहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव २, दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा तंजहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव ३, एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा ४, णो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ५, नो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ६, नो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा ७, एवं सुयनाणं ८ ओहिनाणं ९ मणपज्जवनाणं १० केवलनाणं ११ ॥सू० ६४॥ दो ठाणाइं परियादित्ता आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तंजहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव, एवं जाव केवलनाणमुप्पाडेज्जा ॥सू० ६५॥ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तंजहा-सोच्च च्चेव अभिसमेच्च च्चेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ॥सू० ६६॥ दो समाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-ओसप्पिणी समा चेव उस्सप्पिणी समा चेव ॥सू० ६७॥ दुविहे उम्माए पन्नत्ताए तंजहा-जक्खावेसे चेव मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं, तत्थ णं जे से जक्खावेसे से णं सुहवेयतराए चेव सुहविमोयतराए चेव, तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए चेव दुहविमोययराए चेव ॥सू० ६८॥ दो दंडा पन्नत्ता तंजहा-अट्ठादंडे

चेव, अणट्ठादंडे चेव, नेरइयाणं दो दंडा पन्नत्ता तंजहा–अट्ठादंडे य, अणट्ठादंडे य, एवं चउवीसा दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥सू० ६९॥ दुविहे दंसणे पन्नत्ते तंजहा–सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव १, सम्मद्दंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव २, णिसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ३, अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–पडिवाई चेव अप्पडिवाई चेव ४, मिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–अभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव अणभिगहियमिच्छादंसणे चेव ५, अभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–सपज्जवसिते चेव अपज्जवसिते चेव ६, एवमणभिगहितमिच्छादंसणेऽवि ७ ॥सू० ७०॥ दुविहे नाणे पन्नत्ते तंजहा–पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १, पच्चक्खे नाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–केवलनाणे चेव णोकेवलनाणे चेव २, केवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–भवत्थकेवलनाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३, भवत्थकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४, सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव ६, एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेऽवि ७-८, सिद्धकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव परंपरसिद्धकेवलनाणे चेव ९, अणंतरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव १०, परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११, णोकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२, ओहिणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव १३,

दोराहं भवपचइए पन्नत्ते तंजहा--देवाणं चेव नेरइयाणं चेव १४, दोगहं खओव-समिए पन्नत्ते तंजहा—मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव १५, मणपज्जवणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६, परोक्खे णाणे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव-१७, आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-सुयनिस्सिए चेव असुय-निस्सिए चेव १८, सुयनिस्सिए दुविहे पन्नत्ते तंजहा-अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १९, असुयनिस्सितेऽवि एमेव २०, सुदनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव २१, अंगबाहिरे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२, आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पन्नत्ते तंजहा—कालिए चेव उक्कालिए चेव २३ ॥सू० ७१॥ दुविहे धम्मे पन्नत्ते तंजहा—सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव, सुयधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-सुत्तसुयधम्मे चेव, अत्थसुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—अगार-चरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव, दुविहे संजमे पन्नत्ते तंजहा—सराग-संजमे चेव वीतरागसंजमे चेव, सरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा— सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव, सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु०, अथवा चरमसमयसु० अचरिमसमयसु०, अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव, बादरसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—पढमसमयबादर० अपढमसमयबादरसं०, अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—पडिवाति चेव अपडिवाति चेव, वीयरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसायवीयरागसंजमे चेव, उव-संतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तं जहा--पढमसमयउवसंतकसायवीत-रागसंजमे चेव अपढमसमयउव०, अहवा चरिमसमयउव० अचरिमसमयउव०,

खीणकसायवीतरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ०, सयंबुद्धछउमत्थ० दुविहे पंन्नते तंजहा—पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, बुद्धबोहियछउमत्थखीण० दुविहे पन्नते तंजहा—पढमसमय० अपढमसमय०, अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, केवलिखीणकसायवीतरागसंजमे दुविहे पंन्नत्ते तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसाय० संजमे अजोगिकेवलि खीणकसायवीयराग०, सजोगिकेवलिखीणकसायसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—पढमसमय० अपढमसमय०, अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, अजोगिकेवलिखीणकसाय० संजमे दुविहे पन्नत्त तंजहा--पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० ॥सू० ७२॥ दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता तंजहा—सुहुमा चेव बायरा चेव १, एवं जाव दुविहा वणस्सइकाइया पन्नत्ता तंजहा--सुहुमा चेव बायरा चेव ५, दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता तंजहा--पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव ६, एवं जाव वणस्सइकाइया १०, दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता तंजहा-परिणया चेव अपरिणया चेव ११, एवं जाव वणस्सइकाइया १५, दुविहा दव्वा पन्नत्ता तंजहा-परिणता चेव अपरिणता चेव १६, दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता तंजहा-गतिसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव १७, एवं जाव वणस्सइकाइया २१, दुविहा दव्वा पन्नत्ता तंजहा-गतिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव २२, दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता तंजहा-अणंतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव २३, जाव दुविहा दव्वा पन्नत्ता तंजहा--अणंतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव २८ ॥सू० ७३॥ दुविहे काले पन्नत्ते तंजहा-ओसप्पिणीकाले चेव उस्सप्पिणीकाले चेव, दुविहे आगासे पन्नत्ते तंजहा-लोगागासे चेव अलोगागासे चेव, ॥सू० ७४॥ णेरइयाणं दो

सरीरगा पन्नत्ता तंजहा--अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए, एवं देवाणं भाणियव्वं, पुढवीकाइयाणं, दो सरीरगा पन्नत्ता तंजहा-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव अब्भंतरगे कम्मए बाहिरगे ओरालियगे, जाव वणस्सइकाइयाणं, बेइंदियाणं दो सरीरा पन्नत्ता तंजहा--अब्भंतरए चेव बाहिरए चेव, अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरए ओरालिए, जाव चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पन्नत्ता तंजहा-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियराहारुछिराबद्धे बाहिरए ओरालिए, मणुस्साणवि एवं--चेव। विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पन्नत्ता तजहा--तेयए चेव कम्मए चेव, निरन्तरं जाव वेमाणियाणं, नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरारुप्पत्ती सिया, तंजहा-रागेण चेव दोसेण चेव, जाव वेमाणियाणं, नेरइयाणं दुट्ठाण-निव्वतिए सरीरगे पन्नत्ते तंजहा--रागनिव्वत्तिए चेव, दोसनिव्वत्तिए चेव जाव वेमाणियाणं, दो काया पन्नत्ता तंजहा--तसकाए चेव थावरकाए चेव, तसकाए दुविहे पन्नत्ते तंजहा-भवसिद्धिए चेव अभवसिद्धिए चेव, एवं थावरकाएऽवि ॥सू० ७५॥ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पव्वावित्तए-पाईणं चेव उदीणं चेव, एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए उवट्ठावित्तए संभुंजित्तए संवसित्तए सज्झायमुद्दिसित्तए सज्झायं समुद्दिसित्तए सज्झायमणु-जाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए गरहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए आहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए, दो दिसातो अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अपच्छिममार-णंतियसंलेहणाजूसणाजूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खिताणं पाओवगताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, तंजहा-पाईणं चेव उदीणं चेव ॥सू० ७६॥

॥ बिट्ठाणस्स पढमो उद्देसओ समत्तो २-१ ॥

॥ द्विस्थानकाध्ययने–२ :: उद्देशकः २ ॥

जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठितीया गतिरतिया गतिसमावन्नगा, तेसिणं देवाणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति तत्थगतावि एगतिया वेयणं वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेयणं वेदेंति, णेरइयाणं सता समियं जे पावे कम्मे कज्जति तत्थगतावि एगतिया वेयणं वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिआ वेयणं वेदेंति, जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति इहगतावि एगतिता वेयणं वेयंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेयणं वेयंति, मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा ॥सू० ७७॥ नेरतिता दुगतिया दुयागतिया पन्नत्ता तंजहा–नेरइए २ सु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से नेरइए णेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा, एवं असुरकुमारावि, णवरं, से चेव णं से असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छिज्जा, एवं सव्वदेवा, पुढविकाइया दुगतिया दुयागतिया पन्नत्ता तंजहा--पुढवीकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढवीकाइएहितो वा णोपुढवीकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढविकाइए पुढवीकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढवीकाइयत्ताए वा णोपुढवीकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा, एवं जाव मणुस्सा ॥सू० ७८॥ दुविहा नेरइया पन्नत्ता, तंजहा–भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव, जाव वेमाणिया १। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा–अणंतरोववन्नगा चेव परंपरोववन्नगा चेव जाव वेमाणिया २। दुविहा णेरइया पन्नत्ता, तंजहा–गतिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव, जाव वेमाणिया ३। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा–पढमसमओववन्नगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव जाव वेमाणिया ४। दुविहा नेरइया पन्नत्ता

तंजहा--आहारगा चेव अणाहारगा चेव, एवं जाव वेमाणिया ५। दुविहा णेरइया पन्नत्ता तंजहा -उस्सासगा चेव णोउस्सासगा चेव, जाव वेमाणिया ६। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--सइंदिया चेव अणिंदिया चेव, जाव वेमाणिया ७। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव, जाव वेमाणिया ८। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--सन्नि चेव असन्नि चेव, एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा, जाव वाणमंतरा (वेमाणिया) ९। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--भासगा चेव अभासगा चेव, एवमेगिंदियवज्जा सव्वे १०। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--सम्मद्दिट्ठीया चेव मिच्छद्दिट्ठीया चेव, एगिंदियवज्जा सव्वे ११। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--परित्तसंसारिता चेव अणंतसंसारिया चेव, जाव वेमाणिया १२। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा-संखेज्जकालसमयट्ठितीया (संखेज्जकालठिइया) चेव असंखेज्जकालसमयट्ठितीया चेव, एवं पंचेंदिया एगिंदियविगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा १३। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--सुलभबोधिया चेव दुलभबोधिया चेव, जाव वेमाणिया १४। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--कण्हपक्खिया चेव सुक्कपक्खिया चेव, जाव वेमाणिया १५। दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा--चरिमा चेव अचरिमा चेव, जाव वेमाणिया १६ ॥सू० ७१॥ दोहिं ठाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ तंजहा--समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, आधोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ एवं तिरियलोगं २ उड्ढलोगं ३ केवलकप्पं लोगं ४। दोहिं ठाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ तंजहा--विउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ, अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ, आहोधि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ (पासइ) १, एवं तिरियलोगं २ उड्ढलोगं ३ केवलकप्पं

लोगं ४ । दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेइ, तंजहा-देसेणवि आया सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि आया सद्दाइं सुणेति, एवं रूवाइं पासइ, गंधाइं अग्घाति, रसाइं आसादेति, फासाइं पडिसंवेदेति ५ । दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ, तंजहा-देसेणवि आया ओभासइ सव्वेणवि आया ओभासति, एवं पभासति विकुव्वति परियारेति भासं भासति आहारेति परिणामेति वेदेति निज्जरेति १ । दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ, तंजहा-देसेणवि देवे सद्दाइं सुणेति, सव्वेणवि देवे सद्दाइं सुणेइ, जाव निज्जरेति १४ । मरुया देवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव, एवं किन्नरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा ८, देवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव । ॥सू० ८०॥

॥ द्विस्थानकस्य द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२-२ ॥

॥ अध्ययनं-२ उद्देशकः ३ ॥

दुविहे सद्दे पन्नत्ते तंजहा-भासासद्दे चेव णोभासासद्दे चेव, भासासद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-अक्खरसंबद्धे चेव नोअक्खरसंबद्धे चेव, णोभासासद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-आउज्जसद्दे चेव णोआउज्जसद्दे चेव, आउज्जसद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-तते चेव वितते चेव, तते दुविहे पन्नत्ते तंजहा-घणे चेव झुसिरे चेव, एवं विततेऽवि, णोआउज्जसद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-भूसणसद्दे चेव नोभूसणसद्दे चेव, णोभूसणसद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-तालसद्दे चेव लत्तिआसद्दे चेव, दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाते सिया, तंजहा-साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया, भिज्जंताण चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया ॥सू० ८१॥ दोहिं ठाणेहि पोग्गला साहन्नंति, तंजहा-सइं वा पोग्गला साहन्नंति, परेण वा पोग्गला साहन्नंति १ । दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति तंजहा-सइं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला

भिज्जति २ । दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तंजहा--सइं वा पोग्गला परिसडंति परेण वा पोग्गला परिसाडिज्जंति ३ एवं परिवडंति ४ विद्धंसंति ५ । दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--भिन्ना चेव अभिन्ना चेव १, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--भेउरधम्मा चेव नोभेउरधम्मा चेव २, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--परमाणुपोग्गला चेव नोपरमाणुपोग्गला चेव ३, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--सुहुमा चेव बायरा चेव ४, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--बद्धपासपुट्ठा चेव नोबद्धपासपुट्ठा चेव ५, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता, तंजहा--परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव ६. दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--अत्ता चेव अणत्ता चेव ७, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--इट्ठा चेव अणिट्ठा चेव ८, एवं कंता ९ पिया १० मणुन्ना ११ मणामा १२, ॥सू० ८२॥ दुविहा सद्दा पन्नत्ता तंजहा--अत्ता चेव अणत्ता चेव, १ एवमिट्ठा जाव मणामा ६ । दुविहा रूवा पन्नत्ता तंजहा--अत्ता चेव अणत्ता चेव, जाव मणामा, एवं गंधा रसा फासा, एवमिक्किक्के छ आलावगा भाणियव्वा ॥सू० ८३॥ दुविहे आयारे पन्नत्ते तंजहा--णाणायारे चेव नोनाणायारे चेव १, णोनाणायारे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव २, नोदंसणायारे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--चरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे चेव ३, णोचरित्तायारे दुविहे पन्नत्ते तंजहा--तवायारे चेव वीरियायारे चेव ४ । दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव १, दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--विवेगपडिमा चेव विउसग्गपडिमा चेव २, दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--भद्दा चेव सुभद्दा चेव ३, दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--महाभद्दा चेव सव्वतोभद्दा चेव ४, दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--खुड्डिया चेव मोयपडिमा, महल्लिया चेव मोयपडिमा ५, दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा--जवमज्झा चेव चंदपडिमा, वइरमज्झा चेव चंदपडिमा ६, दुविहे सामाइए पन्नत्ते तंजहा--अगारसामाइए चेव अणगारसामाइए चेव ॥सू० ८४॥

दोराहं उववाए पन्नत्ते तंजहा–देवाण चेव नेरइयाण चेव १ दोराहं उव्वट्टणा पन्नत्ता तंजहा–णेरइयाण चेव भवणवासीण चेव २ दोराहं चयणे पन्नत्ते तंजहा–जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव ३ दोराहं गब्भवक्कती पन्नत्ता तंजहा–मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ४ दोराहं गब्भत्थाणं आहारे पन्नत्ते तंजहा–मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ५ दोराहं गब्भत्थाणं वुड्ढी पन्नत्ता तंजहा–मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ६ एवं निव्वुड्ढी ७ विगुव्वणा ८ गतिपरियाए ९ समुग्घाते १० कालसंजोगे ११ आयाती १२ मरणे १३ दोराहं छविपव्वा (छवियत्ता) पन्नत्ता तंजहा–मणुस्साण चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १४ दो सुक्कसोणितसंभवा पन्नत्ता तंजहा–मणुस्सा चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चेव १५ दुविहा ठिती पन्नत्ता तंजहा–कायट्ठिती चेव भवट्ठिती चेव १६ दोराहं कायट्ठिती पन्नत्ता तंजहा–मणुस्साण चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १७ दोराहं भवट्ठिती पन्नत्ता तंजहा–देवाण चेव नेरइयाण चेव १८ दुविहे आउए पन्नत्ते तंजहा–अद्धाउए चेव भवाउए चेव १९ दोराहं अद्धाउए पन्नत्ते तंजहा–मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव २० दोराहं भवाउए पन्नत्ते तंजहा–देवाण चेव णेरइयाण चेव २१ दुविहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा–पदेसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव २२ दो अहाउयं पालेंति तंजहा–देवच्चेव नेरइयच्चेव २३ दोराहं आउयसंवट्टए पन्नत्ते तंजहा–मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव २४ ॥सू० ८५॥ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता तंजहा–बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं तंजहा–भरहे चेव एरवए चेव, एवमेएणमहिलावेणं हिमवए चेव हेरन्नवते चेव, हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव, जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दो खित्ता पन्नत्ता तंजहा–बहुसमतुल्ला अविसेस जाव पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव, जंबूमंदरस्स

पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ पन्नत्ताओ तंजहा--बहुसमतुल्लाओ जाव देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव, तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा--कूडसामली चेव जंबू चेव सुदंसणा । तत्थं णं दो देवा महिड्ढिया जाव महासोक्खा महेसक्खा पलिओवमट्ठितीया परिवसन्ति, तंजहा-गरुले चेव वेणुदेवे अणादिते चेव जंबूद्दीवाहिवती ॥सू० ८६॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणेणं दो वासहरपव्वया पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा--चुल्लहिमवंते चेव सिहरिच्चेव, एवं महाहिमवंते चेव रुप्पिच्चेव, एवं णिसढे चेव णीलवंते चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं हेमवंतेरग्णवतेसु वासेसु दो वट्टवेतड्ढपव्वता पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती चेव वियडावाती चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तंजहा--साती चेव पभासे चेव, जंबूमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवासरम्मतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव गंधावाती चेव मालवंतपरियाए चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया महज्जुईया चेव जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तंजहा--अरुणे चेव पउमे चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया (अवद्धचंदसंठाणसंठिया) दो वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा-बहुसमा जाव सोमणसे चेव विज्जुप्पभे चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा-बहु० जाव गंधमायणे चेव मालवंते चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव भारहे चेव दीहवेयड्ढे एरावते चेव दीहवेयड्ढे, भारहए णं दीह-

वेयड्ढे दो गुहाओ पन्नत्ताओ तंजहा--बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा-तिमिसगुहा चेव खंडगप्पवायगुहा चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तंजहा-कयमालए चेव नट्टमालए चेव, एरावयए णं दीहवेयड्ढे दो गुहा ओ पन्नत्ताओ तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव कयमालए चेव नट्टमालए चेव। जंबूमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा--चुल्लहिमवंतकूडे चेव वेसमणकूडे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव महाहिमवन्तकूडे चेव वेरुलियकूडे चेव, एवं निसढे वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव निसढकूडे चेव रुयगप्पभे चेव। जबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव तंजहा--नीलवंतकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव, एवं रुप्पिंमि वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव तंजहा-रुप्पिकूडे चेव मणिकंचणकूडे चेव, एवं सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला जाव तंजहा-सिहरिकूडे चेव, तिगिंछिकूडे चेव ॥सू० ८७॥ जंबूमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरपव्वयेसु दो महद्दहा पन्नत्ता तंजहा--बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति, आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा-पउमद्दहे चेव पुंडरीयद्दहे चेव, तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तंजहा-सिरी चेव लच्छी चेव, एवं महाहिमवंतरुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पन्नत्ता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव तंजहा-महापउमद्दहे चेव महापोंडरीयद्दहे चेव, देवताओ हिरिच्चेव बुद्धिच्चेव, एवं निसढनीलवंतेसु तिगिंछिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव, देवताओ धिती चेव कित्तिच्चेव, जंबूमंदरस्स दाहिणेणं महाहिमवंताओ वासहरपव्व-

-याओ महापउमद्दहाओ (दहाओ) दो महाणईओ पवहंति, तंजहा-रोहियच्चेव हरिकंतच्चेव, एवं निसढाओ वासहरपव्वताओ तिगिंछिद्दहाओ दो महानईओ पवहंति तंजहा-हरिच्चेव सीओअच्चेव, जंबूमंदरस्स उत्तरेणं नीलवंताओ वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दो महानईओ पवहंति, तंजहा-सीता चेव नारिकंता चेव, एवं रुप्पीओ वासहरपव्वत्ताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति, तंजहा-णारकंता चेव रुप्पकूला चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा पन्नत्ता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव तंजहा-गंगप्पवातद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव। एवं हिमवए वासे दो पवायद्दहा पन्नता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव तंजहा-रोहियप्पवानद्दहे चेव रोहियंसपवातद्दहे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे वासे दो पवायद्दहा पन्नता तंजहा-बहुसमतुल्ला तंजहा-हरिपवातद्दहे चेव हरिकंतपवातद्दहे चेव, जंबूमंदरउत्तरदाहिणेणं महाविदेहवासे दो पवायद्दहा पन्नता बहुसमतुल्ला जाव सीअप्पवातद्दहे चेव सीतोदप्पवायदहे चेव, जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा पन्नता तंजहा-बहुसमतुल्ला जाव नरकंतप्पवायद्दहे चेव णारीकंतप्पवायद्दहे चेव, एवं हेरन्नवते वासे दो पवायद्दहा पन्नता तंजहा-बहुसमतुल्ला सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव, जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावइप्पवायद्दहे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो महानईओ पन्नत्ताओ बहुसमतुल्ला जाव गंगा चेव सिंधू चेव, एवं जधा पवातद्दहा एवं णईओ भाणियव्वाओ, जाव एरवए वासे दो महानईओ पन्नत्ताओ-बहुसमतुल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवती चेव॥सू०८८॥

जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था १। एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पन्नत्ते २। एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति ३। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं

उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ४। दोन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था ५। एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पालयित्था ६। एवमागमेस्साते उस्सप्पिणीए जाव पालिस्संति ७। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे (एगजुगे एगसमये) दो अरिहंतवंसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ८। एवं चक्कवट्टिवंसा ९। दसारवंसा १०। जंबूभरहेरवएसु एगसमते दो अरहंता उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ११। एवं चक्कवट्टिणो १२। एवं बलदेवा एवं वासुदेवा (दसारवंसा) जाव उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा १३। जंबू० दोसु कुरासु मणुआ सया सुसमसुसममुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा—देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव १४। जंबूद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा—हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव १५। जंबूद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा—हेमवए चेव एरन्नवए चेव १६। जंबूद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दूसमसुसममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा—पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव १७। जंबूदीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा—भरहे चेव एरवते चेव १८। ॥सू० ८९॥ जंबूद्दीवे दीवे दो चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिआ तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, दो कत्तिया, दो रोहिणीओ, दो मगसिराओ, दो अद्दाओ, एवं भाणियव्वं। "[1]कत्तिय [2]रोहिणि [3]मगसिर [4]अद्दा य [5]पुणव्वसू अ [6]पूसो य। तत्तोऽवि [7]अस्सलेसा [8]महा य दो [9-10]फग्गुणीओ य ॥१॥ [11]हत्थो [12]चित्ता [13]साई [14]विसाहा तहय होंति [15]अणुराहा। [16]जेट्ठा [17]मूलो [18]पुव्वा य आसाढा [19]उत्तरा चेव ॥२॥ [20-21-22]अभिईसवणधणिट्ठा [23]सयभिसया दो य होंति [24-25]भद्दवया। [26]रेवति [27]अस्सिणि [28]भरणी नेतव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥ एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं

जाव दो भरणीओ। दो अग्गी दो पयावती दो सोमा दो रुद्दा दो अदिती दो बहस्सती दो सप्पी दो पीतो दो भगा दो अज्जमा १० दो सविता दो तट्टा दो वाऊ दो इंदग्गी दो मित्ता दो इंदा दो निरती दो आऊ दो विस्सा दो बम्हा २० दो विराहू दो वसू दो वरुणा दो अया दो विविद्धी दो पुस्सा दो अस्सा दो यमा २८। दो इंगालगा दो वियालगा दो लोहितक्खा दो सणिच्चरा दो आहुणिया दो पाहुणिया दो कणा दो कणगा दो कणकणगा दो कणगविताणगा १० दो कणगसंताणगा दो सोमा दो सहिया दो आसासणा दो कज्जोवगा दो कब्बडगा दो अयकरगा दो दुंदुभगा दो संखा दो संखवन्ना २० दो संखवन्नाभा दो कंसा ४० दो कंसवन्ना दो कंसवन्नाभा दो रुप्पी दो रुप्पाभासा दो णीला दो णीलोभासा दो भासा दो भासरासी ३० दो तिला दो तिलपुप्फवरणा ३० दो दगा दो दगपंचवन्ना दो काका दो कक्कंधा दो इंदग्गी (वा) दो धूमकेऊ दो हरी दो पिंगला ४० दो बुद्धा दो सुक्का दो बहस्सती दो राहू दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा दो पमुहा ५० दो वियडा दो विसंधी दो नियल्ला दो पइल्ला दो जडियाइलगा दो अरुणा दो अग्गिल्ला दो काला दो महाकालगा दो सोत्थिया ६० दो सोवत्थिया दो वद्धमाणगा (दो पूससमाणगा दो अंकुसा) दो पलंबा दो निच्चालोगा दो णिच्चुज्जोता दो सयंपभा दो ओभासा दो सेयंकरा दो खेमंकरा दो आभंकरा ७० दो पभंकरा दो अपराजिता दो अरया दो असोगा दो विगतसोगा दो विमला दो वितत्ता दो वितत्था दो विसाला दो साला ८० दो सुव्वता दो अणियट्टा दो एगजडी दो दुजडी दो करकरिगा दो रायग्गला दो पुप्फकेतू दो भावकेऊ ८८॥सू० ९०॥ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइआ दो गाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता। लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते। लवणस्स णं समुद्दस्स वेतिया दो गाउयाइ उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥सूत्रं ९१॥ धायइसंडे दीवे पुर-

च्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा (पन्नत्ता) बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव १। एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा—भरहे चेव एरवते चेव, णवरं कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे सुदंसणे चेव २। धाततीसंडदीव-पच्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति भरहे चेव एरवए चेव, णवरं कूडसामली चेव महाधायतीरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव ३। धायइसंडे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं दो हेमवयाइं दो हेरन्नवयाइं दो हरिवासाइं दो रम्मगवासाइं दो पुव्वविदेहाइं दो अवरविदेहाइं दो देवकुराओ दो देवकुरुमहद्दुमा १० दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा दो उत्तरकुराओ दो उत्तरकुरुमहद्दुमा दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा दो चुल्लहिमवंता दो महाहिमवंता दो निसहा दो नीलवंता दो रुप्पी दो सिहरी (२०) दो सद्दावाती दो सद्दावातवासी साती देवा दो वियडावाती दो वियडावातिवासी पभासा देवा दो गंधावाती दो गंधावातिवासी अरुणा देवा दो मालवंतपरियागा दो मालवंतपरियागावासी पउमा देवा दो मालवंता दो चित्तकूडा (३०) दो पम्हकूडा दो नलिणकूडा दो एगसेला दो तिकूडा दो वेसमणकूडा दो अंजणा दो मातंजणा दो सोमणसा दो विज्जुप्पभा दो अंकावती (४०) दो पम्हावती दो आसीविसा दो सुहावहा दो चंदपव्वता दो सूरपव्वता दो णागपव्वता दो देवपव्वया दो गंधमायणा दो उसुगारपव्वया दो चुल्लहिमवंतकूडा (५०) दो वेसमणकूडा दो महाहिमवंतकूडा दो वेरुलियकूडा दो निसहकूडा दो रुयगकूडा दो नीलवंतकूडा दो उवदंसणकूडा दो रुप्पिकूडा दो मणिकंचणकूडा दो सिहरिकूडा (६०) दो तिगिच्छिकूडा दो पउमद्दहा दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीदेवीओ दो महापउमद्दहा दो महापउमद्दहवासिणीओ

हिरीतो देवीओ (६५) एवं जाव दो पुंडरीयद्दहा दो पोंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीदेवीओ, दो गंगापवायद्दहा जाव दो रत्तवतिपवातद्दहा दो रोहियाओ (७०) जाव दो रुप्पकूलातो दो गाहवतीओ दो दहवतीओ दो पंकवतीओ वेगवतीओ दो तत्तजलाओ दो मत्तजलाओ दो उम्मत्तजलाओ दो खीरोयाओ खारोदाओ दो सीहसीयासोताओ दो अंतोवाहिणीओ (८०) दो उम्मिमालिणीओ दो फेणगंभीरमालिणीओ दो गंभीरफेणमालिणीओ दो कच्छा दो सुकच्छा दो महाकच्छा दो कच्छगावती दो आवत्ता दो मंगलावत्ता दो पुक्खला (९०) दो पुक्खलावई दो वच्छा दो सुवच्छा दो महावच्छा दो वच्छगावती दो रम्मा दो रम्मगा दो रमणिज्जा दो मंगलावती दो पम्हा (१००) दो सुपम्हा दो महपम्हा दो पम्हगावती दो संखा दो णलिणा दो कुमुया दो स(ण)लिला(णा)वती दो वप्पा दो सुवप्पा दो महावप्पा (११०) दो वप्पगावती दो वग्गू दो सुवग्गू दो गंधिला दो गंधिलावती ३२ दो खेमाओ दो खेमपुरीओ दो रिट्ठाओ दो रिट्ठपुरीओ दो खग्गीतो (१२०) दो मंजुसाओ दो ओसधीओ दो पोंडरिगिणीओ दो सुसीमाओ दो कुंडलाओ दो अपराजियाओ दो पभंकराओ दो अंकावईओ दो पम्हावईओ दो सुभाओ (१३०) दो रयणसंचयाओ दो आसंपुराओ दो सीहपुराओ दो महापुराओ दो विजयपुराओ दो अपराजिताओ दो अवराओ दो असोयाओ दो विगयसोगाओ दो विजयातो (१४०) दो वेजयंतीओ दो जयंतीओ दो अपराजियाओ दो चक्कपुराओ दो खग्गपुराओ दो अवज्झाओ दो अउज्झाओ ३२ दो भद्दसालवणा दो णंदणवणा दो सोमणसवणा (१५०) दो पंडगवणाइं दो पंडुकंबलसिलाओ दो अतिपंडुकंबलसिलाओ दो रत्तकंबलसिलाओ दो अइरत्तकंबलसिलाओ दो मंदरा दो मंदरचूलिताओ (१५७) धायतिसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उद्धमुच्चत्तेणं पन्नत्ता ५। (सूत्रं ९२) कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

पन्नत्ता १।पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव तहेव जाव दो कुराओ पन्नत्ताओ देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव २। तत्थ णं दो महतिमहालता महद्दुमा पन्नत्ता तंजहा--कूडसामली चेव पउमरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पउमे चेव, जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति ३। पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता तंजहा–तहेव णाणत्तं कूडसामली चेव महापउमरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पुंडरीए चेव ४। पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं जाव दो मंदरा दो मंदरचूलियाओ ५। पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पन्नत्ता ६ । सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओ दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पराणत्ताओ ७ (सू० ९३)। दो असुरकुमारिंदा पन्नत्ता, तं जहा–चमरे चेव बली चेव १ दो णागकुमारिंदा पराणत्ता, तंजहा–धरणे चेव भूयाणंदे चेव २। दो सुवन्नकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव ३। दो विज्जुकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–हरिच्चेव हरिस्सहे चेव ४। दो अग्गिकुमारिंदा पन्नता तंजहा–अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव ५। दो दीवकुमारिंदा पन्नता तंजहा–पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव ६। दो उदहिंकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–जलकंते चेव जलप्पभे चेव ७। दो दीसाकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–अमियगती चेव अमितवाहणे चेव ८ दो वातकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–वेलंबे चेव पभंजणे चेव ९। दो थणियकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा–घोसे चेव महाघोसे चेव १०। दो पिसाइंदा पन्नत्ता–तंजहा–काले चेव महाकाले चेव ११। दो भूइंदा पन्नत्ता तंजहा–सुरूवे चेव पडिरूवे चेव १२। दो जक्खिंदा पन्नत्ता, तंजहा–पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव १३। दो रक्खसिंदा पन्नत्ता तंजहा–भीमे चेव महाभीमे चेव १४। दो किन्नरिंदा पन्नत्ता, तंजहा–किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव १५। दो किंपुरि-

सिंदा पन्नत्ता तंजहा-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव १६ । दो महोरगिंदा पन्नत्ता तंजहा-अतिकाए चेव महाकाए चेव १७ । दो गंधव्विंदा पन्नत्ता तंजहा-गीतरती चेव गीयजसे चेव १८ । दो अणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा-संनिहिए चेव सामणे चेव १६ । दो पणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा-धाए चेव विहाए चेव २० । दो इसिवाइंदा पन्नत्ता तजहा-इसिच्चेव इसिवालए चेव २१ । दो भूतवाइंदा पन्नत्ता, तंजहा-इस्सरे चेव महिस्सरे चेव २२ । दो कंदिंदा पन्नत्ता तंजहा-सुवच्छे चेव विसाले चेव २३ । दो महाकंदिंदा पन्नत्ता तंजहा-हस्से चेव हस्सरती चेव २४ । दो कुभंडिंदा पन्नत्ता तंजहा-सेए चेव महासेए चेव २५। दो पतइंदा पन्नत्ता तंजहा-पतए चेव पतयवई चेव २६। जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-चंदे चेव सूरे चेव २७। सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-सक्के चेव ईसाणे चेव २८। एवं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव २९। बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-बंभे चेव लंतए चेव ३० । महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-महासुक्के चेव सहस्सारे चेव ३१। आणयपाणतारणच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता तंजहा-पाणते चेव अच्चुते चेव ३२। महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पन्नत्ता तंजहा-हालिद्दा चेव सुक्किला चेव ३३। गेविज्जगाणं देवा णं दो रयणीओ उड्ढमुच्चत्तेणं पन्नत्ता ३४ ॥सू० १४॥

॥ इति द्वितीयस्थाने तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥ २-३ ॥

॥ अथ द्वितीयस्थाने चतुर्थोद्देशकः ॥

समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति १, आणापाणूति वा थोवेति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति २, खणाति वा लवाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ३, एवं मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा ४, पक्खाति वा मासाति वा ५, उडूति वा अयणाति वा ६, संवच्छराति वा जुगाति वा ७, वाससयाति वा वाससहस्साइ वा ८, वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा ९, पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा १०, तुडियंगाति वा तुडियाति वा ११, अडडंगाति वा अडडाति वा १२, अववंगाति वा अववाति वा १३, हूहूअंगाति वा हूहूयाति वा १४, उप्पलंगाति वा उप्पलाति वा १५, पउमंगाइ वा पउमाति वा १६, णलिणंगाति वा णलिणाति वा १७, अच्छणिकुरंगाति वा अच्छणिउराति वा १८, अउअंगाति वा अउआति वा १९, णउअंगाति वा णउआति वा २०, पउतंगाति वा पउताति वा २१, चूलितंगाति वा चूलिताति वा २२, सीसपहेलियंगाति वा सीसपहेलियाति वा २३, पलिओवमाति वा सागरोवमाति वा २४, उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति २५, १। गामाति वा णगराति वा निगमाति वा रायहाणीति वा २। खेडाति वा कब्बडाति वा ३। मडंबाति वा दोणमुहाति वा ४। पट्टणाति वा आगराति वा ५। आसमाति वा संबाहाति वा ६। संनिवेसाइ वा घोसाइ वा ७। आरामाइ वा उज्जाणाति वा ८। वणाति वा वणसंडाति वा ९। वावीइ वा पुक्खरणीति वा १०। सराति वा सरपंतीति वा ११। अगडाति वा तलागाति वा १२। दहाति वा णदीति वा १३। पुढवीति वा उदहीति वा १४। वातखंधाति वा उवासंतराति वा १५। वलताति वा विग्गहाति वा १६। दीवाति वा समुद्दाइ वा १७। वेलाति वा वेतीताति वा १८।

दाराति वा तोरणाति वा ४१। गोरतिताति वा गोरतितावासाति वा जाव वेमाणियाइ वा वेमाणियावासाति वा ४३। कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा ४४। वासाति वा वासधरपव्वताति वा ४५। कूडाति वा कूडगाराति वा ४६। विजयाति वा रायहाणीइ वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ४७,२। छाताति वा आतवाति वा, दोसिणाति वा अंधगाराति वा, ओमाणाति वा उम्माणाति वा, अतितागगिहाति वा उज्जाणगिहाति वा, अवलिंबाति वा सणिप्पवाताति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चइ ३। दो रासी पन्नत्ता तंजहा— जीवरासी चेव अजीवरासी चेव ४॥ सूत्रं ९५॥ दुविहे बंधे पन्नत्ते तंजहा—पेज्जबंधे चेव दोसबंधे चेव १। जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं बंधंति तंजहा—रागेण चेव दोसेण चेव २। जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तंजहा—अब्भोवगमिताते चेव वेतणाते, उवक्कमिताते चेव वेयणाते ३। एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति-अब्भोवगमिताते चेव वेयणाते उवक्कमिताते चेव वेयणाते ४ ॥सूत्रं ९६॥ दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति, तंजहा-देसेणवि आता सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति, सव्वेणवि आया सरीरगं फुसित्ताणं णिज्जाति १। एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ता एवं संवट्टतित्ता एवं निव्वट्टतित्ता २॥सूत्रं ९७॥ दोहिं ठाणेहिं आता केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणताते, तंजहा—खतेण चेव उवसमेण चेव १। एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा तंजहा—खतेण चेव उवसमेण चेव २। ॥सूत्रं ९८॥ दुविहे अद्धोवमिए पन्नत्ते तंजहा—पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव, से किं तं पलिओवमे ?, पलिओवमे—जं जोयणविच्छिन्नं, पल्लं एगाहियप्परूढाणं। होज्ज निरंतरणिचितं भरितं वालग्गकोडीणं ॥ १ ॥ वाससए वाससए एक्केक्के अवहडंमि जो कालो। सो कालो बोद्धव्वो उवमा एगस्स पल्लस्स ॥२॥ एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिता। तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परीमाणं ॥ ३ ॥ सू० ९९ ॥

दुविहे कोहे पन्नते तंजहा-आयपइट्ठिते चेव परपइट्ठिए चेव, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले ॥सू० १००॥ दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा-तसा चेव थावरा चेव १। दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा-सिद्धा चेव असिद्धा चेव २। दुविहा सव्वजीवा पराणत्ता तंजहा-सइंदिया चेव अणिंदिया चेव ३। एवं एसा गाहा फासेतव्वा जाव ससरीरी चेव असरीरी चेव ४। 'सिद्धसइंदियकाए जोगे वेए कसाय लेसा य। णाणुवओगाहारे भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥' ॥सू० १०१॥ दो मरणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वन्नियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं बुइयाइं (पुइयाइं) णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति, तंजहा-वलायमरणे चेव वसट्टमरणे चेव १ एवं णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव २ गिरिपडणे चेव तरुपडणे चेव ३ जलप्पवेसे चेव जलणप्पवेसे चेव ४ विसभक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव ५,१। दो मरणाइं जाव णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति, कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइं, तंजहा-वेहाणसे चेव गिद्धपट्ठे चेव ६, २। दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं वन्नियाइं जाव अब्भणुन्नाताइं भवंति, तंजहा-पाओवगमणे चेव भत्तपच्चक्खाणे चेव ७, ३। पाओवगमणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-णीहारिमे चेव अनीहारिमे चेव णियमं अपडिकमे ८, ४। भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-णीहारिमे चेव अणीहारिमे चेव, णियमं सपडिकमे ९, ५॥ सू० १०२॥ के अयं लोगे ?, जीवच्चेव अजीवच्चेव, के अणंता लोए ?, जीवच्चेव अजीवच्चेव, के सासया लोगे ?, जीवच्चेव अजीवच्चेव ॥सू० १०३॥ दुविहा बोधी पन्नत्ता तंजहा-णाणबोधी चेव दंसणबोधी चेव, दुविहा बुद्धा पन्नत्ता तंजहा-णाणबुद्धा चेव दंसणबुद्धा चेव, एवं मोहे, मूढा ॥सू० १०४॥ णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-देसनाणावर-

णिज्जे चेव सव्वणाणावरणिज्जे चेव १। दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव २। वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–सातावेयणिज्जे चेव असातावेयणिज्जे चेव ३। मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–दंसणमोहणिज्जे चेव चरित्तमोहणिज्जे चेव ४। आउए कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–अद्धाउए चेव भवाउए चेव ५। णामे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-सुभणामे चेव असुभणामे चेव ६। गोत्ते कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा–उच्चागोते चेव णीयागोते चेव ७। अंतराइए कम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा-पडुच्चुपन्नविणासिए चेव पिहितआगामिपहं (आगामिपहहं, आयमपहं) ८ ॥ सूत्र १०५ ॥ दुविहा मुच्छा पन्नत्ता तंजहा-पेज्जवत्तिता चेव, दोसवत्तिता चेव, पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता तंजहा–माए चेव लोभे चेव, दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता तंजहा–कोहे चेव माणे चेव ॥ सू० १०६ ॥ दुविहा आराहणा पन्नत्ता तंजहा–धम्मिताराहणा चेव केवलिआराहणा चेव, धम्मियाराहणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा–सुयधम्माराहणा चेव चरित्तधम्माराहणा चेव, केवलिआराहणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा–अंतकिरिया चेव कप्पविमाणोववत्तिआ चेव ॥ सू० १०७ ॥ दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वन्नेणं पन्नत्ता तंजहा–मुणिसुव्वए चेव अरिट्ठनेमी चेव, दो तित्थयरा पियंगुसामा वन्नेणं पन्नत्ता तंजहा–मल्ली चेव पासे चेव, दो तित्थयरा पउमगोरा वन्नेणं पन्नत्ता तंजहा–पउमप्पहे चेव वासुपुज्जे चेव, दो तित्थगरा चंदगोरा वन्नेणं पन्नत्ता तंजहा–चंदप्पभे चेव पुप्फदते चेव ॥ सू० १०८ ॥ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू पन्नत्ते, ॥ सू० १०९ ॥ पुव्वाभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते, उत्तरभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पराणत्ते, एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी ॥ सू० ११० ॥ अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पन्नत्ता तंजहा–लवणे चेव कालोदे चेव ॥ सू० १११ ॥ दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए नेरइतत्ताए उववन्ना तंजहा–सुभूमे चेव बंभदत्ते चेव ॥ सू०

११२॥ असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥सू० ११३॥ दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पन्नत्ताओ, तजहा—सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥सू० ११४॥ दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पन्नत्ता, तंजहा—सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥सू० ११५॥ दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पन्नत्ता तंजहा-सोहम्मे चेव ईसाणे चेव, दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पन्नत्ता तंजहा-सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव, दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पन्नत्ता तंजहा-बंभलोगे चेव लंतगे चेव, दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पन्नत्ता तंजहा-महासुक्के चेव सहस्सारे चेव, दो इंदा मणपरियारगा पन्नत्ता तंजहा--पाणए चेव अच्चुए चेव ॥सू० ११६॥ जीवा णं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा--तसकायनिव्वत्तिए चेव थावरकायनिव्वत्तिए चेव, एवं उवचिणिसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, बंधिसु वा बंधंति वा बंधिस्संति वा, उदीरिंसु वा उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा, वेदेंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा, णिज्जरिंसु वा णिज्जरिंति वा णिज्जरिस्संति वा ॥सू० ११७॥ दुपएसिता खंधा अणंता पन्नत्ता, दुपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एवं जाव दुगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता ॥सू० ११८॥ दुट्ठाणं समत्तं ॥

॥ इति चतुर्थोद्देशकः ॥२-४॥ इति द्वितीयं द्विस्थानकाध्ययनम् ॥२॥

॥ अथ तृतीयं त्रिस्थानकाध्ययनम् ॥ प्रथमोद्देशकः ।

तओ इंदा पण्णत्ता तंजहा-णामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे, तओ इंदा पन्नत्ता तंजहा—णाणिंदे दंसणिंदे चरित्तिंदे, तओ इंदा पन्नत्ता तंजहा—देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे ॥सू० ११९॥ तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता तंजहा—बाहिरते पोग्गलए परियातित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि एगा विकुव्वणा १। तिविहा विगुव्वणा पन्नत्ता तंजहा—अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा, अब्भंतरे पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरितादित्तावि एगा विकुव्वणा २। तिविहा विकुव्वणा पन्नत्ता तंजहा—बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगा विउव्वणा ३। ॥सू० १२०॥ तिविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा—कतिसंचिता अकतिसंचिता अवत्तव्वगसंचिता, एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया ॥सू० १२१॥ तिविहा परियारणा पन्नत्ता तंजहा—एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसि देवाणं देवीओ अ, अभिजुंजिय २ परियारेति, अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेति १। एगे देवे णो अन्ने देवा णो अणोसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, अत्तणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेति २। एगे देवे णो अन्ने देवा णो अणोसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परितारेति, णो अप्पणिज्जिताओ देवीओ अभिजुंजिय २ परितारेति, अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २ परितारेति ३। ॥सू० १२२॥ तिविहे मेहुणे पन्नत्ते तंजहा—दिव्वे माणुस्सते तिरिक्ख-

जोणीते, तओ मेहुणं गच्छंति तंजहा—देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिता, तओ मेहुणं सेवंति तंजहा—इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥सू० १२३॥ तिविहे जोगे पन्नत्ते तंजहा—मणजोगे वतिजोगे कायजोगे, एवं णेरतिताणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं १। तिविहे पओगे पन्नत्ते तंजहा-मणपओगे वतिपओगे कायपओगे, जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं तथा पओगोऽवि २। तिविहे करणे पन्नत्ते तंजहा—मणकरणे वतिकरणे कायकरणे एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाण ३। तिविहे करणे पन्नत्ते तंजहा—आरंभकरणे संरंभकरणे समारंभकरणे, निरंतरं जाव वेमाणियाणं ४ सू० १२४। तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताते कम्मं पगरिंति, तंजहा—पाणे अतिवातित्ता भवति, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता भवइ, इच्चेतेहि तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताते कम्मं पगरेंति १। तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताते कम्मं पगरेंति, तंजहा-णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुसं वतित्ता भवति, तथारूवं समणं वा माहणं वा फासुएमणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति २। तिहिं ठाणेहि जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजहा—पाणे अतिवातित्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलेत्ता णिंदित्ता खिंसेत्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीतिकारतेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहि जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ३। तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउअत्ताते कम्मं पगरेंति, तंजहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुसं वदित्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारित्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवतं चेतितं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीतिकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चे-

तेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउत्ताते कम्मं पगरेंति ॥सू० १२५॥ ततो गुत्तीतो पन्नत्ताओ, तंजहा—मणगुत्ती वतिगुत्ती कायगुत्ती १। संजय-मणुस्साणं ततो गुत्तीओ पन्नत्ताओ तंजहा – मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती २। तओ अगुत्तीओ पन्नत्ताओ तंजहा—मणअगुत्ती वइअगुत्ती कायअगुत्ती ३। एवं नेरइताणं जाव थणियकुमाराणं ४। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजत-मणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं ५। ततो दंडा पन्नत्ता तंजहा-मणदंडे वयदंडे कायदंडे ६। नेरइयाणं तओ दंडा पराणत्ता, तंजहा-मणदंडे वइदंडे कायदंडे ७। विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ८ ॥सू० १२६॥ तिविहा गरहा पन्नत्ता तंजहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति पावाणं कम्माणं अकरणयाए १। अथवा गरहा तिविहा पन्नत्ता तंजहा—दीहंपेगे अद्धं गरहति, रहस्संपेगे अद्धंगर-हति, कायंपेगे पडिसाहरति पावाणं कम्माणं अकरणयाए २। तिविहे पच्च-क्खाणे पन्नत्ते तंजहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति कायसा वेगे पच्चक्खाइ, एवं जहा गरहा तहा पचक्खाणेवि दो आलावगा भाणि-यव्वा ३ ॥सू० १२७॥ ततो रुक्खा पन्नत्ता तंजहा—पत्तोवते फलोवते पुप्फोवते १। एवामेव तओ पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—पत्तोवारुक्खसा-माणा पुप्फोवारुक्खसामाणा फलोवारुक्खसामाणा २। ततो पुरिसज्जाया पन्नत्ता तंजहा—नामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे ३। तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता तंजहा--नाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे ४। तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता तंजहा-वेदपुरिसे चिंधपुरिसे अभिलावपुरिसे ५। तिविहा पुरिसज्जाया पन्नत्ता तंजहा-उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा ६। उत्तमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा-धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा, धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा ७। मज्झिमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा-उग्गा भोगा रायन्ना ८। जहन्नपुरिसा तिविहा

पन्नत्ता तंजहा–हासा भयगा भातिलगा १ ॥सू० १२८॥ तिविहा मच्छा पन्नत्ता तंजहा–अंडया पोअया संमुच्छिमा १। अंडगा मच्छा तिविहा पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा णपुंसगा २। पोतया मच्छा तिविहा पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा णपुंसगा ३। तिविहा पक्खी पन्नत्ता तंजहा–अंडया पोअया संमुच्छिमा ४। अंडया पक्खी तिविहा पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा णपुंसगा ५। पोतजा पक्खी तिविहा पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा णपुंसगा ६ एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि ३ भाणियव्वा ७। भुजपरिसप्पावि ३ भाणियव्वा ८ ॥सू० १२९॥ एवं चेव तिविहा इत्थीओ पन्नत्ताओ तंजहा–तिरिक्खजोणित्थीओ जोणियाओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ १। तिरिक्खजोणिओ इत्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ तंजहा–जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ २। मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ तंजहा–कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीविगाओ ३। तिविहा पुरिसा पन्नत्ता तंजहा–तिरिक्खजोणीपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा ४। तिरिक्खजोणिपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा–जलचरा थलचरा खेचरा ५। मणुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा–कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा ६। तिविहा नपुंसगा पन्नत्ता तंजहा–णेरतियनपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सजोणियनपुंसगा ७। तिरिक्खजोणियनपुंसगा तिविहा पन्नत्ता तंजहा–जलयरा थलयरा खहयरा ८। मणुस्सनपुंसगा तिविधा पन्नत्ता तंजहा–कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा ९ ॥सू० १३०॥ तिविहा तिरिक्खजोणिया पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥सू० १३१॥ नेरइयाणं तओ लेसाओ पन्नत्ताओ तंजहा–कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा १। असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ तंजहा–कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा २। एवं जाव थणियकुमाराणं ११। एवं पुढविकाइआणं १२। आउवणस्सतिकाइयाणवि १३-१४। तेउकाइयाणं १५। वाउ-

काइयाणं १६। बेंदियाणं १७। तेंदियाणं १८। चउरिंदियाणवि १६। तत्र्रो लेस्सा जहा नेरइयाणं। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तत्र्रो लेसाओ संकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ तंजहा—कराहलेसा नीललेसा काउलेसा २०। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तत्र्रो लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ तंजहा—तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा २१। एवं मणुस्साणवि २२। वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं २३। वेमाणियाणं तत्र्रो लेस्साओ पन्नत्ताओ तंजहा—तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा २४ ॥सू० १३२॥ तिहिं ठाणेहिं तारारूवे चलिज्जा तंजहा—विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे तारारूवे चलेज्जा १। तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुतारं करेज्जा तंजहा—विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढि जुत्तिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुतारं करेज्जा २। तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा तंजहा—विकुव्वमाणे, एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि ३॥सू० १३३॥ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तंजहा—अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरिहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे १। तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोते सिया तंजहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेसु पव्वयमाणेसु, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु २। तिहिं ठाणेहिं देवंधकारे सिया तंजहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ३। तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया तंजहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ४। तिहिं ठाणेहिं देवसंनिवाए सिया तंजहा—अरिहंतेहिं जायमाणेहिं, अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरिहंताणं नाणुप्पायमहिमासु ५। एवं देवुक्कलिया ६। देवकहकहए ७। तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति तंजहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायम-

हिमासु ८। एवं सामाणिया ६। तायत्तीसगा १०। लोगपाला देवा ११। अग्गमहिसीओ देवीओ १२। परिसोववन्नगा देवा १३। अणियाहिवई देवा १४। आयरक्खा देवा १५। माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति। तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तंजहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव १६। एवमासणाइं चलेज्जा १७। सीहणातं करेज्जा १८। चेलुक्खेवं करेज्जा १९। तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा तंजहा—अरहंतेहिं तं चेव २०। तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छिज्जा, तंजहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु २१। ॥सू० १३४॥ तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो! तंजहा—अम्मापिउणो १ भट्टिस्स २ धम्मायरिस्स ३, संपातोऽवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ, अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवित्ता परूवित्ता ठावित्ता भवति, तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडितारं भवति समणाउसो! १। केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा, तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरेज्जा, तए णं से महच्चे अन्नया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा, तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवति, अहे णं से तं भट्टिं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवति २। केति तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, तए णं से

देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खातो वा देसातो सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंता-
रातो वा णिक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएणं वा रोगातंकेणं अभिभूतं
समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवति, अधे णं
से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जोवि केवलि-
पन्नत्ते धम्मे आघवतित्ता जाव ठावतित्ता भवति, तेणामेव तस्स धम्मायरि-
यस्स सुप्पडियारं भवति ३ ॥सू० १३५॥ तिहिं ठाणेहिं संपराणे अणगारे
अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवएज्जा, तंजहा–
अणिदाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए जोगवाहियाए ॥सू० १३६॥ तिविहा ओस-
प्पिणी पन्नत्ता तंजहा–उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना १। एवं छप्पि समाओ
भाणियव्वाओ, जाव दूसमदूसमा ७। तिविहा उस्सप्पिणी पन्नत्ता तंजहा
उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ८। एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ
जाव सुसमसुसमा १४ ॥ सू० १३७ ॥ तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने
पोग्गले चलेज्जा तंजहा–आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, विकु-
व्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, ठाणातो वा ठाणं संकामिज्जमाणे पोग्गले
चलेज्जा १। तिविहे उवधी पन्नत्ते तंजहा–कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंड-
मत्तोवही २। एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं ३। एवं एगिंदियनेरइयवज्जं
जाव वेमाणियाणं ४। अहवा तिविहे उवधी पन्नत्ते तंजहा–सचित्ते अचित्ते
मीसए, एवं णेरइआणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ५। तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते
तंजहा–कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे ६। एवं असुर-
कुमाराणं ७। एवं एगिंदियनेरतियवज्जं जाव वेमाणियाणं ८। अहवा तिविहे
परिग्गहे पन्नत्ते तंजहा–सचित्ते अचित्ते मीसए, एवं नेरतियाणं ९। निरंतरं
जाव वेमाणियाणं १० ॥सू० १३८॥ तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा–मण-
पणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं,
तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा–मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, काय-

सुप्पणिहाणे, संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा-मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे, तिविहे दुप्पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं ॥सू० १३९॥ तिविहा जोणि पन्नत्ता तंजहा-सीता उसिणा सीओसिणा १। एवं एगिंदियाणं विगलिंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य २। तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा-सचित्ता अचित्ता मीसिया ३। एवं एगिंदियाणं विगलियाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य ४। तिविधा जोणी पन्नत्ता तंजहा--संवुडा वियडा संवुडवियडा ५। तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा--कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीपत्तिया, कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं, कुमुन्नयाते णं जोणीए ६। तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति, तंजहा--अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ७। संखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति नो चेव णं निप्फज्जंति, वंसीपत्तिता णं जोणी पिहज्जणस्स, वंसीपत्तिताए णं जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भं वक्कमंति ८ ॥सू० १४०॥ तिविहा तणवणस्सइकाइया पन्नत्ता तंजहा--संखेज्जजीविता असंखेज्जजीविता अणंतजीविया ॥सू० १४१॥ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पन्नत्ता तंजहा--मागहे वरदामे पभासे १। एवं एरवएवि २। जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये ततो तित्था पन्नत्ता तंजहा--मागहे वरदामे पभासे ३। एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि ६, पच्चत्थिमद्धेवि ९, पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धेवि १२ पच्चत्थिमद्धेवि १५ ॥सु० १४२॥ जंपुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीनाए उस्सप्पिणीते सुसमाए समाए तिन्नि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था १। एवं ओसप्पिणीए नवरं पन्नत्ते २। आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति ३। एवं धायइसंडे पुरच्छिमद्धे पच्च-

त्थिमद्धेवि ६। एवं पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणि-यव्वो १५। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए मणुया तिरिण गाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं तिन्नि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था १। एवं इमीसे ओसप्पिणीते २। आगमिस्साए उस्सप्पि-णीए ३। जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिरिण गाउआइं उद्धं उच्च-त्तेणं पन्नत्ता तिन्नि पलिओवमाइं परमाउं पालयंति ४। एवं जाव पुक्खरवर-दीवद्धपच्चत्थिमद्धे २०। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाते ओस-प्पिणिउस्सप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तंजहा—अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे २१। एवं जाव पुक्खरवरदी-वद्धपच्चत्थिमद्धे २५। जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पि-णीउस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तंजहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा २६। एवं जाव पुक्खरवरदी-वद्धपच्चत्थिमद्धे ३०। तओ अहाउयं पालयंति तंजहा—अरहंता चक्कवट्टी बल-देववासुदेवा ३१। तओ मज्झिममाउयं पालयंति तंजहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ३२ ॥सू० १४३॥ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं ठिती पन्नता। बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता ॥सू० १४४॥ अह भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एतेसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउ-त्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं केवइयं कालं जोणि संचिट्ठति ?, गोयमा ! जहरणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण संवच्छराइं, तेणं परं जोणी पमिलायति, तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदो पन्नत्तो ॥सू० १४५॥ दोचाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिरिण सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता १, तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए

जहन्नेणं णेरइयाणं तिन्नि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता २ ॥सू० १४६॥ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पन्नत्ता तंजहा–पढमाए दोच्चाए तच्चाए, तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति–पढमाए दोच्चाए तच्चाए ॥सू० १४७॥ ततो लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पन्नत्ता तंजहा–अप्पइट्ठाणे णरए जंबुद्दीवे दीवे सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे, तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पन्नत्ता तंजहा–सीमंतए णं णरए समयक्खेत्ते ईसीपब्भारा पुढवी ॥सू० १४८॥ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं पन्नत्ता तंजहा–कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे ३, तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पन्नत्ता तंजहा–लवणे कालोदे सयंभुरमणे ॥सू० १४९॥ तओ लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गुणा निम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति; तंजहा–रायाणो मंडलीया जे य महारंभा कोडुंबी । तओ लोए सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा–रायाणो परिचत्तकामभोगा सेणावती पसत्थारो ।सू० १५०॥ बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पन्नत्ता तंजहा–किण्हा नीला लोहिया, आणयपाणयारणच्चुतेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥सू० १५१॥ तओ पन्नत्तीओ कालेणं अहिज्जंति, तंजहा–चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती ॥सू० १५२॥ तिट्ठाणस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

इति त्रिस्थानकस्य प्रथमोद्देशकः ॥३–१॥

॥ अथ अध्ययनं ३ उद्देशकः २ ॥

तिविहे लोगे पन्नत्ते तंजहा-णामलोगे ठवणालोगे दव्वलोगे १। तिविधे लोगे पन्नत्ते तंजहा-णाणलोगे दंसणलोगे चरित्तलोगे २। तिविहे लोगे पन्नत्ते तंजहा-उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलोगे ३ ॥सू० १५३॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो ततो परिसातो पन्नत्ताओ तंजहा—समिता चंडा जाया, अब्भिंतरिता समिता मज्झिमता चंडा बाहिरता जाया १। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणिताणं देवाणं ततो परिसातो पन्नत्ताओ तंजहा—समिता जहेव चमरस्स २। एवं तायत्तीसगाणवि, लोगपालाणं तुंबा तुडिया पव्वा, एवं अग्गमहिसीणवि, बलिस्सवि एवं चेव, जाव अग्गमहिसीणं ३। धरणस्स य सामाणियतायत्तीसगाणं च समिता चंडा जाता, लोगपालाणं अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा, जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं ४। कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरणो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तंजहा—ईसा तुडिया दढरहा ५। एवं सामाणियअग्गमहिसीणं, एवं जाव गीयरतिगीयजसाणं ६। चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो ततो परिसातो पन्नत्ताओ तंजहा--तुंबा तुडिया पव्वा ७। एवं सामाणियअग्गमहिसीणं, एवं सूरस्सवि ८। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो ततो परिसाओ पन्नत्ताओ तंजहा--समिता चंडा जाया ९। एवं जहा चमरस्स जाव अग्गमहिसीणं, एवं जाव अच्चुतस्स लोगपालाणं १० ॥सू० १५४॥ ततो जामा पन्नत्ता तंजहा—पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, तिहिं जामेहिं आता केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणताते—पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे। ततो वया पन्नत्ता तंजहा—पढमे वते मज्झिमे वते पच्छिमे वए, तिहिं वतेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए,

तंजहा-पढमे वते मज्झिमे वते पच्छिमे वते, एसो चेव गमो णेयव्वो, जाव केवलनाणंति ॥सू० १५५॥ तिविधा बोधी पन्नत्ता तंजहा--णाणबोधी दंसणबोधी चरित्तबोधी १। तिविहा बुद्धा पन्नत्ता तंजहा--णाणबुद्धा दंसणबुद्धा चरित्तबुद्धा २। एवं मोहे ३। मूढा ४ ॥सू० १५६॥ तिविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा--इहलोगपडिबद्धा परलोगपडिबद्धा दुहतोपडिबद्धा १। तिविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा--पुरतो पडिबद्धा मग्गतो पडिबद्धा दुहओ पडिबद्धा २। तिविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा--तुयावइत्ता पुयावइत्ता बुआवइत्ता ३। तिविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा--ओवातपव्वज्जा अक्खातपव्वज्जा संगारपव्वज्जा ४॥सू० १५७॥ तओ णियंठा णोसंणणोवउत्ता पन्नत्ता तंजहा--पुलाए णियंठे सिणाए १। ततो णियंठा सन्नणोसणणोवउत्ता पन्नत्ता तजहा--बउसे पडिसेवणाकुसीले कसायकुसीले २॥सू० १५८॥ तओ सेहभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा--उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना, उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहन्ना सत्तराइंदिया २। ततो थेरभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा-जाइथेरे सुत्तथेरे परियायथेरे, सट्ठिवासजाए समणे णिग्गंथे जातिथेरे, ठाणंग(ठाण)समवायधरे णं समणे णिग्गंथे सुयथेरे, वीसवासपरियाए णं समणे णिग्गंथे परियायथेरे ३ ॥सू० १५९॥ ततो पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--सुमणे दुम्मणे णोसुमणेणोदुम्मणे १। ततो पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--गंता णामेगे सुमणे भवति, गंता णामेगे दुम्मणे भवति, गंता णामेगे णोसुमणेणोदुम्मणे भवति २। तओ पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जामीतेगे सुमणे भवति, जामीतेगे दुम्मणे भवति, जामीतेगे णोसुमणेणोदुम्मणे भवति ३। एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति ३-४। ततो पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--अगंता णामेगे सुमणे भवति ३-५। ततो पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-ण जामि एगे सुमणे भवति ३-६। ततो पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--ण जाइस्सामि एगे सुमणे भवति ३-७। एवं आगंता णामेगे सुमणे

भवति ३-८। एमितेगे सुमणो भवति ३। एस्सामिति एगे सुमणो भवति ३ एवं एएणं अभिलावेणं--'गंता य अगंता(य) १ आगंता खलु तथा अणा गंता २। चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता ३, णिसिितिता चेव नो चेव ४ ॥ १ ॥ हंता य अहंता य ५ छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता ६। बूतित्ता अबूतित्ता ७ भासित्ता चेव णो चेव ८ ॥ २ ॥ दच्चा य अदच्चा य ९ भुंजित्ता खलु तथा अभुंजित्ता १० । लंभित्ता अलभित्ता ११ पिइत्ता चेव नो चेव १२ ॥ ॥ ३ ॥ सुतित्ता असुतित्ता १३ जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता १४ ॥ जतित्ता अजयित्ता य १५ पराजिणित्ता य नो चेव १६ ॥ ४ ॥ सद्दा १७ रूवा १८ गंधा १९ रसा य २० फासा २१ (२१×६=१२६+१=१२७) तहेव ठाणा य। निस्सीलस्स गरहिता पसत्था पुण सीलवतस्स ॥ ५ ॥ एवमिक्केक्के तिन्नि उ तिन्नि उ आलावगा भाणियव्वा, सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणो भवति ३ एवं सुणेमीति ३ सुणिस्सामीति ३, एवं असुणेत्ता णामेगे सुमणो भवति ३ न सुणेमीति ३ ण सुणिस्सामीति ३, एव रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं, एक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा १२७ आलावगा भवंति ॥सू० १६०॥ तओ ठाणा णिस्सीलस्स निव्वयस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता भवंति तंजहा–अस्सि लोगे गरहिते भवइ उववाते गरहिए भवइ आयाती गरहिता भवति, ततो ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स सुमेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति, तंजहा–अस्सिं लोगे पसत्थे भवति उववाए पसत्थे भवति आजाती पसत्था भवति ॥सू० १६१॥ तिविधा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा–इत्थी पुरिसा नपुंसगा १। तिविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–सम्मद्दिट्ठी मिच्छा-दिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी य २। अहवा तिविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–पज्ज-त्तगा अपज्जत्तगा णोपज्जत्तगाणोऽपज्जत्तगा ३। एवं–सम्मद्दिट्ठिपरित्तापज्जत्तग सुहुमसन्निभविया य ४ ॥सू० १६२॥ तिविधा लोगठिती पन्नत्ता तंजहा–

आगासपइट्ठिए वाते वातपतिट्ठिए उदही उदहिपतिट्ठिया पुढवी, तओ दिसाओ पन्नत्ताओ तंजहा–उद्धा अहा तिरिया १, तिहि दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति, उड्ढाए अहाते तिरियाते २, एवं आगती ३ वक्कंती ४ आहारे ५ वुड्डी ६ णिवुड्डी ७ गतिपरियाते ८ समुग्घाते ९ कालसंजोगे १० दंसणाभिगमे ११, णाणाभिगमे १२, जीवाभिगमे १३, तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे पन्नते तंजहा–उड्ढाते अहाते तिरियाते १४, एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साणवि ॥सू० १६३॥ तिविहा तसा पन्नत्ता तंजहा-तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा १। तिविधा थावरा पन्नत्ता तंजहा–पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया २ ॥सू० १६४॥ ततो अच्छेज्जा पन्नत्ता तंजहा–समये पदेसे परमाणू १। एवमभेज्जा २। अडज्झा ३। अगिज्झा ४। अणड्ढा ५। अमज्झा ६। अपएसा ७। ततो अविभतिमा पन्नत्ता तंजहा- समते पएसे परमाणू ८ ॥सू० १६५॥ अज्जोति समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी–किंभया पाणा ? समणाउसो ?, गोयमाती समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी- णो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा, तं जदि णं देवाणुप्पिया एयमट्ठं णो गिलायंति परिकहित्तते तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाती समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी–दुक्खभया पाणा समणाउसो ! १। से णं भंते ! दुक्खे केण कडे ? जीवेणं कडे पमादेणं २। से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जति ? अप्पमाएणं ३ ॥सू० १६६॥ अन्नउत्थिता णं भंते ! एवं आतिक्खंति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति कहन्नं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जति ? तत्थ जा सा कडा कज्जइ नो तं पुच्छंति, तत्थ जा सा कडा नो कज्जति, नो तं पुच्छंति, तत्थ जा सा अकडा नो

कज्जति नो तं पुच्छंति, तत्थ जा मा अकडा कज्जति तं पुच्छंति, से एवं वत्तव्वं सिता —अकिच्चं दुक्खं अफुसं दुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेदेंतित्ति वत्तव्वं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पन्नवेमि एवं परूवेमि—किच्चं दुक्खं फुस्सं दुक्खं कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु २ पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वं सिया ॥सू० १६७॥

तइयठाणस्स बीओ उद्देसओ समत्तो ॥३-२॥

॥ इति त्रिस्थानकस्य द्वितीयोद्देशकः ॥३-२ ॥

॥ अथ अध्ययनं ३ :: उद्देशकः ३ ॥

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोतेज्जा णो पडिक्कमेज्जा णो णिंदिज्जा णो गरहिज्जा णो विउट्टेज्जा णो विसोहेज्जा णो अकरणाते अब्भुट्ठेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तंजहा—अकरिंसु वाऽहं करेमि वाऽहं करिस्सामि वाऽहं १ । तिहिं ठाणेहि मायी मायं कट्टु णो आलोतेज्जा णो पडिक्कमिज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा अकित्ती वा मे सिता अवण्णे वा मे सिया अविणते वा मे सिता २ । तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा तंजहा—कित्ती वा मे परिहातिस्सति जसो वा मे परिहातिस्सति पूयासक्कारे वा मे परिहातिस्सति ३ । तिहि ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तंजहा—मायिस्स णं अस्सिं लोगे गरहिते भवति उववाए गरहिए भवति आयाती गरहिया भवति ४ । तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तंजहा—अमायिस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति उववाते पसत्थे भवइ आयाई पसत्था भवति ५ । तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा,

तंजहा-णाणट्ठताते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते ६ ॥सू० १६८॥ ततो पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे ॥सू० १६६॥ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा ततो वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तंजहा-जंगिते भंगिते खोमिते १। कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा ततो पायाइं धारित्तते वा परिहरित्तते वा, तंजहा-लाउयपादे वा दारुपादे वा मट्टियापादे वा २ ॥सू० १७०॥ तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा, तंजहा-हिरियत्तितं दुगुंछापत्तियं परीसहवत्तियं ॥सू० १७१॥ तओ आयरक्खा पन्नत्ता तंजहा-धम्मियाते पडिचोयणाते पडिचोएत्ता भवति तुसिणीतो वा सित्ता उट्ठित्ता वा आताते एगंतमंतमवक्कमेज्जा णिग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पंति ततो वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तते, तंजहा-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥सू० १७२॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मियं संभोगियं विसंभोगियं करेमाणे णातिक्कमति तंजहा—सतं वा दट्ठुं, सड्ढस्स वा निसम्म, तच्चं मोसं आउट्टति चउत्थं नो आउट्टति ॥सू० १७३॥ तिविधा अणुन्ना पन्नत्ता तंजहा—आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताते। तिविधा समणुन्ना पन्नत्ता तंजहा-आयरियत्ताते उवज्झायत्ताते गणित्ताते, एवं उवसंपया, एवं विजहणा ॥सू० १७४॥ तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा-तव्वयणे तदन्नवयणे णोअवयणे १। तिविहे अवयणे पन्नत्ते तंजहा-णोतव्वयणे णो तदन्नवयणे अवयणे २। तिविहे मणे पन्नत्ते तंजहा- तम्मणे तयन्नमणे णोअमणे ३। तिविहे अमणे पन्नत्ते तंजहा-णोतंमणे णोतयन्नमणे, अमणे ४ ॥सू० १७५॥ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाते सिता, तंजहा—तंसिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, देवा णागा जक्खा भूता णो सम्ममाराहिता भवंति, तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणतं वासितुकामं अन्नं देसं साहरंति अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणतं वासितुकामं वाउकाए विधुणाति, इच्चेतेहिं तिहिं

ठाणेहिं अप्पवुट्ठिगाते सिता १। तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाते सिता, तंजहा–तंसि च णं देसंसि वा पतेसंसि वा बहवे उदगजोणिता जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जति, देवा जक्खा नागा भूता सम्ममाराहिता भवंति, अन्नत्थ समुट्ठितं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं दमं साहरंति अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासितुकामं णो वाउआतो विधुणाति, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहि महावुट्ठिकाए सिआ २ ॥सू० १७६॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे दवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए, तंजहा–अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सते कामभोगे णो आढाति णो परियाणाति णो अट्ठं बंधति णो णियाणं पगरेति णो ठिइपकप्पं पकरेति, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते जाव अज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति–इयण्हि न गच्छं मुहुत्तं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते १। तिहिं ठाणेहिं देवे अहुणोववन्ने देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचातेइ हव्वमागच्छित्तते–अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति–अत्थि णं मम माणुस्सते भवे आयरितेति वा उवज्झातेति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मते इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसामि सक्कारेमि

सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति–एस णं माणुस्सते भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अतिदुक्करदुक्करकारगे तं गच्छामि णं भगवंतं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने. तस्स णमेवं भवति–अत्थि णं मम माणुस्सते भवे माताति वा जाव सुण्हाति वा तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इमं एतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमन्नागयं, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते संचातेति हव्वमागच्छित्तते २ ॥सू० १७७॥ ततो ठाणाइं देवे पीहेज्जा तंजहा–माणुसं(सगं) भवं १ आरिते खेत्ते जम्मं २ सुकुलपच्चायातिं ३, १। तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा, तंजहा–अहो णं मते संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरियउवज्झातेहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो बहुते सुते अहीते १, अहो णं मते इहलोगपडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसितेणं णो दीहे सामन्नपरियाते अणुपालिते २, अहो णं मते इड्ढिरससायगरुएणं भोगामिसगिद्धेणं णो विसुद्धे चरित्ते फासिते ३, इच्चेतेहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा २ ॥सू० १७८॥ तिहिं ठाणेहिं देवे चतिस्सामित्ति जाणाइ, तंजहा–विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणिं जाणित्ता, ३ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं चतिस्सामित्ति जाणाइ १। तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा, तंजहा–अहो णं मए इमातो एतारूवातो दिव्वातो देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुतीतो दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्तातो लद्धातो अभिसमण्णागतातो चतियव्वं भविस्सति १, अहो णं मते माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाते आहारो आहारेयव्वो भवि-

स्सति २, अहो णं मते कलमलजंबालाते असुतीते उव्वेयणिताते भीमाते गब्भवसहीते वसियव्वं भविस्सइ, इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं वेदे उव्वेमागच्छेज्जा ३ ॥सू० १७९॥ तिमंठिया विमाणा पन्नत्ता तंजहा—वट्टा तंसा चउरंसा ३, तत्थ णं जे ते वट्टा विमाणा ते णं पुक्खरकन्निया संठाणसंठिता सव्वश्रो समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पन्नत्ता, तत्थ णं जे ते तंसा विमाणा ते णं सिंघाडगसंठाणसंठिता दुहतो पागारपरिक्खित्ता, एगतो वेतिता परिक्खित्ता तिदुवारा पन्नत्ता, तत्थ णं जे ते चउरंसविमाणा ते णं अक्खाडगसंठाणसंठिता, सव्वतो समंता वेतितापरिक्खित्ता, चउदुवारा पन्नता १। तिपतिट्ठिया विमाणा पन्नत्ता तंजहा—घणोदधिपतिट्ठिता घणवातपइट्ठिया ओवासंतरपइट्ठिता २। तिविधा विमाणा पन्नत्ता तंजहा—अवट्ठिता वेउव्विता परिजाणिता ३ ॥सू० १८०॥ तिविधा नेरइया पन्नत्ता तंजहा—सम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं २७। ततो दुग्गतीतो पन्नत्ताश्रो तंजहा—णेरइयदुग्गती तिरिक्खजोणीयदुग्गती मणुयदुग्गत्ती १। ततो सुगतीतो पन्नत्ताश्रो तंजहा—सिद्धिसोगती देवसोगती मणुस्ससोगती २। ततो दुग्गता पन्नत्ता तंजहा—णेरतितदुग्गता तिरिक्खजोणितदुग्गया मणुस्सदुग्गता ३। ततो सुगता पन्नत्ता तंजहा—सिद्धसोगता देवसोग्गता मणुस्ससुग्गता ४ ॥सू० १८१॥ चउत्थभत्तितस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तंजहा—उस्सेतिमे संसेतिमे चाउलधोवणे १। छट्ठभत्तितस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा—तिलोदए तुसोदए जवोदए २। अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति ततो पाणगाइं पडिगाहित्तए, तंजहा—आयामते सोवीरते सुद्धवियडे ३। तिविहे उवहडे पन्नत्ते तंजहा—फलिओवहडे सुद्धोवहडे संसट्ठोवहडे ४। तिविहे उग्गहिते पन्नत्ते तंजहा—जं च ओगिराहति जं च साहरति जं च आसगंसि पक्खिवति ५। तिविधा ओमोयरिया पन्नत्ता तंजहा-

उवगरणोमोयरिया भत्तपाणोमोदरिता भावोमदोरिता ६ । उवगरणोमोदरिता तिविहा पन्नत्ता तंजहा—एगे वत्थे एगे पाते चियत्तोवहिसातिज्जणता ७। ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अहियाते असुभाते अक्खमाते अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तंजहा—कूअणता कक्करणता अवज्झाणता ८। ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा हिताते सुहाते खमाते णिस्सेयसाते आणुगामिअत्ताते भवंति, तंजहा—अकूअणता अकक्करणता अणवज्झाणया ९। ततो सल्ला पन्नत्ता तंजहा—मायासल्ले णियाणसल्ले मिच्छादंसणसल्ले १०। तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवति, तंजहा—आयावणताते १ खंतिखमाते २ अपाणगेणं तवो कम्मेणं ३, ११। तिमासिनं णं भिक्खूपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति ततो दत्तीओ भोअणस्स पडिगाहेत्तए ततो पाणगस्स १२। एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे ततो ठाणा अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेयसाते अणाणुगामित्ताते भवंति, तंजहा—उम्मायं वा लभिज्जा १ दीहकालीयं वा रोगायंकं पाउणेज्जा २ केवलिपन्नत्तातो वा धम्मातो भंसेज्जा ३, १३। एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स ततो ठाणा हिताते सुभाते खमाते णिस्सेसाते आणुगामितत्ताए भवंति, तंजहा--ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा १ मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा २ केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ३, १४ ॥सू० १८२॥ जंबुद्दीवे २ ततो कम्मभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा--भरहे एरवने महाविदेहे, एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ५ ॥सू० १८३॥ तिविहे दंसणे पन्नत्ते तंजहा--सम्मंद्दंसणे मिच्छद्दंसणे सम्मामिच्छदंसणे १। तिविधा रुती पन्नत्ता तंजहा--सम्मरुती मिच्छरुती सम्मामिच्छरुई २ । तिविधे पओगे पन्नत्ते तंजहा--सम्मपओगे मिच्छपओगे सम्मामिच्छपओगे ३ ॥सू० १८४॥ तिविहे ववसाए पन्नत्ते तंजहा-धम्मिते

ववसाते अधम्मिए ववसाते धम्मियाधम्मिए ववसाते ४। अथवा तिविधे ववसाते, पन्नत्ते तंजहा-पच्चक्खे पच्चतिते आणुगामिए ५ । अहवा तिविधे ववसाते पन्नत्ते तंजहा--इहलोइए परलोइए इहलोगितपरलोगिते ६। इहलोगिते ववसाते तिविहे पन्नत्ते तंजहा--लोगिते वेतिते सामतिते ७। लोगिते ववसाते तिविधे पन्नत्ते तंजहा-अत्थे धम्मे कामे ८। वेतिगे ववसाते तिविधे पन्नत्ते तंजहा--रिउव्वेदे जउव्वेदे सामवेदे ९। सामइते ववसाते तिविधे पन्नत्ते तंजहा-णाणे दंसणे चरित्ते १०। तिविधा अत्थजोणी पन्नत्ता तंजहा--सामे दंडे भेदे ११ ॥सू० १८५॥ तिविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा--पओगपरिणाता मीसापरिणाता वीससापरिणाता, तिपतिट्ठिया णरगा पन्नत्ता तंजहा--पुढविपतिट्ठिता आगासपतिट्ठिता आयपइट्ठिआ, णेगमसंगहववहाराणं पुढविपइट्ठिया उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया तिराहं सद्दणाताणं आयपतिट्ठिया ॥ सू० १८६ ॥ तिविधे मिच्छत्ते पन्नत्ते तंजहा-अकिरिता अविणाते अन्नाणे १ । अकिरिया तिविधा, पन्नत्ता तंजहा-पओगकिरिया समुदाणकिरिया अन्नाणकिरिया २ । पओगकिरिया तिविधा, पन्नत्ता तंजहा- मणपओगकिरिया वइपओगकिरिया कायपओगकिरिया ३ । समुदाणकिरिया तिविधा पन्नत्ता तंजहा--अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुभयसमुदाणकिरिता ४ । अन्नाणकिरिता तिविधा पन्नत्ता तंजहा--मतिअन्नाणकिरिया सुतअन्नाणकिरिया विभंगअन्नाणकिरिया ५ । अविणाते तिविहे पन्नत्ते तंजहा--देसच्चाती निरालंबणता नाणापेज्जदोसे ६ । अन्नाणे तिविधे पन्नत्ते तंजहा--देसराणाणे सव्वराणाणे भावन्नाणे ७ ॥सू. १८७॥ तिविहे धम्मे पन्नत्ते तंजहा--सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे १ । तिविधे उवक्कमे पन्नत्ते तंजहा--धम्मिते उवक्कमे अधम्मिते उवक्कमे धम्मिताधम्मिते उवक्कमे २ । अहवा तिविधे उवक्कमे पन्नत्ते तंजहा-आओवक्कमे परोवक्कमे तदुभयोवक्कमे ३ । एवं वेयावच्चे ४ । अणुग्गहे ५ ।

अणुसट्ठी ६, उवालंभे ७, एवमेक्केक्के तिन्नि २ आलावगा जहेव उवक्कमे ॥सू० १८८॥ तिविहा कहा, पन्नत्ता तंजहा--अत्थकहा धम्मकहा कामकहा १। तिविहे विणिच्छते पन्नत्ते तंजहा अत्थविणिच्छते धम्मविणिच्छते कामविणिच्छते २ ॥सू० १८९॥ तहारूवं णं भंते! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणता ?, सवणफला, से णं भंते! सवणे किंफले ?, णाणफले, से णं भंते! णाणे किंफले ?, विणाणफले, एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाधा अणुगंतव्वा--सवणे णाणे य विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे। अणण्हते तवे चेव वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥१॥ जाव से णं भंते! अकिरिया किंफला ?, निव्वाणफला, से णं भंते! निव्वाणे किंफले ?, सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पन्नत्ते, समणाउसो! ॥सू० १९०॥

॥ इति त्रिस्थानकस्य तृतीय उद्देशकः ॥३-३॥

॥ अथ अध्ययनं ३ :: उद्देशकः ४ ॥

पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए तंजहा-अहे आगमणगिहंसि वा अहे वियडगिहंसि वा अहे रुक्खमूलगिहंसि वा, एवमणुन्नवित्तते, उवातिणित्तते १। पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पडिलेहित्तते, तंजहा--पुढविसिला कट्ठसिला अहासंथडमेव, एवं अणुण्णवित्तए २ ॥सू० १९१॥ तिविहे काले पन्नत्ते तंजहा-तीए पडुप्पणे अणागए १। तिविहे समए पन्नत्ते तंजहा-तीते पडुप्पन्ने अणागए २। एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव वाससतसहस्से पुव्वंगे पुव्वे जाव ओसप्पिणी ३। तिविधे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते तंजहा-तीते पडुप्पन्ने अणागते ४ ॥सू० १९२॥ तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा--एगवयणे दुवयणे बहुवयणे १। अहवा तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा-इत्थिवयणे पुंवयणे नपुंसगवयणे २। अहवा

तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा--तीतवयणे पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे ३ ॥ सू० ११३॥ तिविहा पन्नवणा पन्नत्ता तंजहा- णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्नवणा । तिविधे सम्मे पन्नत्ते तंजहा- नाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्त-सम्मे २ । तिविधे उवघाते पन्नत्ते तंजहा--उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते एसणो-वघाते ३। एवं विसोही ४ ॥सू० ११४॥ तिविहा आराहणा पन्नत्ता तंजहा—णाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा ५। णाणाराहणा तिविहा पन्नत्ता तंजहा—उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ६। एवं दंसणाराहणावि ७। चरित्ताराहणावि ८। तिविधे संकिलेसे पन्नत्ते तंजहा—नाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्त-संकिलेसे ९। एवं असंकिलेसेवि १०। एवमतिक्कमेऽवि ११। वइक्कमेऽवि १२। अइयारेऽवि १३। अणायारेऽवि १४। तिण्हमतिक्कमाणं आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदिज्जा गरहिज्जा जाव पडिवज्जिज्जा, तंजहा-णाणातिक्कमस्स दंसणातिक्कमस्स चरित्तातिक्कमस्स १५। एवं वइक्कमाणऽवि १६। अतिचाराणं १६। अणायाराणं १८ ॥सू० ११५॥ तिविधे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे ११ ॥सू० ११६॥ जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं ततो अकम्मभूमिओ पन्नत्ताओ तंजहा—हेम-वते हरिवासे देवकुरा १। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमिओ पन्नत्ताओ तंजहा-उत्तरकुरा रम्मगवासे एरण्णवए २। जंबू-मंदरस्स दाहिणेणं ततो वासा पन्नत्ता तंजहा--भरहे हेमवए हरिवासे ३। जंबूमंदरस्स उत्तरेणं ततो वासा पन्नत्ता तंजहा-- रम्मगवासे हेरन्नवते एरवए ४। जंबूमंदरदाहिणेणं ततो वासहरपव्वता पन्नत्ता तंजहा--चुल्लहिमवंते महाहिमवंते णिसढे ५। जंबूमंदरउत्तरेणं तओ वासहरपव्वता पन्नत्ता तंजहा—णीलवंते रुप्पी सिहरी ६। जंबूमंदरदाहिणेणं तओ महादहा पन्नत्ता तंजहा-पउमदहे महापउमदहे तिगिंछदहे ७। तत्थ णं ततो देवताओ महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति तंजहा-सिरी हिरी धिती ८। एवं

उत्तरेणवि, णवरं-केसरिदहे महापोंडरीयदहे पोंडरीयदहे ९। देवताओ कित्ती बुद्धी लच्छी १०। जंबूमंदरदाहिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासधरपव्वताओ पउमदहाओ महादहाओ ततो महाणतीओ पवहंति, तंजहा-गंगा सिंधू रोहितंसा ११। जंबूमंदरउत्तरेणं सिहरीओ वासहरपव्वताओ पोंडरीयद्दहाओ महादहाओ तओ महानदीओ पवहंति, तंजहा-सुवन्नकूला रत्ता रत्तवती १२। जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताए महाणतीते उत्तरेणं ततो अंतरणतीओ पन्नत्ताओ तंजहा-गाहावती दहवती पंकवती १३। जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महाणतीते दाहिणेणं ततो अंतरणतीतो पन्नत्ताओ तंजहा-तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला १४। जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओदाते महाणईए दाहिणेणं तओ अंतरणतीतो पन्नत्ताओ तंजहा-खी(खा)रोदा सीतसोता अंतोवाहिणी १५। जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोदाए महाणदीए उत्तरेणं तओ अंतरणदीओ पन्नत्ताओ तंजहा-उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिनी १६। एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि अकम्मभूमीतो आढवेत्ता जाव अंतरनदीओत्ति णिरवसेसं भाणियव्वं, जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं १७ ॥सू० ११७॥ तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा, तंजहा-अधे णमिमीसे रयणप्पभाते पुढवीते उराला पोग्गला णिवतेज्जा, तते णं ते उराला पोग्गला णिवतमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा १। महोरते वा महिड्ढीए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते अहे उम्मज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीते चलेज्जा २। णागसुवन्ना(देवासुरा)ण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसं पुढवीते चलेज्जा ३। इच्चेतेहिं तिहि ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा १। तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, तंजहा-अधे णं इमीसे रतणप्पभाते पुढवीते घणवाते गुप्पेज्जा, तए णं से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा, तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा, देवे वा महिड्ढिते जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स

माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरितं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालिज्जा, देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा २ ।।सू० ११८।। तिविधा देवकिब्बिसिया पन्नत्ता तंजहा--तिपलिओवमट्ठितीता १, तिसागरोवमट्ठितीता २। तेरससागरोवमट्ठितीया ३--१। कहि णं भंते ! तिपलितोवमट्ठितीता देवकिब्बिसिया परिवसंति ? उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठितीया देवा किब्बिसिया परिवसंति २। कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठितीता देवा किब्बिसिया परिवसंति ? उप्पिं सोहंमीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठिं सणंकुमारमाहिंदे कप्पे एत्थ णं तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ३। कहि णं भंते । तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिता परिवसंति ? उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठितीता देवकिब्बिसिया परिवसंति ४ ।।सू० ११९।। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाते देवाणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाते देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता २। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाते देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ३ ।।सू० २००।। तिविहे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा--णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते १। ततो अणुग्घातिमा पन्नत्ता तंजहा--हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं (परि)सेवेमाणे राईभोयणं (परि)भुंजमाणे २। तओ पारंचिता पन्नत्ता तंजहा--दुट्ठपारंचिते पमत्तपारंचिते अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिते ३। ततो अणवट्ठप्पा पन्नत्ता तंजहा--साहंमियाणं तेणं करेमाणे, अन्नधम्मियाणं तेणं करेमाणे, ४ हत्थातालं दलयमाणे (अत्थायाणं दलमाणे हत्थालंबं दलमाणे) ४ ।। सू० २०१ ।। ततो णो कप्पंति पव्वावेत्तए, तंजहा--पंडए वातिते (वाहिये) कीवे १। एवं मुंडावित्तए

२ । सिक्खावित्तए ३ । उवट्ठावित्तए ४ । संभुंजित्तते ५ । संवासित्तते ६ ॥सू० २०२॥ ततो अवायणिज्जा पन्नत्ता तंजहा–अविणीए विगतीपडिबद्धे अविओसितपाहुडे १ । तओ कप्पंति वातित्तते, तंजहा–विणीए अविगतीपडिबद्धे विउसियपाहुडे २ । तओ दुसन्नप्पा पन्नत्ता तंजहा–दुट्ठे मूढे वुग्गाहिते ३ । तओ सुसन्नप्पा पन्नत्ता तंजहा–अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिते ४ ॥सू० २०३॥ ततो मडलिया पव्वत्ता पन्नत्ता तंजहा–माणुसुत्तरे कुंडलवरे रुअगवरे ॥सू० २०४॥ ततो महतिमहालया पन्नत्ता तंजहा–जंबुद्दीवे मंदरे मंदरेसु, सयंभुरमणे समुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु ॥सू० २०५॥ तिविधा कप्पठिती पन्नत्ता तंजहा–सामाइयकप्पठिती छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठिती निव्विसमाणकप्पट्ठिती १। अहवा तिविहा कप्पट्ठिती पन्नत्ता तंजहा-णिव्विट्ठकप्पट्ठिती जिणकप्पठिती थेरकप्पठिती २ ॥२०६॥ नेरइयाणं ततो सरीरगा पन्नत्ता तंजहा–वेउव्विते तेयए कम्मए १ । असुरकुमाराणं ततो सरीरगा पन्नत्ता तंजहा–एवं चेव २ । एवं सव्वेसिं देवाणं ३ । पुढविकाइयाणं ततो सरीरगा पन्नत्ता तंजहा–ओरालिते तेयए कम्मते ४ । एवं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं ५ ॥ सू० २०७ ॥ गुरुं पडुच्च ततो पडिणीता पन्नत्ता तंजहा–आयरियपडिणीते उवज्झायपडिणीते थेरपडिणीते १ । गतिं पडुच्च ततो पडिणीया पन्नत्ता तंजहा–इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओ(उभओ) लोगपडिणीए २ । समूहं पडुच्च ततो पडिणीता पन्नत्ता तंजहा–कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीते ३ । अणुकंपं पडुच्च ततो पडिणीया पन्नत्ता तंजहा–तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए ४ । भावं पडुच्च ततो पडिणीता पन्नत्ता तंजहा–णाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए ५ । सुयं पडुच्च ततो पडिणीता पन्नत्ता तंजहा–सुत्तपडिणीते अत्थपडिणीते तदुभयपडिणीए ६ ॥सू० २०८॥ ततो पितियंगा पन्नत्ता

तंजहा--अट्ठी अट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहे (नहरोमे) १ । तओ माउयंगा पन्नत्ता तंजहा--मंसे सोणिते मत्थुलिंगे २ ॥सू० २०९॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तंजहा-कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिज्जिस्सामि ? कया णमहमेक्कल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि ? कया णमहमपच्छिममारणंतितसंलेहणाभूसणाभूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि, ? एवं स मणसा स वयसा स कायसा पहारेमाणे (पागडेमाणे) निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति १ । तिहिं ठाणेहिं समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तंजहा--कया णमहमप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि ? १ कया णं अहं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारितं पव्वइस्सामि ? २ कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाभूसणाभूसिते भत्तपाणपडियातिक्खते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ? ३, एवं स मणसा स वयसा स कायसा पागडेमाणे [जागरमाणे] समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति २ ॥सू० २१०॥ तिविहे पोग्गलपडिघाते पन्नत्ते तंजहा-परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहन्निज्जा लुक्खत्ताते वा पडिहणिज्जा लोगंते वा पडिहन्निज्जा ॥सू० २११॥ तिविहे चक्खू पन्नत्ता तंजहा-एगचक्खू बिचक्खू तिचक्खू, छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू, देवे बिचक्खू तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पन्ननाणदंसणधरे से णं तिचक्खू त्ति वत्तव्वं सिता ॥सू० २१२॥ तिविधे अभिसमागमे पन्नत्ते तंजहा--उड्ढं अहं तिरियं, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जति से णं तप्पढमताते उड्ढमभिसमेति ततो तिरियं ततो पच्छा अहे, अहोलोगे णं दुरभिगमे पन्नत्ते समणाउसो ! ॥सू० २१३॥ तिविधा इड्ढी पन्नत्ता तंजहा-देविड्ढी राइड्ढी गणिड्ढी १। देविड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा--विमाणिड्ढी विगुव्वणिड्ढी परियारणिड्ढी २। अहवा देविड्ढी

तिविहा पन्नत्ता तंजहा--सचित्ता अचित्ता मीसिता ३। राइड्ढी तिविधा पन्नत्ता तंजहा--रन्नो अतियाणिड्ढी रन्नो निज्जाणिड्ढी रणणो बलवाहणकोसकोट्ठागारिड्ढी ४। अहवा रातिड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा--सचित्ता अचित्ता मीसिता ५। गणिड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा--णाणिड्ढी दंसणिड्ढी चरित्तिड्ढी ६। अहवा गणिड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा--सचित्ता अचित्ता मीसिया ७ ॥सू० २१४॥ ततो गारवा पन्नत्ता तंजहा--इड्ढीगारवे रसगारवे सातागारवे ॥सू० २१५॥ तिविधे करणे पन्नत्ते तंजहा--धम्मिते करणे अधम्मिए करणे धम्मिताधम्मिए करणे ॥सू० २१६॥ तिविहे भगवता धम्मे पन्नत्ते तंजहा-सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति जया सुज्झातियं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झितिसुज्झातिते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं भगवता धम्मे पराणत्ते ॥सू० २१७॥ तिविधा वावत्ती पन्नत्ता तंजहा--जाणू अजाणू वितिगिच्छा, एवमज्झोववज्जणा परियावज्जणा ॥सू० २१८॥ तिविधे अंते पन्नत्ते तंजहा--लोगंते वेयंते समयंते ॥सू० २१९॥ ततो जिणा पन्नत्ता तंजहा--ओहिणाणजिणे मणपज्जवणाणजिणे केवलणाणजिणे १। ततो केवली पन्नत्ता तंजहा--ओहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केवलनाणकेवली २। तओ अरहा पन्नत्ता तंजहा-ओहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा ३ ॥सू. २२०॥ ततो लेसाओ दुब्भिगंधाओ पन्नत्ताओ तंजहा--कराहलेसा णीललेसा काउलेसा १। तओ लेसाओ सुब्भिगंधातो पन्नत्ताओ तंजहा--तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा २। एवं दोग्गतिगामिणीओ ३। सोगतिगामिणीओ ४। संकिलिट्ठाओ ५। असंकिलिट्ठाओ ६। अमणुन्नाओ ७ मणुन्नाओ ८। अविसुद्धाओ ९। विसुद्धाओ १०। अप्पसत्थाओ ११। पसत्थाओ १२। सीतलुक्खाओ १३। णिद्धुराहाओ १४ ॥सू० २२१॥ तिविहे मरणे पन्नत्ते तंजहा-बालमरणे पंडियमरणे बालपंडियमरणे १। बालमरणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा-ठितलेसे

संकिलिट्ठलेसे पज्जवजातलेसे २। पंडियमरणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा-ठितलेसे असंकिलिट्ठलेसे पज्जवजातलेसे ३। बालपंडितमरणे तिविधे पन्नत्ते तंजहा--ठितलेस्से असंकिलिट्ठलेसे अपज्जवजातलेसे ४ ॥सू० २२२॥ ततो ठाणा अव्ववसितस्स अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेसाते अणाणुगामियत्ताते भवंति, तंजहा--से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ १। से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारितं पव्वतिते पंचहिं महव्वएहिं संकिते जाव कलुससमावन्ने पंच महव्वताइं नो सद्दहति जाव णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति २। से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिने छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ ३-१। ततो ठाणा ववसियस्स हिताते जाव आणुगामितत्ताते भवंति, तंजहा-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते जाव नो कलुससमावन्ने णिग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोतेति से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति १। से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए णिक्कंखीए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति २। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिते जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिअ २ अभिभवंति ३-२ ॥सू० २२३॥ एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, तंजहा—घणोदधिवलएणं घणवातवलएणं तणुवायवलतेणं ॥सू० २२४॥ णेरइया णं उक्कोसेणं तिसमतितेणं विग्गहेणं उव-

वज्जंति, एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥सू० २२५॥ खीणमोहस्स णं अरहओ ततो कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तंजहा–नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतरातियं ॥सू० २२६॥ अभितीणक्खत्ते तितारे पन्नत्ते १ एवं सवणो २ अस्सिणी ३ भरणी ४ मगसिरे ५ पूसे ६ जेट्ठा ७ ॥सू० २२७॥ धम्मातो णं अरहाओ संति अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥सू० २२८॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमि १। मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते २। एवं पासेवि ३ ॥सू० २२९॥ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवातीणं जिण इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था ॥सू० २३०॥ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था तंजहा–संती कुंथू अरो ॥सू० २३१॥ ततो गेविज्जविमाणपत्थडा पन्नत्ता तंजहा–हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उपरिमगेविज्जविमाणपत्थडे १। हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तंजहा–हेट्ठिम २ गेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे २। मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तंजहा–मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जविमाणपत्थडे मज्झिम२ गेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जविमानपत्थडे ३। उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तंजहा–उवरिमहेट्ठिमगेविज्जविमानपत्थडे उवरिममज्झिमगेविज्जविमानपत्थडे उवरिम २ गेविज्जविमाणपत्थडे ॥सू० २३२॥ जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणिंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा–इत्थिणिव्वत्तिते पुरिसनिव्वत्तिए णपुंसगनिव्वत्तिते, एवं चिणउवचिणबंधउदीरवेद तह णिज्जरा चेव ॥सू० २३३॥ तिपतेसिता खंधा

अणंता पण्णत्ता, एवं जाव तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता ॥सू० २३४॥ तिट्ठाणं समत्तं ततियं अज्झयणं समत्तं ॥

इति त्रिस्थानकस्य चतुर्थ उद्देशकः ३-४॥ इति तृतीयं त्रिस्थानाध्ययनम् ॥३॥

॥ अथ चतुःस्थानकाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

चत्तारि अंतकिरियातो पन्नत्ताओ तंजहा—तत्थ खलु पढमा इमा अंतकिरिया—अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसज्जाते दीहेणं परितातेणं सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी, पढमा अंतकिरिया १, अहावरा दोच्चा अंतकिरिया, महाकम्मे पच्चाजाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिते, संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी, तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति तहप्पगारा वेयणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परितातेणं सिज्झति जाव अंतं करेति जहा से गतसूमाले अणगारे, दोच्चा अंतकिरिया २, अहावरा तच्चा अंतकिरिया, महाकम्मे पच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते, जहा दोच्चा, नवरं दीहेणं परितातेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी, तच्चा अंतकिरिया ३, अहावरा चउत्था अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते संजमबहुले जाव तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए णिरुद्धेणं परितातेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा सा मरुदेवा भगवती, चउत्था अंतकिरिया ४

॥सू० २३५॥ चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा--उन्नए नामेगे उन्नए १ उन्नते नाममेगे पणाते २ पणाते नाममेगे उन्नते ३ पणाते नाममेगे पणाते ४, १ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-उन्नते नामेगे उन्नते, तहेव जाव पणाते नामेगे पणाते २ । चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा--उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणाए १ उराणए नाममेगे पणातपरिणाते २ पणाते णाममेगे उन्नतपरिणाते ३ पणाए नाममेगे पणायपरिणाए ४, ३ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--उन्नते नाममेगे उन्नयपरिणाते चउभंगो (चत्तारि भंगा) ४, ४ । चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा-उन्नते नामेगे उन्नतरूवे, तहेव चउभंगो ४, ५ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--उन्नए नामेगे उन्नतरूवे, तहेव चउभंगो ४, ६ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--उन्नते नाममेगे उन्नतमणो तहेव चउभंगो ४, ७ । एवं संकप्पे ८। पन्ने ९। दिट्ठी १०। सीलायारे (सीले आयारे) ११। ववहारे १२। परक्कमे १३। एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि। चत्तारि रुक्खा पन्नता तंजहा--उज्जूनाममेगे उज्जू, उज्जू नाममेगे वंके, चउभंगो ४, १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-उज्जूनाममेगे ४, २। एवं जहा उन्नतपणातेहिं गमो तहा उज्जूवंकेहिवि भाणियव्वो, जाव परक्कमे २६ ॥सू० २३६॥ पडिमापडिवन्नस्स णामणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासातो भासित्तए, तंजहा--जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुट्ठस्स वागरणी ॥सू० २३७॥ चत्तारि भासाजाता पन्नत्ता तंजहा--सच्चमेगं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं ॥सू० २३८॥ चत्तारि वत्था पन्नत्ता तंजहा--सुद्धे णामं एगे सुद्धे १ सुद्धे णामं एगे असुद्धे २ असुद्धे णामं एगे सुद्धे ३ असुद्धे णामं एगे असुद्धे ४, १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--सुद्धे णामं एगे सुद्धे, चउभंगो ४-२। एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा, चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-सुद्धे णामं एगे सुद्धमणो, चउभंगो ४, एवं संकप्पे जाव परक्कमे ॥सू० २३९॥

चत्तारि सुता पन्नत्ता तंजहा--अतिजाते अणुजाते अवजाते कुलिंगाले ॥सू० २४०॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-सच्चे नामं एगे सच्चे, सच्चे नामं एगे असच्चे ४, १। एवं परिणते जाव परक्कमे २। चत्तारि वत्था पन्नत्ता तंजहा-सुतीनामं एगे सुती, सुईनामं एगे असुई, चउभंगो ४, ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-सुती णामं एगे सुती, चउभंगो, ४। एवं जहेव सुद्धेणं (सुइणा) वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणावि जाव परक्कमे ५ ॥सू० २४१॥ चत्तारि कोरवा पन्नत्ता तंजहा--अंबपलंबकोरवे तालपलंबकोरवे वल्लिपलंबकोरवे मेंढविसाणकोरवे १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-अंबपलंबकोरवसमाणे तालपलंबकोरवसमाणे वल्लिपलंबकोरवसमाणे मेंढविसाणकोरवसमाणे २ ॥सू० २४२॥ चत्तारि घुणा पन्नत्ता तंजहा-तयक्खाते छल्लिक्खाते कट्ठक्खाते सारक्खाते १। एवामेव चत्तारि भिक्खागा पन्नत्ता तंजहा-तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे, तयक्खातसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खातसमाणे तवे पराणत्ते, सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खातसमाणे तवे पन्नत्ते, छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पराणत्ते, कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पराणत्ते २ ॥सू० २४३॥ चउव्विहा तणवणस्सतिकातिता पन्नत्ता तंजहा--अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया १ ॥सू० २४४॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववराणे णेरइए णेरइयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेइ हव्वमागच्छित्तते, अहुणोववराणे नेरइए णिरयलोगंसि समुब्भूयं (सम्मूहभूयं, समहब्भूयं) वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते १, अहुणोववन्ने णेरइए निरतलोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो २ अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते २, अहुणोववन्ने णेरइए णिरतवेयणिज्जंसि

कम्मंसि अक्खीणंसि अवेतितंसि अणिज्जिन्नंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, नो चेव णं संचाएइ ३, एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरतिते जाव नो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए ॥सू० २४५॥ कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तंजहा—एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थारा एगं चउहत्थवित्थारं ॥सू० २४६॥ चत्तारि झाणा पन्नत्ता तंजहा--अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे १। अट्टे झाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा--अ(म)मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवति १, मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगमतिसमण्णागते यावि भवति २, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवति ३, परिज्जुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवइ ४, २। अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता तंजहा- कंदणता सोतणता तिप्पणता परिदेवणता ३। रोद्दे झाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि सारक्खाणुबंधि ४। रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता तंजहा—ओसण्णदोसे बहुदोसे अन्नाण(नाणाविह) दोसे आमरणंतदोसे ५। धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे (चउप्पडोयारे) पन्नत्ता तंजहा—आणाविजते अवायविजते विवागविजते संठाणविजते ६। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता तंजहा—आणारूई णिसग्गरूई सुत्तरूई ओगाढरुती ७। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता तंजहा—वायणा पडिपुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा ८। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पन्नत्ताओ तंजहा—एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा ९। सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोआरे पन्नत्ते तंजहा—पुहुत्तवितक्के सवियारि १, एगत्तवितक्के अवियारि २, सुहु-

मकिरिते अणियट्टी ३, समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाती ४, १०। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता तंजहा—अव्वहे असम्मोह विवेगे विउस्सग्गे ११। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता तंजहा—खंती मुत्ती मद्दवे अज्जवे १२। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पन्नत्ताओ तंजहा--अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा १३ ॥सू० २४७॥ चउव्विहा देवाण ठिती पन्नत्ता तंजहा--देवे णाममेगे १ देवसिणाते नाममेगे २ देवपुरोहिते नाममेगे ३ देवपज्जलणे नाममेगे ४, १। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तजहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, देवे णाममेगे छवीते सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे छवीते सद्धिं संवासं गच्छेज्जा २ ॥सू० २४८॥ चत्तारि कसाया पन्नत्ता तंजहा—कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, १। चउपतिट्ठिते कोहे पन्नत्ते तंजहा—आतपइट्ठिते परपतिट्ठिए तदुभयपइट्ठिते अपतिट्ठिए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, २। एवं जाव लोभे, वेमाणियाणं २४, ३। चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिता, तंजहा—खेत्तं पडुच्चा वत्थुं पडुच्चा सरीरं पडुच्चा उवहिं पडुच्चा, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, ४। एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४, ६। चउव्विधे कोहे पन्नत्ते तंजहा--अणंताणुबंधिकोहे अपच्चक्खाणकोहे पच्चक्खाणावरणे कोहे संजलणे कोहे, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, ७। एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४, ८। चउव्विहे कोहे पन्नत्ते तंजहा—आभोगणिव्वत्तिए अणाभोगणिव्वत्तिते उवसंते अणुवसंते एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, ९। एवं जाव लोभे जाव वेमाणियाणं २४, १० ॥सू० २४९॥ जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु, तंजहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं २४, १। एवं चिणंति एस दंडओ, एवं

चिणिस्संति एस दंडओ, एवमेतेणं तिन्नि दंडगा, २। एवं उवचिणिंसु उवचिणंति उवचिणिस्संति ३। बंधिंसु ३ उदीरिंसु ३ वेदेंसु ३ निज्जरेंसु णिज्जरेंति निज्जरिस्संति जाव वेमाणियाणं, एवमेक्केक्के पदे तिन्नि २ दंडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्संति ४ ॥सू० २५०॥ चत्तारि पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा—समाहिपडिमा उवहाणपडिमा विवेगपडिमा विउस्सग्गपडिमा १। चत्तारि पडिमाओ पन्नत्ताओ तंजहा- भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा २। चत्तारि पडिमातो पन्नत्ताओ तंजहा—खुड्डिया मोयपडिमा महल्लिया मोयपडिमा जवमज्झा वइरमज्झा ३ ॥सू० २५१॥ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पन्नत्ता तंजहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए १। चत्तारि अत्थिकाया अरुविकाया पन्नत्ता तंजहा--धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए २ ॥सू० २५२॥ चत्तारि फला पन्नत्ता तंजहा-आमे णामं एगे आममहुरे १ आमे णाममेगे पक्कमहुरे २ पक्के णाममेगे आममहुरे ३ पक्के णाममेगे पक्कमहुरे ४, १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--आमे णाममेगे आममहुरफलसमाणे ४, २ ॥सू० २५३॥ चउव्विहे सच्चे पन्नत्ते तंजहा--काउज्जुयया भासुज्जुयया भावुज्जुयया अविसंवायणाजोगे १। चउव्विहे मोसे पन्नत्ते तंजहा- कायअणुज्जुयया भासअणुज्जुयया भावअणुज्जुयया विसंवादणाजोगे २। चउव्विहे पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा--मणपणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे उवकरणपणिहाणे ३। एवं णेरइयाणं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं २४, ४। चउव्विहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा—मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे एवं संजयमणुस्साणऽवि ५। चउव्विहे दुप्पणिहाणे, पन्नत्ते तंजहा—मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरणदुप्पणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं २४, ६। ॥सू० २५४॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—आवातभद्दते णाममेगे णो संवासभद्दते १, संवासभद्दए णाममेगे णो आवातभद्दए

२, एगे आवातभद्दतेऽवि संवासभद्दतेऽवि ३ एगे णो आवायभद्दते नो वा संवासभद्दए ४, १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—अप्पणो नाममेगे वज्जं पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्जं पासति ४, २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—अप्पणो णाममेगे वज्जं उदीरेइ णो परस्स ४, ३। अप्पणो नाममेगे वज्जं उवसामेति णो परस्स ४, ४। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—अब्भुट्ठेइ नाममेगे णो अब्भुट्ठावेति, ४, ५। एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ ४, ६। एवं सक्कारेइ ७। सम्माणेति ८। पूएइ ९। वाएइ १०। पडिपुच्छति (पडिच्छइ) ११। पुच्छइ १२। वागरेति, १३। सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे, अत्थधरे नाममेगे णा सुत्तधरे ४, १४॥सू० २५५॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पन्नत्ता तंजहा--सोमे जमे वरुणे वेसमणे १। एवं बलिस्सवि सोमे जमे वेसमणे वरुणे २। धरणस्स कालपाले कोलपाले सेलपाले संखपाले ३। एवं भूयाणंदस्स चत्तारि कालपाले कोलपाले संखपाले सेलपाले ४। वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे ५। वेणुदालिस्स चित्ते विचित्ते विचित्तपक्खे चित्तपक्खे ६। हरिकंतस्स पभे सुप्पभे पभकंते सुप्पभकंते ७। हरिस्सहस्स पभे सुप्पभे सुप्पभकंते पभकंते ८। अग्गिसिहस्स तेऊ तेउसिहे तेउकंते तेउप्पभे ९। अग्गिमाणवस्स तेऊ तेऊसिहे तेउपभे तेउकंते १०। पुन्नस्स रुए रूयंसे रूदकंते रूदप्पभे ११। एवं विसिट्ठस्स रूते रूतंसे रूतप्पभे रूयकंते १२। जलकंतस्स जले जलइते जलकंते जलप्पभे १३। जलप्पहस्स जले जलरते जलप्पहे जलकते १४। अमितगतिस्स तुरियगती खिप्पगती सीहगती सीहविक्कमगती १५। अमितवाहणस्स तुरियगती खिप्पगती सीहविक्कमगती सीहगती १६। वेलंबस्स काले महाकाले अंजणे रिट्ठे १७। पभंजणस्स काले महाकाले रिट्ठे अंजणे १८। घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णंदियावत्ते महाणंदियावत्ते १९। महाघोसस्स आवत्ते वियावत्ते महाणंदियावत्ते णंदियावत्ते २०। सक्कस्स सोमे जमे वरुणे

वेसमणे २१। ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे २२। एवं एगंतरिता जाव-ऽच्चुतस्स २३। चउव्विहा वाउकुमारा पन्नत्ता तंजहा—काले महाकाले वेलंबे पभंजणे २४ ॥सू० २५६॥ चउव्विहा देवा पन्नत्ता तंजहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया विमाणवासी ॥सू० २५७॥ चउव्विहे पमाणे पन्नत्ते तंजहा—दव्वप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे ॥सू० २५८॥ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—रूया रूयंसा सुरूवा रूयावती १। चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—चित्ता चित्तकणगा सतेरा सोतामणी २ ॥सू० २५९॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाते देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता १। ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता २ ॥सू० २६०॥ चउव्विहे संसारे पन्नत्ते तंजहा—दव्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे ॥सू० २६१॥ चउव्विहे दिट्ठिवाए पन्नत्ते तंजहा--परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगए अणुजोगे ॥सू० २६२॥ चउव्विहे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा--णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते वि(चि)त्तकिच्चपायच्छित्ते १। चउव्विहे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा--परिसेवणापायच्छित्ते संजोयणापायच्छित्ते आरोवणापायच्छित्ते पलिउंचणापायच्छित्ते २॥ सू० २६३॥ चउव्विहे काले पन्नत्ते तंजहा-पमाणकाले अहाउयनिव्वत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले ॥सू० २६४॥ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते तंजहा--वन्नपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे ॥सू० २६५॥ भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति तंजहा-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं, एवं मुसावायाओ वेरमणं, सव्वातो अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं १। सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तंजहा-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं, जाव

सङ्खाता वहिद्धादाणाओ वेरमणं २ ॥सू० २६६॥ चत्तारि दुग्गतीतो पन्नत्ताओ तंजहा-णेरइयदुग्गती तिरिक्खजोणियदुग्गती मणुस्सदुग्गती देवदुग्गई १। चत्तारि सोग्गईओ पन्नत्ताओ तंजहा--सिद्धसोगती देवसोग्गती मणुयसोग्गती सुकुलपच्चायाति २। चत्तारि दुग्गता पन्नत्ता तंजहा--नेरइयदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गता मणुयदुग्गता देवदुग्गता ३। चत्तारि सुग्गता पन्नत्ता तंजहा--सिद्धसुगता जाव सुकुलपच्चायाया ४ ॥सू० २६७॥ पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति तंजहा-- णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतरातितं १। उप्पन्ननाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेति तंजहा--वेदणिज्जं आउयं णामं गोतं २। पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तंजहा--वेयणिज्जं आउयं णामं गोतं ३ ॥सू० २६८॥ चउहि ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिता तंजहा--पासित्ता भासेत्ता सुणेत्ता संभरेत्ता ॥सू० २६९॥ चउव्विहे अंतरे पन्नत्ते तंजहा--कट्ठंतरे पम्हंतरे लोहंतरे पत्थरंतरे, एवामेव इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पन्नत्ते तंजहा—कट्ठंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्थरंतरसमाणे ॥सू० २७०॥ चत्तारि भयगा पन्नत्ता तंजहा—दिवसभयते जत्ताभयते उच्चत्तभयते कब्बालभयते ॥सू० २७१॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—संपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छन्नपडिसेवी पच्छन्नपडिसेवी णामेगे णो संपागडपडिसेवी एगे संपागडपडिसेवीवि पच्छन्नपडिसेवीवि एगे नो संपागडपडिसेवी णो पच्छन्नपडिसेवी ॥सू० २७२॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा--कणगा कणगलता चित्तगुत्ता वसुंधरा १। एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स २। वलिस्स णं वतिरोयणिंदस्स वतिरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा--मित्तगा सुभद्दा विज्जुत्ता असणी ३। एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स ४। धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवा-

लस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा ५। एवं जाव संखवालस्स ६। भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—सुणंदा सुभद्दा सुजाता सुमणा ७। एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स ८। एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स जहा भूताणंदस्स ९। एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं १०। कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा ११। एवं महाकालस्सवि १२। सुरूवस्स णं भूतिंदस्स भूतरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा १३। एवं पडिरूवस्सवि १४। पुराणभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—पुत्ता बहुपुत्तिता उत्तमा तारगा १५। एवं माणिभद्दस्सवि १६। भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—पउमा वसुमती कणगा रतणप्पभा १७। एवं महाभीमस्सवि १८। किंनरस्स णं किंनरिंदस्स किन्नररन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—वडेंसा केतुमती रतिसेणा रतिप्पभा १९। एवं किंपुरिसस्सवि २०। सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स किंपुरिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—रोहिणी णवमिता हिरी पुप्फवती २१। एवं महापुरिसस्सवि २२। अतिकायस्स णं महोरगिंदस्स महोरगरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—भुयगा भुयगवती महाकच्छा फुडा २३। एवं महाकायस्सवि २४। गीतरतिस्स णं गंधव्विंदस्स गंधव्वरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सती २५। एवं गीयजसस्सवि २६। चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा २७। एवं सूरस्सवि णवरं सूरप्पभा दोसिणाभा

अग्गिमाली पभंकरा २८। इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–विजया वेजयंती जयंती अपराजिया २९। एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स ३०। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–रोहिणी मयणा चित्ता सोमा ३१। एवं जाव वेसमणस्स ३२। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–पुढवी राती रयणी विज्जू ३३। एवं जाव वरुणस्स ३४ ॥सू० २७३॥ चत्तारि गोरसविगतीओ पन्नत्ताओ तंजहा–खीरं दहिं सप्पिं णवणीतं १। चत्तारि सिणेहविगतीओ पन्नत्ताओ तंजहा–तेल्लं घयं वसा णवणीतं २। चत्तारि महाविगतीओ पन्नत्ताओ तंजहा–महुं मंसं मज्जं णवणीतं ३ ॥सू० २७४॥ चत्तारि कूडागारा पन्नत्ता तंजहा–गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा–गुत्ते णाममेगे गुत्ते ४ २। चत्तारि कूडागारमालाओ पन्नत्ताओ तंजहा–गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा गुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा ३। एवामेव चत्तारित्थीओ पन्नत्ताओ तंजहा–गुत्ता नाममेगा गुत्तिंदिता गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिआ ४ ॥सू० २७५॥ चउविहा ओगाहणा पन्नत्ता तंजहा–दव्वोगाहणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा ॥सू० २७६॥ चत्तारि पन्नत्तीओ अंगबाहिरियातो पन्नत्ताओ तंजहा–चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती जंबुद्दीवपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती ॥सू० २७७॥ चउट्ठाणस्स पढमो उद्देसओ ॥

॥ इति चतुःस्थानकस्य प्रथमोद्देशकः ॥४-१॥

॥ अथ चतुर्थस्थानके द्वितीय उद्देशकः ॥

चत्तारि पडिसंलीणा पन्नत्ता तंजहा—कोहपडिसंलीणे माणपडिसंलीणे मायापडिसंलीणे लोभपडिसंलीणे १। चत्तारि अपडिसंलीणा पन्नत्ता तंजहा-कोहअपडिसंलीणे जाव लोभअपडिसंलीणे २। चत्तारि पडिसंलीणा पन्नत्ता तंजहा—मणपडिसंलीणे वतिपडिसंलीणे कायपडिसंलीणे इंदियपडिसंलीणे ३। चत्तारि अपडिसंलीणा पन्नत्ता तंजहा-मणअपडिसंलीणे जाव इंदिय-अपडिसंलीणे ४ ॥सू० २७८॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे दीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे १। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—दीणे णाममेगे दीणपरिणते, दीणे णामं एगे अदीणपरिणते, अदीणे णामं एगे दीणपरिणते अदीणे णाममेगे अदीणपरिणते २। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--दीणे णाममेगे दीणरूवे। ह्व ४, ३। एवं दीणमणे ४, ४। दीणसंकप्पे ४, ५। दीणपन्ने ४, ६। दीणदिट्ठी ४, ७। दीणसीलाचारे ४, ८। दीणववहारे ४, ९। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीण-परक्कमे। ह्व ४, १०। एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो, चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--दीणे णाममेगे दीणवित्ती ४-११। एवं दीणजाती ४, १२। दीणभासी ४, १३। दीणोभासी ४, १४। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-दीणे णाममेगे दीणसेवी। ४, ह्व १५। एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए ४, १६। दीणे णाममेगे दीणपरियाले। ह्व ४, १७। सव्वत्थ चउभंगो ॥सू० २७९॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--अज्जे णाममेगे अज्जे ४, १। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए ४, २। एवं अज्जरूवे ३। अज्जमणे ४। अज्जसंकप्पे ५। अज्जपन्ने ६। अज्जदिट्ठी ७। अज्जसीलाचारे ८। अज्जववहारे ९। अज्जपरक्कमे १०।

अज्जवित्ती ११। अज्जजाती १२। अज्जभासी १३। अज्जओभासी १४। अज्जसेवी १५। एवं अज्जपरियाए १६। अज्जपरियाले १७। एवं सत्तर आलावगा, जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-अज्जे णाममेगे अज्जभावे, अज्जे नाममेगे अणज्जभावे, अणज्जे नाममेगे अज्जभावे, अणज्जे नाममेगे अणज्जभावे १८ ॥सू० २८०॥ चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा--जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--जातिसंपन्ने जाव रूवसंपन्ने २। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा- जातिसंपन्ने णामं एगे नो कुलसंपराणे, कुलसंपराणे नामं एगे नो जाइसंपराणे, एगे जातिसंपराणेऽवि कुलसंपराणेऽवि, एगे नो जातिसंपराणे नो कुलसंपन्ने ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जातिसंपन्ने नाममेगे ४, ४। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा--जातिसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—जातिसंपन्ने ४,६। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा—जाइसंपन्ने नामं एगे नो रूवसंपन्ने ४,७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—जातिसंपन्ने नामं एगे नो रूवसंपन्ने, रूवसंपन्ने णाममेगे ह्व-४। ८। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा-कुलसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने ह्व-४ ।९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--कुलसंपन्ने नाममेगे नो बलसंपन्ने ह्व-४।१०। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा--कुलसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने, ह्व-४।११। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--कुलसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ह्व-४। १२। चत्तारि उसभा पन्नत्ता तंजहा-बलसंपन्ने णामं एगे नो रूवसंपराणे ह्व-।४।१३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पराणत्ता तंजहा-बलसंपराणे नाममेगे नो रूवसंपन्ने ४,१४। चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा--भद्दे मंदे मिते संकिन्ने १५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--भद्दे मंदे मिते संकिन्ने १६। चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा-

भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे नाममेगे संकिन्नमणे १७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिन्नमणे १८। चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा-मंदे णाममेगे भद्दमणे, मंदे नाममेगे मंदमणे, मंदे णाममेगे मियमणे, मदे णाममेगे संकिन्नमणे १९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--मंदे णाममेगे भद्दमणे तं चेव ४, २०। चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा-मिते णाममेगे भद्दमणे, मिते णाममेगे मंदमणे, मिते णाममेगे मियमणे, मिते णाममेगे संकिन्नमणे २१। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--मिते णाममेगे भद्दमणे, तं चेव २२। चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा--संकिगणे नाममेगे भद्दमणे, संकिन्ने नाममेगे मंदमणे, संकिन्ने नाममेगे मियमणे, संकिन्ने णाममेगे संकिन्नमणे २३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-संकिन्ने णाममेगे भद्दमणे, तं चेव जाव संकिन्ने नाममेगे संकिन्नमणे २४। मधुगुलिय-पिंगलक्खो अणुपुव्वसुजाय-दीहणंगूलो। पुरओ उदग्गधीरो सव्वंग-समाधितो भद्दो ॥१॥ चलबहल-विसमम्चमो थूलसिरो थूलएण पेएण। थूलणह-दंतवालो हरिपिंगललोयणो मंदो ॥२॥ तणुओ तणुतग्गीवो तणुयततो तणुयदंत-णहवालो। भीरु तत्थुव्विग्गो तासी य भवे मिते णामं ॥३॥ एतेसिं हत्थीणं थोवं तु जो हरति हत्थी। रूवेण व सीलेण व सो संकिन्नोत्ति नायव्वो ॥४॥ भद्दो मज्जइ सरए मंदो उण मज्जते वसंतंम्मि। मिउ मज्जति हेमंते संकिन्नो सव्वकालंमि॥ ५ ॥सू० २८१॥ चत्तारि विकहातो पन्नत्ताओ तंजहा--इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा १। इत्थिकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--इत्थीणं जाइकहा इत्थीणं कुलकहा इत्थीणं रूवकहा इत्थीणं णेवत्थकहा २। भत्तकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--भत्तस्स आवावकहा भत्तस्स णिव्वावकहा भत्तस्स आरंभकहा भत्तस्स निट्ठाणकहा ३। देसकहा चउव्विहा पन्नत्ता

तंजहा--देसविहिकहा देसविकप्पकहा देसच्छंदकहा देसनेवत्थकहा ४। रायकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--रन्नो अतिताणकहा रन्नो निज्जाणकहा रन्नो बलवाहणकहा रन्नो कोसकोट्ठागारकहा ५।चउव्विहा धम्मकहा पन्नत्ता तंजहा--अक्खेवणी विक्खेवणी संवेयणी निव्वेगणी ६। अक्खेवणी कहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--आयारअक्खेवणी ववहारअक्खेवणी पन्नत्तिअक्खेवणी दिट्ठिवातअक्खेवणी ७। विक्खेवणी कहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--ससमयं कहेइ, ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ १, परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावतित्ता भवति २, सम्मावातं कहेइ सम्मावातं कहेत्ता मिच्छावातं कहेइ ३ मिच्छावातं कहेत्ता सम्मावातं ठावतित्ता भवति ४,८।संवेगणी कथा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी ९। णिव्वेगणीकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा--इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १, इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २, परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ३, परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ४, १०। इहलोगे सुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १, इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २ एवं चउभंगो ४, ११॥ सू० २८२॥ तहेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–किसे णाममेगे किसे, किसे णाममेगे दढे, दढे णाममेगे किसे, दढे णाममेगे दढे १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--किसे णाममेगे किससरीरे, किसे णाममेगे दढसरीरे, दढे णाममेगे किससरीरे, दढे णाममेगे दढसरीरे २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--किससरीरस्स नाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स, दढसरीरस्स णाम एगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स, एगस्स किससरीरस्सवि णाणदंसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्सवि, एगस्स नो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति

णो दढसरीरस्स ३ ॥२८३॥ चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अस्सि समयंसि अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि न समुप्पज्जेज्जा, तंजहा—अभिक्खणं अभिक्खणमित्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं कहेत्ता भवति १, विवेगेण विउस्सग्गेणं णो सम्ममप्पाणं भाविता भवति २, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णो धम्मजागरितं जागरतिता भवति ३, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवेसिता भवति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव नो समुप्पज्जेज्जा १। चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा, तंजहा-इत्थीकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवति १, विवेगेण विउसग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेता भवति २, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरतिता भवति ३, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसिया भवति, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव समुप्पज्जेज्जा ४, ॥सू० २८४॥ नो कप्पति निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्तए, तंजहा—आसाढपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए १। णो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तंजहा—पढमाते पच्छिमाते मज्झण्हे अड्ढरत्ते २। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तंजहा–पुव्वण्हे, अवरण्हे पओसे पच्चूसे ३ ॥सू० २८५॥ चउव्विहा लोगट्ठिती पन्नत्ता तंजहा—आगासपतिट्ठिए वाते, वातपतिट्ठिए उदधी, उदधिपतिट्ठिया पुढवी, पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ॥सू० २८६॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—तहे नाममेगे, नोतहे नाममेगे, सोवत्थी नाममेगे, पधाणे नाममेगे १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—आयंतकरे नाममेगे णो परंतकरे १ परंतकरे णाममेगे णो आतंतकरे २ एगे आतंतकरेवि परंतकरेवि ३ एगे णो आतंतकरे

णो परंतकरे ४, २। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—आतंतमे नाममेगे नो परंतमे (ह्व) ४,३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—आयंदमे नाममेगे णो परंदमे ४,४ ।।सू० २८७।। चउव्विधा गरहा पन्नत्ता तंजहा–उवसंपज्जामित्तेगा गरहा, वितिगिच्छामित्तेगा गरहा जंकिंचिमिच्छामीत्तेगा गरहा, एवंपि पन्नत्तेगा गरहा ।।सू० २८८।। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–अप्पणो नाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स, परस्स नाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो, एगे अप्पणोऽवि अलमंथू भवति परस्सवि, एगे नो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स १ । चत्तारि मग्गा पन्नत्ता तंजहा—उज्जू नाममेगे उज्जू (उज्जूमग्गे), उज्जू नाममेगे वंके, वंके नाममेगे उज्जू, वंके नाममेगे वंके २। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–उज्जू नाममेगे उज्जू ४,३। चत्तारि मग्गा पन्नत्ता तंजहा–खेमे नाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, ह्व (४), ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—खेमे णाममेगे खेमे, ह्व (४), ५ । चत्तारि मग्गा पन्नत्ता तंजहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे ४, ६ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—खेमे नाममेगे खेमरूवे ४, ७ । चत्तारि संबुक्का पन्नत्ता तंजहा—वामे नाममेगे वामावत्ते, वामे नाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे नाममेगे वामावत्ते, दाहिणे नाममेगे दाहिणावत्ते ८ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-वामे नाममेगे,वामावत्ते ह्व(४)९।चत्तारि धूमसिहाओ पन्नत्ताओ तंजहा—वामा नाममेगा वामावत्ता ४,१०। एवामेव चत्तारित्थीओ पन्नत्ताओ तंजहा—वामा णाममेगा वामावत्ता ४, ११ । चत्तारि अग्गिसिहाओ पन्नत्ताओ तंजहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, (ह्व) ४, १२ । एवामेव चत्तारित्थीओ पन्नत्ताओ तंजहा—वामा णाम (ह्व) ४, १३ । चत्तारि वायमंडलिया पन्नत्ता तंजहा—वामा णाममेगा वामावत्ता ४, १४ । एवामेव चत्तारित्थीओ पन्नत्ताओ तंजहा—वामा णाममेगा वामावत्ता

४, १५, । चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता तंजहा—वामे नाममेगे वामावत्ते ४, १६। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—वामे णाममेगे वामावत्ते,४, १७ ॥सू० २८९॥ चउहिं ठाणेहि णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति तंजहा---पंथं पुच्छमाणे वा १ पंथं देसमाणे वा २ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलेमाणे वा ३ दलावेमाणे वा ३ ॥सू० २९०॥ तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पन्नत्ता तंजहा-- तमिति वा तमुक्कातेति वा अंधकारेति वा महंधक्कारेति वा १। तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पन्नत्ता तंजहा--लोगंधगारेति वा लोगतमसेति वा देवंधगारेति वा देवतमसेति वा २। तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पन्नत्ता तंजहा---वातफलिहेति वा वातफलिह(वातपरि)खोभेति वा (देवफलिहेति वा देवपरिखोभेति वा) देवरन्नेति वा देववूढे(हे)ति वा ३। तमुक्काते णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठति तंजहा-सोधम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं ४ ॥सू० २९१॥ चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--संपागडपडिसेवी णाममेगे पच्छन्नपडिसेवी णाममेगे पडुप्पन्ननंदी (सेवी) नाममेगे णिस्सरणणंदी णाममेगे १ । चत्तारि सेणाओ पन्नत्ताओ तंजहा--जतित्ता णाममेगे णो पराजिणित्ता पराजिणित्ता णाममेगे णो जतित्ता एगा जतित्तावि पराजिणित्तावि एगा नो जतित्ता नो पराजिणित्ता २ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--जतित्ता नाममेगे नो पराजिणित्ता ४, ३ । चत्तारि सेणाओ पन्नत्ताओ तंजहा--जतित्ता णामं एगा जयई, जइत्ता णाममेगा पराजिणाति, पराजिणित्ता णाममेगा जयति, पराजिणित्ता नाममेगा पराजिणाति ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—जइत्ता नाममेगे जयति ४,५॥सू०२९२॥(चत्तारि राइओ पन्नत्ताओ तंजहा--पव्वयराई पुढवीराई रेणुराई जलराई, एवामेव चउव्विहे कोहे ततः मानमायासूत्राणि) चत्तारि केतणा पन्नत्ता तंजहा—वंसी-मूलकेतणाते मेंढविसाणकेतणाते गोमुत्तिकेतणाते अवलेहणितकेतणाते १। एवामेव चउविधामाया

पन्नत्ता तंजहा--वंसीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेहणितासमाणा,वंसीमूलकेतणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति,मेंढविसाणकेतणासमाणं मायमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेति तिरिक्खजोणितेसु उववज्जति, गोमुत्तिकेतणासमाणा जाव कालं करेति मणुस्सेसु उववज्जति, अवलेहणिता जाव देवेसु उववज्जति २। चत्तारि थंभा पन्नत्ता तंजहा--सेलथंभे अट्ठिथंभे दारुथंभे तिणिसलताथंभे ३। एवामेव चउव्विधे माणे पन्नत्ते तंजहा--सेलथंभसमाणे जाव तिणिसलताथंभसमाणे, सेलथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति नेरतिएसु उववज्जति, एवं जाव तिणिसलताथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति देवेसु उववज्जति ४। चत्तारि वत्था पन्नत्ता तंजहा--किमिरागरत्ते कद्दमरागरत्ते खंजणरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते ५। एवामेव चउव्विधे लोभे पन्नत्ते तंजहा--किमिरागरत्तवत्थसमाणे कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे, किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ, तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जति ३ ॥सू० २१३॥ चउव्विहे संसारे पन्नत्ते तंजहा--णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे १। चउव्विहे आउते पन्नत्ते तंजहा--णेरतिआउते जाव देवाउते २। चउव्विहे भवे पन्नत्ते तंजहा--नेरतियभवे जाव देवभवे ३ ॥सू० २१४॥ चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा--असणे पाणे खाइमे साइमे १। चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा--(नो)उवक्खरसंपन्ने उवक्खडसंपन्ने सभावसंपन्ने परिजुसियसंपन्ने २ ॥सू० २१५॥ चउव्विहे बंधे पन्नत्ते तंजहा--पगतिबंधे ठितीबंधे अणुभावबंधे पदेसबंधे १। चउव्विहे उवक्कमे पन्नत्ते तंजहा--बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसमणोवक्कमे विप्परिणामणोवक्कमे २। बंधणोवक्कमे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा--पगतिबंधणोवक्कमे ठितिबंधणोवक्कमे अणुभावबंधणोवक्कमे पदेसबंधणोवक्कमे ३। उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा--पगतीउदीरणोवक्कमे

ठितीउदीरणोवक्कमे अणुभावउदीरणोवक्कमे पदेसउदीरणोवक्कमे ४। उवसमणोवक्कमे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा--पगतिउवसामणोवक्कमे ठितिउवसामणोवक्कमे अणुउवसामणोवक्कमे पतेसुवसामणोवक्कमे ५। विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा--पगतिविप्परिणामोवक्कमे ठिती विप्परिणामोवक्कमे अणुविप्परिणामोवक्कमे पतेसविप्परिणामोवक्कमे ६। चउव्विहे अप्पाबहुए पन्नत्ते तंजहा--पगतिअप्पाबहुए ठिति अप्पाबहुए अणुअप्पाबहुए पतेसप्पाबहुते ७। चउव्विहे संकमे पन्नत्ते तंजहा--पगतिसंकमे ठितीसंकमे अणुसंकमे पएससंकमे ८। चउव्विहे णिधत्ते पन्नत्ते तंजहा--पगतिणिधत्ते ठिनीणिधत्ते अणुनिधत्ते पएसणिधत्ते ९। चउव्विहे णिकायिते पन्नत्ते तंजहा--पगतिणिकायिते ठितिणिकायिते अणुणिकायिते पएसणिकायिते १० ॥सू० २९६॥ चत्तारि एक्का पन्नत्ता तंजहा--दविए दविएकते (दविए एक्कए) माउपएक्कते (माउपए एक्कए) पज्जतेक्कते (पज्जते एक्कए) संगहेक्कते (संगहे एक्कए) ॥सू० २९७॥ चत्तारि कती पन्नत्ता तंजहा--दवितकती माउयपयकती पज्जवकती संगहकती ॥सू० २९८॥ चत्तारि सव्वा पन्नत्ते तंजहा--नामसव्वए ठवणासव्वए आएससव्वते निरवसेससव्वते ॥सू० २९९॥ माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउद्दिसिं चत्तारि कूडा पन्नत्ता तंजहा--रयणे रतणुच्चते सव्वरयणे रतणसंचये ॥सू० ३००॥ जंबुद्दीवे २ भरहेरवतेसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए ममाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था जंबुद्दीवे २ भरहेरवते इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए जहण्णपए णं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था, जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साते उस्सप्पिणीते सुसमसुममाते समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ ॥सू० ३०१॥ जंबूद्दीवे २ देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा--हेमवते हेरन्नवते हरिवस्से रम्मगवासे १। चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वता पन्नत्ता तंजहा--सद्दावई वियडावई गंधावई मालवंतपरिताते, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढितीया जाव पलिओवमट्ठितीता

परिवसंति, तंजहा--साती पभासे अग्गो पउमे, २। जंबूद्दीवे २ महाविदेहे वासे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा-पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा, ३। सव्वेऽवि णं णिसदणीलवंतवासहरपव्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता ४। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महानदीए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा-चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले ५। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महानदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा-तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मातंजणे ६। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पचत्थिमेणं सीओदाए महानतीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा-अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे ७। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पचत्थिमेणं सीओदाए महाणतीते उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा-चंदपव्वते सूरपव्वते देवपव्वते णागपव्वते, ८। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वथा पन्नत्ता तंजहा-सोमणसे विज्जुप्पभे गंधमायणे मालवंते ९। जंबूद्दीवे २ महाविदेहे वासे जहन्नपते चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, १०। जंबूद्दीवे २ मंदरपव्वते चत्तारि वणा पन्नत्ता तंजहा-भद्दसालवणे नंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे, ११। जंबूद्दीवे २ मन्दरे पव्वए पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पन्नत्ताओ तंजहा--पंडुकंबलसिला अइपंडुकंबलसिला रत्तकंबलसिला अतिरत्तकंबलसिला, १२। मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेवि कालं आदिं करेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति, एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चच्छिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति-जंबूद्दीवग(वे जं)आवस्सगं तु कालाओ चूलिया जाव । धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे ॥१॥ ॥सू० ३०२॥ जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पन्नत्ता तंजहा--विजये

वेजयंते जयंते अपराजिते, ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं ताव-तितं चेव पवेसेणं पन्नत्ता, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओ-वमट्ठितीना परिवसंति विजते वेजयंते जयंते अपराजिते ॥सू० ३०३॥ जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--एगूरूयदीवे आभासियदीवे वेसाणितदीवे णंगोलियदीवे, १। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तंजहा--एगूरूता आभासिता वेसाणिता णंगोलिया, २। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि २ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--हयकन्नदीवे गयकन्नदीवे गोकन्नदीवे संकुलिक-न्नदीवे, ३। तेसु णं दीवेसु चउव्विधा मणुस्सा परिवसंति तंजहा--हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना संकुलिकन्ना, ४। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लव-णसमुद्दं पंच २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--आयंसमुहदीवे मेंढमुहदीवे अओमुहदीवे गोमुहदीवे, ५। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवण-समुद्दं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--आसमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीहमुहदीवे वग्घमुहदीवे, ६। तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्त सत्त जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--आमकन्नदीवे हत्थिकन्नदीवे अकन्नदीवे कन्नपाउरणदीवे, ७। तेसु णं दीवेसु मणुया भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठट्ठ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा--उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जुदंतदीवे, ८। तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव

णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा-घणदंतदीवे लट्ठदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे, ९। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तंजहा--घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता, १०। जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्द तिन्नि २ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा-एगूरूयदीवे सेसं तदेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता ११ ।।सू० ३०४।। जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतितंताओ चउदिसिं लवणसमुद्द पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं महतिमहालता महालंजरसंठाणसंठिता चत्तारि महापायाला पन्नत्ता तंजहा-वलतामुह केउते जूवए ईसरे, १। एत्थ (तत्थ) णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तंजहा-काले महाकाले वेलंबे पभंजणे, २। जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतितंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्द बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं वेलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पन्नत्ता तंजहा--गोथूभे उदयभासे संखे दगसीमे, ३। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति तंजहा-गोथूभे सिवए संखे मणोसिलाते, ४। जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्द बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागरातीणं चत्तारि आवासपव्वता पन्नत्ता तंजहा-कक्कोडए विज्जुप्पभे केलासे अरुणप्पभे, ५। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तंजहा-कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे, ६। लवणे णं समुद्दे णं चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, चत्तारि सूरिता तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा, चत्तारि अंगारा जाव चत्तारि भावकेऊ, ७। लवणस्स णं

समुद्दस्स चत्तारि दारा पन्नत्ता तंजहा—विजए विजयंते जयंते अपराजिते, ते णं दारा णं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पन्नत्ता, ८। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितिया परिवसंति—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ६ ।।सू० ३०५।। धायइसंडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ता, जंबूदीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं, एवं जहा सद्दुद्देसते तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मन्दरचूलियाओ ।।सू० ३०६।।

[अथ नन्दीश्वरविचारः] णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपव्वता पन्नत्ता तंजहा—पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते ४, १। ते णं अंजणगपव्वता चउरासीति जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तदणंतरं च णं मायाए २ परिहातेमाणा २ उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पराणत्ता मूले इकतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते एगं जोयणसहस्सं परिक्खेवेणं, उपरिं तिन्नि २ जोयणसहस्साइं एगं च छावट्ठं जोयणसतं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिन्ना मज्झे संखेत्ता, उप्पितणुया० गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्वअंजणमया अच्छा सराहा लराहा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा २। तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जभूमिभागा पन्नत्ता, तेसि णं बहुसमरमणिज्जभूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धायतणा पराणत्ता, ते णं सिद्धायतणा एगं जोयणसयं आयामेणं पराणत्ता पराणासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, ३। तेसिं सिद्धायतणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पन्नत्ता तंजहा—देवदारे असुरदारे णागदारे सुवन्नदारे, ४। तेसु णं दारेसु चउव्विहा

देवा परिवसंति, तंजहा--देवा असुरा नागा सुवराणा, ५। तेसि णं दाराणं पुरतो चत्तारि मुहमंडवा पन्नत्ता, तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पन्नत्ता, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पन्नत्ता, तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पन्नत्ताओ, तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पन्नत्ता, तेसिं णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पन्नत्ता, तेसि णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामता अंकुसा पन्नत्ता, तेसु णं वतिरामतेसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पन्नत्ता, ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं २ अन्नेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहि चउहिं अद्धकुंभिकेहि मुत्तादामेहि, सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढिताओ पराणत्ताओ, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि २ चेतितथूभा पराणत्ता, तासिं णं चेतितथूभाणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियातो पन्नत्ताओ, ६ । तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईतो संपलियंकणिसन्नाओ थूभाभिमुहाओ चिट्ठंति, तंजहा--रिसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा, ७। तेसि णं चेतितथूभाणं पुरतो चत्तारि मणिपेढिताओ पन्नत्ताओ, तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि चेतितरुक्खा पन्नत्ता, तेसि णं चेतितरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पन्नत्ताओ, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पन्नत्ता, तेसि णं महिंदज्झताणं पुरओ चत्तारि णंदातो पुक्खरिणीओ पन्नत्ताओ ८। तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउदिसि चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता तंजहा--पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं--पुव्वेणं असोगवणं दाहिणओ होइ सत्तवराणवणं। अवरेणं चंपगवणं चूतवणं उत्तरे पासे॥ १ ॥ ९ । तत्थ णं जे से पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीतो पन्नत्ताओ

तंजहा-णंदुत्तरा णंदा आणंदा नंदिवद्धणा, ताओ णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं पन्नासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं दस जोयणसताइं उव्वेहेणं, तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा, १०। तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पन्नत्ता तंजहा-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं, ११। तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता तंजहा--पुरतो दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं, पुव्वेणं असोगवणं जाव चूयवणं उत्तरे पासे, तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दधिमुहगपव्वया पन्नत्ता, ते णं दधिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामता अच्छा जाव पडिरूवा, तेसि णं दधिमुहगपव्वताणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पन्नत्ता, सेसं जहेव अंजणगपव्वताणं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, जाव चूतवणं उत्तरे पासे, १२। तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पराणत्ताओ, तंजहा-भद्दा विसाला कुमुदा पोंडरिगिणी, तातो णंदातो पुक्खरणीतो एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव जाव दधिमुहगपव्वता जाव वणसंडा, १३। तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसि चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा--णंदिसेणा अमोहा गोथूभा सुदंसणा, सेसं तं चेव, तहेव दधिमुहगपव्वता तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा, १४। तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-विजया वेजयंती जयंती अपराजिता, तातो णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दधिमुहगपव्वता तहेव सिद्धयायणा

जाव वणसंडा १५। णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झ-
देसभागे चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पन्नत्ता तंजहा-उत्तरपुर-
च्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए दाहिणपच्चत्थि-
मिल्ले रतिकरगपव्वते उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए,ते णं रतिकरगपव्वता
दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउतमताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा
झल्लरिसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एकतीसं जोयणसहस्साइं
छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामता, अच्छा जाव पडिरूवा
१६। तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते तस्स णं चउदिसि
ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबूदीवपमाणाओ चत्तारि
रायहाणीओ पन्नत्ताओ तंजहा-णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा, कण्हाते
कण्हरातीते रामाए रामरक्खियाते १७। तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले
रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसि सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्ग-
महिसीणं जंबूद्दीवपमाणातो चत्तारि रायहाणीओ पन्नत्ताओ तंजहा-समणा
सोमणसा अच्चिमाली मनोरमा, पउमाते सिवाते सतीते अंजूए १८। तत्थ णं
जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते तत्थ णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविं-
दस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्तातो चत्तारि रायहा-
णीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-भूता भूतवडेंसा गोथूभा सुदंसणा, अमलाते
अच्छराते णवमिताते रोहिणीते १९। तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले
रतिकरगपव्वते तत्थ णं चउदिसिमिसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्ग-
महिसीणं जंबूद्दीवप्पमाणमित्तातो चत्तारि रायहाणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-
रयणा रतणुच्चता सव्वरतणा रयणसंचया, वसूते वसुगुत्ताते वसुमित्ताते वसुं-
धराए २० ॥सू० ३०७॥ चउव्विहे सच्चे पन्नत्ते तंजहा-णामसच्चे ठवणा-
सच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे ॥सू० ३०८॥ आजीवियाणं चउव्विहे तवे पन्नत्ते
तंजहा-उग्गतवे (ओरालतवे) घोरतवे रसणिज्जूहणता जिब्भिंदियपडिसंली-

णाता ।।सू० ३०९।। चउव्विहे संजमे पन्नत्ते तंजहा-मणसंजमे वतिसंजमे कायसंजमे उवगरणसंजमे। चउव्विधे चिताते पन्नत्ते तंजहा-मणचिताये वतिचियाते कायचियाते उवगरणचियाते। चउव्विहा अकिंचणाता पन्नत्ता तंजहा-मणअकिंचणाता वतिअकिंचणाता कायअकिंचणताउवगरणअकिंचणाता ।।सू० ३१०।।

।। इति चतुःस्थानके तृतीय उद्देशकः ।।

।। अथ चतुर्थस्थानके तृतीय उद्देशकः ।।

चत्तारि रातीओ पन्नत्ताओ तंजहा-पव्वयराती पुढविराती वालुयराती उदगराती, एवामेव चउव्विहे कोहे पन्नत्ते तंजहा-पव्वयरातिसमाणे पुढविरातिसमाणे वालुयरातिसमाणे उदगरातिसमाणे, पव्वयरातीसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइतेसु उववज्जति, पुढविरातिसमाणं कोहमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणितेसु उववज्जति, वालुयरातिसमाणं कोहं अणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जति, उदगरातिसमाणं कोहमणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जति १। चत्तारि उदगा पन्नत्ता तंजहा--कद्दमोदए खंजणोदए वालुओदए सेलोदए, एवामेव चउव्विहे भावे पन्नत्ते तंजहा-कद्दमोदगसमाणे खंजणोदगसमाणे वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे, कद्दमोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जति, एवं जाव सेलोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ २ ।।सू०३११।। चत्तारि पक्खी पन्नत्ता तंजहा--रुयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने, रूवसंपन्ने नाममेगे नो रुतसंपन्ने, एगे रूवसंपन्नेऽवि रुतसंपन्नेवि, नो रुत्तसंपन्ने णो रूवसंपन्ने १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--रुयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ४, २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेइ, पत्तियं करेमीतेगे अपत्तितं करेति, अप्पत्तियं करेमितेगे पत्तितं करेइ, अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्प-

त्तितं करेति, ३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–अप्पणो णाममेगे पत्तितं करेति णो परस्स, परस्स नाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो (४) ह्व, ४। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तितं पवेसेइ पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तितं पवेसेति ४,५। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा–अप्पणो नाममेगे पत्तितं पवेसेइ णो परस्स, परस्स ४ ह्व ६ ॥सू० ३१२॥ चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा-पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए छायोवए, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–पत्तोवारुक्खसमाणे पुप्फोवारुक्खसमाणे फलोवारुक्खसमाणे छातोवारुक्खसमाणे ॥सू० ३१३॥ भारणं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पन्नत्ता, तंजहा–जत्थ णं अंसातो अंसं साहरइ तत्थऽविय से एगे आसासे पराणत्ते १, जत्थविय णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेति तत्थविय से एगे आसासे पराणत्ते २, जत्थविय णं णागकुमारावासंसि वा सुवन्नकुमारावासंसि वा वासं उवेति तत्थविय से एगे आसासे पन्नत्ते ३, जत्थविय णं आवकधाते चिट्ठति तत्थविय से एगे आसासे पन्नत्ते ४, १। एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पन्नत्ता तंजहा–जत्थ णं सीलव्वतगुणव्वतवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेति तत्थविअ से एगे आसासे पराणत्ते १, जत्थविय णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थविय से एगे आसासे पन्नत्ते २, जत्थऽविय णं चाउद्दसट्ठमुदिट्ठपुन्नमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थवि य से एगे आसासे पराणत्ते ३, जत्थवि य णं अपच्छिममारणंतितसंलेहणाजूसणाजूसिते भत्तपाणपडितातिक्खिते पाओवगते कालमणवकंखमाणे विहरति तत्थविय से एगे आसासे पन्नत्ते ४, २ ॥सू० ३१४॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–उदितोदिते णाममेगे उदितत्थमिते णाममेगे अत्थमितोदिते णाममेगे अत्थमियत्थमिते णाममेगे, भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदितोदिते, बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदिअत्थमिते, हरितेसबले णामणगारे णामत्थमिओदिते, काले णं

सोयरिये अत्थमितत्थमिते ॥सू० ३१५॥ चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता तंजहा—कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए, नेरतिताणं चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता तंजहा—कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलितोए, एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं. एवं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सतिकाइयाणं बेंदिताणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेसिं जहा णेरइयाणं ॥सू० ३१६॥ चत्तारि सूरा पन्नत्ता तंजहा—खंतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुद्धसूरे खंतिसूरा अरहंता तवसूरा अणगारा दाणसूरे वेसमणे जुद्धसूरे वासुदेवे ॥सू० ३१७॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे उच्चे णाममेगे णीतच्छंदे णीते णाममेगे उच्चच्छंदे नीए णाममेगे णीयच्छंदे ॥सू० ३१८॥ असुरकुमाराणं चत्तारि लेसातो पन्नत्ताओ तंजह—कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा, एवं जाव थणियकुमाराणं, एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं ॥सू० ३१९॥ चत्तारि जाणा पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते, १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, ४, २। चत्तारि जाणा पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणाते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणाते ४, ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणाते ४, ४। चत्तारि जाणा पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्त णाममेगे जुत्तरूवे ४, ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे ४, ६। चत्तारि जाणा पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे ४, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे ४, ८। चत्तारि जुग्गा पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते नाममेगे जुत्ते ४, ९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया

पन्नत्ता तंजहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, १०। एवं जधा जाणेण चत्तारि आलावगा तथा जुग्गेणऽवि, पडिपक्खो तहेव पुरिसजाता जाव सोभेत्ति ११। चत्तारि सारही पन्नत्ते तंजहा—जोयावइत्ता णामं एगे नो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता नामं एगे नो जोयावइत्ता एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता १२। एवामेव चत्तारि हया पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते णामं एगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते ४, १३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाता १४। चत्तारि गया पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, १५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४ एवं जहा हयाणं तहा गयाणऽवि भाणियव्वं, पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया १६। चत्तारि जुग्गारिता (जुग्गायरिता) पन्नत्ता तंजहा--पंथजाती णाममेगे णो उप्पहजाती, उप्पथजाती णाममेगे णो पंथजाती एगे पंथजातीऽवि उप्पहजातीऽवि, एगे णो पंथजाती णो उप्पहजाती, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया १७। चत्तारि पुप्फा पन्नत्ता तंजहा--रूवसंपन्ने नाममेगे णो गंधसंपन्ने, गंधसंपन्ने णाममेगे नो रूवसंपन्ने, एगे रूवसंपन्नेऽवि गंधसंपन्नेऽवि एगे णो रूवसंपन्ने णो गंधसंपन्ने, १८। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--रूवसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने ४, ११। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--जातिसंपन्ने नाममेगे नो कुलसंपन्ने ४, २, १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपराणे नामं एगे णो बलसंपन्ने बलसंपन्ने नामं एगे णो जातिसंपन्ने ४, २। एवं जातीते रूवेण चत्तारि आलावगा एवं जातीते सुएण ४, एवं जातीते सीलेण ४, एवं जातीते चरित्तेण ४, एवं कुलेण बलेण ४, एवं कुलेण रूवेण ४, कुलेण सुतेण ४, कुलेण सीलेण ४, कुलेण चरित्तेण ४, चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--बलसंपराणे नाममेगे णो रूवसंपन्ने ४, १२, एवं बलेण सुतेण ४, १३,

एवं बलेण सीलेण ४, १४, एवं बलेण चरित्तेण ४, १५, चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--रूवसंपन्ने नाममेगे णो सुयसंपराणो ४, १६, एवं रूवेण सीलेण ४, १७, रूवेण चरित्तेण ४, १८, चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--सुयसंपन्ने नाममेगे णो सीलसंपन्ने ४, १९, एवं सुतेण चरित्तेण य ४, २०, चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--सीलसंपन्ने नाममेगे नो चरित्तसंपन्ने ४, २१, एते एकवीसं भंगा भाणितव्वा, २०। चत्तारि फला पन्नत्ता तंजहा--आमलगमहुरे मुद्दितामहुरे खीरमहुरे खंडमहुरे, २१। एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा--आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे, २२। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--आतवेतावच्चकरे नाममेगे नो परवेतावच्चकरे ४, २३। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--करेति नाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ, पडिच्छइ नाममेगे वेयावच्चं नो करेइ ४, २४। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेऽवि माणकरेऽवि, एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे, २५। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे ४, २६। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा--गणसंग्गहकरे णाममेगे णो माणकरे ४, २७। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--गणसोभकरे णामं एगे णो माणकरे ४, २८। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-गणसोहिकरे णाममेगे नो माणकरे ४, २९। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा- रूवं नाममेगे जहति नो धम्मं, धम्मं नाममेगे जहति नो रूवं, एगे रूवंपि जहति धम्मंपि जहति, एगे नो रूवं जहति नो धम्मं, ३०। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--धम्मं नाममेगे जहति नो गणसंठितिं ४, ३१। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--पियधम्मे नाममेगे नो दढधम्मे, दढधम्मे नाममेगे नो पितधम्मे, एगे पियधम्मेऽवि दढधम्मेऽवि, एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे, ३२। चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा--

पव्वायणायरिते नाममेगे णो उवट्ठावणायरिते, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वायणायरिए एगे पव्वायणातरितेऽवि उवट्ठावणातरितेऽवि, एगे नो पव्वायणातरिते नो उट्ठावणातरिते धम्मायरिए, ३३। चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा--उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए ४ धम्मायरिए, ३४। चत्तारि अंतेवासी पन्नत्ते तंजहा--पव्वायणंतेवासी नामं एगे णो उवट्ठावणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी, ३५ । चत्तारि अंतेवासी पन्नत्ते तंजहा--उद्देसणंतेवासी नामं एगे नो वायणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी, ३६। चत्तारि निग्गंथा पन्नत्ता तंजहा--रातिणिये समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधते भवति १, राइणिते समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिए धम्मस्स आराहते भवति, २ ओमरातिणिते समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिते अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहते भवति ३, ओमरातिणिते समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिते धम्मस्स आराहते भवति४, ३७। चत्तारि णिग्गंथीओ पन्नत्ताओ तंजहा--रातिणिया समणी निग्गंथी एवं चेव ४, ३८। चत्तारि समणोवासगा पन्नत्ता तंजहा--रायणिते समणोवासए महाकम्मे तहेव ४,३९ । चत्तारि समणोवासियाओ पन्नत्ताओ तंजहा--रायणिता समणोवासिता महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा ४० ॥सू० ३२०॥ चत्तारि समणोवासगा पन्नत्ता तंजहा—अम्मापितिसमाणे भातिसमाणे मित्तसमाणे सवत्तिसमाणे, १। चत्तारि समणोवासगा पन्नत्ता तंजहा—अद्दागसमाणे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटयसमाणे २ ॥सू० ३२१॥ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स समणोवासगाणं सोधम्मकप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥सू०३२२॥ चउहि ठाणेहि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते, तंजहा-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु

कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाति णो अट्ठं बंधइ णो णिताणं पगरेति णो ठितिपगप्पं पगरेति १, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते ४ तस्स णं माणुस्सते पेमे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवति २, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते ४ तस्स णं एवं भवति–इण्हिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ३, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते ४ तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे तावि भवति, उड्ढंपिय णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसताइं हव्वमागच्छति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए १। चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तंजहा--अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते जाव अणज्झोववन्ने, तस्स णं एवं भवति--अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरितेति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेएति वा जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि, १, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति--एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइदुकर२कारते, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि २, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति--अत्थि णं मम माणुस्सए भवे माताति वा जाव सुण्हाति वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतितं पाउब्भवामि पासंतु ता मे (इमे) इममेतारूवं दिव्वं

देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्ति लद्धं पत्तं अभिसमन्नागतं ३, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा, सहीति वा सुहीति वा सहाएति वा संगएति वा, तेसिं च णं अम्हे अन्नमन्नस्स संगारे पडिसुते भवति, जो मे पुव्वि चयति से संबोहेतव्वे, इच्चे तेहिं जाव संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४, २ ॥सू०३२३॥ चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया, तंजहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिजमाणे जायतेते वोच्छिज्जमाणे १। चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोते सिता, तंजहा— अरेहंतेहि जायमाणेहिं अरहंतेहि पव्वतमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु२। एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसन्निवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते, ३। चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तंजहा--अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु ४ ॥सू० ३२४॥ चत्तारि दुहसेज्जाओ पन्नताओ तंजहा-तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा तंजहा-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते निग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेयसमावन्ने कलुसमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ, निग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तितमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघातमावज्जति पढमा दुहसेज्जा १,अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा से णं मुंडे भवित्ता अगारातो जाव पव्वतिते सएणं लाभेणं णो तुस्सति परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति परस्स लाभमासाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघातमावज्जति दोच्चा दुहसेज्जा २, अहावरा तच्चा दुहसेज्जा--से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव

अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छति विणिघातमावज्जति तच्चा दुहसेज्जा ३, अहावरा चउत्था दुहसेज्जा-से णं मुंडे जाव पव्वइए तस्स णमेवं भवति जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहणपरिमद्दणगातब्भंगगातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइं च णं अहं मुंडे जाव पव्वतिते तप्पभिइं च णं अहं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं णो लभामि, से णं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं आसाएति जाव अभिलसति से णं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं आसाएमाणे जाव मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघायमावज्जति, चउत्था दुहसेज्जा ४, १। चत्तारि सुहसेज्जाओ पन्नत्ताओ तंजहा--तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिए निग्गंथे पावयणे निस्संकिते णिक्कंखिते निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावन्ने नो कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तीयइ रोतेति निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तितमाणे रोएमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्जति पढमा सुहसेज्जा १, अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा, से णं मुंडे जाव पव्वतिते सतेणं लाभेणं तुस्सति परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेइ णो अभिलसति परस्स लाभमणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं णियच्छति णो विणिघातमावज्जति, दोच्चा सुहसेज्जा २, अहावरा तच्चा सुहसेज्जा--से णं मुंडे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएति जाव नो अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्जति तच्चा सुहसेज्जा ३, अहावरा चउत्था सुहसेज्जा--से णं मुंडे जाव पव्वतिते तस्स णं एवं भवति--जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पयताइं पग्गहिताइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं

वेयणं नो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि, ममं च णं अब्भोवगमिओ जाव सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति, ममं च णं अब्भोवगमिओ जाव सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे निज्जरा कज्जति चउत्था सुहसेज्जा ४, २। ॥सू० ३२५॥ चत्तारि अवायणिज्जा पन्नत्ता, तंजहा–अविणीए वीगईपडिबद्धे अविओसवितपाहुडे माई १। चत्तारि वातणिज्जा पन्नत्ता, तंजहा--विणीते अविगतीपडिबद्धे वितोसवितपाहुडे अमाती २ ॥३२६॥चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा–आतंभरे नाममेगे नो परंभरे परंभरे नाममेगे नो आतंभरे एगे आतंभरेऽवि परंभरेऽवि एगे नो आयंभरे नो परंभरे, १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--दुग्गए नाममेगे दुग्गए दुग्गए नाममेगे सुग्गते सुग्गते नाममेगे दुग्गए सुग्गए नाममेगे सुग्गए, २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा-- दुग्गते नाममेगे दुव्वए दुग्गए नाममेगे सुव्वए सुग्गए नाममेगे दुव्वते सुग्गए नाममेगे सुव्वए ४, ३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा--दुग्गते नाममेगे दुप्पडिताणंदे दुग्गते नाममेगे सुप्पडिताणंदे ४, ४। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा--दुग्गते नाममेगे दुग्गतिगामी दुग्गए नाममेगे सुग्गतिगामी ४, ५। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा--दुग्गते नाममेगे दुग्गतिं गते दुग्गते नाममेगे सुगतिं गते ४, ६। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता, तंजहा-तमे नाममेगे तमे तमे नाममेगे जोती जोती णाममेगे तमे जोती णाममेगे जोती ४,७। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता, तंजहा--तमे नाममेगे तमबले तमे नाममेगे जोतिबले जोती नाममेगे तमबले जोती नाममेगे जोतीबले, ८। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता, तंजहा--तमे नाममेगे तमबलपलज्जणे (पज्जलणे) तमे नाममेगे जोतीबलपलज्जणे ४, ९। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता, तंजहा-परिन्नायकम्मे नाममेगे नो परिन्नातसन्ने परिन्नातसन्ने णाममेगे णो परिन्नातकम्मे

एगे परिन्नातकम्मेवि ४, १०। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-परिन्नायकम्मे णाममेगे नो परिन्नातगिहावासे परिन्नायगिहावासे णामं एगे णो परिन्नात-कम्मे ४, ११। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-परिणायसन्ने णाममेगे नो परिन्नातगिहावासे परिन्नातगिहावासे णामं एगे० ४, १२। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-इहत्थे णाममेगे नो परत्थे परत्थे नाममेगे नो इहत्थे ४, १३। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-एगेणं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति एगेणं णाममेगे वड्ढइ दोहिं हायति दोहिं णाममेगे वड्ढति एगेणं हाननि एगे दोहिं नाममेगे वड्ढति दोहिं हायति, १४। चत्तारि (प)कंथका पन्नत्ता तंजहा-आइन्ने नाममेगे आइन्ने आइन्ने नाममेगे खलुंके खलुंके नाममेगे आइन्ने खलुंके नाममेगे खलुंके ४, १५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-आइन्ने नाममेगे आइन्ने चउभंगो, १६। चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा-आतिन्ने नाममेगे आतिन्नताते विहरति आइन्ने नाममेगे खलुंकत्ताए विहरति ४, १७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-आइन्ने नाममेगे आइन्नताए विहरइ (वहइ), चउभंगो, १८। चत्तारि पकंथगा पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने नाममेगे णो कुलसंपन्ने ४, १९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने नाममेगे चउभंगो, २०। चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने ४, २१। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपराणे ४, २२। चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने ४, २३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपराणे ४, २४। चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा-जाइसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपराणे ४, २५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-जातिसंपन्ने ४, २६। एवं कुलसंपन्नेण य बलसंपराणेण त ४, २७। कुलसंपन्नेण य रूवसंपराणेण त ४, २८।

कुलसंपराणेण त जयसंपन्नेणे त ४, २९। एवं बलसंपन्नेण त रूवसंपन्नेण त ४, ३०। बलसंपन्नेण त जयसंपराणेण त ४, सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो, ३१। चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा—रूवसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपन्ने ४, ३२। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—रूवसंपन्ने नाममेगे णो जयसंपन्ने ४, ३३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-सीहत्ताते णाममेगे निक्खंते सीहत्ताते विहरइ सीहत्ताते नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ सीयालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ सीयालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीयालत्ताए विहरइ ३४ ॥सू० ३२७॥ चत्तारि लोगे समा पन्नत्ता तंजहा—अपइट्ठाणे नरए १ जंबुद्दीवे दीवे २ पालते जाणविमाणे ३ सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे ४, १। चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पन्नत्ता तंजहा—सीमंतए नरए समयक्खेत्ते उडुविमाणे ईसीपब्भारा पुढवी, २ ॥सू० ३२८॥ उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पन्नत्ता तंजहा—पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया उराला तसा पाणा, १। अहो लोगे णं चत्तारि बिसरीरा पन्नत्ता तंजहा—एवं चेव, एवं तिरियलोएवि ४, २ ॥सू० ३२९॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते ॥सू० ३३०॥ चत्तारि सिज्जपडिमाओ पन्नत्ताओ, चत्तारि वत्थपडिमाओ पन्नत्ताओ, चत्तारि पायपडिमाओ पन्नत्ताओ, चत्तारि ठाणपडिमाओ पन्नत्ताओ ॥सू० ३३१॥ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पन्नत्ता तंजहा—वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए, चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पन्नत्ता तंजहा--ओरालिए वेउव्विए आहारते तेउते ॥सू० ३३२॥ चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पन्नत्ते तंजहा—धम्मत्थिकाएणं अधम्मत्थिकाएणं जीवत्थिकाएणं पुग्गलत्थिकाएणं, चउहिं बादरकातेहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पन्नत्ते तंजहा—पुढविकाइएहिं आउकाइएहिं वाउकाइएहिं वणस्सइकाइएहिं ॥सू० ३३३॥ चत्तारि पएसग्गे-

णं तुल्ला पन्नत्ता तंजहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे एगजीवे ॥सू० ३३४॥ चउराहमेगं सरीरं नो सुपस्सं(पस्सं) भवइ, तंजहा—पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं ॥सू० ३३५॥ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति, तंजहा—सोतिंदियत्थे घाणिंदियत्थे जिब्भिंदियत्थे फासिंदियत्थे ॥सू० ३३६॥ चउहि ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचातेंति बहिया लोगंता गमणताते, तंजहा—गतिअभावेणं णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं ॥सू० ३३७॥ चउव्विहे णाते पन्नत्ते तंजहा—आहरणे आहरणतद्देसे आहरणतद्दोसे उवन्नासोवणए १। आहरणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—अवाते उवाते ठवणाकम्मे पडुप्पन्नविणासी २। आहरणतद्देसे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—अणुसिट्ठी उवालंभे पुच्छा निस्सावयणे ३। आहरणतद्दोसे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—अधम्मजुत्ते पडिलोमे अंतोवणीते दुरुवणीते ४। उवन्नासोवणए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा-तव्वत्थुते तदन्नवत्थुते पडिनिभे हेतू ५। हेऊ चउव्विहे—पन्नत्ते तंजहा—जावते थावते वंसते लूसते, अथवा हेऊ चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, अहवा हेऊ चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ अत्थित्तं णत्थि सो हेऊ णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ णत्थित्तं णत्थि सो हेऊ ६ ॥सू० ३३८॥ चउव्विहे संखाणे पन्नत्ते तंजहा—पडिकम्मं ववहारे रज्जू रासी १। अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तंजहा—नरगा णेरइया पावाइं कम्माइं असुभा पोग्गला, २। तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तंजहा—चंदा सूरा मणि जोती ३। उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तंजहा—देवा देवीओ विमाणा आभरणा ४ ॥सू० ३३९॥

॥ इति चतुःस्थानकस्य तृतीयोद्देशकः ॥४-३॥

॥ अथ चतुर्थस्थानके चतुर्थ उद्देशकः ॥

चत्तारि पसप्पगा पन्नत्ता तंजहा—अणुप्पन्नाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए पुव्वुप्पन्नाणं (पच्चुप्पन्नाणं) भोगाणं अविप्पतोगेणं एगे पसप्पते अणुप्पन्नाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए पुव्वुप्पन्नाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए ॥सू० ३४०॥ णेरतिताणं चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा—इंगालोवमे मुम्मुरोवमे सीतले हिमसीतले, १। तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा—कंकोवमे बिलोवमे पाणमंसोवमे पुत्तमंसोवमे, २। मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा—असणे जाव सातिमे, ३। देवाणं चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा—वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते ४ ॥सू० ३४१॥ चत्तारि जातिआसीविसा पन्नत्ता तंजहा—विच्छुतजातीयासीविसे मंडुक्कजातीयासीविसे उरगजातीयासीविसे मणुस्सजातिआसीविसे, विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते?, पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए विसए से विसट्ठताए नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा, मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा, पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं, सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा, उरगजाति पुच्छा, पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबूद्दीवपमाणमेत्तं बोंदिं विसेण सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा, मणुस्सजातिपुच्छा, पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समतखेत्तपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणा(ग)तं विसट्टमाणिं करेत्तए, विसते से विसट्ठताते नो चेव णं जाव करिस्संति वा ॥सू० ३४२॥ चउव्विहे वाही पन्नत्ते तंजहा—वातिते पित्तिते सिंभिते सन्निवातिते, १। चउव्विहा तिगिच्छा पन्नत्ता तंजहा—विज्जो ओसधाइं आउरे परिचारते २ ॥सू०-

३४३॥ चत्तारि तिगिच्छगा पन्नत्ता तंजहा—आततिगिच्छते नाममेगे णो परतिगिच्छते १ परतिगिच्छए नाममेगे ४, १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा- वणकरे णामसेगे नो वणपरिमासी वणपरिमासी नाममेगे णो वणकरे एगे वणकरेऽवि वणपरिमासीऽवि एगे णो वणकरे णो वणपरिमासीऽवि २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—वणकरे नाममेगे णो वणसारक्खी ४, ३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—वणकरे नामं एगे णो वणसंरोही ४, ४। चत्तारि वणा पन्नत्ता तंजहा—अंतोसल्ले नाममेगे णो बाहिंसल्ले ४, ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—अंतोसल्ले णाममेगे णो णो बाहिंसल्ले ४, ६। चत्तारि वणा पन्नत्ता तंजहा—अंतो दुट्ठे नामं एगे णो बाहिं दुट्ठे बाहिं दुट्ठे नामं एगे नो अंतो दुट्ठे ४, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—अंतो दुट्ठे नाममेगे नो बाहिं दुट्ठे ४, ८। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—सेतंसे णाममेगे सेयंसे सेयंसे नाममेगे पावंसे पावंसे णामं एगे सेयंसे पावंसे णाममेगे पावंसे, ९। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—सेतंसे णाममेगे सेतंसेत्ति सालिसए सेतंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसते ४, १०। चत्तारि पुरिसा पन्नत्ता तंजहा—सेतंसेत्ति णाममेगे सेतंसेत्ति मणणति सेतंसेत्ति णाममेगे पावंसेत्ति मणणति ४, ११। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालिसते मन्नति सेतंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसते मन्नति ४, १२। चत्तारि पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—आघवतित्ता णाममेगे णो परिभावतित्ता परिभावइत्ता णाममेगे णो आघवतित्ता ४, १३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—आघवतित्ता णाममेगे नो उंछजीविसंपन्ने उंछजीविसंपन्ने णाममेगे णो आघवइत्ता ४, १४। चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पन्नत्ता तंजहा—पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए, १५ ॥सू० ३४४॥ चत्तारि वातिसमोसरणा पन्नत्ता तंजहा—किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणितावादी वेणतियावादी १।

णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पन्नत्ता तंजहा—किरियावादी जाव वेणतितवादी, एवमसुरकुमाराणऽवि जाव थणियकुमाराणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं २ ॥सू० ३४५॥ चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा-गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता एगे गज्जित्तावि वासित्तावि एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता ४, २। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा-गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता विज्जुयाइत्ता णाममेगे ४, ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४, ४। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४, ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४, ६। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—कालवासी णाममेगे णो अकालवासी ४, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—कालवासी णाममेगे नो अकालवासी ४, ८। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—खेत्तवासी णाममेगे णो अखित्तवासी ४, ९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४, १०। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—जणतित्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणतित्ता ४, ११। एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पन्नत्ता तंजहा—जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता ४, १२। चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी ४, १३। एवामेव चत्तारि रायाणो पन्नत्ता तंजहा—देसाधिवती णाममेगे णो सव्वाधिवंती ४, १४ ॥सू०३४६॥ चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा—पुक्खलसंवट्टते पज्जुन्ने जीमूते जिम्हे, पुक्खलवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेति, पज्जुन्ने णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससयाइं भावेति, जीमूते णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेति, जिम्हे णं महामेहे बहूहिं

वासेहिं एगं वामं भावेति वा ण वा भावेइ ॥सू० ३४७॥ चत्तारि करंडगा पन्नत्ता तंजहा---सोवागकरंडते वेसिताकरंडते गाहावतिकरंडते रायकरंडते १। एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा---सोवागकरंडगसमाणे वेसिताकरंडगसमाणे गाहावइकरंडगसमाणे रायकरंडगसमाणे ॥सू० ३४८॥ चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा---साले नाममेगे सालपरियाते साले नाममेगे एरंडपरियाए ४, १। एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा---साले णाममेगे सालपरिताते साले णाममेगे एरंडपरियाते ४, २। चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा---साले णाममेगे सालपरिवारे ४, ३। एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा---साले नाममेगे सालपरिवारे ४, ४। सालदुममज्झयारे जह साले णाम होइ दुमराया। इय सुंदरआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥१॥ एरंडमज्झयारे जह साले णाम होइ दुमराया। इय सुंदरआयरिए मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥२॥ सालदुममज्झयारे एरंडे णाम होति दुमराया। इय मंगुलआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥३॥ एरंडमज्झयारे एरंडे णाम होइ दुमराया। इय मंगुलआयरिए मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥४॥ चत्तारि मच्छा पन्नत्ता तंजहा---अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी ५। एवामव चत्तारि भिक्खागा पन्नत्ता तंजहा---अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी, ६। चत्तारि गोला पन्नत्ता तंजहा---मधुसित्थगोले जउगोले दारुगोले मट्टियागोले, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा---मधुसित्थगोलसमाणे ४, ८। चत्तारि गोला पन्नत्ता तंजहा--अयगोले तउगोले तंबगोले सीसगोले, ९। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा--अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे, १०। चत्तारि गोला पन्नत्ता तंजहा--हिरण्णगोले सुवन्नगोले रयणगोले वयरगोले, ११। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा---हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोलसमाणे, १२। चत्तारि पत्ता पन्नत्ता तंजहा---असिपत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलम्बचीरितापत्ते,

१३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरितापत्तसमाणे, १४। चत्तारि कडा पन्नत्ता तंजहा–सुंबकडे विदलकडे चम्मकडे कंबलकडे, १५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–सुंबकडसमाणे, जाव कंबलकडसमाणे १६ ॥सू० ३४९॥ चउव्विहा चउप्पया पन्नत्ता तंजहा–एगखुरा दुखुरा गंडीपदा सणप्फदा, १। चउव्विहा पक्खी पन्नत्ता तंजहा– चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी २। चउव्विहा खुड्डपाणा पन्नत्ता तंजहा–बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ३ ॥ सू० ३५०॥ चत्तारि पक्खी पन्नत्ता तंजहा–णिवतित्ता णाममेगे नो परिवतित्ता परिवइत्ता नामं एगे नो निवइत्ता एगे निवतित्तावि परिवतित्तावि एगे नो निवतित्ता नो परिवतित्ता १। एवामेव चत्तारि भिक्खागा पन्नत्ता तंजहा–णिवतित्ता णाममेगे नो परिवतित्ता ४, २ ॥सू० ३५१॥ चत्तारि पुरिजाया पन्नत्ता तंजहा–णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे निक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठे ४, १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–णिक्कट्ठे नाममेगे णिक्कट्ठप्पा णिक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ४, २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–बुहे नाममेगे बुहे बुहे नाममेगे अबुहे ४, ३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–बुधे नाममेगे बुधहियए ४, ४। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–आयाणुकंपते णाममेगे नो पराणुकंपते ४, ५ ॥३५२॥ चउव्विहे संवासे पन्नत्ते तंजहा–दिव्वे आसुरे रक्खसे माणुसे १। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा–देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे असुरिए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ असुरे नाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति २। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा–देवे नाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति रक्खसे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति रक्खसे

नामसेगं रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति ४, ३। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा– देवे नाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छति मणुस्से नाममेगे देवीहिं सद्धिं संवासं गच्छति मणुस्से नाममेगे मणुस्सीइ सद्धिं संवासं गच्छति ४। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा–असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे नामसेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति ४, ५। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा–असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे नामसेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति ४, ६। चउव्विधे संवासे पन्नत्ते तंजहा–रक्खसे नामसेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति रक्खसे नाममेगे माणुसीए सद्धिं संवासं गच्छति ४, ७ ॥सू० ३५३॥ चउविहे अवद्धं से पन्नत्ते तंजहा–आसुरे आभिओगे संमोहे देवकिब्बिसे १। चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताते कम्मं पगरेंति, तंजहा–कोवसीलताते पाहुडसील याते संसत्ततवोकम्मेणं निमित्ताजीवयाते २। चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताते कम्मं पगरेंति तंजहा–अत्तुक्कोसेणं परपरिवातेणं भूतिकम्मेणं कोउयकरणेणं ३। चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताते कम्मं पगरेंति, तंजहा–उम्मग्गदेसणाए मग्गंतराएणं कामासंसपओगेणं भिज्जानियाणकरणेणं ४। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिब्बिसियत्ताते कम्मं पगरेंति तंजहा–अरहंताणं अवन्नं वयमाणे अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वयमाणे आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे ५ ॥ सू० ३५४ ॥ चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा– इहलोगपडिबद्धा परलोगपडिबद्धा दुहतो लोगपडिबद्धा अप्पडिबद्धा १। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा–पुरओपडिबद्धा मग्गओपडिबद्धा दुहतो पडिबद्धा अपडिबद्धा २। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा–ओवायपव्वज्जा अक्खातपव्वज्जा संगारपव्वज्जा विहगगइपव्वज्जा ३। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा–तुउयावइत्ता

पुयावइत्ता मोवुयावइत्ता परिपूयावइत्ता ४। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा—नडखइया भडखइया सीहखइया सियालक्खइया ५, चउव्विहा किसी पन्नत्ता तंजहा—वाविया परिवाविया णिंदिता परिणिंदिता ६। एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा—वाविता परिवाविता णिंदिता परिणिंदिता ७। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा—धन्नपुंजितसमाणा धन्नविरल्लितसमाणा धन्नविक्खित्तसमाणा धन्नसङ्कट्टितसमाणा ८ ॥सू०३५५॥ चत्तारि सन्नाओ पन्नत्ताओ तंजहा—आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना १। चउहिं ठाणेहिं आहारसन्ना समुप्पज्जति, तंजहा—ओमकोट्ठताते १ छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं २ मतीते ३ तदट्ठोवओगेणं ४, २। चउहिं ठाणेहिं भयसन्ना समुप्पज्जति, तंजहा—हीणसत्तत्ताते भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ३। चउहिं ठाणेहिं मेहुणसन्ना समुप्पज्जति, तंजहा-चितमंमसोणिययाए मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ४। चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसन्ना समुप्पज्जइ तंजहा—अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ५ ॥सू० ३५६॥ चउव्विहा कामा पन्नत्ता तंजहा—सिंगारा कलुणा बीभत्सा रोद्दा, सिंगारा कामा देवाणं कलुणा कामा मणुयाणं बीभत्सा कामा तिरिक्खजोणियाणं रोद्दा कामा णेरइयाणं ॥ सू० ३५७ ॥ चत्तारि उदगा पन्नत्ता तंजहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—उत्ताणे नाममेगे उत्ताणहिदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरहिदए ।४,२। चत्तारि उदगा पन्नता तंजहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४, ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४,४। चत्तारि उदही पन्नते तंजहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही उत्ताणे

णागमेगे गंभीरोदही ४,५। एवामेव चत्तारी पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए ४, ६। चत्तारि उदही पन्नत्ता तंजहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी ४, ८॥ सू० ३५८॥ चत्तारि तरगा पन्नत्ता तंजहा–समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरइ समुद्दं तरामीतेगे गोप्पतं तरति गोप्पतं तरामीतेगे ४, १। चत्तारि तरगा पन्नत्ता तंजहा–समुद्दं तरित्ता नाममेगे समुद्दे विसीतते समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोप्पते विसीतति ४, २ ॥ सू० ३५१॥ चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–पुन्ने नाममेगे पुन्ने पुन्ने नाममेगे तुच्छे तुच्छे णाममेगे पुन्ने तुच्छे णाममेगे तुच्छे १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–पुन्ने नाममेगे पुन्ने ४, २। चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–पुन्ने नाममेगे पुन्नोभासी पुन्ने नाममेगे तुच्छोभासी तुच्छे नाममेगे पुन्नोभासी तुच्छे नाममेगे तुच्छोभासी, ३। एवं चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–पुन्ने णाममेगे पुन्नोभासी ४,४। चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–पुन्ने नाममेगे पुन्नरूवे पुन्ने नाममेगे तुच्छरूवे ४, ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नता तंजहा–पुन्ने नाममेगे पुन्नरूवे ४,६। चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–पुन्नेवि एगे पितट्ठे पुन्नेवि एगे अवदले तुच्छेवि एगे पियट्ठे तुच्छेवि एगे अवदले, ७। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नता तंजहा–पुन्नेवि एगे पितट्ठे ४, ८। तहेव चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–पुन्नेवि एगे विस्संदति पुन्नेवि एगे णो विस्संदति तुच्छेवि एगे विस्संदति तुच्छेवि एगे न विस्संदइ, ९। एवामेवा चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा–पुन्नेवि एगे विस्संदति ४, १०। तहेव चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–भिन्ने जज्जरिए परिस्साइ अपरिस्साइ, ११। एवामेव चउव्विहे चरित्ते पन्नत्ते तंजहा–भिन्ने जाव अपरिस्साई, १२। चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा–महुकुंभे नामं एगे महुप्पिहाणे महुकुंभे णामं एगे विसपिहाणे विसकुंभे

नामं एगे महुपिहाणे विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, १३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—महुकुंभे नाम एगे मधुपिहाणे ४—'हिययमपावमक्लुसं जीहाऽविऽय कडुयभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से मधुकुंभे मधुपिहाणे ॥१॥ हिययमपावमकलुसं जीहाऽवि य कडुयभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से मधुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥ जं हिययं कलुसमयं जीहाऽवि य मधुरभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से विसकुंभे महुपिहाणे ॥३॥ जं हिययं कलुसमयं जीहाऽवि य कडुयभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से विसकुंभे विसपिहाणे ॥ ४ ॥ सू० ३६० ॥ चउव्विहा उवसग्गा पन्नत्ता तंजहा—दिव्वा माणुसा तिरिक्खजोणिया आयसंचेयणिज्जा १। दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—हासा पाओसा वीमंसा पुढोवेमात्ता २। माणुस्सा उवसग्गा चउव्विधा पन्नत्ता तंजहा—हासा पाओसा वीमंसा कुसीलपडिसेवणाया ३। तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—भता पदोसा आहारहेउं अवच्चलेणसारक्खणाया ४। आतसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—घट्टणाता पवडणाता थंभणाता लेसणाता ५ ॥ सू० ३६१ ॥ चउव्विहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा—सुभे नाममेगे सुभे सुभे नाममेगे असुभे असुभे नाम ४, १। चउव्विहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा—सुभे नाममेगे सुभविवागे सुभे णाममेगे असुभविवागे असुभे नाममेगे सुभविवागे असुभे नाममेगे असुभविवागे ४, २। चउव्विहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा—पगडीकम्मे ठितीकम्मे अणुभावकम्मे पदेसकम्मे ४, ३ ॥ सू० ३६२ ॥ चउव्विहे संघे पन्नत्ते तंजहा—समणा समणीओ सावगा सावियाओ ॥ सू० ३६३ ॥ चउव्विहा बुद्धि पन्नत्ता तंजहा—उप्पत्तिता वेणातिता कम्मिया पारिणामिया, चउव्विधा मई पन्नत्ता तंजहा—उग्गहमती ईहामती अवायमई धारणामती, अथवा चउव्विहा मती पन्नत्ता तंजहा—अरंजरोदगसमाणा वियरोदयसमाणा सरोदगसमाणा सागरोदगसमाणा ॥ सू० ३६४॥

चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा-णेरइता तिरिक्खजोणीया मणुस्सा देवा, चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा-मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा-इत्थिवेयगा पुरिसवेदगा णपुंसकवेदगा अवेदगा अथवा चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा-संजया असंजया संजयासंजया णोसंजयाणोअसंजया ॥ सू० ३६५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-मित्ते नाममेगे मित्ते मित्ते नाममेगे अमित्ते अमित्ते नाममेगे मित्ते अमित्ते णाममेगे अमित्ते १। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-मित्ते णाममेगे मित्तरूवे चउभंगो, ४, २। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-मुत्ते णाममेगे मुत्ते मुत्ते णाममेगे अमुत्ते, ४, ३। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा-मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे ४, ४ ॥ सू० ३६६ ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगईया चउआगईया पन्नत्ता तंजहा-पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणा णेरइएहिंतो वा तिरिक्खजोणिएहिंतो वा मणुस्सेहिंतो वा देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताते वा उवागच्छेज्जा, मणुस्सा चउगइआ चउआगतिता, एवं चेव मणुस्सावि ॥ सू० ३६७ ॥ बेइंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स चउविहे संजमे कज्जति, तंजहा-जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, फासमयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवइ एवं चेव ४, बेइंदियाणं जीवा समारभमाणस्स चउविधे असंजमे कज्जति, तंजहा-जिब्भमयातो सोक्खाओ ववरोवित्ता भवति. जिब्भामतेणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ ॥ सू० ३६८ ॥ सम्मदिट्ठिताणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पन्नत्ताओ

तंजहा—आरंभिता परिग्गहिता मातावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया १। सम्मद्दिट्ठिताणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा—एवं चेव, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं २ ॥ सू० ३६१ ॥ चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेज्जा, तंजहा—कोहेणं पडिनिसेवेणं अकयण्णुयाए मिच्छत्ताभिनिवेसेणं १। चउहिं ठाणेहिं संते (असंते) गुणे दीवेज्जा तंजहा—अब्भासवत्तितं परच्छंदाणुवत्तितं कज्जहेउं कतपडिकतितेति वा १ ॥ सू० ३७० ॥ णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिता, तंजहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं १। णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं निव्वत्तिते सरीरे पन्नत्ते तंजहा—कोहनिव्वत्तिए जाव लोभनिव्वत्तिए, एवं जाव वेमाणियाणं २ ॥सू० ३७१॥ चत्तारि धम्मदारा पन्नत्ता, तंजहा—खंति मुत्ती अज्जवे मद्दवे ॥ सू० ३७२ ॥ चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, तंजहा—महारंभताते महापरिग्गहयाते पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं १। चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजहा—माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं २। चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताते कम्मं पगरेंति, तंजहा—पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाते अमच्छरिताते ३। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजहा—सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बालतवोकम्मेणं अकामणिज्जराए ४ ॥ सू० ३७३ ॥ चउव्विहे वज्जे पन्नत्ते तंजहा—तते वितते घणे भुसिरे १। चउव्विहे नट्टे पन्नत्ते तंजहा—अंचिए रिभिए आरभडे भि(भ)सोले २। चउव्विहे गेए पन्नत्ते तंजहा—उक्खित्तए पत्तए मंदए रोविंदए ३। चउव्विहे मल्ले पन्नत्ते तंजहा—गंथिमे वेढिमे पूरिमे संघातिमे ४। चउव्विहे अलंकारे पन्नत्ते तंजहा—केसालंकारे वत्थालंकारे मल्लालंकारे आभरणालंकारे ५। चउव्विहे अभिणते पन्नत्ते तंजहा—दिट्ठंतिते पांडुसुते सामंतोवातणिते लोगमज्झावसिते ६ ॥ सू० ३७४ ॥

सणंकुमारमाहिंदे सुणं कप्पेसु विमाणा चउवन्ना पन्नत्ता तंजहा– णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किला, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ सू० ३७५ ॥ चत्तारि उदकगब्भा पन्नत्ता तंजहा–उस्सा महिया सीता उसिणा, चत्तारि उदकगब्भा पन्नत्ता तंजहा–हेमगा अब्भसंथडा सीतोसिणा पंचरूविता,–माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथडा। सीतोसिणा उ चित्ते, वतिसाहे पंचरूविता १ ॥ सू० ३७६ ॥ चत्तारि माणुस्सीगब्भा पन्नत्ता तंजहा–इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताते बिंबत्ताए,–अप्पं सुक्कं बहुँ ओयं, इत्थी तत्थ पजातति। अप्पं ओयं बहुँ सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजातति ॥ १ ॥ दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे णपुंसओ। इत्थीतोतसमाओगे, बिंबं तत्थ पजायति ॥ २ ॥ सू० ३७७ ॥ उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि मूलवत्थू पन्नत्ता ॥ सू० ३७८ ॥ चउव्विहे कव्वे पन्नत्ते तंजहा–गज्जे पज्जे कत्थे गेए ॥ सू० ३७९ ॥ णेरतिताणं चत्तारि समुग्घाता पन्नत्ता तंजहा–वेयणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए, एवं वाउकाइयाणवि ॥ सू० ३८० ॥ अरिहतो णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिणो इव अवितथवागरमाणाणं उक्कोसिता चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था ॥ सू० ३८१ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजियाणं उक्कोसिता वातिसंपया हुत्था ॥ सू० ३८२ ॥ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पन्नत्ता, तंजहा–सोहम्मे ईसाणे सणंकुमारे माहिंदे, १। मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया पन्नत्ता, तंजहा–बंभलोगे लंतते महासुक्के सहस्सारे, २। उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिता पन्नत्ता, तंजहा–आणते पाणते आरणे अच्चुते ३ ॥ सू० ३८३ ॥ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा

पन्नत्ता तंजहा–लवणोदे (लवणो) वरुणोदे खीरोदे घतोदे ॥ सू० ३८४ ॥ चत्तारि आवत्ता पन्नता तंजहा–खरावत्ते उन्नतावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते, एवामेव चत्तारि कसाया पन्नत्ता तंजहा–खरावत्तसमाणे कोहे उन्नत्तावत्तसमाणे माणे गूढावत्तसमाणा माता आमिसावत्तसमाणे लोभे, खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति, उन्नत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मातमेवं चेव आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति नेरइएसु उववज्जेति ॥ सू० ३८५ ॥ अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पन्नत्ते पुव्वासाढे एवं चेव उत्तरासाढे एवं चेव ॥ सू० ३८६ ॥ जीवाणं चउठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा–नेरतियनिव्वत्तिते तिरिक्खजोणितनिवत्तिते मणुस्सदेवनिव्वत्तिते, एवं उवचिणिंसु वा उवचिणति वा उवचिणिस्संति वा, एवं चिय उवचिय बंध उदीर वेत तह निज्जरे चेव ॥ सू० ३८७ ॥ चउपदेसिया खंधा अणंता पन्नत्ता, चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता, चउसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता, चउगुणकालगा पोग्गला अणंता जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पराणत्ता ॥ सू० ३८८ ॥

॥ इतिः चतुःस्थानकस्य चतुर्थोद्देशकः ॥४–४॥

॥ इति चतुःस्थानकाख्यं चतुर्थाध्ययनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ पञ्चमस्थानकाख्यं पञ्चममध्ययनम् ॥

पंच महव्वया पन्नत्ता तंजहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं १ । पंचाणुव्वता पन्नत्ता तंजहा–थूलातो पाणाइवायातो वेरमणं थूलातो मुसावायातो वेरमणं थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे २ ॥ सू० ३८९ ॥ पंच वन्ना पन्नत्ता

तंजहा–किराहा नीला लोहिता हालिद्दा सुकिल्ला १ । पंच रसा पन्नत्ता तंजहा–तित्ता जाव मधुरा २ । पंच कामगुणा पन्नत्ता तंजहा–सद्दा रूवा गंधा रसा फासा ३ । पंचहि ठाणेहिं जीवा सज्जंति तंजहा–सद्देहिं जाव फासेहिं ४ । एवं रज्जंति ५ मुच्छंति ६ गिज्झंति ७ अज्झोववज्जंति ८ । पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति, तंजहा–सद्देहिं जाव फासेहिं ९ । पंच ठाणा अपरिराणाता जीवाणं अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेताते-(यसे) अणाणुगामितत्ताते भवंति, तंजहा–सद्दा जाव फासा १० । पंच ठाणा सुपरिन्नाता जीवाणं हिताते सुभाते जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तंजहा–सद्दा जाव फासा ११ । पंच ठाणा अपरिराणाता जीवाणं दुग्गतिगमणाए भवंति तंजहा–सद्दा जाव फासा १२ । पंच ठाणा परिराणाया जीवाणं सुग्गतिगमणाए भवंति तंजहा–सद्दा जाव फासा १३ ॥ सू० ३१० ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दोग्गति गच्छंति, तंजहा–पाणातिवातेणं जाव परि-ग्गहेणं, १ । पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोगतिं गच्छंति, तंजहा–पाणातिवातवे-रमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं २ ॥ सू० ३११ ॥ पंचपडिमातो पन्नत्ताओ तंजहा–भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा भद्दुत्तरपडिमा ॥ सू० ३१२ ॥ पंच थावरकाया पन्नत्ता तंजहा–इंदे थावरकाए बंभे थावरकाए सिप्पे थावरकाए सं(सु)मती थावरकाए पाजावच्चे थावरकाए पंच थावरकायाधिपती पन्नत्ता तंजहा–इंदे थावरकाताधिपती जाव पातावच्चे थावरकाताहिपती ॥ सू० ३१३ ॥ पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि तप्पढमयाते खंभातेज्जा, तंजहा–अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाते खंभातेज्जा, कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाते खंभातेज्जा, महतिमहालतं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा, देवं वा महड्ढियं जाव महेसक्खं पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा, पुरेसु वा पोराणाइं (ओराणाइं) महतिमहालतानि महानिहाणाइं पहीणसामितातिं पहीणसेउयातिं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिन्नसामियाइं उच्छि-

न्नसेउयाइं उच्छिन्नगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागरणगरखेडकब्बडदोणमुहपट्ट-णासमसंवाहसन्निवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु णगरणि-द्धमणेसु सुसाणसुन्नागारगिरिकंदरसन्तिसेलोवट्ठावणभवणगिहेसु संनिक्खि-त्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा, इच्चेहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि तप्पढमताते खंभाएज्जा १। पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमताते नो खंभातेज्जा, तंजहा—अप्प-भूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमताते णो खंभेज्जा, सेसं तहेव जाव भवण-गिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाते णो खंभातेज्जा, सेसं तहेव, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नो खंभातेज्जा २॥ सू० ३१४॥ णेरइयाणं सरीरगा पंचवन्ना पंचरसा पन्नत्ता तंजहा—किण्हा जाव सुकिल्ला तित्ता जाव मधुरा, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं। पंच सरीरगा पन्नत्ता तंजहा—ओरालिते वेउव्विते आहारते तेयते कम्मते, ओरालितसरीरे पंचवन्ने पंचरसे पन्नत्ते तंजहा—किण्हे जाव सुकिल्ले तित्ते जाव महुरे, एवं जाव कम्मगसरीरे, सव्वेऽवि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा ॥ सू० ३१५॥ पंचहिं ठाणेहिं पुरिमपच्छि-मगाणं जिणाणं दुग्गमं भवति, तंजहा—दुआइक्खं दुविभज्जं (दुविभवं) दुपस्सं दुतितिक्खं दुरणुचरं १। पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुगमं भवति, तंजहा—सुआतिक्खं सुविभज्जं सुपस्सं सुतितिक्खं सुरणुचरं २। पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वन्निताइं निच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुत्तिताइं णिच्चं पसत्थाइं निच्चमब्भणुन्ना-ताइं भवंति, तंजहा- खंति मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे ३। पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति, तंजहा-सच्चे संजमे तवे चिताते बंभचेरवासे ४। पंच ठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुन्ना-याइं भवंति, तंजहा—उक्खित्तचरते निक्खितचरते अंतचरते पंतचरते

लूहचरते, ५। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुरायायाइं भवंति, तंजहा—अन्नातचरते अन्नइलायचरे (अन्नवेलाचरे) मोणचरे संसट्ठकप्पिते तज्जातसंसट्ठकप्पिते, ६। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नाताइं भवंति, तंजहा—उवनिहिते सुद्धेसणिते संखादत्तिते दिट्ठलाभिते पुट्ठलाभिते, ७। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुरायाताइं भवंति, तंजहा—आयंबिलिते निव्वियते पुरमड्ढिते परिमिते पिंडवाविते भिन्नपिंडवाविते ८। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति, तंजहा—अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे, ९। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति, तंजहा—अरसजीवी विरसजीवी अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी १०। पंच ठाणाइं जाव भवंति, तंजहा—ठाणातिते उक्कडुआसणिए पडिमट्ठाती वीरासणिए णेसज्जिए, ११। पंच ठाणाइं जाव भवंति, तंजहा—दंडायतिते लगंडसाती आतावते अवाउडते अकंडूयते १२। ॥ सू० ३९६ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तंजहा—अगिलाते आयरियवेयावच्चं करेमाणे १ एवं उवज्झायवेयावच्चं करेमाणे २ थेरवेयावच्चं० ३ तवस्सिवेयावच्चं० ४ गिलाणवेयावच्चं करेमाणे ५, १। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तंजहा—अगिलाते सेहवेयावच्चं करेमाणे १ अगिलाते कुलवेयावच्चं करेमाणे २ अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे ३ अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे ४ अगिलाते साहम्मियवेयावच्चं करेमाणे ५, २ ॥ सू० ३९७ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मितं संभोतितं विसंभोतितं करेमाणे णातिक्कमति, तंजहा—सकिरितट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति १ पडिसेवित्ता णो आलोएइ २ आलोइत्ता णो पट्ठवेति ३ पट्ठवेत्ता णो णिव्विसति ४ जाइं इमाइं थेराणं ठितिपकप्पाइं भवंति ताइं अतियंचिय २ पडिसेवेति से हंदऽहं पडिसेवामि किं मं थेरा करिस्संति ? ५, १। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहंमितं पारंचितं करेमाणे णातिक्कमति,

तंजहा–सकुले वसति सकुलस्स भेदाते अब्भुट्ठित्ता भवति १ गणे वसति गणस्स भेताते अब्भुट्ठेत्ता भवति २ हिंसप्पेही ३ छिद्दप्पेही ४ अभिक्खणं पसिणाततणाइं पउंजित्ता भवति ५, २ ॥ सू० ३९८ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पन्नत्ता तंजहा–आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजेत्ता भवति १ आयरियउवज्झाए णं गणंसि आधारातिणियाते कितिकम्मं नो सम्मं पउंजित्ता भवति २ आयरियउवज्झाते गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेंति ते काले २ णो सम्ममणुप्पवातित्ता भवति ३ आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं नो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति ४ आयरियउवज्झाते गणंसि अणापुच्छितचारी यावि हवइ नो आपुच्छियचारी ५, १। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंचावुग्गहट्ठाणा पन्नत्ता तंजहा–आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति, एवमधारायणिताते सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवइ आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुतपज्जवजाते धारेति ते काले २ सम्मं अणुपवाइत्ता भवइ आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेतावच्चं सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवति आयरियउवज्झाते गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति णो अणापुच्छियचारी २ ॥ सू० ३९९ ॥ पंच निसिज्जाओ पन्नत्ताओ तंजहा–उक्कुडुती गोदोहिता समपायपुता पलितंका अद्धपलितंका १। पंच अज्जवट्ठाणा पन्नत्ता तंजहा–साधुअज्जवं साधुमद्दवं साधुलाघवं साधुखंती साधुमुत्ती ॥ सू० ४०० ॥ पंचविहा जोइसिया पन्नत्ता तंजहा–चंदा सूरा गहा नक्खत्ता ताराओ, १। पंचविहा देवा पन्नत्ता तंजहा–भवितदव्वदेवा णरदेवा धम्मदेवा देवातिदेवा भावदेवा २ ॥ सू० ४०१ ॥ पंचविहा परितारणा पन्नत्ता तंजहा–कातपरितारणा फासपरितारणा रूवपरितारणा सद्दपरितारणा मणपरितारणा ॥ सू० ४०२ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहि-

सीओ पन्नत्ताओ तंजहा—काले राती रतणी विज्जू मेहा, १। बलिस्स णं वतिरोतणिंदस्स वतिरोतणरन्नो पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—सुभा णिसुभा रंभा णिरंभा मतणा २॥ सू० ४०३॥ चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररणो पंच संगामिता अणिता पंच संगामिया अणियाधिवती पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणिते पीढाणिते कुंजराणिते महिसाणिते रहाणिते, दुमे पायत्ताणिताधिवती सोदामी आसराया पीढाणियाधिवती कुंथू हत्थिराया कुंजराणिताधिवती लोहितक्खे महिसाणिताधिवती किन्नरे रधाणिताधिवती १। बलिस्स णं वतिरोतणिंदस्स वतिरोतणरन्नो पंच संगामिताणिता पंच संगामिताणीयाधिवती पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणिते जाव रधाणिते, महद्दुमे पायत्ताणिताधिवती महामोतामो आसराता पीढाणिताधिवती मालंकारो हत्थिराया कुंजराणिताधिपती महालोहिअक्खो महिसाणिताधिवती किंपुरिसे रधाणिताधिपती २। धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो पंच संगामिता अणिता पंच संगामिताणीयाधिपती पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणिते जाव रहाणीए, भद्दसेणे पायत्ताणिताधिपती जसोधरे आसराया पीढाणिताधिपती सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणिताधिपती नीलकंठे महिसाणियाधिपती आणंदे रहाणिताहिवई ३। भूयाणंदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामियाणिया पंच संगामियाणीयाहिवई पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणीए जाव रहाणीए दक्खे पायत्ताणियाहिवई सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणिताहिवई सेयकंठे महिसाणियाहिवई नंदुत्तरे रहाणियाहिवई ४। वेणुदेवस्स णं सुवन्निंदस्स सुवन्नकुमाररन्नो पंच संगामियाणिता पंच संगामिताणिताहिपती पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणीते एवं जधा धरणस्स तधा वेणुदेवस्सवि, वेणुदालियस्स जहा भूताणंदस्स, जधा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स, जधा भूताणंदस्स तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स ५। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच

संगामिता अणिता पंच संगामिताणिताधिवती पन्नत्ता तंजहा—पायत्ताणिते जाव उसभाणिते, हरिणेगमेसी पायत्ताणिताधिवती वाऊ आसराता पीढाणिताधिवई एरावणे हत्थिराया कुंजराणिताधिपई दामड्ढी उसभाणिताधिपती माढरो रधाणिताधिपती, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिता जाव पायत्ताणिते पीढाणिए कुंजराणिए उसभाणिए रधाणिते, लहुपरक्कमे पायत्ताणिताधिवती ६। महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवती महादामड्ढी उसभाणियाहिवई महामाढरे रधाणियाहिवती, जधा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स जधा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुतस्स ७ ॥ सू० ४०४ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भंतरपरिसाते देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता २ ॥ सू० ४०५ ॥ पंचविहा पडिहा पन्नत्ता तंजहा—गतिपडिहा ठितीपडिहा बंधणपडिहा भोगपडिहा बलवीरितपुरिसयारपरक्कमपडिहा ॥ सू० ४०६ ॥ पंचविधे आजीविते पन्नत्ते तंजहा—जातिआजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे ॥ सू० ४०७ ॥ पंच रातककुहा पन्नत्ता तंजहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं उपाणहाओ वालवीअणी ॥ सू० ४०८ ॥ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिन्ने परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, तंजहा—उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उन्मत्तगभूते, तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधति वा रुंभति वा छविच्छेतं करेति वा पमारं वा नेति उद्दवेइ वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणम-(णं वा आ)च्छिदति वा विच्छिदति वा भिंदति वा अवहरति वा १, जक्खातिट्ठे खलु अयं पुरिसे, तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति वा २, ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उतिन्ने भवति, तेण मे

एस पुरिसे अक्कोसति वा जाव अवहरति वा ३, ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणधितासमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति ४, ममं च णं सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?,एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति ५, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा १ । पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा, तंजहा--खित्तचित्ते खलु अतं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति वा १ दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा २ जक्खातिट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा ३ ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवति तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरित वा ४ ममं च णं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासेत्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा णिग्गंथा उदिन्ने २ परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति ५, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा २॥ सू० ४०१ ॥पंच हेऊ पन्नत्ता तंजहा—हेउं न जाणति हेउं ण पासति हेउं ण बुज्झति हेउं णाभिगच्छति हेउं अन्नाणमरणं मरति १। पंच हेऊ पन्नत्ता तंजहा—हेउणा ण जाणति जाव हेउणा अन्नाणमरणं मरति २,२। पंच हेऊ पन्नत्ता तंजहा—हेउं जाणइ जाव हेउं छउमत्थमरणं मरइ ३। पंच हेऊ पन्नत्ता तंजहा—हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरइ ४। पंच अहेऊ पन्नत्ता तंजहा—अहेउं ण याणति जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरति ५। पंच अहेऊ पन्नत्ता तंजहा—अहेउणा न जाणति जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरति ६। पंच अहेऊ पन्नत्ता तंजहा—अहेउं जाणति जाव अहेउं केवलिमरणं मरति ७। पंच अहेऊ पन्नत्ता तंजहा—अहेउणा ण जाणति जाव अहेउणा केवलिमरणं मरति ८ । केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पन्नत्ता तंजहा—अणुत्तरे

नाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अणुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिते १ ॥ सू० ४१० ॥ पउमप्पहे णमरहा पंचचित्ते हुत्था, तंजहा–चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते चित्ताहिं जाते चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइए चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने चित्ताहिं परिणिव्वुते, पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते, एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो १। पउमप्पभस्स चित्ता १ मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स २। पुव्वाइं आसाढा ३ सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ४ ॥ १ ॥ रेवतिता अणंतजिणे ५ पूसो धम्मस्स ६ संतिणो भरणी ७। कुंथुस्स कत्तियाओ ८ अरस्स तह रेवतीतो य ९ ॥२॥ मुणिसुव्वयस्स सवणो १० आसिणी णमिणो ११ य नेमिणो चित्ता १२। पासस्स विसाहाओ १३ पंच य हत्थुत्तरो वीरो १४ ॥३॥ समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था तंजहा–हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिते हत्थुत्तराहिं जाते हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने २ ॥ सू० ४११ ॥ इति पंचमट्ठाणस्स पढमो उद्देसओ समत्तो ॥

॥ इति पञ्चमस्थानकस्य प्रथमोद्देशकः ॥ ५-१ ॥

॥ अथ पञ्चमस्थानके द्वितीय उद्देशकः ॥

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वितंजितातो पंच महण्णवातो महाणदीओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, तंजहा–गंगा जउणा सरऊ एरावती मही १। पंचहिं ठाणेहिं कप्पति, तंजहा–भतंसि वा १ दुब्भिक्खंसि वा २ पव्वहेज्ज व णं कोई ३ दओघंसि वा एज्जमाणंसि

महता वा ४ अणारितेसु ५, २ ॥ सू० ४१२ ॥ णो कप्पइ णिग्गं-थाण वा णिग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए, पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तंजहा–भयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा जाव महता वा अणा-रितेहि ५, १। वासावासं पज्जोसविताणं णो कप्पइ णिग्गंथाण वा २ गामाणुगामं दूइज्जित्तए, पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तंजहा–णाणट्ठयाए दंसणट्ठ-याए चरित्तट्ठयाए आयरियउवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा आयरितउज्झा-याण वा बहिता वेआवच्चं करणताते २ ॥ ४१३ ॥ पंच अणुग्घातिता पन्नत्ता तंजहा–हत्थाकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवेमाणे रातीभोयणं भुंजेमाणे सागारितपिंडं भुंजेमाणे रायपिंडं भुंजेमाणे ॥ सू० ४१४ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमति, तंजहा–नगरं सिता सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, वहवे समणमाहणा णो संचा-एंति भत्ताते वा पाणाते वा निक्खमित्तते वा पविसित्तते वा तेसिं विन्न-वणट्ठताते रातंतेउरमणुपविसेज्जा १ पाडिहारितं वा पीढफलगसेज्जासंथा-रगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपवेसेज्जा २ हतस्स वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपवेसिज्जा ३ परो व णं सहसा वा बलसा वा बाहाते गहाय अंतेउरमणुपवेसेज्जा ४ बहिता व णं आरामगयं वा उज्जा-णगयं वा रायंतेउरजणो सव्वतो समंता संपरिक्खिवित्ता णं निवेसिज्जा ५ इच्चेतेहि पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे जाव णातिक्कमइ ॥ सू० ४१५ ॥ पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं धरेज्जा, तंजहा-इत्थी दुव्वियडा दुन्निसण्णा सुक्कपोग्गले अधिट्ठिज्जा, सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अंतो जोणीते अणुपवेसेज्जा, सइं वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा, सीओदगवियडेण वा से आयममाणीते सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहि जाव धरेज्जा १। पंचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणावि गब्भं नो धरेज्जा, तंजहा–अप्पत्त-

जोवणा अति-कंतजोवणा जातिवंझा गेलन्नपुट्ठा दोमणंसिया ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नो धरेज्जा २। पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि नो गब्भं धरेज्जा, तंजहा--निच्चोउया अणोउया वावन्नसोया वाविद्धसोया अणंगपडिसेवणी, इच्चेतेहि पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा ३। पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाविणी नो गब्भं धरेज्जा तंजहा--उउंमि णो णिगामपडि-सेविणी तावि भवति, समागता वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसंति उदिन्ने वा से पित्तसोणिते पुरा वा देवकम्मणा पुत्तफले वा नो निद्दिट्ठे भवति, इच्चेतेहिं जाव नो धरेज्जा ४ ॥ सू० ४१६ ॥ पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सिज्जं वा निसी-हियं वा चेतेमाणे णातिक्कमंति, तंजहा--अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य एगं महं अगामितं छिन्नावायं दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा तत्थेगयतो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे णातिक्कमंति १ अत्थेगइया णिग्गंथा (२) गामंसि वा णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि वा वासं उवागता एग-तिया यऽत्थ उवस्सयं लभंति एगतिता णो लभंति तत्थेगतितो ठाणं वा जात्र नातिक्कमंति २ अत्थेगतिता निग्गंथा य (२) नागकुमारावासंसि वा (सुवण्णकुमारावासंसि वा) वासं उवागता तत्थेगयओ जाव णातिक्कमंति ३ आमोसगा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ चीवरपडिताते पडिगाहित्तते तत्थेगयओ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ४ जुवाणा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ मेहुणपडिताते पडिगाहित्तते तत्थेगयओ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नातिक्कमंति १। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहि सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमति, तंजहा--खित्तचित्ते समणे णिग्गंथे निग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति २। एव-

मेतेणं गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते निग्गंथीपव्वावियते समणो णिग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमंति ३ ॥ सू० ४१७ ॥ पंच आसवदारा पन्नत्ता तंजहा–मिच्छत्तं अविरती पमादे कसाया जोगा १। पंच संवरदारा पन्नत्ता तंजहा–सम्मत्तं विरती अपमादो अकसातित्तमजोगित्तं २। पंच दंडा पन्नत्ता तंजहा–अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकस्मातदंडे दिट्ठीविप्परियासितादंडे ३ ॥ सू० ४१८ ॥ मिच्छदिट्ठियाण पंच किरिताओ पन्नत्ताओ तंजहा-आरंभिता परिग्गहिता मातावत्तिता अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिता १। मिच्छदिट्ठियाण नेरइयाणं पंच किरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा-जाव मिच्छादंसणवत्तिया एवं सव्वेसिं निरन्तरं जाव मिच्छद्दिट्ठिताणं वेमाणिताणं, नवरं विगलिंदिता मिच्छद्दिट्ठी ण भन्नंति, सेसं तहेव २। पंच किरियातो पन्नत्ताओ तंजहा--कातिता अहिगरणिता पातोसिया पारितावणिया पाणातिवातकिरिया ३ णेरइयाणं पंच एवं चेव निरन्तरं जाव वेमाणियाणं १, ४। पंच किरिताओ पन्नत्ताओ तंजहा–आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता ४, णेरइयाणं पंच किरिता, निरंतरं जाव वेमाणियाणं २, ५। पंच किरियातो पन्नत्ताओ तंजहा–दिट्ठिया पुट्ठिया पाडुच्चि(पाडोचित्ता) सामंतोवणिवाइया साहत्थिता एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, ३, ६। पंच किरियातो पन्नत्ताओ तंजहा–णेसत्थिता आणवणिता वेयारणिया अणाभोगवत्तिता अणवकंखवत्तिता एवं जाव वेमाणियाणं २४, ४, ७। पंच किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–पेज्जवत्तिता दोसवत्तिता पओगकिरिया समुदाणकिरिया ईरियावहिया एवं मणुस्साणवि, सेसाणं नत्थि ५, ८ ॥ सू० ४१९ ॥ पंचविहा परिन्ना पन्नत्ता, तंजहा–उवहिपरिन्ना उवस्सयपरिन्ना कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना भत्तपाणपरिन्ना ॥ सू० ४२० ॥ पंचविहे ववहारे पन्नत्ते, तंजहा–आगमे सुते आणा धारणा जीते, जहा से तत्थ आगमे सिता

आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा, णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुते सिता सुतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा, णो से तत्थ सुते सिता एवं जाव जहा से तत्थ जीए सिया जीतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा, इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा आगमेणं जाव जीतेणं, जधा (२) से तत्थ आगमे जाव जीते तहा (२) ववहारं पट्ठवेज्जा, से किमाहु भंते! आगमबलिया समणा निग्गंथा? इच्चेतं पंचविधं ववहारं जता जता जहिं जहिं तया तता तहिं तहिं आणिस्सितोवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे णिग्गंथे आणाते आराधते भवति ॥ सू० ४२१ ॥ संजतमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पन्नत्ता, तंजहा—सद्दा जाव फासा १। संजतमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पन्नत्ता, तंजहा—सद्दा जाव फासा २। असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा जागराणं वा पंच जागरा पन्नत्ता, तंजहा—सद्दा जाव फासा ३ ॥ सू० ४२२ ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा रतं आदिज्जंति, तंजहा—पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं १। पंचहिं ठाणेहिं जीवा रतं वमंति, तंजहा—पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं २ ॥ सू० ४२३ ॥ पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तते पंच पाणगस्स ॥ सू० ४२४ ॥ पंचविधे उवघाते पन्नत्ते तंजहा—उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते एसणोवघाते परिकम्मोवघाते परिहरणोवघाते। पंचविहा विसोही पन्नत्ता, तंजहा—उग्गमविसोही उप्पायणाविसोधी एसणाविसोही परिकम्मविसोही परिहरणाविसोधी ॥ सू० ४२५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुलभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति, तंजहा—अरहंताणं अवन्नं वदमाणे १ अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २ आयरियउवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे ३ चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वयमाणे ४ विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे ५, १। पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोधियत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजहा—अरहंताणं वन्नं

वद्माणे जाव विवक्तवबंभचेराणं देवाणं वन्नं वदमाणे २ ॥ सू० ४२६ ॥ पंच पडिसंलीणा पन्नत्ता, तंजहा–सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदियपडिसंलीणे । पंच अप्पडिसंलीणा पन्नत्ता, तंजहा–सोतिंदिहअप्पडिसंलीणे जाव फासिंदियअप्पडिसंलीणे । पंचविधे संवरे पन्नत्ते, तंजहा–सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, पंचविहे असंवरे पन्नत्ते तंजहा–सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे ॥ सू० ४२७ ॥ पंचविधे संजमे पन्नत्ते तंजहा–सामातितसंजमे छेदोवट्ठावणियसंजमे परिहारविसुद्धितसंजमे सुहुमसंपरागसंजमे अहक्खायचरित्तसंजमे ॥ सू० ४२८ ॥ एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तंजहा–पुढविकातियसंजमे जाव वणस्सतिकातितसंजमे १ । एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तंजहा–पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सतिकातितअसंजमे २ ॥ सू० ४२९ ॥ पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तंजहा–सोतिंदितसंजमे जाव फासिंदियसंजमे, १ । पंचिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति, तंजहा–सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदियअसंजमे, २ । सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तंजहा–एगिंदितसंजमे जाव पंचिंदियसंजमे ३ । सव्वपाणभूतजीवसत्ता णं समारंभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति, तंजहा–एगिंदितअसंजमे जाव पंचिंदियअसंजमे ४ ॥ सू० ४३० ॥ पंचविधा तणवणस्सतिकातिता पन्नत्ता तंजहा–अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा ॥ सू० ४३१ ॥ पंचविधे आयारे पन्नत्ते तंजहा–णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे ॥ सू० ४३२ ॥ पंचविधे आयारपकप्पे पन्नत्ते तंजहा–मासिते उग्घातिते मासिए अणुग्घाइए चउमासिए उग्घाइए चाउम्मासिए अणुग्घातीते आरोवणा । आरोवणा पंचविहा पन्नत्ता तंजहा–पट्ठविया

ठविया कसिणा अकसिणा हाडहडा ॥ सू० ४३३ ॥ जंबुद्दीवे (२) मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महानईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा—मालवंते चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकुडे एगसेले १ । जंबूमंदरस्स पुरओ सीताए महानदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा—तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे सोमणसे २ । जंबूमंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओताते महाणदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा—विज्जुप्पभे अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे ३ । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोताते महानदीते उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा—चंदपव्वते सूरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते गंधमादणे ४ । जंबूमंदरदाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पन्नत्ता तंजहा—निसहदहे देवकुरुदहे सूरदहे सुलसदहे विज्जुप्पभदहे ५ । जंबूमंदरउत्तरकुराते कुराए पंच महद्दहा पन्नत्ता तंजहा—नीलवंतदहे उत्तरकुरुदहे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे ६ । सव्वेऽवि णं वक्खारपव्वया(तेणं) सीया सीओयाओ महाणईओ मंदरं वा पव्वतंतेणं पंच जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचगाउयसताइं उव्वेहेणं ७ । धायइसंडे दीवे पुरिच्छमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महाणतीते उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पन्नत्ता तंजहा—मालवंते एवं जधा जंबुद्दीवे तधा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहा य उच्चत्तं भाणियव्वं ८ । समयक्खेत्ते णं पंच भरहाइं पंच एरवताइं एवं जधा चउट्ठाणे बितीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव पंच मंदरा पंच मंदरचूलिताओ, णवरं उसुयारा णत्थि ॥ सू० ४३४ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए पंचधणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १ । भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था २ । बाहुबली णामणगारे एवं चेव ३ । बंभीणामज्जा एवं चेव ४ । एवं सुंदरीवि ५ ॥ सू० ४३५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा, तंजहा—सद्देणं फासेणं भोयणपरिणामेणं णिद्दक्ख-

एणं सुविणादंसणेणं ॥ सू० ४३६ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिरहमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति, तंजहा—निग्गंथिं च णं अन्नयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा ओहातेज्जा तत्थ णिग्गंथे णिग्गंथिं गिरहमाणे वा अवलंबमाणे वा नातिक्कमति १ णिग्गंथे णिग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिरहमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति २ णिग्गंथे णिग्गंथिं सेतंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणीं वा उवुज्झमाणीं वा गिरहमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ३ निग्गंथे निग्गंथिं नावं आरुभमाणे वा ओरोहमाणे वा णातिक्कमति ४, खेत्तइत्तं दित्तइत्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं जाव भत्तपाणपडियातिक्खियं अट्ठजायं वा निग्गंथे निग्गंथिं गेरहमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ५ ॥ सू० ४३७ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच अतिसेसा पन्नत्ता तंजहा—आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय (२) पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति १ आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति २ आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा णो करेज्जा ३ आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स एगरायं वा दुरातं वा एगागी वसमाणे णातिक्कमति ४ आयरियउवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगरातं वा दुरातं वा वसमाणे णातिक्कमति ५ ॥ सू० ४३८ ॥ पंचहिं ठाणेहिं आयरियउवज्झायस्स गणावक्कमणे पन्नत्ते तंजहा—आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति १ आयरियउवज्झाए गणंसि अधारायणियाते कितिकम्मं वेणइयं णो सम्मं पउंजित्ता भवति २ आयरियउवज्झाते गणंसि जे सुयपज्जवजाते धारिंति ते काले नो सम्ममणुपवादेत्ता भवति ३ आयरियउवज्झाए गणंसि सगणिताते वा परगणियाते वा निग्गंथीते बहिल्लेसे भवति

४ मित्ते णातीगणे वा से गणातो अवक्कमेज्जा तेसिं संगहोवग्गहट्ठयाते गणावक्कमणे पन्नत्ते ५ ॥ सू० ४३९ ॥ पंचविहा इड्ढीमंता मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ॥ सू० ४४० ॥ पंचमट्ठाणस्स बिइओ उद्देसो ॥

॥ इति पञ्चमस्थानकस्य द्वितीय उद्देशकः ॥ ५-२ ॥

॥ अथ पञ्चमस्थानके तृतीय उद्देशकः ॥

पंच अत्थिकाया पन्नत्ता तंजहा—धम्मत्थिकाते अधम्मत्थिकाते आगासत्थिकाते जीवत्थिकाते पोग्गलत्थिकाए १। धम्मत्थिकाए अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविधे पन्नत्ते तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं, खेत्ततो लोगपमाणमेत्ते, कालओ णं कयाति णासी न कयाइ न भवति ण कयाइ ण भविस्सइत्ति भुविं भवति य भविस्सति त धुवे णितिते सासते अक्खए अव्वते अवट्ठिते णिच्चे, भावतो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणातो गमणगुणे य १, अधम्मत्थिकाए अवन्ने एवं चेव, णवरं गुणातो ठाणगुणे २, आगासत्थिकाए अवन्ने एवं चेव णवरं खेत्तओ लोगालोगपमाणमित्ते गुणतो अवगाहणागुणे, सेसं तं चेव ३, जीवत्थिकाए णं अवन्ने एवं चेव, णवरं दव्वओ णं जीवत्थिगाते अणंताइं दव्वाइं, अरूवि जीवे सासते, गुणातो उवओगगुणे सेसं तं चेव ४, पोग्गलत्थिगाते पंचवन्ने पंचरसे दुग्गंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते अवट्ठिते जाव दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते कालतो ण कयाइ णासि जाव णिच्चे भावतो वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते, गुणातो गहणगुणे ॥ सू० ४४१ ॥ पंच गतीतो पन्नत्ताओ तंजहा—निरयगती तिरियगती

मणुयगती देवगती सिद्धिगती ॥ सू० ४४२ ॥ पंच इंदियत्था पन्नत्ता तंजहा–सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे १ । पंच मुंडा पन्नत्ता तंजहा–सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे २ । अहवा पंच मुंडा पन्नत्ता तंजहा–कोहमुंडे माणमुंडे मायामुंडे लोभमुंडे सिरमुंडे ३ ॥ सू० ४४३ ॥ अहेलोगे णं पंच बायरा पन्नत्ता तंजहा–पुढविकाइया आउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया ओराला तसा पाणा १ । उड्ढलोगे णं पंच बायरा पन्नत्ता तंजहा–एवं तं चेव २ । तिरियलोगे णं पंच बायरा पन्नत्ता तंजहा–एगिंदिया जाव पंचिंदिता ३ । पंचविधा बायरतेउकाइया पन्नत्ता तंजहा–इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाते ४ । पंचविधा बादरवाउकाइया पन्नत्ता तंजहा–पाईणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते विदिसवाते ५ । पंचविधा अचित्ता वाउकाइया पन्नत्ता तंजहा–अक्कंते धंते पीलिए सरीराणुगते संमुच्छिमे ६ ॥ सू० ४४४ ॥ पंच निग्गंथा पन्नत्ता तंजहा–पुलाते बउसे कुसीले णिग्गंथे सिणाते १ । पुलाए पंचविहे पन्नत्ते तंजहा–णाणपुलाते दंसणपुलाते चरित्तपुलाते लिंगपुलाते अहासुहुमपुलाते नामं पंचमे २ । बउसे पंचविधे पन्नत्ते तंजहा–आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे नामं पंचमे ३ । कुसीले पंचविधे पन्नत्ते तंजहा–णाणकुसीले दंसणकुसीले चरित्तकुसीले लिंगकुसीले अहासुहुमकुसीले नामं पंचमे ४ । नियंठे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा–पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे ५ । सिणाते पंचविधे पन्नत्ते तंजहा–अच्छवी, असबले, अकम्मंसे, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, अपरिस्सावी ६ ॥ सू० ४४५ ॥ कप्पंति (कप्पइ) णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तंजहा–जंगिते भंगिते साणते पोत्तिते तिरीडपट्टते णामं पंचमए । कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा

तंजहा—उरिणाए उट्टिते साणते पच्चापिच्चियते मुंजापिच्चिते नामं पंचमए ॥ सू० ४४६ ॥ धम्मं चरमाणस्स पंच णिस्साठाणा पन्नत्ता तंजहा—छक्काए गणे राया गिहवती सरीरं ॥ सू० ४४७ ॥ पंच णिही पन्नत्ता तंजहा—पुत्तनिही मित्तनिही सिप्पनिही धणणिही धन्नणिही ॥ सू० ४४८ ॥ सोए पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—पुढविसोते आउसोते तेउसोते मंतसोते बंभसोते ॥ सू० ४४९ ॥ पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तंजहा—धम्मत्थिकातं अधम्मत्थिकातं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं, एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति धम्मत्थिकातं जाव परमाणुपोग्गलं ॥ सू० ४५० ॥ अधोलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालता महानिरया पन्नत्ता तंजहा—काले महाकाले रोरुते महारोरुते अप्पतिट्ठाणे १। उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालता महाविमाणा पन्नत्ता तंजहा—विजये विजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे २ ॥ सू० ४५१ ॥ पंच पुरिसजाता पन्नत्ता तंजहा—हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते चिरसत्ते उदतणसत्ते ॥ सू० ४५२ ॥ पंच मच्छा पन्नत्ता तंजहा—अणुसोतचारी पडिसोतचारी अंतचारी मज्झचारी सव्वचारी, एवामेव पंच भिक्खागा पन्नत्ता तंजहा—अणुसोयचारी जाव सव्वसोयचारी ॥ सू० ४५३ ॥ पंच वणीमगा पन्नत्ता तंजहा—अतिहिवणीमते किविणवणीमते माहणवणीमते साणवणीमते समणवणीमते ॥ सू० ४५४ ॥ पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति, तंजहा—अप्पा पडिलेहा, लाघविए पसत्थे, रूवे वेसासिते, तवे अणुन्नाते, विउले इंदियनिग्गहे ॥ सू० ४५५ ॥ पंच उक्कला पन्नत्ता तंजहा—दंडुक्कले रज्जुक्कले तेणुक्कले देसुक्कले सव्वुक्कले ॥ सू० ४५६ ॥ पंच समितीतो पन्नत्ताओ तंजहा—ईरियासमिती भाससमिती जाव पारिट्ठावणियासमिती ॥ सू० ४५७ ॥ पंचविधा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा—एगिंदिता जाव पंचिंदिता १। एगिंदिया

पंचगतिइया पंचागतिता पन्नत्ता, तंजहा–एगिंदिए एगिंदितेसु उववज्जमाणे एगिंदितेहिंतो जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से एगिंदिए एगिंदितत्तं विप्पजहमाणे एगिंदितत्ताते वा जाव पंचिंदितत्ताते वा गच्छेज्जा २। बेंदिया पचगतिता पंचागइया एवं चेव ३। एवं जाव पंचिंदिया पंचगतिता पंचागइया पन्नत्ता तंजहा–पंचिंदिया जाव गच्छेज्जा ४ ५-६। पंचविधा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाती ७। अहवा पंचविधा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–नेरइया जाव देवा सिद्धा ८॥ सू० ४५८॥ अह भंते ! कमलसूर-तिलमुग्गमास-णिप्फावकुलत्थआ-(अ)लिसंदगसतीणा-पलिमंथगाणं एतेसि णं धन्नाणं कुट्ठाउत्ताणं जधा सालीणं जाव केवतितं कालं जोणी संचिट्ठति ?, गोयमा ! (मा) जहन्नेणं अंतोमुहुत्तंउक्कोसेणं पंच संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायति जाव तेण परं जोणीवोच्छेदे पराणत्ते ॥ सू० ४५९॥ पंच संवच्छरा पन्नत्ता, तंजहा–णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिचरसंवच्छरे १। जुगसंवच्छरे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा–चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते चेव। पमाणसंवच्छरे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा–नक्खत्ते चंदे ऊऊ आदिच्चे अभिवड्ढिते २। लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा–समगं नक्खत्ता जोगं जोयंति समगं उदू परिणामंति। णच्चुराहं णातिसीतो बहूदतो होति नक्खत्ते ॥१॥ ससिसगलपुराणमासी जोतेती विसमचारणक्खत्ते। कडुतो बहूदतो (या) तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥ विममं पवालिणो परिणमन्ति अणुदूसु देंति पुप्फफलं। वासं ण सम्मं वासति तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाणं तु रसं पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो। अप्पेणावि वासेणं सम्मं निप्फज्जए सस्सं (सासं) ॥४॥ आदिच्चतेयतविता खणलवदिवसा उऊ परिणामंति। पूरिंति रेणुथलताइं (पुरेइ य थलयाइं) तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥५॥ ॥सू० ४६०॥ पंचविधे

जीवस्स णिज्जाणमग्गे पन्नत्ते तंजहा—पातेहिं ऊरूहिं उरेणं सिरेणं सव्वंगेहिं, पाएहिं णिज्जाणमाणे निरयंगामी भवति, ऊरूहिं णिज्जाण(य)माणे तिरियगामी भवति, उरेणं निज्जायमाणे मणुयगामी भवति, सिरेणं णिज्जायमाणे देवगामी भवति, सव्वंगेहिं (सव्वेहिं) निज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पराणत्ते ॥ सू० ४६१ ॥ पंचविहे छेयणे पन्नत्ते, तंजहा—उप्पायछेयणे वियच्छेयणे बंधच्छेयणे पएस(पंथ)च्छेयणे दोधारच्छेयणे १। पंचविधे आणंतरिए पन्नते तंजहा—उप्पातयणंतरिते वितणंतरिते पतेसाणंतरिते समताणंतरिए सामराणाणंतरिते २। पंचविधे अणंते पन्नत्ते तंजहा—णामणंतते ठवणाणंतते दव्वाणंतते गणणाणंतते पदेसाणंतते, अहवा पंचविहे अणंतते पन्नत्ते तंजहा—एगंतोऽणंतते दुहतोणंतए देसवित्थारणंतए सव्ववित्थाराणंतते सासयाणंतते ॥ सू० ४६२ ॥ पंचविहे णाणे पन्नत्ते तंजहा—आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥ सू० ४६३ ॥ पंचविहे-णाणावरणिज्जे कम्मे पन्नत्ते तंजहा—आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवलनाणावरणिज्जे ॥ सू० ४६४ ॥ पंचविहे सज्झाए पन्नत्ते तंजहा—वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा ॥ सू० ४६५ ॥ पंचविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तंजहा—सद्दहणासुद्धे विणयसुद्धे अणुभासणासुद्धे अणुपालणासुद्धे भावसुद्धे ॥ सू० ४६६ ॥ पंचविहे पडिक्कमणे पन्नत्ते तंजहा—आसवदारपडिक्कमणे मिच्छत्तपडिक्कमणे कसायपडिक्कमणे जोगपडिक्कमणे भावपडिक्कमणे ॥ सू० ४६७ ॥ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा, तंजहा—संगहट्ठयाते उवग्गहणट्ठयाते णिज्जरणट्ठयाते सुत्ते वा मे पज्जवयाते भविस्सति सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाते १ । पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खिज्जा, तंजहा—णाणट्ठयाते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते वुग्गहविमोतणट्ठयाते अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीतिकट्टु ॥ सू० ४६८ ॥ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवराणा पन्नत्ता, तंजहा—किराहा जाव सुक्किला

१ । सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता २ । बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ३ । नेरइया णं पंचवन्ने पंचरसे पोग्गले बंधेंसु वा बंधंति वा, बंधिस्संति वा, तंजहा–किण्हे जाव सुक्किल्ले, तित्ते जाव मधुरे, एवं जाव वेमाणिता २४, ४ ॥ सू० ४६९ ॥ जंबुद्दीवे (२) मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा महानदी पंच महानदीओ समप्पेंति, तंजहा–जउणा सरऊ आदी कोसी मही १। जंबूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहाणदी पंच महानदीओ समप्पेंति, तंजहा–सतद्दू विभासा वितत्था एरावती चंदभागा २। जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तामहानई पंच महनईओ समप्पेंति, तंजहा–किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला महातीरा ३ । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तावतीमहानई पंच महानईओ समप्पेंति, तंजहा–इंदा इंदसेणा सुसेणा वारिसेणा महाभोया ४ ॥ सू० ४७० ॥ पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झावसित्ता (मज्झेवसित्ता) मुंडा जाव पव्वतिता, तंजहा–वासुपुज्जे मल्ली अरिट्ठनेमी पासे वीरे ॥ सू० ४७१ ॥ चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पन्नत्ता तंजहा–सभा सुधम्मा उववातसभा अभिसेयसभा अलंकारितसभा ववसातसभा १। एगमेगे णं इंदट्ठाणे णं पंच सभाओ पंन्नत्ताओ, तंजहा–सभा सुहम्मा जाव ववसातसभा ॥ सू० ४७२ ॥ पंच णक्खत्ता पंचतारा पन्नत्ता तंजहा–धणिट्ठा रोहिणी पुणव्वसू हत्थो विसाहा ॥ सू० ४७३ ॥ जीवाणं पंचट्ठाणणिव्वित्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा–एगिंदितनिव्वत्तिते जाव पंचिंदितनिव्वत्तिते १। एवं–'चिण उवचिण बंध उदीर वेद तह णिज्जरा चेव' २। पंचपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता, पंचपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ३ ॥ सू० ४७४ ॥

पंचमट्ठाणस्स तईओ उद्देसो । पंचमज्झयणं समत्तं ॥

इति पञ्चमस्थानकस्य तृतीयोद्देशकः ॥ ५-३ ॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥५॥

॥ अथ षष्ठस्थानकाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

छहिं ठाणेहि संपन्ने अणगारे अरिहति गणं धारित्तते, तंजहा–सड्ढी पुरिसज्जाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं, अप्पाधिकरणे ॥ सू० ४७५ ॥ छहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं गिराहमाणे वा अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ, तंजहा–खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खातिट्ठं उम्मातपत्तं उवसग्गपत्तं साहिकरणं ॥ सू० ४७६ ॥ छहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य साहम्मितं कालगतं समायरमाणा णाइक्कमंति, तंजहा–अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा, बाहीहिंतो वा निव्वाहिं णीणेमाणा, उवेहमाणा वा, उवासमाणा वा (भयमाणा वा, उवसामेमाणा वा) अणुन्नवेमाणा वा, तुसिणीते वा संपव्वयमाणा ॥ सू० ४७७ ॥ छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तंजहा–धम्मत्थिकायमधम्मत्थिकातं आयासं जीवमसरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं १। एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जाणति पासति, तंजहा–धम्मत्थिकातं जाव सद्दं २ ॥ सू० ४७८ ॥ छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीति वा जुत्तीति वा, जसेइ वा बलेति वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेति वा, तंजहा– जीवं वा अजीवं करणताते, अजीवं वा जीवं करणताते, एगसमएणं वा दो भासातो भासित्तते, सयं कडं वा कम्मं वेदेमि वा मा वा वेएमि, परमाणुपोग्गलं वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकातेण वा समोदहित्तते, बहिता वा लोगंता गमणताते ॥ सू० ४७९ ॥ छज्जीवनिकाया पन्नत्ता, तंजहा–पुढविकाइया जाव तसकाइया ॥ सू० ४८० ॥ छ तारग्गहा पन्नत्ता तंजहा–सुक्के बुहे बहस्सति अंगारते सनिच्चरे केतू ॥ सू० ४८१ ॥ छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता. तंजहा–पुढविकाइया जाव तसकाइया १। पुढविकाइया छगइया छआगतिता पन्नत्ता, तंजहा–पुढविकातिते पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढवि-

काइएहिंतो वा जाव तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढविकातिते, पुढविकातितत्तं विप्पजहमाणो पुढविकातितत्ताते वा जाव तसकातितत्ताते वा गच्छेज्जा, आउकातियावि छगतिता छआगतिता, एवं चेव जाव तसकातिता ॥ सू० ४८२ ॥ छव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा–आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी अन्नाणी, अहवा छव्विधा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया, अहवा छव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा–ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेअगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी ॥ सू० ४८३ ॥ छव्विहा तणवणस्सतिकातिता पन्नत्ता तंजहा–अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा संमुच्छिमा ॥ सू० ४८४ ॥ छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति, तंजहा–माणुस्सए भवे, आयरिए (आरिये) खित्ते जम्मं, सुकुले पच्चायाती, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स सवणता, सुयस्स वा सद्दहणता, सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्मं काएणं फासणया ॥ सू० ४८५ ॥ छ इंदियत्था पन्नत्ता, तंजहा–सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे नोइंदियत्थे ॥ सू० ४८६ ॥ छव्विहे संवरे पन्नत्ते तंजहा–सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे णोइंदितसंवरे, छव्विहे असंवरे पन्नत्ते, तंजहा–सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदितअसंवरे णोइंदितअसंवरे ॥ सू० ४८७ ॥ छव्विहे साते पन्नत्ते, तंजहा–सोइंदियसाते जाव नोइंदियसाते, छव्विहे असाते पन्नत्ते, तंजहा–सोतिंदितअसाते जाव नोइंदितअसाते ॥ सू० ४८८ ॥ छव्विहे पायच्छित्ते पन्नत्ते, तंजहा–आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सगारिहे तवारिहे ॥ सू० ४८९ ॥ छव्विहा मणुस्सगा पन्नत्ता, तंजहा–जंबूदीवगा, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धगा, धाततिसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा, अंतरदीवगा, अहवा छव्विहा मणुस्सा पन्नत्ता, तंजहा–

संमुच्छिममणुस्सा० ३—कम्मभूमगा १ अकम्मभूमगा २ अंतरदीवगा ३, गब्भवक्कंतिअमणुस्सा० ३—कम्मभूमिगा १ अकम्मभूमिगा २ अंतरदीवगा ३ ॥ सू० ४१० ॥ छव्विहा इड्ढीमंता मणुस्सा पन्नत्ता, तंजहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा। छव्विहा अणिड्ढीमंता मणुस्सा पन्नत्ता, तंजहा—हेमवंतगा हेरन्नवंतगा हरिवंसगा रम्मगवंसगा कुरुवासिणो अंतरदीवगा ॥ सू० ४११ ॥ छव्विहा ओसप्पिणी पन्नत्ता तंजहा—सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा १। छव्विहा ओसप्पिणी पन्नत्ता तंजहा—दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा २ ॥ सू० ४१२ ॥ जंबुद्दीवे (२) भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए मणुया छच्च धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था १। जंबुद्दीवे (२) भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए एवं चेव २। जंबूद्दीवे (२) भरहेरवते आगमेस्साते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए एवं चेव जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालतिस्संति ३। जंबुद्दीवे (२) देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छ धणुस्सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालेंति ४। एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा ५ ॥ सू० ४१३ ॥ छव्विहे संघयणे पन्नत्ते तंजहा—वतिरोसभणारातसंघयणे उसभणारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे खीलितासंघयणे छे(से)वट्ठसंघयणे ॥ सू० ४१४ ॥ छव्विहे संठाणे पन्नत्ते तंजहा—समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले साती खुज्जे वामणे हुंडे ॥ सू० ४१५ ॥ छट्ठाणा अणात्तवओ अहिताते असुभाते अखमाते अनीसे(य)साए अणाणुगामियत्ताते भवंति, तंजहा—परिताते परिताले सुते तवे लाभे पूतासक्कारे १। छट्ठाणा अत्तवता हिताते जाव आणुगामियत्ताते भवंति, तंजहा—परिताते परिताले जाव पूतासक्कारे २ ॥ सू० ४१६ ॥ छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा पन्नत्ता,

तंजहा—अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगातिता। हरिता चुंचुणा चेव, छप्पेता इब्भजातिओ ॥ १ ॥ छव्विधा कुलारिता मणुस्सा पन्नत्ता, तंजहा—उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाता कोरव्वा ॥ सू० ४९७ ॥ छव्विधा लोगट्ठिती पन्नत्ता तंजहा—आगासपतिट्ठिते वाए वायपतिट्ठिए उदही उदधिपतिट्ठिता पुढवी पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा अजीवा जीवपइट्ठिया जीवा कम्मपतिट्ठिया ॥ सू० ४९८ ॥ छद्दिसाओ पन्नत्ताओ तंजहा—पातीणा पडीणा दाहिणा उतीणा उड्ढा अधा १। छहिं दिसाहि जीवाणं गती पवत्तति, तंजहा—पाणाते जाव अधाते २ एवमागई ३ वक्कंती ४ आहारे ५ वुड्ढी ६ निवुड्ढी ७ विगुव्वणा ८ गतिपरिताते ९ समुग्घाते १० कालसंजोगे ११ दंसणाभिगमे १२ णाणाभिगमे १३ जीवाभिगमे १४ अजीवाभिगमे १५, एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि मणुस्साणवि १६ ॥ सू० ४९९ ॥ छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारमाहारमाणे णातिक्कमति, तंजहा—वेयणवेयावच्चे ईरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ १ ॥ छहि ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारं वोच्छिदमाणे णातिक्कमति, तंजहा—आतंके उवसग्गे तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीते। पाणिदयातवहेउं सरीरवुच्छेयणट्ठाए ॥ १ ॥ सू० ५०० ॥ छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं(उम्मायपमायं) पाउणेज्जा, तंजहा—अरहंताणमवन्नं वदमाणे, अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे, चाउव्वन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे, जक्खावेसेण चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं ॥ सू० ५०१ ॥ छव्विहे पमाते पन्नत्ते, तंजहा—मज्जपमाए णिद्दपमाते विसयपमाते कसायपमाते जूतपमाते पडिलेहणापमाए ॥ सू० ५०२ ॥ छव्विधा पमायपडिलेहणा पन्नत्ता, तंजहा—आरभडा संमद्दा वज्जेयव्वा य मोसली ततिता (अट्ठाणठवणाय)। पप्फोडणा चउत्थी वक्खित्ता वेतिया छट्ठी ॥ १ ॥ छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पन्नत्ता तंजहा—

अणच्चावितं अवलितं अणाणुबंधि अमोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव खोडा पाणी पाणविसोहणी ॥ २ ॥ सू० ५०३ ॥ छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा १। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा, एवं मणुस्सदेवाणवि २ ॥ सू० ५०४ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीतो पन्नत्ताओ, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरणो जमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ॥ सू० ५०५ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥ सू० ५०६ ॥ छ दिसिकुमारिमहतरितातो पन्नत्ताओ, तंजहा—रूता रूतंसा सुरूवा रूपवती रूपकंता रूतप्पभा १। छ विज्जुकुमारिमहत्तरितातो पन्नत्ताओ, तंजहा—आला सक्का (अला मक्का) सतेरा सोतामणी इंदा घणविज्जुया २ ॥ सू० ५०७ ॥ धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा—आला सक्का सतेरा सोतामणी इंदा घणविज्जुया १। भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छ अग्गमहिसीओ, पन्नत्ताओ, तंजहा—रूवा रूवंसा सुरूवा रूपवती रूवकंता रूवप्पभा २। जधा धरणस्स तधा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स ३। जधा भूताणंदस्स तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स ४। ॥ सू० ५०८ ॥ धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छस्सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्तातो, एवं भूताणंदस्सवि जाव महाघोसस्स ॥ सू० ५०९ ॥ छव्विहा उग्गहमती पन्नत्ता, तंजहा—खिप्पमोगिण्हति बहुमोगिण्हति बहुविधमोगिण्हति धुवमोगिण्हति अणिस्सियमोगिण्हइ असंदिद्धमोगिण्हइ १। छव्विहा ईहामती पन्नत्ता, तंजहा—खिप्पमीहति बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति २। छव्विधा अवायमती पन्नत्ता, तंजहा—खिप्पमवेति जाव असंदिद्धं अवेति ३। छव्विधा धारणा पन्नत्ता, तंजहा—बहुं धारेइ बहुविहं धारेइ पोराणं

धारेति दुद्धरं धारेति अणिस्सितं धारेति असंदिद्धं धारेति ४॥ सू० ५१०॥
छव्विहे बाहिरते तवे पन्नत्ते तंजहा–अणसणं ओमोदरिया भिक्खातरिता
रसपरिच्चाते कायकिलेसो पडिसंलीनता १। छव्विधे अब्भंतरिते तवे
पन्नत्ते, तंजहा–पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ झाणं
विउस्सग्गो २। ॥ सू० ५११॥ छव्विहे विवादे पन्नत्ते, तंजहा–
ओसक्कतित्ता उस्सक्कइत्ता (ओसक्कवइत्ता उस्सक्कावइत्ता) अणुलोमइत्ता
पडिलोमतित्ता भइत्ता भेलतित्ता (भेयइत्ता) ॥ सू० ५१२॥
छव्विहा खुड्डा पाणा पन्नत्ता, तंजहा–बेंदिता तेइंदित्ता चउरिंदित्ता
संमुच्छिमपंचिंदितितिरिक्खजोणिता तेउकातिता वाउकातिता ॥ सू० ५१३॥
छव्विधा गोयरचरिता पन्नत्ता, तंजहा–पेडा अद्धपेडा गोमुत्तित्ता
पतंगविहित्ता संबुक्कवट्टा गंतुंपच्चागता ॥ सू० ५१४॥ जंबुद्दीवे (२)
मंदरस्स पव्वयस्स य दाहिणेणमिमीसे रतणप्पभाते पुढवीए छ अवक्कं(कं)
तमहानिरता पन्नत्ता, तंजहा–लोले लोलुए उदड्ढे निदड्ढे जरते पज्जरते १।
चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीते छ अवक्कंता महानिरता पन्नत्ता, तंजहा–
आरे वारे मारे रोरे रोरुते खाडखडे २॥ सू० ५१५॥ बंभलोगे णं
कप्पे छ विमाणपत्थडा पन्नत्ता, तंजहा–अरते विरते णीरते निम्मले
वितिमिरे विसुद्धे ॥ सू० ५१६॥ चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो
छ णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पन्नत्ता, तंजहा–पुव्वा-
भद्दवया कत्तिता महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा १। चंदस्स णं
जोतिसिंदस्स जोतिसरणो छ णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पन्नर-
समुहुत्ता पन्नत्ता, तंजहा–सयभिसता भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा २।
चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोतिसरन्नो छ नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता
पणयालीसमुहुत्ता पन्नत्ता, तंजहा–रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा
उत्तरासाढा उत्तराभद्दवया ३॥ सू० ५१७॥ अभिचंदे णं कुलकरे छ

धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥ सू० ५१८ ॥ भरहे णं राया चाउरंत-चक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइं महाराया हुत्था ॥ सू० ५१९ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सता वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजियाणं जाव संपया होत्था । वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससतेहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइते । चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था ॥ सू० ५२० ॥ तेतिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जति, तंजहा—घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति, जिब्भामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवइ, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, एवं चेव फासामातोऽवि १। तेइंदियाणं जीवाणं समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जति, तंजहा—घाणामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति, जाव फासमतेणं दुक्खेणं संजोगेता भवति ॥ सू० ५२१ ॥ जंबुद्दीवे (२) छ अकम्मभूमीओ पन्नताओ, तंजहा—हेमवते हेरण्णवते हरिवस्से रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा १ । जंबुद्दीवे (२) छव्वासा पन्नत्ता, तंजहा—भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे २ । जंबुद्दीवे (२) छ वासहरपव्वता पन्नत्ता, तंजहा—चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रूप्पि सिहरी ३ । जंबूमंदरदाहिणे णं छ कूडा पन्नत्ता, तंजहा—चुल्लहिमवंतकूडे वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे वेरुलितकूडे निसढकूडे रुयगकूडे ४ । जंबूमंदरउत्तरे णं छ कूडा पन्नत्ता, तंजहा—नेलवंतकूडे उवदंसणकूडे रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे सिहरिकूडे तिगिञ्छकूडे ५ । जंबूद्दीवे (२) छ महद्दहा पन्नत्ता, तंजहा—पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिञ्छद्दहे केसरिद्दहे महापोंडरीयद्दहे पुंडरीयद्दहे ६ । तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति, तंजहा—सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी ७ । जंबूमंदरदाहिणे णं छ महानईओ पन्नत्ताओ, तंजहा—गंगा सिंधू रोहिया रोहितंसा

हरी हरिकंता ८। जंबूमंदरउत्तरे णं छ महानतीतो पन्नत्ताओ, तंजहा–नरकंता नारिकंता सुवन्नकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तावती ९। जंबूमंदरपुरच्छिमे णं सीताते महानदीते उभयकूले छ अंतरनईओ पन्नत्ताओ, तंजहा–गाहावती दहावती पंकवती तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला १०। जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीतोदाते महानतीते उभयकूले छ अंतरनदीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–खीरोदा सीहसोता अंतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिणी ११। धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छ अकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–हेमवए, एवं जहा जंबुद्दीवे (२) तहा नदी जाव अंतरणदीतो २२ जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणितव्वं ५५ ॥ सू० ५२२ ॥ छ उदू पन्नत्ता, तंजहा–पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे ॥ सू० ५२३ ॥ छ ओमरत्ता पन्नत्ता, तंजहा–ततिते पव्वे सत्तमे पव्वे एकारसमे पव्वे पन्नरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे १। छ अइरत्ता पन्नत्ता, तंजहा–चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे दुवालसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे पव्वे चउवीसइमे पव्वे २ ॥ सू० ५२४ ॥ आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पन्नत्ते, तंजहा–सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे ॥ सू० ५२५ ॥ छव्विहे ओहिणाणे पन्नत्ते, तंजहा–आणुगामिए अणाणुगामिते वड्ढमाणते हीयमाणते पडिवाती अपडिवाती ॥ सू० ५२६ ॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा २ इमाइं छ अवताणाइं वदित्तते, तंजहा–अलियवयणे हीलियवयणे खिंसितवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विउसवितं वा पुणो उदीरित्तते ॥ सू० ५२७ ॥ छ कप्पस्स पत्थारा पन्नत्ता, तंजहा–पाणातिवायस्स वायं वयमाणे, मुसावायस्स वादं वयमाणे, अदिन्नादाणस्स वादं वयमाणे, अविरतिवायं वयमाणे, अपुरिसवातं वयमाणे, दासवायं वयमाणे, इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्ममपरिपूरेमाणो तट्ठाणपत्ते ॥ सू० ५२८ ॥ छ कप्पस्स पलिमंथू, (परिमंथा) पन्नत्ता, तंजहा–कोक्कुतिते संजमस्स पलिमंथू,

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू, चक्खुलोलुते ईरितावहिताते पलिमंथू, तिंतिणिते एसणागोतरस्स पलिमंथू, इच्छालोभिते मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू, भिज्जाणिताणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवता अणिताणता पसत्था ॥ सू० ५२९ ॥ छव्विहा कप्पठिती पन्नत्ता, तंजहा–सामातितकप्पठिती छेतोवट्ठावणितकप्पठिती निव्विसमाणकप्पठिती णिव्विट्ठकप्पट्ठिती जिणकप्पठिती थिविर(थेर)कप्पठिती ॥ सू० ५३० ॥ समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे जाव पव्वइए। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने। समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ सू० ५३१ ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रतणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ सू० ५३२ ॥ छव्विहे भोयणपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा–मणुन्ने रसिते पीणणिज्जे बिंहणिज्जे दीवणिज्जे(मयणिज्जे) दप्पणिज्जे। छव्विहे विसपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा–डक्के भुत्ते निवतिते मंसाणुसारी सोणिताणुसारी अट्ठिमिंजाणुसारी ॥ सू० ५३३ ॥ छव्विहे पट्ठे (अट्ठे) पन्नत्ते, तंजहा–संसयपट्ठे वुग्गहपट्ठे अणुजोगी अणुलोमे तहणाणे अतहणाणे ॥ सू० ५३४ ॥ चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिते उववातेणं १। एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासा विरहिते उववातेणं २। अधेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ३। सिद्धिगती णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ४ ॥ सू० ५३५ ॥ छव्विधे आउयबंधे पन्नत्ते, तंजहा–जातिणामनिधत्ताउते गतिणामणिधत्ताउए ठितिनामनिधत्ताउते ओगाहणाणामनिधत्ताउते पएसणामनिधत्ताउए अणु-

भावणामनिहत्ताउते १। नेरतियाणं छव्विहे आउयबंधे पन्नत्ते, तंजहा–जातिणामनिहत्ताउते जाव अणुभावनामणिहत्ताउए एवं जाव वेमाणियाणं २। नेरइया णियमा छम्मासावसेसाउता परभवियाउयं पगरेंति, एवामेव असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा, असंखेज्जवासाउता सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति, असंखेज्जवासाउया सन्निमणुस्सा नियमं जाव पगरिंति, वाणमंतरा जोतिसवासिता वेमाणिता जहा णेरतिता ३ ॥ सू० ५३६ ॥ छव्विधे भावे पन्नत्ते, तंजहा–ओजतिते उवसमिते खतिते खतोवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए ॥ सू० ५३७ ॥ छव्विहे पडिक्कमणे पन्नत्ते, तंजहा–उच्चारपडिक्कमणे पासवणपडिक्कमणे इत्तरिते आवकहिते जंकिंचिमिच्छा सोमणांतिने ॥ सू० ५३८ ॥ कत्तिताणक्खत्ते छतारे पराणत्ते, असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पन्नत्ते ॥ सू० ५३९ ॥ जीवाणं छट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा ३, तंजहा–पुढविकाइयनिवत्तिते जाव तसकायणिवत्तिते, एवं चिण उवचिण बंधउदीरवेय तह निज्जरा चेव ४। छप्पतेसिया णं खंधा अणंता पराणत्ता, छप्पतेसोगाढा पोग्गला अणंता पराणत्ता, छसमयट्ठितीता पोग्गला अणंता, छगुणकालगा पोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पराणत्ता ॥ सू० ५४० ॥ छट्ठाणं छट्ठमज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति षट्स्थानकाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तस्थानकाख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

सत्तविहे गणावक्कमणे पन्नत्ते, तंजहा—सव्वधम्मा रोतेमि (सव्व धम्मं जाणामि एवं पि एगे अवक्कमे) १ एगतिता रोएमि एगइया णो रोएमि २ सव्वधम्मा वितिगिच्छामि ३ एगतिया वितिगिच्छामि एगतिया नो वितिगिच्छामि ४ सव्वधम्मा जुहुणामि ५ एगतिया जुहुणामि

एगतिया णो जुहुणामि ६ इच्छामि णं भंते! एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तते ७ ॥ सू० ५४१ ॥ सत्तविहे विभंगणाणे पन्नत्ते, तंजहा— एगदिसिलोगाभिगमे १ पंचदिसिलोगाभिगमे २ किरियावरणे जीवे ३ मुदग्गे जीवे ४ अमुदग्गे जीवे ५ रूवी जीवे ६ सव्वमिणं जीवा ७। तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे—जथा णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पातीणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगदिसिं लोगाभिगमे, संतेगतिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु पढमे विभंगनाणे १। अहावरे दोच्चे विभंगनाणे, जता णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पातीणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं जाव सोहम्मे कप्पे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु— एगदिसिं लोयाभिगमे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, दोच्चे विभंगणाणे २। अहावरे तच्चे विभंगणाणे, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पाणे अतिवातेमाणा मुसं वतेमाणे अदिन्नमादितमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे परिग्गहं परिगिराहमाणे राइभोयणं भुंजमाणे वा पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरितावरणे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—नो किरितावरणे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, तच्चे विभंगणाणे ३। अहावरे चउत्थे

विभंगणाणे, जया णं तथारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति, बाहिरब्भंतरते पोग्गले परितादितित्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता (संवट्टिय निवट्टिय) विकुव्वित्ता णं विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए, तस्स णमेवं भवति–अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणसमुप्पन्ने, मुदग्गे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु–अमुदग्गे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, चउत्थे विभंगनाणे ४। अहावरे पंचमे विभंगणाणे ५। जया णं तधारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति, बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरितादितित्ता पुढेगत्तं णाणत्तं जाव विउव्विता णं चिट्ठित्तते तस्स णमेवं भवति–अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदग्गे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु–मुदग्गे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, पंचमे विभंगणाणे ५। अहावरे छट्ठे विभंगणाणे, जया णं तधारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरते पोग्गले परितातित्ता वा अपरियादितित्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसेत्ता जाव विकुव्वित्ता चिट्ठित्तते, तस्स णमेवं भवति–अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने, रूवी जीवे, संते गतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु–अरूवी जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, छट्ठे विभंगणाणे ६। अहावरे सत्तमे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुहुमेणं वायुकातेणं फुडं पोग्गलकायं एतंतं वेतंतं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणामंतं, तस्स णमेवं भवति–अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने, सव्वमिणं जीवा, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु–जीवा चेव

अजीवा चेव, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, तस्स णमिमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगता भवंति, तंजहा—पुढविकाइया आऊकाइया तेऊकाइया वाउकाइया, इच्चेतेहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ सत्तमे विभंगणाणे ७ ॥ सू० ५४२ ॥ सत्तविधे जोणिसंगधे पन्नत्ते, तंजहा—अंडजा पोतजा जराउजा रसजा संसेइया (संसत्तगा) संमुच्छिमा उब्भिगा १। अंडगा सत्तगतिता सत्तागतित्ता पन्नत्ता, तंजहा—अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडतेहिंतो वा पोतजेहितो वा जाव उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से अंडते अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताते वा पोतगताते वा जाव उब्भियत्ताते वा गच्छेज्जा पोत्तगा सत्तगतिता सत्तागतित्ता, एवं चेव सत्तराहवि गतिरागती भाणियव्वा, जाव उब्भियत्ति २ ॥ सू० ५४३ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहठाणा पन्नत्ता, तंजहा—आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति, एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारि यावि भवति नो अणापुच्छियचारि यावि भवति, आयरियउवज्झाए गणंसि अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवति, आयरियउवज्झाए गणंसि पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति णो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ १। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहठाणा पन्नत्ता, तंजहा—आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति, एवं जाव उवगरणाणं नो सम्मं सारक्खेता संगोवेत्ता भवति २ ॥ सू० ५४४ ॥ सत्त पिंडेसणाओ पन्नत्तातो १। सत्त पाणेसणाओ पन्नताओ २। सत्तउग्गहपडिमातो पन्नत्तातो ३। सत्तसत्तिक्कया पन्नत्ता ४। सत्त महज्झयणा पणणत्ता ५। सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिगा एकूणपराणताते रातिंदिएहिमेगेण य छराणउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्तं जाव आराहियावि भवति ६ ॥ सू० ५४५ ॥

अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, सत्त घणोदधीतो पन्नत्ताओ, सत्त घणवाता सत्त तणुवाता पन्नत्ता, सत्त उवासंतरा पन्नत्ता, एतेसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया, एतेसु णं सत्तसु तणुवातेसु सत्त घणवाता पइट्ठिया, एएसु णं सत्तसु घणवातेसु सत्त घणोदधी पतिट्ठिता, एतेसु णं सत्तसु घणोदधीसु छत्तातिच्छत्तसंठाणसंठिआओ पिंडलगपिहुण-संठाणसंठिआओ (पिहुणपिहुणसंठियाओ)सत्त पुढवीओ पन्नताओ, तंजहा–पढमा जाव सत्तमा, एतासि णं सत्तराहं पुढवीणं सत्त णामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा–घम्मा वंसा सेला अंजणा रिट्ठा मघा माघवती, एतासि णं सत्तराहं पुढवीणं सत्त गोत्ता पन्नत्ता, तंजहा–रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुअप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ॥ सू० ५४६ ॥ सत्तविहा बायरवाउकाइया पन्नत्ता, तंजहा–पातीणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते उड्ढवाते अहोवाते विदिसिवाते ॥ सू० ५४७ ॥ सत्त संठाणा पन्नत्ता, तंजहा–दीहे रहस्से वट्टे तंसे चउरंसे पिहुले परिमंडले ॥ सू० ५४८ ॥ सत्त भयट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा–इहलोगभते परलोगभते आदाणभते अकम्हाभते वेयणभते मरणभते असिलोगभते ॥ सू० ५४९ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तंजहा–पाणे अइवाएत्ता भवति, मुसं वइत्ता भवति, अदिन्नमादित्ता भवति, सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति, पूतासक्कारमणुवूहेत्ता भवति इमं सावज्जंति पराणवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति, णो जधावादी तधाकारी यावि भवति १ । सत्तहिं ठाणेहि केवली जाणेज्जा, तंजहा–णो पाणे अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती तधाकारी यावि भवंति २ ॥ सू० ५५० ॥ सत्त मूलगोत्ता पन्नत्ता, तंजहा–कासवा गोतमा वच्छा कोच्छा कोसिता मंडवा वासिट्ठा १ । जे कासवा ते सत्तविधा पन्नत्ता, तंजहा–ते कासवा ते संडेल्ला ते गोला ते वाला ते मुंजतिणो ते पव्वपेच्छतिणो (पव्वइणो) ते वरिसकराहा २ । जे गोयमा ते सत्तविधा पन्नत्ता, तंजहा–ते गोयमा ते

गग्गा ते भारद्दा ते अंगिरसा ते सक्कराभा ते भक्खराभा ते उदग्गत्ताभा (उदन्नाभा) ३। जे वच्छा ते सत्तविधा पन्नत्ता, तंजहा–ते वच्छा ते अग्गेया ते मित्तिया ते सामि(म)लिणो ते सेलतता ते अट्ठिसेणा ते वीयकण्हा ४। जे कोच्छा ते सत्तविधा पन्नत्ता, तंजहा–ते कोच्छा ते मोग्गलायणा ते पिंगला(गा)यणा ते कोडीणा ते मंडलिणो ते हारिता ते सोमया (सोमलि) ५। जे कोसिश्रा ते सत्तविधा पन्नत्ता, तंजहा–ते कोसिता ते कच्चातणा ते सालंकातणा ते गोलिकातणा ते पक्खिकायणा ते अग्गिच्चा ते लोहिया-(च्चा) ६। जे मंडवा ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा–ते मंडवा ते अरिट्ठा ते समुता ते तेला ते एलावच्चा ते कंडिल्ला(कंडल्ला) ते खारातणा(खातणा) ७। जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा–ते वासिट्ठा ते उंजायणा ते जारे(रु)-कण्हा ते वग्घावच्चा ते कोडिन्ना ते सराणी ते पारासरा ८ ॥ सू० ५५१ ॥

सत्त मूलनया पन्नत्ता, तंजहा–नेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुते सद्दे समभिरूढे एवंभूते ॥ सू० ५५२ ॥ सत्त सरा पन्नत्ता, तंजहा–सज्जे रिसभे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे। धेवते (रेवते) चेव णिसाते, सरा सत्त वियाहिता ॥ १ ॥ एएसि णं सत्तराहं सराणं सत्त सरट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा–सज्जं तु अग्गजिब्भाते, उरेण रिसभं सरं। कंठुग्गतेण गंधारं, मज्झजिब्भाते मज्झिमं ॥२॥ णासाए पंचमं बूया, दंतोट्ठेण य धेवतं। मुद्धाणेण य णेसातं, सरठाणा वियाहिता ॥ ३ ॥ सत्त सरा जीवनिस्सिता पन्नत्ता, तंजहा–सज्जं रवति मयूरो, कुक्कुडो रिसहं सरं। हंसो णदति गंधारं, मज्झिमं तु गवेलगा ॥ ४ ॥ अह कुसुमसंभवे काले, कोइला पंचमं सरं। छट्टं च सारसा कोंचा, णिसायं सत्तमं गता ॥ ५ ॥ सत्त सरा अजीवनिस्सिता पन्नत्ता, तंजहा–सज्जं रवति मुइंगो, गोमुही रिसभं सरं। संखो णदति गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥ ६ ॥ चउचलणपतिट्ठाणा, गोहिया पंचमं सरं। आडंबरो रेवति(त)तं, महाभेरी य सत्तमं ॥ ७ ॥ एतेसि णं

सत्तसराणं सत्त सरलक्खणा पन्नत्ता. तंजहा—"सज्जेण लभति वित्तिं, कतं च ण विणस्सति। गावो मित्ता य पुत्ता य, णारीणं चेव वल्लभो ॥ ८ ॥ रिसभेण उ एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य। वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि व ॥ ९ ॥ गंधारे गीतजुत्तिरणा, वज्जवित्ती कलाहिता। भवंति कतिणो पन्ना, जे अन्ने सत्थपारगा ॥ १० ॥ मज्झिमसरसंपन्ना, भवंति सुहजीविणो। खायती पीयती देती, मज्झिमं सरमस्सितो ॥ ११ ॥ पंचमसरसंपन्ना, भवंति पुढवीपती। सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणणातगा ॥ १२ ॥ रेवतसरसंपन्ना, भवंति कलहप्पिया। साउणिता वग्गुरिया, सोयरिया मच्छबंधा य ॥ १३ ॥ चडाला मुट्ठिया से(बे)या, जे अन्ने पावकम्मिणो। गोघातगा य जे चोरा, णिसायं सरमस्सिता ॥ १४ ॥ एतेसिं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पराणत्ता, तंजहा—सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे, सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पन्नत्ताओ, तंजहा—मंगी कोरव्वीया हरी य रयतणी य सारकंता य। छट्ठी य सारसी णाम सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥ १५ ॥ मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पन्नत्ताओ, तंजहा—उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा। आसोकंता य सोवीरा, अभिरु हवति सत्तमा ॥ १६ ॥ गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पन्नत्ताओ, तंजहा—णंदि त खुड्डिमा पूरिमा य चउत्थी य सुद्धगंधारा। उत्तरगंधारावित, पंचमिता हवति मुच्छा उ ॥१७॥ सुट्ठुतरमायामा सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा। अह उत्तरायता कोडीमातसा सत्तमी मुच्छा ॥१८॥ सत्त सराओ कओ संभवंति? गेयस्स का भवंति जोणी?। कतिसमता उस्सासा? कति वा गेयस्स आगारा? ॥ १९ ॥ सत्त सरा णाभीतो भवंति गीतं च रुय(रुण)जोणीतं। पादसमा ऊसासा तिन्नि य गीयस्स आगारा ॥ २० ॥ आइमिउ आरभंता समुव्वहंता य मज्झगारंमि। अवसाणे तज्जवितो तिन्नि य गेयस्स आगारा ॥ २१ ॥ छद्दोसे अट्ठगुणे तिन्नि य वित्ताइं दो य भणि-

तीओ । जाणाहिति सो गाहिइ सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥२२॥ भीतं दुतं रहस्सं (उप्पिच्छं) गायंतो मा त गाहि उत्तालं । काकस्सरमणुनासं च होंति गेयस्स छद्दोसा ॥ २३ ॥ पुन्नं १ रत्तं २ च अलंकियं ३ च वत्तं ४ तहा अविघुट्ठं ५ । मधुरं ६ सम ७ सुकुमारं ८ अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥२४॥ उरकंठसिरपसत्थं च गेज्जंते मउरिभिअपदबद्धं । समतालपडुक्खेवं सत्तसरसीहरं गीयं ॥ २५ ॥ निद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं । उवणीय सोवयारं च, मियं मधुरमेव य ॥२६॥ सममद्धसमं चेव, सव्वत्थ विसमं च जं । तिन्नि वित्तप्पयाराइं, चउत्थं नोपलब्भती ॥ २७ ॥ सकता पागता चेव, दुहा भणितीओ आहिया । सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता ॥२८॥ केसी गातति य मधुरं ? केसी गातति खरं च रुक्खं च ?। केसी गायति चउरं ? केसि विलंबं ? दुतं केसी ? ॥ २९ ॥ विस्सरं पुण केरिसी ? ॥ सामा गायइ मधुरं काली गायइ खरं च रुक्खं च । गोरी गातति चउरं काण विलंबं दुतं अंधा ॥ ३० ॥ विस्सरं पुण पिंगला ॥ तंतिसमं तालसमं पादसमं लयसमं गहसमं च । नीससिऊससियसमं संचारसमा सरा सत्त ॥ ३१ ॥ सत्त सरा य ततो गामा, मुच्छणा एकवीसती । ताणा एगूणपण्णासा, समत्तं सरमंडलं ॥ ३२ ॥ सू० ५५३ ॥ इति सरमंडलं समत्तं ॥

सत्तविधे कायकिलेसे पण्णत्ते, तंजहा—ठाणातिते उक्कुडुयासणिते पडिमठाती वीरासणिते णेसज्जिते दंडातिते लगंडसाती ॥ सू० ५५४ ॥ जंबुद्दीवे (२) सत्त वासा पन्नता, तंजहा—भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे १। जंबुदीवे (२) सत्त वासहरपव्वता पन्नत्ता, तंजहा—चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे २। जंबुद्दीवे (२) सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तंजहा—गंगा रोहिता हिरी सीता णरकंता सुवण्णकूला रत्ता ३। जंबुद्दीवे (२) सत्त महानतीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं

समप्पेंति, तंजहा—सिंधू रोहितंसा हरिकंता सीतोदा णारीकंता रुप्पकूला रत्तवती, ४। धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा पंन्नता, तंजहा—भरहे जाव महाविदेहे ५। धायइसंडदीवपुरच्छिमे णं सत्त वासहरपव्वता पन्नत्ता, तंजहा—चुल्लहिमवंते जाव मंदरे ६। धायइसंडदीवपुरच्छीमेणं सत्त महानतीओ पुरच्छाभिमुहीतो कालोयसमुद्दं समप्पेंति, तंजहा—गंगा जाव रत्ता ७। धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं सत्त महानतीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तंजहा—सिंधू जाव रत्तवती ८। धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं चेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं, सेसं तं चेव ९। पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा तहेव णवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीतो कालोदं समुद्दं समप्पेंति, सेसं तं चेव, एवं पच्चत्थिमद्धेऽवि णवरं पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समप्पेंति १०। सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णतीतो य भाणितव्वाणि ११ ॥ सू० ५५५ ॥ जंबुद्दीवे (२) भारहे वासे तीताते उस्स(ओस)प्पिणीते सत्त कुलगरा हुत्था, तंजहा—मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे । विमलघोसे सुघोसे त, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥ जंबुद्दीवे (२) भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था—पढमित्थ विमलवाहण १ चक्खुम २ जसमं ३ चउत्थमभिचंदे ४। तत्तो य पसेणइ ५ पुण मरुदेवे चेव ६ नाभि य ७ ॥१॥ एएसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ हुत्था, तंजहा—चंदजसा १ चंदकंता २ सुरूव ३ पडिरूव ४ चक्खुकंता ५ य । सिरिकंता ६ मरुदेवी ७ कुलकरइत्थीण नामाइं ॥२॥ जंबुद्दीवे (२) भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति—मित्तवाहण सुभोमे य, सुप्पभे य सयंपभे । दत्ते सुहुमे [सुहे सुरूवे य] सुबंधू य, आगमेस्सि(मिस्से)ण होक्खती ॥१॥ विमलवाहणे णं कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोगत्ताते हव्वमागच्छिसु, तंजहा—मत्तंगता त भिंगा

चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा । मणियंगा त अणियणा सत्तमगा कप्परुक्खा य ॥१॥ सू० ५५६ ॥ सत्तविधा दंडनीती पन्नत्ता, तंजहा—हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मंडलबंधे चारते छविच्छेदे ॥ सू० ५५७ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णं सत्त एगिंदियरतणा पन्नत्ता, तंजहा—चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे १। एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदियरतणा पन्नत्ता, तंजहा—सेणावतीरयणे गाहावतिरयणे वड्ढतिरयणे पुरोहितरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे २ ॥ सू० ५५८ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तंजहा—अकाले वरिसइ काले ण वरिसइ असाधू पुज्जंति साधू ण पुज्जंति गुरूहिं जणो मिच्छं पडिवन्नो मणोदुहता वतिदुहता १। सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तंजहा—अकाले न वरिसइ, काले वरिसइ, असाधू ण पुज्जंति, साधू पुज्जंति, गुरूहिं जणो सम्मं पडिवन्नो, मणोसुहता वतिसुहता २ ॥ सू० ५५९ ॥ सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा—नेरतिता तिरिक्खजोणिता तिरिक्खजोणिणीतो मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ ॥ सू० ५६० ॥ सत्तविधे आउभेदे पन्नत्ते, तंजहा—अज्झवसाणनिमित्ते आहारे वेयणा पराघाते । फासे आणापाणू सत्तविधं भिज्जए आउं ॥ १ ॥ ॥ सू० ५६१ ॥ सत्तविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सतिकाइया तसकातिता अकातिता, अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा ॥ सू० ५६२ ॥ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अधे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरतितत्ताए उववन्ने ॥सू० ५६३॥ मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ताअगारातो अणगारियं पव्वइए, तंजहा—मल्ली विदेहरायवरकन्नगा १ पडिबुद्धी इक्खागराया २

चंदच्छाये अंगराया ३ रुप्पी कुणालाधिपती ४ संखे कासीराया ५ अदीणसत्तू कुरुराता ६ जितसत्तू पंचालराया ७ ॥सू० ५६४॥ सत्तविहे दंसणे पन्नत्ते, तंजहा–सम्मद्दंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे ॥ सू० ५६५ ॥ छउमत्थवीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेयेति, तंजहा–णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेयणियं आउयं नामं गोतमंतरातितं ॥ सू० ५६६ ॥ सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न याणाति न पासति, तंजहा–धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिवद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं गंधं, एयाणि चेव उप्पन्नणाणे जाव जाणाति पासति, तंजहा–धम्मत्थिगातं जाव गंधं ॥सू० ५६७ ॥ समणे भगवं महावीरे वयरोसभणारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥ सू० ५६८ ॥ सत्त विकहाओ पन्नत्ताओ तंजहा–इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा मिउकालुणिता दंसणभेयणी चरित्तभेयणी ॥ सू० ५६९ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पन्नत्ता, तंजहा–आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाते णिगिज्झिय (२) पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति, एवं जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं उवस्सगस्स एगरातं वा दुरातं वा वसमाणे नातिक्कमति, उवकरणातिसेसे भत्तपाणातिसेसे ॥ सू० ५७० ॥ सत्तविधे संजमे पन्नत्ते, तंजहा–पुढविकातितसंजमे जाव तसकातितसंजमे अजीवकायसंजमे १। सत्तविधे असंजमे पन्नत्ते, तंजहा–पुढविकातिनअसंजमे जाव तसकातितअसंजमे अजीवकायअसंजमे २। सत्तविहे आरंभे पन्नत्ते, तंजहा–पुढविकातितआरंभे जाव अजीवकातआरंभे ३। एवमणारंभेऽवि, एवं सारंभेवि, एवमसारंभेऽवि, एवं समारंभेऽवि, एवं असमारंभेवि, जाव अजीवकायअसमारंभे ४ ॥ सू० ५७१ ॥ अथ भंते ! अदसिकुसुंभकोद्दवकंगुरागल[वराकोदूसगा]सणसरिसवमूला(मूलग)बीयाणं एतेसिं णं धन्नाणं

कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवतितं कालं जोणी संचिट्ठति ? गोयमा ! जहरणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायती जाव जोणीवोच्छेदे पराणत्ते ॥सू० ५७२॥ बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं, ठिती पन्नता १। तच्चाए णं वालुयप्पभाते पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता २। चउत्थीतेणं पंकप्पभाते पुढवीते जहन्नेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पन्नता, ४। ॥सू० ५७३॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीतो पन्नत्ताओ, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीतो पन्नत्ता, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ॥सू० ५७४॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भितरपरिसाते देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, सक्कस्स णं देविदस्स देवरन्नो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥सू० ५७५ ॥ सारस्सयमाइच्चाणं सत्त देवा सत्त देवसता पन्नत्ता, गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पन्नत्ता ॥ सू० ५७६ ॥ सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठित्ती पन्नत्ता, माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सातिरेगाइं सत्त सारगोवमाइं ठित्ती पन्नत्ता, बंभलोगे कप्पे जहरणेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठित्ती पन्नत्ता ॥ सू० ५७७ ॥ बंभलोयलंततेसु णं कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसत्ताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ सू० ५७८ ॥ भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं, सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरा सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥सू० ५७९॥ णंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पन्नत्ता तंजहा—जंबुद्दीवे दीवे, धायइसंडे दीवे पोक्खरवरे वरुणवरे खीरवरे घयवरे खोयवरे १। णंदीसरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा

पन्नत्ता, तंजहा—लवणे कालोते पुक्खरोदे वरुणोए खीरोदे घओदे खोतोदे २ ॥ सू० ५८० ॥ सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—उज्जुआयता एगतोवंका दुहतोवंका एगतोखुहा दुहतोखुहा चक्कवाला अद्धचक्कवाला ॥ सू० ५८१ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्त अणिता सत्त अणिताधिपती पन्नत्ता, तंजहा—पायत्ताणीए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए नट्टाणिए गंधव्वाणिए १। दुमे पायत्ताणिताधिपती एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किंनरे रधाणिताधिपती रिट्ठे णट्टाणियाहिवती गीतरती गंधव्वाणिताधिपती २। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणीया सत्त अणीयाधिपती पन्नत्ता, तंजहा-पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते, महद्दुमे पायत्ताणिताधिपती जाव किंपुरिसे रधाणिताधिपती महारिट्ठे णट्टाणिताधिपती गीतजसे गंधव्वाणिताधिपती ३। धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणीता सत्त अणिताधिपती पन्नत्ता, तंजहा—पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिए रुद्द(दुद्दम) सेणे पायत्ताणिताधिपती जाव आणंदे रधाणिताधिपती नंदणे णट्टाणियाधिपती तेतली गंधव्वाणियाधिपती ४। भूताणंदस्स सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पन्नत्ता, तंजहा—पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणीए दक्खे पायत्ताणीयाहिवती जाव णंदुत्तरे रहाणिताधिपती रती णट्टाणियाहिवती माणसे गंधव्वाणियाहिवई, एवं जाव घोसमहाघोसाणं नेयव्वं ५। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवती पन्नत्ता, तंजहा—पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए, हरिणेगमेसी पायत्ताणीयाधिपती जाव माढरे रधाणिताधिपती सेते णट्टाणिताहिवती तुंबुरू गंधव्वाणिताधिपती ६। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणीया सत्त अणियाहिवईणो पन्नत्ता, तंजहा—पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवती जाव महासेते णट्टाणियाहिवती रते गंधव्वाणिताधिपती सेसं जहा पंचट्ठाणे, एवं जाव अच्चुतस्सवि नेतव्वं ७ ॥ सू० ५८२ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स

असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणिताहिवतिस्स सत्त कच्छाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा, १। चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणिताधिपतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठिं देवसहस्सा पन्नत्ता २। जावतिता पढमा कच्छा तव्विगुणा दोचा कच्छा तव्विगुणा तच्चा कच्छा एवं जाव जावतिता छट्ठा कच्छा, तव्विगुणा सत्तमा कच्छा ३। एवं बलिस्सवि, णवरं महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सितो, सेसं तं चेव, धरणस्स एवं चेव, णवरमट्ठावीसं देवसहस्सा, सेसं तं चेव, जधा धरणस्स एवं जाव महाघोसस्स, नवरं पायत्ताणिताधिपती अन्ने ते पुव्वभणिता ४। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुतस्स, णाणत्तं पायत्ताणिताधिपतीणं ते पुव्वभणिता, देवपरीमाणमिमं सक्कस्स चउरासीतिं देवसहस्सा, ईसाणस्स असीती देवसहस्साइं ५। देवा इमाते गाथाते अणुगंतव्वा—चउरासीति असीति बावत्तरि सत्तरी य सट्ठीया। पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा॥ १॥ जाव अच्चुतस्स लहुपरक्कमस्स दसदेवसहस्सा जाव जावतिता छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा ६॥ सू० ५८३॥ सत्तविहे वयणविकप्पे पन्नत्ते, तंजहा—आलावे अणालावे उल्लावे अणुल्ला(ला)वे संलावे पलावे विप्पलावे॥ सू० ५८४॥ सत्तविहे विणए पन्नत्ते, तंजहा—णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वतिविणए कायविणए लोगोवयारविणए १। पसत्थमणविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा—अपावते असावज्जे अकिरिते निरुवक्केसे अणण्हकरे अच्छविकरे अभूताभिसंकणे २। अप्पसत्थमणविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा—पावते सावज्जे सकिरिते सउवक्केसे अण्हकरे छविकरे भूताभिसंकणे ३। पसत्थवइविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा—अपावते असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे ४। अपसत्थवइविणते सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा—पावते जाव भूताभिसंकणे ५।

पसत्थकातविणए सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा–आउत्तं गमणं आउत्तं ठाणं आउत्तं निसीयणं आउत्तं तुअट्टणं आउत्तं उल्लंघणं आउत्तं पल्लंघणं आउत्तं सव्विंदितजोगजुंजणाता ६ । अपसत्थकातविणाते सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा–अणाउत्तं गमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदितजोगजुंजणाता, ७। लोगोवतारविणाते सत्तविधे पन्नत्ते, तंजहा–अब्भासवत्तितं परच्छंदाणुवत्तितं कज्जहेउं कतपडिकितिता अत्तगवेसणाता देसकालण्णुता सव्वत्थेसु यापडिलोमता ८ ॥ सू० ५८५ ॥ सत्त समुग्घाता पन्नत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाते तेजससमुग्घाए आहारगसमुग्घाते केवलिसमुग्घाते १ । मणुस्साणं सत्त समुग्घाता पन्नत्ता, एवं चेव । सू० ५८६ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवतणनिण्हगा पन्नत्ता, तंजहा–बहुरता जीवपतेसिता अवत्तिता सामुच्छेइता दोकिरिता तेरासिता अबद्धिता १। एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्त धम्मातरिता हुत्था, तंजहा–जमालि तीसगुत्ते आसाढे आसमित्ते गंगे छलुए गोट्ठामाहिले २। एतेसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तुप्पत्तिनगरा होत्था, तंजहा–सावत्थी उसभपुरं सेतविता मिहिलमुल्लगातीरं । पुरिमंतरंजि दसपुर णिण्हगउप्पत्तिनगराइं ॥१॥ सू० ५८७ ॥ सातावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा–मणुन्ना सद्दा मणुण्णा रूवा जाव मणुन्ना फासा मणोसुहता वतिसुहता १। असातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा–अमणुन्ना सद्दा जाव वतिदुहता ॥ सू० ५८८ ॥ महाणक्खत्ते सत्ततारे पन्नत्ते १। अभितीयादिता सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिता पन्नत्ता, तंजहा–अभिती सवणो धणिट्ठा सतभिसता पुव्वा भद्दवता उत्तरा भद्दवता रेवति २ । अस्सणितादिता णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिता पन्नत्ता, तंजहा–अस्सिणी भरणी कित्तिता रोहिणी मिगसिरे अद्दा पुणव्वसू ३। पुस्सादिता णं सत्त णक्खत्ता अवरदारिता पन्नत्ता, तंजहा–पुस्सो असिलेसा

मघा पुव्वा फग्गुणी उत्तरा फग्गुणी हत्थो चित्ता ४। सातितातिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिता पन्नत्ता, तंजहा–साति विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा ५ ॥ सू० ५८९ ॥ जंबूदीवे दीवे (२) सोमणसे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ सोमणसे २ तह बोद्धव्वे मंगलावतीकूडे ३। देवकुरु ४ विमल ५ कंचण ६ विसिट्ठकूडे ७ त बोद्धव्वे ॥१॥ जंबूदीवे (२) गंधमायणे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे त गंधमातण बोद्धव्वे गंधिलावतीकूडे। उत्तरकुरू फलिहे लोहितक्ख आणंदणे चेव ॥१॥ सू० ५९० ॥ बितिंदिताणं सत्त जातीकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पन्नत्ता ॥ सू० ५९१ ॥ जीवा णं सत्तट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा–नेरतियनिव्वत्तिते जाव देवनिव्वत्तिए एवं चिण जाव णिज्जरा चेव ॥ सू० ५९२ ॥ सत्तपतेसिता खंधा अणंता पराणत्ता सत्तपतेसोगाढा पोग्गला जाव सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पराणत्ता ॥ सू० ५९३ ॥ ॥ सत्तमट्ठाणं सम्मत्तं ॥ सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

॥ इति सप्तमस्थानाख्यं सप्तममध्ययनम् ॥७॥

॥ अथाष्टमस्थानकाख्यमष्टममध्ययनं ॥

अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तते, तंजहा–सड्ढी पुरिसजाते सच्चे पुरिसजाए मेहावी पुरिसजाते बहुस्सुते पुरिसजाते सत्तिमं अप्पाहिकरणे धितिमं वीरितसंपन्ने ॥ सू० ५९४ ॥ अट्ठविधे जोणिसंगहे पन्नत्ते, तंजहा–अंडगा पोतगा जाव उब्भिगा उववातिता १। अंडगा अट्ठगतिता अट्ठागइआ पन्नत्ता, तंजहा–अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा पोततेहिंतो वा जाव उववातितेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से अंडते अंडगत्तं विप्पजह-

माणो अंडगत्ताते वा पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते वा गच्छेज्जा, एवं पोतगावि, जराउजावि, सेसाणं गतीरागती णत्थि, २॥ सू० ५९५ ॥ जीवा णमट्ठ कम्मपगडीतो चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा–णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोत्तं अंतरातितं १। नेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा ३, एवं चेव, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४, २। जीवा णमट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा ३ एवं चेव, ३। 'एवं चिण १ उवचिण २ बंध ३ उदीर ४ वेय ५ तह णिज्जरा ६ चेव।' एते छ चउवीसा २४ दंडगा भाणियव्वा ॥ सू० ५९६ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं माती मायं कट्टु नो आलोतेज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा, तंजहा–करिंसु वाऽहं १ करेमि वाऽहं २ करिस्सामि वाऽहं ३ अकित्ती वा मे सिया ४ अवणे वा मे सिया ५ अव(वि)णए वा मे सिया ६ कित्ती वा मे परिहाइस्सइ ७ जसे वा मे परिहाइस्सइ ८, १। अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा, तंजहा–मातिस्स णं अस्सि लोए गरहिते भवति १ उववाए गरहिते भवति २ आजाती गरहिता भवति ३ एगमवि माती मातं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा णत्थि तस्स आराहणा ४ एगमवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा अत्थि तस्स आराहणा ५ बहुतोवि माती मायं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराधणा ६ बहुओवि माती मायं (मायाओ) कट्टु आलोएज्जा जाव अत्थि तस्स आराहणा ७ आयरियउवज्झायस्स वा मे अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, से तं मममालोएज्जा माती णं एसे ८, २। माती णं मातं कट्टु से जहा नामए अयागरेति वा तंबागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवन्नागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा बुसागणीति वा णलागणीति वा दलागणीति वा सोंडियालि-

च्छाणि वा भंडितालिच्छाणि वा गोलियालिच्छाणि वा कुंभारावातेति वा कवेल्लुश्रावातेति वा इट्टावातेति वा जंतवाडचुल्लीति वा लोहारंबरिसाणि वा तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुतमाणाइं (२) जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं इंगालसहस्साइं परिकिरमाणाइं अंतो (२) झियायंति, ३। एवामेव माती मायं कट्टु अंतो (२) झियायइ जतिवि त णं अन्ने केति वदति तंपि त णं माती जाणति अहमेसे अभिसङ्किज्जामि ४। माती णं मातं कट्टु (से णं तस्स) अणालोतितपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अणतरेसु देवलोगेसु देवदत्ताते उववत्तारो भवंति, तंजहा—नो महिड्ढिएसु जाव नो दूरंगतितेसु नो चिरट्ठितीएसु, से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्ढिए जाव नो चिरठितीते, जावि त से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति साऽविय णं नो आढाति नो परियाणाति णो महरिहेणमासणेणं उवनिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुँ देवे! भासउ ५। से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तंजहा—अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणिं वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताते पच्चायाति, से णं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दुवन्ने दुग्गधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिते अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठसरे अकंतसरे अपितस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चायाते, जाऽविय से तत्थ बाहिरब्भंतरिता परिसा भवति साऽवि त णं णो आढाति णो परिताणाति नो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि त से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति—मा बहुँ अज्जउत्तो! भासउ (२), ६। माती णं मातं कट्टु आलोचितपडिकंते कालमासे कालं किच्चा अणणतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो

भवंति, तंजहा–महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितीएसु, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढीए जाव चिरट्ठितीते हारविरातितवच्छे कडकतुडितथंभितभुते अंगदकुंडलमउडगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिते कल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे भासुरबोंदी पलंबवणमालधरे दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीते दिव्वाते जूतीते दिव्वाते पभाते दिव्वाते छायाते दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाते लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा महयाऽहतणट्ट-गीतवातित-तंतीतलताल-तुडितघणमुत्तिग-पडुप्पवातितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ जाऽवि त से तत्थ वाहिरब्भंतरिता परिमा भवति साविं त णमादाइ परियाणाति महारिहेण आसणेणं उवनिमंतेति भासंपि त से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठिति–बहुँ देवे ! भासउ (२), ७। से णं तओ देवलोगातो आउक्खएणं ३ जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, इ(अ)ड्ढाइं जाव वहुजणस्स अपरिभूताइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताते पच्चातातिं, से णं तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवन्ने सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे आदेज्जवतणे पच्चायाते, जाऽविय से तत्थ वाहिरब्भंतरिता परिसा भवति साऽवि त णं आढाति जाव बहुमज्जउत्ते ! भासउ (२), ८ ॥ सू० ५१७ ॥ अट्ठविहे संवरे पन्नत्ते, तंजहा–सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे मणसंवरे वतिसंवरे कायसंवरे १। अट्ठविहे असंवरे पन्नत्ते, तंजहा–सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे ॥ सू० ५१८ ॥ अट्ठ फासा पन्नत्ता, तंजहा–कक्खडे मउते गरुते लहुते सीते उसिणे निद्धे लुक्खे ॥ सू० ५१९ ॥ अट्ठविधा लोगठिती पन्नत्ता, तंजहा–आगासपतिट्ठिते वाते १ वातपतिट्ठिते उदही २ एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा

कम्मपतिट्ठिता अजीवा जीवसंगहीता जीवा कम्मसंगहीता ॥ सू० ६०० ॥ अट्ठविहा गणिसंपता पन्नत्ता, तंजहा—आचारसंपया सुयसंपता सरीरसंपता वतणसंपता वातणासंपता मतिसंपता पतोगसंपता संगहपरिणाणाम अट्ठमा ॥ सू० ६०१ ॥ एगमेगे णं महानिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चतेणं पन्नत्ते ॥ सू० ६०२ ॥ अट्ठ समितीतो पन्नत्ताओ, तंजहा—ईरियासमिति भासासमिति एसणासमिति आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिति उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिति मणसमिति वइसमिति कायसमिति ॥ सू० ६०३ ॥ अट्ठहि ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोतणा पडिच्छित्तए, तंजहा—आतारवं आहारवं ववहारवं ओवीलए पकुव्वते अपरिस्साती निज्जावते अवातदंसी १। अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोइत्तते, तंजहा—जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने णाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने खंते दंते ॥सू. ६०४। अट्ठविहे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेयारिहे मूलारिहे ॥ सू० ६०५ ॥ अट्ठ मतट्ठाणा पन्नत्ता तंजहा—जातिमते कुलमते बलमते रूवमते तवमते सुतमते लाभमते इस्सरितमते ॥ सू० ६०६ ॥ अट्ठ अकिरियावाती पन्नत्ता, तंजहा—एगावाती अणेगावाती मितवादी निम्मितवादी सायवाती समुच्छेदवाती णितावादी ण संति परलोगवाती ॥ सू० ६०७ ॥ अट्ठविहे महानिमित्ते पन्नत्ते, तंजहा—भोमे उप्पाते सुविणे अंतलिक्खे अंगे सरे लक्खणे वंजणे ॥ सू० ६०८ ॥ अट्ठविधा वयणविभत्ती पन्नता, तंजहा—निद्देसे पढमा होती, बीतिया उवतेसणे । ततिता करणंमि कता, चउत्थी संपदावणे ॥ १ ॥ पंचमी त अवाताणे, छट्ठी सस्सामिवायणे । सत्तमी सन्निहाणत्थे, अट्ठमी आमंतणी भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती निद्देसे सो इमो अहं वत्ति । बितीता उण उवतेसे

भणा कुणा व तिमं व तं वत्ति ॥ ३ ॥ ततिना करणंमि कया णीतं च कतं च तेण व मते वा । हंदि णमो साहाते हवति चउत्थी पदाणंमि ॥४॥ अवणे गिराहसु तत्तो इत्तोत्ति व पंचमी अवादणे । छट्ठी तस्स इमस्स व गतस्स वा सामिसंबंधे ॥५॥ हवइ पुण सत्तमी तमिमंमि आहारकालभावे त आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाणत्ती ॥ ६ ॥ सू० ६०९ ॥ अट्ठ ठाणाइं छउमत्थेणं सव्वभावेणं ण याणति न पासति, तंजहा—धम्मत्थिगातं जाव गंधं वातं, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ जाव गंधं वातं ॥ सू० ६१० ॥ अट्ठविधे आउवेदे पन्नत्ते, तंजहा—कुमारभिच्चे कायतिगिच्छा सालाती सल्लहत्ता जंगोली भूतवेज्जा खारतंते रसातणे ॥ सू० ६११ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पउमा सिवा सती (सूती) अंजू अमला अच्छरा णवमिया रोहिणी १। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कराहा कराहराती रामा रामरक्खिता वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा २। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ३। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, ४। अट्ठ महग्गहा पन्नत्ता, तंजहा—चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सती अंगारे सणिचरे केऊ ५ ॥ सू० ६१२ ॥ अट्ठविधा तणवणस्सतिकातिया पन्नत्ता, तंजहा—मूले कंदे खंधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे ॥ सू० ६१३ ॥ चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविधे संजमे कज्जति, तंजहा—चक्खुमातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, चक्खुमतेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति, एवं जाव फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति फासामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति १। चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविधे असंजमे कज्जति, तंजहा—चक्खुमातो सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति, चक्खुमतेणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति, एवं

जाव फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति ॥ सू० ६१४ ॥ अट्ठ सुहुमा पन्नत्ता, तंजहा—पाणसुहुमे पणगसुहुमे बीयसुहुमे हरितसुहुमे पुप्फसुहुमे अंडसुहुमे लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे ॥ सू० ६१५ ॥ भरहस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं, तंजहा—आदिच्चजसे महाजसे अतिबले महाबले तेतवीरिते कित्तवीरिते दंडवीरिते जलवीरिते ॥ सू० ६१६ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणितस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तंजहा—सुभे अज्जघोसे वसिट्ठे बंभचारी सोमे सिरिधरिते वीरिते भद्दजसे ॥ सू० ६१७ ॥ अट्ठविधे दंसणे पन्नत्ते, तंजहा—सम्मदद्दंसणे मिच्छदद्दंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे ॥ सू० ६१८ ॥ अट्ठविधे अद्धोवमिते पन्नत्ते, तंजहा—पलितोवमे सागरोवमे उस्सप्पिणी ओसप्पिणी पोग्गलपरियट्टे तीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा ॥ सू० ६१९ ॥ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगंतकरभूमी दुवासपरियाते अंतमकासी ॥ सू० ६२० ॥ समणेणं भगवता महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगारातो अणगारितं पव्वाविता, तंजहा—वीरंगय वीरजसे संजयएणिज्जते -य रायरिसी । सेयसिवे उदायणे तह संखे कासितवद्धणए ॥सू० ६२१॥ अट्ठविहे आहारे पन्नत्ते, तंजहा—मणुन्ने असणे पाणे साइमे साइमे अमणुन्ने जाव साइमे ॥ सू० ६२२ ॥ उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ णमक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठिनातो अट्ठ कण्हरातीतो पन्नत्ताओ, तंजहा—पुरच्छिमेणं दो कण्हरातीतो दाहिणेणं दो कण्हराइओ पच्चच्छिमेणं दो कण्हराइओ उत्तरेणं दो कण्हराइओ, पुरच्छिमा अब्भंतरा कण्हराती दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणा अब्भंतरा कण्हराती पच्चच्छिमगं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, पच्चच्छिमा अब्भंतरा कण्हराती उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरा अब्भंतरा

कराहराती पुरच्छिमं बाहिरं कराहरातीं पुट्ठा, पुरच्छिमपच्चच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दो कराहरातीतो छलंसातो, उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दो कराहरातीतो तंसाओ, सव्वाओऽवि णं अब्भंतरकराहरातीतो चउरंसाओ १। एतासि णं अट्ठराहं कराहरातीणं अट्ठ नामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा—कराहरातीति वा मेहरातीति वा मघाति वा माघवतीति वा वातफलिहेति वा वातपलिक्खोभेति वा देवपलिहे वा देवपलिक्खोभेति वा २। एतासि णं अट्ठराहं कराहरातीणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंतितविमाणा पन्नत्ता तंजहा—अच्ची अच्चिमाली वतिरोअणे पभंकरे चंदाभे सूराभे सुपइट्ठाभे अग्गिच्चाभे ३। एतेसु णं अट्ठसु लोगंतितविमाणेसु अट्ठविधा लोगंतिता देवा पन्नत्ता, तंजहा—सारसतमाइच्चा वराही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिता अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा ॥१॥ ४। एतेसि णमट्ठराहं लोगंतितदेवाणं अजहराणमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता ५ ॥ सू० ६२३ ॥ अट्ठ धम्मत्थिगातमज्झपतेसा पन्नत्ता, अट्ठ अधम्मत्थिगातमज्झपतेसा पन्नत्ता, एवं चेव अट्ठ आगासत्थिगातमज्झपतेसा पन्नत्ता, एवं चेव अट्ठ जीवमज्झपएसा पन्नत्ता ॥ सू० ६२४ ॥ अरहंता णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगारातो अणगारितं पव्वावेस्सति, तंजहा—पउमं पउमगुम्मं नलिणं नलिनगुम्मं पउमद्धतं धणुद्धतं कणगरहं भरहं ॥ सू० ६२५ ॥ कराहस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो णं आरिट्ठनेमिस्स अंतिते मुंडा भवेत्ता अगारातो अणगारितं पव्वतिता सिद्धाओ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाओ, तंजहा—पउमावती गोरी गंधारी लक्खणा सुसीमा जंबवती सच्चभामा रुप्पिणी कराहअग्गमहिसीओ ॥ सू० ६२६ ॥ वीरितपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलिआ(चूल)वत्थू पन्नत्ता ॥ सू० ६२७ ॥ अट्ठ गतितो पन्नत्ताओ, तंजहा—णिरतगती तिरियगई जाव सिद्धिगती गुरुगती पणोल्लणगती पब्भारगती ॥ सू० ६२८ ॥ गंगासिंधुरत्तारत्तवतिदेवीणं दीवा अट्ठ (२)

जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ता ॥ सू० ६२९ ॥ उक्कामुहमेहमुहविज्जुमुहविज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठ (२) जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ता ॥ सू० ६३० ॥ कालोते णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते ॥ सू० ६३१ ॥ अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ता, एवं बाहिरपुक्खरद्धेवि ॥ सू० ६३२ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवन्निते काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिते अट्ठकरिणते अधिकरणिसंठिते पन्नत्ता ॥ सू० ६३३ ॥ मागधस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निहारे (निहत्ते) पन्नत्ते ॥ सू० ६३४ ॥ जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं सातिरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पन्नत्ता १ । कूडसामली णं अट्ठ जोयणाइं, एवं चेव २ ॥ सू० ६३५ ॥ तिमिसगुहा णमट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं ३ । खंडप्पवातगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं एवं चेव ४ ॥ सू० ६३६ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उभतोकूले अट्ठ वक्खारपव्वया पन्नत्ता, तंजहा–चित्तकूडे पम्हकूडे नलिणकूडे एगसेले तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे १ । जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोताते महानतीते उभतोकूले अट्ठ वक्खारपव्वता पन्नत्ता, तंजहा–अंकावती पम्हावती आसीवीसे सुहावहे चंदपव्वते सूरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते २ । जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पन्नत्ता, तंजहा–कच्छे सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावती आवत्ते जाव पुक्खलावती ३ । जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते दाहिणेणमट्ठ चक्कवट्टिविजया पन्नत्ता, तंजहा–वच्छे सुवच्छे जाव मंगलावती ४ । जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोतामहानदीते दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पन्नत्ता, तंजहा–पम्हे जाव सलिलावती ५ । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोताए महानदीए उत्तरेणं अट्ठ चक्कव-

ट्ठिविजया पन्नत्ता, तंजहा–वप्पे सुवप्पे जाव गंधिलावती ६। जंबूमंदर-पुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उत्तरेणमट्ठ रायहाणीतो पन्नत्ताओ, तंजहा–खेमा खेमपुरी चेव जाव पुंडरीगिणी ७। जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताए महाणईएदाहिणेणं अट्ठ रायहाणीतो पन्नत्ताओ, तंजहा–सुसीमा कुंडला चेव जाव रयणसंचया ८। जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाते महाणदीते दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–आसपुरा जाव वीतसोगा ९। जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोताते महानतीते उत्तरेणमट्ठ रायहाणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–विजया वेजयंती जाव अउज्झा १०॥ सू० ६३७॥ जंबूमंदरपुरपच्चच्छिमेणं सीताते महाणदीए उत्तरेणं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता अट्ठ चक्कवट्टी अट्ठ बलदेवा अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पजंति वा उप्पज्जिस्संति वा ११। जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव १२। जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाते महाणदीए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव १३। एवं उत्तरेणवि १४ ॥ सू० ६३८॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानईए उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाओ अट्ठ खंडगप्पवातगुहा अट्ठ कयमालगा देवा अट्ठ णट्टमालगा देवा अट्ठ गंगा कुंडा अट्ठ सिंधु कुंडा अट्ठ गंगातो अट्ठ सिंधूओ अट्ठ उसभकूडा पव्वता अट्ठ उसभकूडा देवा पन्नत्ता १५। जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा एवं चेव जाव अट्ठ उसभकूडा देवा पन्नत्ता, नवरमेत्थ रत्तारत्तावतीतो तासिं चेव कुंडा १६। जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोताए महानदीते दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ गंगाकुंडा अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ गंगातो अट्ठ सिंधूओ अट्ठ उसभकूडपव्वता अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता १७। जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीयोताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ रत्तकुंडा अट्ठ रत्तावतिकुंडा अट्ठ रत्ताओ जाव अट्ठ उसभकूडा देवा पन्नत्ता १८॥ सू०६३९॥ मंदरचूलिया

णं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ते ११ ॥ सू० ६४० ॥ धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धेणं धायतिरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्व-ग्गेणं पन्नत्ते, एवं धायइरुक्खातो आडवेत्ता सच्चेव जंबूदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव मंदरचूलियत्ति एवं पच्चच्छिमद्धेवि महाधाततिरुक्खातो आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेऽवि पउमरु-क्खाओ आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति एवं पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धेवि महापउमरुक्खातो जाव मंदरचूलितत्ति ॥ सू० ६४१ ॥ जबूदीवे (२) मंदरे पव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पन्नत्ता, तंजहा–पउमुत्तर नीलवंते सुहत्थि अंजणागिरी कुमुते य । पलासते वडिंसे (अट्ठमए) रोयणागिरी ॥१॥ १। जंबूदीवस्स णं दीवस्स जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण बहुमज्झ देसभाते अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं २ ॥ सू० ६४२ ॥ जंबूदीवे (२) मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे महहिमवंते हिमवंते रोहिता हरीकूडे । हरिकंता हरिवासे वेरुलिते चेव कूडा उ ॥ १ ॥ १ । जंबूमंदरउत्तरेणं रुप्पिमि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पन्नता, तंजहा–सिद्धे य रुप्पी रम्मग नरकंता बुद्धि रुप्पकूडे या । हिरणवते मणिकंचणे त रुप्पिमि कूडा उ ॥ १ ॥ २ । जंबूमंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पन्नत्ता, तंजहा–रिट्ठे तवणिज्ज कंचण रयत दिसासोत्थिते पलंबे य । अंजण अंजणपुलते रुयगस्स पुरच्छिमे कूडा ॥ १ ॥ ३ । तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरितातो महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति, तंजहा–णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा । विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥ १ ॥ ४ । जंबूमंदरदाहिणेणं रुतगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पन्नत्ता, तंजहा–कणते कंचणे पउमे नलिणे ससि दिवायरे चेव । वेसमणे वेरुलिते रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥ १ ॥ ५ । तत्थ णं अट्ठ

दिसाकुमारिमहत्तरियातो महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति तंजहा—समाहारा सुप्पतिरणा, सुप्पबुद्धा जसोहरा । लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥ १ ॥ ६ । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पन्नत्ता, तंजहा—सोत्थिते त असोहे य, हिमवं मंदरे तहा । रुअगे रुतगुत्तमे चंदे, अट्ठमे त सुदंसणे ॥ १ ॥ ७ । तत्थ णमट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति तंजहा—इलादेवी सुरादेवी पुढवी पउमावती । एगनासा णवमिता, सीता भद्दा त अट्ठमा ॥ १ ॥ ८ । जंबूमंदरउत्तररुअगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पन्नता, तंजहा—रयणे रयणुच्चते ता, सव्वरयण रयणसंचते चेव । विजये य विजयंते जयंते अपराजिते ॥ १॥६। तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियातो महड्ढिताओ जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति तंजहा—अलंबुसा मितकेसी पोंडरि गीतवारुणी । आसा य सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरतो ॥ १ ॥ १० । अट्ठ अहेलोगवत्थव्वातो दिसाकुमारिमहत्तरितातो पन्नत्ताओ, तंजहा—भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी । सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥ १ ॥ ११ । अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरितातो पन्नत्ताओ, तंजहा—मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिणी । तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता ॥ १ ॥ १२ ॥ सू० ६४३ ॥ अट्ठ कप्पा तिरितमिस्सोववन्नगा पन्नत्ता, तंजहा—सोहम्मे जाव सहस्सारे १ । एतेसु णमट्ठ कप्पेसु अट्ठसु इंदा पन्नत्ता, तंजहा—सक्के जाव सहस्सारे २ । एतेसि णं अट्ठण्हमिंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पन्नत्ता, तंजहा—पालते पुप्फते सोमणसे सिरिवच्छे णंदा(दिया)वत्ते कामकमे पीतिमणे विमले ३ ॥ सू० ६४४ ॥ अट्ठट्ठमियाणं भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीते राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्ता जाव अणुपालितावि भवति ॥ सू० ६४५ ॥ अट्ठविधा संसार-समावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयनेरतिता अपढमसमयनेरतिता एवं

जाव अपढमसमयदेवा १। अट्ठविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—नेरतिता तिरिक्खजोणिता तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा २। अथवा अट्ठविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—आभिणिबोहितनाणी जाव केवलनाणी मतिअन्नाणी सुतअन्नाणी विभंगणाणी ३॥ सू० ६४६॥ अट्ठविधे संजमे पन्नत्ते, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे पढमसमयबादरसंजमे अपढमसमयबादरसंयमे पढमसमयउवसंतकसायवीतरायसंजमे अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे अपढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे॥ सू० ६४७॥ अट्ठ पुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिपब्भारा १। ईसीपब्भाराते णं पुढवीते बहुमज्झदेसभागे अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पराणत्ते २। ईसिपब्भाराते णं पुढवीते अट्ठ नामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा—ईसित्ति वा इसिपब्भाराति वा तणूति वा तणुतणूइ वा सिद्धीति वा सिद्धालतेति वा मुत्तीति वा मुत्तालतेति वा ३॥ सू० ६४८॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संमं संघडितव्वं जतितव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमातेतव्वं भवति—असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणताते अब्भुट्ठेतव्वं भवति १। सुताणं धम्माणं ओगिण्हणयाते उवधारणयाते अब्भुट्ठेतव्वं भवति २। पा(ण)वाणं कम्माणं संजमेणमकरणताते अब्भुट्ठेयव्वं भवति ३। पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणताते विसोहणताते अब्भुट्ठेतव्वं भवइ ४। असंगिहीतपरितणस्स संगिण्हणताते अब्भुट्ठेयव्वं भवति ५। सेहं आयारगोयरगहणताते अब्भुट्ठेयव्वं भवति ६। गिलाणस्स अगिलाते वेयावच्चकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ७। साहम्मिताणमधिकरणंसि उप्पणंसि तत्थ अनिस्सितोवस्सितो अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूते कह णु साहम्मिता अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणताते अब्भुट्ठेयव्वं भवति ८॥ सू० ६४९॥ महा-

सुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ सू० ६५० ॥ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते वादे अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था ॥ सू० ६५१ ॥ अट्ठसमतिए केवलीसमुग्घाते पन्नत्ते, तंजहा–पढमे समए दंडं करेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समते मंथानं करेति, चउत्थे समते लोगं पूरेति, पंचमे समए लोगं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति ॥ सू० ६५२ ॥ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववातियाणं गतिकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिता अणुत्तरोववातितसंपया हुत्था ॥ सू० ६५३ ॥ अट्ठविधा वाणमंतरा देवा पन्नत्ता तंजहा–पिसाया भूता जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा । एतेसि णं अट्ठण्हं(विहाणं) वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेतितरुक्खा पन्नत्ता, तंजहा–कलंबो अ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेतितं । तुलसी भूयाणं भवे, रक्खसाणं च कंडओ ॥१॥ असोओ किन्नराणं च, किंपुरिसाण य चंपतो । नागरुक्खो भुयंगाणं, गंधव्वाण य तेंदुओ ॥२॥ २ ॥ सू० ६५४ ॥ इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसते उड्ढबाहाते सूरविमाणे चारं चरति ॥सू० ६५५॥ अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमदं जोगं जोतेंति, तंजहा–कत्तिता रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराधा जेट्ठा ॥ सू० ६५६ ॥ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १। सव्वेसिंपि दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता २ ॥ सू० ६५७ ॥ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहन्नेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिती पन्नत्ता १। जसोकित्तीनामएणं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पन्नत्ता २। उच्चगोयस्स णं कम्मस्स एवं चेव ३ ॥सू० ६५८ ॥ तेइंदियाणमट्ठ जातीकुलकोडीजोणीपमुहसत सहस्सा पन्नत्ता ॥ सू०

६५९ ॥ जीवा णं अट्ठठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तंजहा—पढमसमयनेरतितनिव्वत्तिते जाव अपढमसमयदेवनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण जाव निज्जरा चेव, अट्ठपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता, अट्ठपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ सू० ६६० ॥ अट्ठमं ठाणं सम्मत्तं ॥ अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

॥ इति अष्टस्थानाख्यमष्टममध्ययनम् ॥ ८ ॥

॥ अथ नवस्थानकाख्यं नवममध्ययनम् ॥

नवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संभोतितं विसंभोतितं करेमाणे णातिक्कमति, तंजहा—आयरियपडिणीयं उवज्झायपडिणीयं थेरपडिणीयं कूलपडिणीयं गणपडिणीयं संघपडिणीयं नाणपडिणीयं दंसणपडिणीयं चरित्तपडिणीयं ॥ सू० ६६१ ॥ णव बंभचेरा पन्नत्ता तंजहा—सत्थपरिन्ना लोगविजओ जाव उवहाणसुयं महापरिण्णा ॥ सू० ६६२ ॥ नव बंभचेरगुत्तीतो पन्नत्ताओ, तंजहा—विवत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति णो इत्थिसंसत्ताइं नो पसुसंसत्ताइं नो पंडगसंसत्ताइं १ नो इत्थिणं कहं कहेत्ता २ नो इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवत्ति ३ णो इत्थीणमिंदिताइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४ णो पणीतरसभोती ५ णो पाणभोयणस्स अतिमत्तं(मातं) आहारते सता भवति ६ णो पुव्वरतं पुव्वकीलियं समरेत्ता भवति ७ णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती ८ णो सातसोक्खपडिबद्धे यावि भवति ९, १। णव बंभचेरअगुत्तीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—णो विवत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ, इत्थीसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ, इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवति, इत्थीणं इंदियाइं जाव निज्झाइत्ता भवति, पणीतरसभोई पाणभोय-

णस्स अइमायमाहारए सया भवइ, पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवइ, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई जाव सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवति ॥ सू० ६६३ ॥ अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा नवहिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं विइक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥ सू० ६६४ ॥ नव सब्भावपयत्था पन्नत्ता, तंजहा—जीवा अजीवा पुरणं पावो आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ॥ सू० ६६५ ॥ णवविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पंचिंदितत्ति १। पुढविकाइया नवगइया नवआगतिता पन्नत्ता, तंजहा—पुढवीकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदियेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिदियत्तांते वा गच्छेज्जा २ एवमाउकाइयावि ३ जाव पंचिंदियत्ति २। णवविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया नेरतिता पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा ३। अथवा णवविहा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयनेरतिता अपढमसमयनेरतिता जाव अपढमसमयदेवा सिद्धा ४। नवविहा सव्वजीवोगाहणा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइओगाहणा आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकायउगाहणा बेइंदियओगाहणा तेइंदियओगाहणा चउरिंदियओगाहणा पंचिंदियओगाहणा ५। जीवाणं नवहि ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा, तंजहा—पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए ६ ॥ सू० ६६६ ॥ णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया तंजहा—अच्चासणाते अहितासणाते अतिणिद्दाए अतिजागरितेण उच्चारनिरोहेणं पासवणनिरोहेणं अद्धाणगमणेणं भोयणपडिकूलताते इंदियत्थविकोवणयाते ॥ सू० ६६७ ॥ णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पन्नत्ते, तंजहा-निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंस-

णावरणे अवधिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ॥ सू० ६६८ ॥ अभिती णं णक्खत्ते सातिरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोतेति, अभीतिआतिआ णं णवनक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोतेंति, तंजहा—अभीती सवणो धणिट्ठा जाव भरणी ॥सू० ६६९॥ इमीसे णं रयणप्पभाते पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ णवजोअणसताइं उड्ढं अबाहाते उ(अ)वरिल्ले तारारूवे चारं चरति ॥ सू० ६७० ॥ जंबूदीवे णं दीवे णवजोयणिआ मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा ॥ सू० ६७१ ॥ जंबूदीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीते णव बलदेववासुदेवपियरो हुत्था तंजहा—पयावती त बंभे य, रोद्दे सोमे सिवेतिता । महासीहे अग्गिसीहे, दसरह नवमे य वसुदेवे ॥ १ ॥ इत्तो आढत्तं जधा समवाये निरवसेसं जाव एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सति आगमेस्सेणं १ । जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीते नव बलदेववासुदेवपितरो भविस्संति एवं जधा समवाते भविस्संति २ । नव बलदेववासुदेवमायरो भविस्संति एवं जधा समवाते निरवसेसं जाव महाभीमसेण सुग्गीवे य अपच्छिमे ३ । एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । सव्वेवि चक्कजोही हम्मेहंती सचक्केहिं ॥ १ ॥ सू० ६७२ ॥ एगमेगे णं महानिधी णं णव णव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स नव महानिहओ पन्नत्ता तंजहा—"णेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलते ३ सव्वरयण ४ महापउमे ५ । काले य ६ महाकाले ७ माणवग ८ महानिही संखे ९ ॥ १ ॥ णेसप्पंमि निवेसा गामागरनगरपट्टणाणं च । दोणमुहमडंवाणं खंधाराणं गिहाणं च ॥ २ ॥ गणियस्स य बीयाण माणुम्माणस्स जं पमाणं च । धन्नस्स य बीयाणं उप्पत्ती पंडुते भणिया ॥ ३ ॥ सव्वा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥ ४ ॥ रयणाइं सव्वरयणे चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स ।

उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥ ५ ॥ वत्थाण य उप्पत्ती निप्पत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य धोयाण य सव्वा एसा महापउमे ॥ ६ ॥ काले कालण्णाणं भव्वपुराणं च तीसु वासेसु । सिप्पसतं कम्माणि य तिन्नि पयाए हियकराइं ॥ ७ ॥ लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च । रुप्पस्स सुवन्नस्स य मणिमोत्तिसिलप्पवालाणं ॥ ८ ॥ जोधाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च । सव्वा य जुद्धनीती माणवते दंडनीती य ॥ ९ ॥ नट्टविही नाडगविही कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती । संखे महानिहिम्मी तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे । बारसदीहा मंजूससंठिया जह्नवीई मुहे ॥११॥ वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविधरयणपडिपुन्ना । ससिसूरचक्क-लक्खणअणुसमजुगबाहुवतणा त ॥१२॥ पलिओवमट्ठितीया णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा । जेसिं ते आवासा अक्किज्जा आहिवच्चा वा ॥१३॥ एए ते नवनिहओ पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा । जे वसमुवगच्छंती सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥१४॥ ॥सू० ६७३॥ णव विगतीतो पन्नत्ताओ, तंजहा–खीरं दधिं णवणीतं सप्पिं तेलं गुलो महुँ मज्जं मंसं ॥ सू० ६७४ ॥ णवसोत-परिस्सवा बोंदी पराणत्ता, तंजहा–दो सोत्ता दो णेत्ता दो घाणा मुहं पोसे पाऊ ॥ सू०६७५ ॥ णवविधे पुन्ने पन्नत्ते, तंजहा–अन्नपुन्ने पाणपुराणे वत्थपुन्ने लेणपुराणे सयणपुन्ने मणपुन्ने वतिपुराणे कायपुराणे नमोक्कार-पुराणे ॥ सू० ६७६ ॥ णव पावस्सायतणा पन्नत्ता, तंजहा–पाणातिवाते मुसावाते जाव परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे ॥ सू० ६७७ ॥ नवविधे पावसुयपसंगे पन्नत्ते, तंजहा–उप्पाते निमित्ते मंते आति-क्खिते तिगिच्छते । कला आवरणेऽन्नाणे मिच्छापावतणेति त ॥ १ ॥ ॥सू० ६७८ ॥ नव णेउणिता वत्थू पन्नत्ता, तंजहा–संखाणे निमित्ते कातिते पोराणे पारिहत्थिते परपंडिते वातिते भूतिकम्मे तिगिच्छिते ॥सू० ६७९॥

समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तंजहा—गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातितगणे विस्सवातितगणे कामड्ढितगणे माणवगणे कोडितगणे ॥ सू० ६८० ॥ समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पन्नत्ते, तंजहा—ण हणइ ण हणावइ हणंतं णाणुजाणइ ण पतति ण पतावेति पतंतं णाणुजाणाति ण किणाति ण कितावेति किणंतं णाणुजाणाति ॥ सू० ६८१ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरणो वरुणस्स महारन्नो णव अग्गमहिसीओ पन्नताओ ॥ सू० ६८२ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरणो अग्गमहिसीणं णव पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, १ । ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, २ । ॥ सू० ६८३ ॥ नव देवनिकाया पन्नत्ता, तंजहा—सारस्सयमाइच्चा वराही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥ अव्वाबाहाणं देवाणं नव देवा नव देवसया पन्नत्ता, एवं अग्गिच्चावि, एवं रिट्ठावि ॥ सू० ६८४ ॥ णव गेवेज्जविमाणपत्थडा पन्नत्ता, तंजहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिम२गेविज्जविमाणपत्थडे १ । एतेसि णं णवण्हं गेविज्जविमाणपत्थडाणं णव नामधिज्जा पन्नत्ता, तंजहा—भद्दे सुभद्दे सुजाते सोमणसे पितदरिसणे । सुदंसणे अमोहे य सुप्पबुद्धे जसोधरे ॥ १ ॥ सू० ६८५ ॥ नवविहे आउपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा—गतिपरिणामे गतिबंधणपरिणामे ठिइपरिणामे ठितिबंधणपरिणामे उड्ढंगारवपरिणामे अहेगारवपरिणामे तिरितंगारवपरिणामे दीहंगारवपरिणामे रहस्संगारवपरिणामे ॥ सू० ६८६ ॥ णवणवमिता णं

भिक्खुपडिमा एगासीते रातिंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहि अधासुत्ता जाव आराहिता तावि भवति ॥ सू० ६८७ ॥ णवविधे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा–आलोयणारिहे जाव मूलारिहे अणवठप्पारिहे ॥ सू० ६८८ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेतड्ढे नव कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ भरहे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिसगुहा ७। भरहे ८ वेसमणे ९ या भरहे कूडाण णामाइं ॥ १ ॥ जंबूमंदिरदाहिणेणं निसभे वासहरपव्वते णव कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ निसहे २ हरिवास ३ विदेह ४ हरि ५ धिति ६ अ सीतोता ७। अवरविदेहे ८ रुयगे ९ निसभे कूडाण नामाणि ॥ १ ॥ जंबूमंदरपव्वते णंदणवणे णव कूडा पन्नत्ता, तंजहा-णंदणे १ मंदरे २ चेव निसहे ३ हेमवते ४ रयय ५ रुयए ६ य। सागरचित्ते ७ वइरे ८ बलकूडे ९ चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जंबूमालवंतवक्खारपव्वते णव कूडा पन्नत्ता, तजहा–सिद्धे १ य मालवंते २ उत्तरकुरु ३ कच्छ ४ सागरे ५ रयते ६। सीता ७ तह पुरणणामे ८ हरिस्सहकूडे ९ य बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जंबूमालवंतवक्खारपव्वते कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पन्नत्ता तंजहा–सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुण ६ तिमिस गुहा ७। कच्छे ८ वेसमणे या ९ कच्छे कूडाण णामाइं ॥ १ ॥ जंबूमालवंतवक्खारपव्वते सुकच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ सुकच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिसगुहा ७। सुकच्छे ८ वेसमणे ९ ता सुकच्छि कूडाण णामाइं ॥ १ ॥ एवं जाव पोक्खलावतिंमि दीहवेयड्ढे, एवं वच्छे दीहवेयड्ढे एवं जाव मंगलावतिमि दीहवेयड्ढे। जंबूविज्जुप्पभे वक्खारपव्वते नव कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ अ विज्जुणामे २ देवकुरा ३ पम्ह ४ कणग ५ सोवत्थी ६। सीतोताते ७ सजले ८ हरिकूडे ९ चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जंबूविज्जुप्पभे वक्खारपव्वते पम्हे दीहवेयड्ढे णव कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धे १ पम्हे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५

एवं चेव जाव सलिलावतिंमि दीहवेयड्ढे, एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवं जाव गंधिलावतिंमि दीहवेयड्ढे नव कूडा पन्नत्ता, तंजहा—सिद्धे १ गंधिल २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिसगुहा ७। गंधिलावति ८ वेसमण ९ कूडाणं होंति णामाइं ॥ १ ॥ एवं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव, जंबूमंदरेणं उत्तरेणं नेलवंते वासहरपव्वते णव कूडा पन्नत्ता, तंजहा—सिद्धे १ निलवंत २ विदेह ३ सीता ४ कित्ती त ५ नारिकंता ६ य। अवरविदेहे रम्मगकूडे ८ उवदंसणे ९ चेव ॥ १ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं एरवते दीहवेतड्ढे नव कूडा पन्नत्ता, तंजहा—सिद्धे १ रयणे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुराण ६ तिमिसगुहा ७। एरवते ८ वेसमणे ९ एरवते कूडणामाइं ॥ १ ॥ सू० ६८९ ॥ पासे णं अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारातसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥ सू० ६९० ॥ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तित्थंसि णवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वतिते,सेणितेणं सुपासेणं उदातिणा पोट्टिलेणं अणगारेणं दढाउणा संखेणं सततेणं सुलसाए सावितातें रेवतीते ९ ॥ सू० ६९१ ॥ एस णं अज्जो! कण्हे वासुदेवे १ रामे बलदेवे २ उदये पेढालपुत्ते ३ पुट्टिले ४ सतते गाहावती ५ दारुते नितंठे ६ सच्चती नितठीपुत्ते ७ सावितबुद्धे अम्बडे परिव्वायते ८ अज्जाविणं सुपासा पासावच्चिज्जा ९ आगमेस्साने उस्सप्पिणीते चाउज्जामं धम्मं पन्नवतित्ता सिज्झिहिन्ति जाव अंतं काहिंति ॥ सू० ६९२ ॥ एस णं अज्जो! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीते सीमंतते नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयंसि निरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति, से णं तत्थ णेरइए भविस्सति काले कालोभासे जाव परमकिण्हे वन्नेणं, से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं (विउलं) जाव दुरहियासं १। से णं ततो नरतातो उवट्टेत्ता आग-

सेसाते उस्सप्पिणीते इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवतेसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिती, तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुणाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपातं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण जाव सुरूवं दारगं पयाहिती २। जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती तं रयणिं च णं सतदुवारे णगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो त पउमवासे त रयणवासे त वासे वासिहिती, तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वइक्कंते जाव वारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणणं गुणनिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति जम्हा णं अम्हमिमंसि दारगंसि जातंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे तं होऊ णमम्हमिमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे २, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति—महापउमेत्ति ३। तए णं महापउमं दारगं अम्मापितरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति, से णं तत्थ राया भविस्सति महता हिमवंतमहंतमलयमंदररायवन्नतो जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सति ४। तते णं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नया कयाइ दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंती, तंजहा—पुन्नभद्दते माणिभद्दते, तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राती-सर-तलवर-माडंबित-कोडुंबित-इब्भसेट्ठिसेणावति-सत्थवाहप्पभितयो अन्नमन्नं सद्दावेहिंति एवं वतिस्संति जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रन्नो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेनाकम्मं करेंति, तंजहा—पुन्नभद्दे त माणिभद्दे य, तं होऊ णमम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रन्नो दोच्चेऽवि नामधेज्जे देवसेणे, तते णं तस्स महापउमस्स दोच्चेऽवि नामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति २, तए णं तस्स देवसेणस्स रन्नो अन्नता

कताती सेयसंखतलविमलसन्निकासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति, ५। तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसन्निकासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं (२) अतिज्जाहि त णिज्जाहि त, तते णं सतदुवारे णगरे—बहवे रातीसरतलवर जाव अन्नमन्नं सद्दाविंति (२) एवं वइस्संति—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रन्नो सेते संखतलविमलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने तं होऊ णमम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रन्नो तच्चेऽवि नामधेज्जे विमल-वाहणे, तते णं तस्स देवसेणस्स रन्नो तच्चेऽवि णामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणे २, ६ । तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगार-वासमज्झे वसित्ता अम्मापितीहिं देवत्तगतेहिं गुरुमहत्तरतेहिं अब्भणुन्नाते समाणे उडुंमि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतितेहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहि कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धन्नाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुव-माणे य वहिया (संचोहिए) सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिति, तस्स णं भगवंतस्स साइरेगाइं दुवालस वासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जंति तंजहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते उप्पन्ने सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ७। तए णं से भगवं ईरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारि अममे अकिंचणे छि(कि)न्नगं(ग्गं)थे निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेविव तेयसा जलंते ८। कंसे संखे जीवे गगणे वाते य सारए सलिले। पुक्खरपत्ते कुंमे विहगे खग्गे य भारंडे॥ १ ॥ कुंजर वसहे सीहे नगराया चेव सागरमखोमे। चंदे सूरे कणगे वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥ २ ॥ नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ,से य पडिबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-अंडए वा पोयएइ वा उग्गहेइ

वा पग्गहिएइ वा ९। जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुवचरिएणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवे मद्दवे लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च संजम तवगुणसुचरिय-सोवचिय-फलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति, १०। तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सइ, केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ ११। तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं [सेणं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयाहि तं चेव दिवसं सयमेतारुवमभिग्गहं अभिगिण्हिहिति जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तंजहा–दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते उप्पन्ने सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ, तते णं से भगवं अणगारे भविस्सति ईरियासमिते भाससमिते एवं जहा वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं जाव अव्वावारविउसजोगजुत्ते, तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वीतिक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं णाणेणं जहा भावणाते केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिन्ति जिणे भविस्सति केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरईए जाव] पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च

जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सति १२। से जहाणामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पराणत्ते, एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पराणवेहिति, से जहाणामते अज्जो मते समणाणं निग्गंथाणं दुविहे बंधणे पन्नवेहिति, तंजहा–पेज्जबंधणे दोसबंधणे, एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिति तंजहा–पेज्जबंधणं च दोसबंधणं च १३। से जहानामते अज्जो मते समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडा पन्नवेहिति तंजहा–मणदंडे (३), एवामेव महापउमेऽवि समणाणं निग्गंथाणं ततो दंडे पराणवेहिति, तंजहा–मणोदंडं (३), से जहा नामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पन्नवेहिति तंजहा–कोहकसाए (४), पंच कामगुणे पन्नवेहिति, तंजहा–सद्दे (५), छज्जीवनिकाता पन्नवेहिति, तंजहा–पुढविकाइया जाव तसकाइया, एवामेव जाव तसकाइया, से जहाणामते एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पन्नवेहिति तंजहा–एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणा पन्नवेहिति, एवमट्ठ मयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ दसविधे समणधम्मे एवं जाव तेत्तीसमासातणाउत्ति १४। से जहानामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अराहाणते अदंतवणे अच्छत्तए अणुवाहणते भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे जाव लद्धावलद्धवित्तीउ पन्नत्ताओ एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती पराणवेहिती १५। से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं आधाकम्मिएति वा उद्देसितेति वा मीसज्जाएति वा अज्झोयरएति वा पूतिएति वा कीतेति वा पामिच्चेति वा अच्छेज्जेति वा अणिसट्ठेति वा अभिहडेति वा कंतारभत्तेति वा दुब्भिक्खभत्तेति वा गिलाणभत्तेति वा वद्दलिताभत्तेइ वा पाहुणभत्तेइ वा मूलभोयणेति वा कंदभोयणेति फलभोयणेति बीयभोयणेति

हरियभोयणेति वा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गं-थाणं आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति १६ । से जहा-नामते अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वतिए सपडिक्कमणे अचेलते धम्मे पराणत्ते एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्व-तितं जाव अचेलगं धम्मं पराणवेहिती १७ । से जहानामए अज्जो ! मए पंचाणुव्वतिते सत्तसिक्खावतिते दुवालसविधे सावगधम्मे पराणत्ते एवामेव महापउमेऽवि अरहा पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं पराणवेस्सति १८ । से जहानामते अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं सेज्जातरपिंडेति वा रायपिं-डेति वा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सेज्जातर-पिंडेति वा पडिसेहिस्सति १९ । से जधाणामते अज्जो ! मम णव गणा इगारस गणधरा एयामेव महापउमस्सऽवि अरिहतो णव गणा एगारस गणधरा भवि-स्संति २० । से जहानामते अज्जो ! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउ-णित्ता बायालीसं वासाइं सामराणपरियागं पाउणित्ता बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं एवामेव महापउमेऽवि अरहा तीसं वासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता जाव पव्विहिती दुवालस संवच्छाराइं जाव बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिती—"जंसीलसमायारो अरहा तित्थंकरो महावीरो। तस्सीलसमायारो होति उ अरहा महापउमे ॥ १ ॥" ॥ सू० ६९३ ॥ इति श्री महापद्मचारित्रं संपूर्णमिति ॥ णव णक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पन्नत्ता, तंजहा—अभिती समणो धणिट्ठा रेवति अस्सिणि मग्गसिर पूसो । हत्थोचित्ता य तहा पच्छंभागा णव हवंति॥१॥ सू० ६९४॥ आणतपाणत आरणच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव [illegible] उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ सू० ६९५ ॥

विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उद्धं उच्चत्तेणं हुत्था ॥ सू० ६९६ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिते णं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमको- डाकोडीहिं विईक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते ॥ सू० ६९७ ॥ घणदंतलट्ठदंत- गूढदंत-सुद्धदंतदीवाणं दीवा णवणवजोयणसताइं आयामविक्खंभेणं पराणत्ता ॥ सू० ६९८ ॥ सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पन्नत्ताओ तंजहा— हयवीही गतवीही णागवीही वसहवीही गोवीही उरगवीही अयवीही मितवीही वेसाणरवीही ॥ सू० ६९९ ॥ नवविधे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पन्नत्ते, तंजहा—इत्थिवेते पुरिसवेते णपुंसगवेते हासे रत्ती अरइ भये सोगे दुगुंछे ॥ सू० ७०० ॥ चउरिंदियाणं णव जाइकुलकोडी-जोणिपमुहसय- सहस्सा पराणत्ता, भुयगपरिसप्प-थलयरपंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं नवजाइ- कुलकोडि-जोणिपमुह-सयसहस्सा पराणत्ता ॥ सू० ७०१ ॥ जीवा णं णवट्ठा- णनिवत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा (३) पुढविकाइयनिवत्तिते जाव पंचिंदितनिवत्तिते, एवं चिणउवचिण जाव णिज्जरा चेव ॥ सू० ७०२ ॥ णव पएसिता खंधा अणंता पराणत्ता, नवपएसोगाढा पोग्गला अणंता पराणत्ता जाव णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पराणत्ता ॥सू० ७०३ ॥ नवमं ठाणं नवमज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति नवस्थानकाख्यं नवममध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमस्थानकाख्यं दशममध्ययनम् ॥

दसविधा लोगट्ठिती पन्नत्ता, तंजहा—जरणं जीवा उद्दाइत्ता (२) तत्थेव (२) भुज्जो (२) पच्चायंति एवं एगा लोगट्ठिती पराणत्ता १ । जराणं जीवाणं सता समियं पावे कम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पराणत्ता २ । जराणं जीवा सया समितं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पराणत्ता ३ । ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं जीवा अजीवा

भविस्संति अजीवा वा जीवा भविस्संती एवंप्पेगा लोगट्ठिती पराणत्ता ४। रा एवं भूतं (३) जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति थावरा पाणा (भविस्संति थावरा पाणा) वोच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति वा एवंप्पेगा लोगट्ठिती पराणत्ता ५। रा एवं भूतं (३) जं लोगे अलोगे भविस्सति अलोगे वा लोगे भविस्सति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पराणत्ता ६। रा एवं भूतं वा(३) जं लोए अलोए पविस्सति अलोए वा लोए पविस्सति एवंप्पेगा लोगट्ठिती ७। जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एवंप्पेगा लोगट्ठिती ८। जाव ताव जीवाण त पोग्गलाण त गतिपरिताते ताव ताव लोए जाव ताव लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण त गति-परिताते एवंप्पेगा लोगट्ठिती ९। सव्वेसुवि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताते कज्जति जेणं जीवा त पोग्गला त नो संचायंति बहिता लोगंता गमणयाते एवंप्पेगा(एवमेगा)लोगट्ठिती पराणत्ता १०॥सू० ७०४॥ दसविहे सद्दे पन्नत्ते, तंजहा—नीहारि १ पिंडिमे २ लुक्खे ३, भिन्ने ४ जज्जरिते ५ इत। दीहे ६ रहस्से ७ पुहुत्ते ८ त, काकणी ९ खिंखिणि स्सरे १०॥ १॥ सू० ७०५॥ दस इंदियत्थातीता पराणत्ता, तंजहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु देसेणवि एगे रूवाइं पासिसु सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिसु, एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु, १। दस इंदियत्था पडुप्पन्ना पन्नत्ता, तंजहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेति, एवं जाव फासाइं, दस २। इंदियत्था अणागता पन्नत्ता, तंजहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेस्संति एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडि-संवेदेस्सति॥ सू० ७०६॥ दसहिं ठाणेहिमच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा, तंजहा-आहा-रिज्जमाणे वा चलेज्जा परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा णिज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा

विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा जक्खातिट्ठे वा चलेज्जा वातपरिग्गहे (परिगते) वा चालेज्जा ॥ सू० ७०७ ॥ दसहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिया तंजहा—मणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइमवहरिंसु १ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं उवहरिंसु २ मणुराणाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं अवहरइ ३ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिस जाव गंधाइं उवहरति ४ मणुराणाइं मे सद्द जाव अवहरिस्सति ५ अमणुराणाइं मे सद्द जाव उवहरिस्सति ६ मणुराणाइं मे सद्द जाव गंधाइं अवहरिंसु वा अवहरइ वा अवहरिस्सति ७ अमणुराणाइं मे सद्द जाव उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा ८ मणुराणामणुराणाइं सद्द जाव अवहरिंसु अवहरति अवहरिस्सइ उवहरिंसु उवहरति उवहरिस्सति ९ अहं च णं आयरियउवज्झायाणं सम्मं वट्टामि ममं च णं आयरियउवज्झाया मिच्छं पडिवन्ना १० ॥ सू० ७०८ ॥ दसविधे संजमे पन्नत्ते, तंजहा—पुढविकातितसंजमे जाव वणस्सतिकायसंजमे बेइंदितसंजमे तेंदितसंजमे चउरिंदितसंजमे पंचिंदियसंजमे अजीवकायसंजमे १ । दसविधे असंजमे पन्नत्ते, तंजहा—पुढविकातितअसंजमे आउकायअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सतिकायअसंजमे जाव अजीवकायअसंजमे २ । दसविधे संवरे पन्नत्ते तंजहा—सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदितसंवरे मणसंवरे वयसंवरे कायसंवरे उवकरणसंवरे सूचीकुसग्गसंवरे । दसविधे असंवरे पन्नत्ते, तंजहा-सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्गअसंवरे ॥ सू० ७०९ ॥ दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा, तंजहा—जातिमतेण वा कुलमएण वा जाव इस्सरियमतेण वा ८ णागसुवन्ना वा मे अतितं हव्वमागच्छंति ९ पुरिसधम्मातो वा मे उत्तरिते अहोधिते णाणदंसणे समुप्पन्ने १० ॥ सू० ७१० ॥ दसविधा समाधी पन्नत्ता, तंजहा—पाणातिवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदिन्नायणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहावेरमणे ईरितासमिती भासासमिती एसणासमिती आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिती उच्चारपासवणखेल-

सिंघाणगपारिट्ठावणितासमिती १।दसविधा असमाधी पन्नत्ता,तंजहा-पाणातिवाते जाव परिग्गहे ईरिताऽसमिती जाव उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणियाऽसमिती २ ॥ सू० ७११ ॥ दसविधा पव्वज्जा पन्नत्ता, तंजहा—छंदा रोसा परिजुन्ना सुविणा पडिस्सुता चेव। सारणिता रोगिणीता अणाढिता देवसन्नत्ती ॥ १ ॥ वच्छाणुबंधिता, १। दसविधे समणधम्मे पन्नत्ते तंजहा—खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चिताते बंभचेरवासे २। दसविधे वेयावच्चे पन्नत्ते, तंजहा—आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे सेहवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे संघवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे ॥ सू० ७१२ ॥ दसविधे जीवपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा—गतिपरिणामे इंदितपरिणामे कसायपरिणामे लेसापरिणामे जोगपरिणामे उवओगपरिणामे णाणपरिणामे दंसणपरिणामे चरित्तपरिणामे वेतपरिणामे १। दसविधे अजीवपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा—बंधणपरिणामे गतिपरिणामे संठाणपरिणामे भेदपरिणामे वणणपरिणामे रसपरिणामे गंधपरिणामे फासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे सद्दपरिणामे ॥ सू० ७१३ ॥ दसविधे अंतलिक्खिते असज्झाइए पन्नत्ते, तंजहा—उक्कावाते दिसिदाघे गज्जिते विज्जुते निग्घाते जूवते जक्खालित्ते धूमिता महिता रतउग्घाते १। दसविहे ओरालिते असज्झातिते पन्नत्ते तंजहा—अट्ठि मंसं सोणिते असुतिसामंते सुसाणसामंते चंदोवराते सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवसयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे २॥सू० ७१४॥ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स दसविधे संजमे कज्जति, तंजहा—सोयामताओ सुक्खाओ अववरोवेत्ता भवति सोतामतेणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति एवं जाव फासामतेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति, एवं असंयमोऽवि भाणितव्वो ॥ सू० ७१५ ॥ दस सुहुमा पन्नत्ता, तंजहा—पाणसुहुमे पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भंगसुहुमे ॥ सू० ७१६ ॥ जंबूमंदिरदाहिणेणं गंगासिंधुमहा-

नदीओ दस महानतीओ समप्पेंति, तंजहा—जउणा सरऊ आवी कोसी मही सिंधू (सतद्दु) विवच्छा विभासा एरावती चंद्रभागा १। जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तारत्तवतीओ महानदीओ दस महानदीओ समप्पेंति, तंजहा—किरहा महाकिरहा नीला महानीला तीरा महातीरा इंदा जाव महाभोगा २। ॥ सू० ७१७ ॥ जंबुद्दीवे (२) भरहवासे दस रायहाणीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—चंपा महुरा वाणारसी य सावत्थी तहत सातेतं। हत्थिणाउर कंपिल्लं मिहिला कोसंबि रायगिहं ॥ १ ॥ एयासु णं दसरायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता जाव पव्वतिता, तंजहा—भरहे सगरो मघवं सणं-कुमारो संती कुंथू अरे महापउमे हरिसेणो जयणामे ॥ सू० ७१८ ॥ जंबुद्दीवे (२) मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरि दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पन्नत्ते ॥ सू० ७११ ॥ जंबुद्दीवे (२) मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते उवरिमेहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, एत्थ णमट्ठपतेसिते रुयगे पन्नत्ते, जओ णमिमातो दस दिसाओ पवहंति, तंजहा—पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा दाहिणा दाहिणपच्चत्थिमा पच्चत्थिमा पच्चत्थिमुत्तरा उतरा उत्तरपुरच्छिमा उद्धा अहो १। एएसि णं दसण्हं दिसाणं दस नामधिज्जा पन्नत्ता, तंजहा—इंदा अग्गीइ जमा णेरती वारुणी य वायव्वा। सोमा ईसाणाविय विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ २। लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पन्नत्ते, लवणस्स णं समुद्दस्स दम जोयणसहस्साइं उदगमाले पन्नत्ते, ३। सव्वेऽवि णं महापाताला दसदसाइं जोयणसहस्साइमुव्वेहेणं पराणत्ता, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ता, बहुमज्झदेसभागे एगपएसिताते सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खभेणं पन्नत्ता, उवरिं मुहमूले दस जोयण-

सहस्साइं विक्खंभेणं पराणत्ता, तेसि णं महापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ता ४ । सव्वेऽवि णं खुड्डा पाताला दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पन्नता, मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, बहुमज्झदेसभागे एगपएसिताते सेढीते दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पन्नत्ता, उवरि मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्तां, तेसि णं खुड्डापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामता सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पराणत्ता ५ ॥ सू० ७२० ॥ धायतिसंडगा णं मंदरा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता । पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयण एवं चेव ॥ सू० ७२१ ॥ सव्वेऽवि णं वट्टवेयड्ढपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइमुव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसंठिता, दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता ॥ सू० ७२२ ॥ जंबूद्दीवे (२) दस खेत्ता पन्नत्ता, तंजहा— भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवस्से रम्मगवस्से पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा ॥ सू० ७२३ ॥ माणुसुत्तरे णं पव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पन्नत्ते ॥ सू० ७२४ ॥ सव्वेऽवि णमंजणगपव्वता दस जोयणसयाइमुव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पन्नत्ता १ । सव्वेऽवि णं दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ता २ । सव्वेऽवि णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसत्ताइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा झल्लरिसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ता ३ । ॥ सू० ७२५ ॥ रुयगवरे णं पव्वते दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पन्नत्ते । एवं कुंडलवरेऽवि ॥ सू० ७२६ ।

दसविहे दवियाणुओगे पन्नत्ते, तंजहा—दवियाणुओगे माउयाणुओगे एगट्ठियाणुओगे करणाणुओगे अप्पितऽणप्पिते भाविताभाविते बाहिराबाहिरे सासयासासते तहणाणे अतहणाणे ॥ सू० ७२७ ॥

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तिगिच्छिकूडे उप्पातपव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पन्नत्ते १। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमारन्नो सोमस्स महारन्नो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं दस गाउयसताइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ते २। चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारन्नो जमप्पभे उप्पातपव्वते एवं चेव, एवं वरुणस्सवि, एवं वेसमणस्सवि ३। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वतिरोतणरन्नो रुयगिंदे उप्पातपव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पन्नत्ते ४। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सोमस्स एवं चेव जधा चमरस्स लोगपालाणं तं चेव बलिस्सवि ५। धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो धरणप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं दस गाउयसताइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसताइं विक्खंभेणं ६। धरणस्स नागकुमारिंदस्स णं नागकुमाररण्णो कालवालस्स महाररणो महाकालप्पभे उप्पातपव्वते जोयणसयाइं उद्धं एवं चेव, एवं जाव संखवालस्स, एवं भूताणंदस्सवि, एवं लोगपालाणंपि से जहा धरणस्स एवं जाव थणितकुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं, सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा ७। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइं उद्धं उच्चत्तेणं दस गाउयसहस्साइ उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ते ८। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारन्नो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइं, उद्धं उच्चत्तेणं दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ते ९। जधा सक्कस्स तधा सव्वेसिं लोगपालाणं सव्वेसिं च इंदाणं जाव अच्चुयत्ति, सव्वेसिं पमाणमेगं १० ॥ सू० ७२८ ॥

बायरवणस्सतिकातिताणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा पराणत्ता १। जलचरपंचेंदियतिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं दस जोयणसताइं सरीरोगाहणा पन्नत्ता, २। उरपरिसप्पथलचरपंचिंदितितिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं एवं चेव ३ ॥ सू० ७२१ ॥ संभवाओ णमरहातो अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥सू०७३० ॥ दसविहे अणंतते पन्नत्ते, तंजहा—णामाणंतते ठवणाणंतते दव्वाणंतते गणणाणंतते पएसाणंतते एगतोऽणंतते दूहतोऽणंतते देसवित्थाराणंतते सव्ववित्थाराणंतते सासयाणंतते ॥ सू० ७३१ ॥ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पन्नत्ता, अत्थिणत्थिप्पवातपुव्वस्स णं दस चूलवत्थू पन्नत्ता ॥ सू० ७३२ ॥ दसविहा पडिसेवणा पन्नत्ता, तंजहा—दप्प पमाय णाभोगे आउरे आवतीसु त । संकिते सहसक्कारे भय प्पयोसा य वीमंसा ॥ १ ॥ १। दस आलोयणादोसा पन्नत्ता, तंजहा—आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता जंदिट्ठं बायरं च सुहुमं वा । छराणं सद्दाउलगं बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥ १ ॥ २। दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोएत्तते, तंजहा—जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते दंते अमाती अपच्छाणुतावी ३। दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तंजहा—आयारवं अवहारवं जाव अवातदंसी पितधम्मे दढधम्मे ४। दसविधे पायच्छित्ते पन्नत्ते, तंजहा—आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे ॥ सू० ७३३ ॥ दसविधे मिच्छत्ते पन्नते, तंजहा—अधम्मे धम्मसराणा धम्मे अधम्मसराणा उम्म(अम)ग्गे मग्गसराणा, मग्गे उम्म(अम्म)ग्गसन्ना, अजीवेसु जीवसन्ना, जीवेसु अजीवसन्ना, असाहुसु साहुसन्ना, साहुसु असाहुसराणा, अमुत्तेसु मुत्तसन्ना, मुत्तेसु अमुत्तसराणा ॥ सू० ७३४ ॥ चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे १। धम्मे णमरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे २। णमी

णमरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे ३ । पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्टीते तमाए पुढवीए नेरतित्ताते उववन्ने ४ । णेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ५ । कराहे णं वासुदेवे दस धणूइं उढ्ढं उच्चत्तेणं दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाते वालुयप्पभाते पुढवीते नेरतियत्ताते उववन्ने ६ । ॥ सू० ७३५ ॥ दसविहा भवणवासी देवा पन्नता, तंजहा—असुरकुमारा जाव थणियकुमारा १ । एएसि णं दसविधाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेतितरुक्खा पन्नत्ता, तंजहा—आसत्थ सत्तिवन्ने सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने वंजुल पलास वप्पे तते त कणितारुक्खे य ॥ १ ॥ सू० ७३६ ॥ दसविधे सोक्खे पन्नत्ते, तंजहा—आरोग्ग दीहमाउं अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे । अत्थि सुहभोग निक्खम्ममेव तत्तो अणाबाहे ॥ १ ॥ ॥ सू० ७३७ ॥ दसविधे उवघाते पन्नत्ते, तंजहा—उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते जह पंचठाणे जाव परिहरणोवघाते णाणोवघाते दंसणोवघाते चरित्तोवघाते अचियत्तोवघाते सारक्खणोवघाते १ । दसविधा विसोही पन्नत्ता, तंजहा—उग्गमविसोही उप्पायणाविसोही जाव सारक्खणाविसोही २ ॥ सू० ७३८ ॥ दसविधे संकिलेसे पन्नत्ते, तंजहा—उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे भत्तपाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वतिसंकिलेसे कायसंकिलेसे णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे १ । दसविहे असंकिलेसे पन्नत्ते, तंजहा—उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्तअसंकिलेसे २ । ॥ सू० ७३९ ॥ दसविधे बले पन्नत्ते, तंजहा—सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले णाणबले दंसणबले चरित्तबले तवबले वीरत्तबले ॥ सू० ७४० ॥ दसविहे सच्चे पराणत्ते तंजहा—'जणवय सम्मय ठवणा नामे रूवे पडुच्चसच्चे य । ववहार भाव जोगे दसमे ओवम्मसच्चे य ॥ १ ॥ १ । दसविधे मोसे पन्नत्ते, तंजहा—

कोधे माणे माया लोभे पिज्जे तहेव दोसे य। हास भये अक्खातित उवघातनिस्सिते दसमे ॥ २ ॥ २। दसविधे सच्चामोसे पन्नत्ते, तंजहा–उप्पन्नमीसते विगतमीसते उप्पराणविगतमीसते जीवमीसए अजीवमीसए जीवाजीवमीसए अणंतमीसए परित्तमीसए अद्धामीसए अद्धद्धामीसए ३ ॥ सू० ७४१ ॥ दिट्ठिवायस्स णं दस नामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा–दिट्ठिवातेति वा हेउवातेति वा भूयवातेति वा तच्चावातेति वा सम्मावातेति वा धम्मावातेति वा भासाविजतेति वा पुव्वगतेति वा अणुजोगगतेति वा सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहेति वा ॥ सू० ७४२ ॥ दसविधे सत्थे पन्नत्ते, तंजहा–'सत्थमग्गी विसं लोणं, सिणेहो खारमंबिलं। दुप्पउत्तो मणो वाया, काया भावो त अविरती ॥ १ ॥ १। दसविहे दोसे पन्नत्ते, तंजहा–तज्जातदोसे मतिभंगदोसे पसत्थारदोसे परिहरणदोसे। सलक्खणकारण-हेउदोसे, संकामणं निग्गह वत्थुदोसे ॥ १ ॥ २। दसविधे विसेसे पन्नते, तंजहा–वत्थु तज्जातदोसे त, दोसे एगट्ठितेति त। कारणे त पडुप्पणे दोसे निच्चे हि अट्ठमे ॥ १ ॥ अत्तणा उवणीते त, विसेसेति त, ते दस ३ ॥ सू० ७४३ ॥ दसविधे सुद्धावाताणुओगे पन्नते, तंजहा–चंकारे मंकारे पिंकारे सेयंक(का)रे सायंकरे एगत्ते पुधत्ते संजूहे संकामिये भिन्ने ॥ सू० ७४४ ॥ दसविहे दाणे पन्नत्ते, तंजहा–अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणितेति य। लज्जाते गारवेणं च अहम्मे उण सत्तमे ॥ १ ॥ धम्मे त अट्ठमे वुते काहीति त कतंति त १। दसविधा गती पन्नत्ता, तंजहा–निरयगती निरयविग्गहगई तिरियगती तिरियविहग्गगई एवं जाव सिद्धिगइ सिद्धिविग्गहगती २ ॥ सू० ७४५ ॥ दस मुंडा पन्नत्ता, तंजहा–सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदितमुंडे कोहमुंडे जाव लोभमुंडे दसमे सिरमुंडे ॥ सू० ७४६ ॥ दसविधे संखाणे पन्नत्ते, तंजहा–परिकम्मं ववहारो रज्जू रासी कलासवन्ने य। जावं(जावति)तावति वग्गो

घणो त तह वग्गवग्गोऽवि ॥ १ ॥ कप्पो त ॥ सू० ७४७ ॥ दसविधे पच्चक्खाणे पन्नत्ते, तंजहा—अणागयमतिक्कंतं कोडीसहियं नियंटितं चेव । सागारमणागारं परिमाणकडं निरवसेसं ॥ १ ॥ संकेयं चेव अद्धाए, पच्चक्खाणं दसविहं तु ॥ सू० ७४८ ॥ दसविहा सामायारी पन्नत्ता, तंजहा—इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिता निसीहिता । आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ ॥ सू० ७४९ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालिताते अंतिमराततिंसी इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तंजहा—एगं च णं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे १, एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे २, एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुसकोइलं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ३, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ४ एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ५, एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ६, एगं च णं महासागरं उम्मीवीचीसहस्सकलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ७, एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ८, एगं च णं (एगेणं) महं हरिवेरुलितवन्नाभेणं नियतेणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ९, एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियातो उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे १०, १ । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसातं सुमिणे परातितं पासित्ता णं पडिबुद्धे तन्नं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलाओ उग्घाइते १, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ २, जं

णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे ससमत-परसमयितं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पराणवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति तंजहा–आयारं जाव दिट्ठीवायं ३, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पराणवेति, तंजहा–अगारधम्मं च अणगारधम्मं च ४, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वराणाइराणे संघे तंजहा–समणा समणीओ सावगा सावियाओ ५, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पराणवेति, तंजहा–भवणवासी वाणमंतरा जोइसवासी वेमाणवासी ६, जराणं समणे भगवं महावीरे एगं महं उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणातीते अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिन्ने ७, जराणं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तन्नं समणस्स भगवतो महावीरस्स अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने ८, जराणं समणे भगवं महावीरे एगं महं हरिवेरुलित जाव पडिबुद्धे तराणं समणस्स भगवतो महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्तिवन्नसद्दसिलोगा परिगुव्वंति (परिगुयंति, परिभमंति) इति खलु समणे भगवं महावीरे इति ९, जराणं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वते मंदरचूलिताए उवरिं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराते परिसाते मज्झगते केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेति पराणवेति जाव उवदंसेति १०, २ ॥ सू० ७५० ॥ दसविधे सरागसम्मद्दंसणे पन्नत्ते, तंजहा–निसग्गुवसेसरुई आणारुती सुत्तबीतरुईमेव। अभिगम वित्थाररुती किरिया संखेव धम्मरती ॥ १ ॥ सू० ७५१ ॥ दस सराणाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–आहारसराणा जाव परिग्गहसराणा ४ कोहसराणा जाव लोभसराणा ८ लोगसराणा ९

ओहसराणा १०, नेरतिताणं दस सराणातो एवं चेव, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४ ॥ सू० ७५२ ॥ नेरइया णं दसविधं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा–सीतं उसिणं खुधं पिवासं कंडुं परज्झं भयं सोगं जरं वाहिं ॥ सू० ७५३ ॥ दस ठाणाइं छउमत्थे णं सव्वभावेणं न जाणति ण पासति, तंजहा–धम्मत्थिगातं जाव वातं, अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति, अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जाव अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति ॥ सू० ७५४ ॥ दस दसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–कम्मविवागदसाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववायदसाओ आयारदसाओ पराहावागरणदसाओ बंधदसाओ दोगिद्धिदसाओ दीहदसाओ संखेवितदसाओ १। कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पन्नात्ता, तंजहा–मियापुत्ते त गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे। माहणे णंदिसेणे त, सोरियत्ति उदुंबरे ॥ १ ॥ सहसुद्दाहे आमलते कुमारे सेच्छती इति ॥ २। उवासगदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा-आणंदे कामदेवे अ, गाहावति चूलणीपिता। सुरादेवे चुल्लसतते, गाहावति कुंडकोलिते ॥१॥ सद्दालपुत्ते महासतते, णंदिणीपिया सालतियापिता ॥ ३। अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–णमि मातंगे सोमिले रामगुत्ते सुदंसणे चेव। जमाली त भगाली त किंकंमे पल्लतेतिय ॥ १ ॥ फाले अंबडपुत्ते त, एमेते दस आहिता ॥४। अणुत्तरोववातियदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–ईसिदासे य धणे त, सुणक्खत्ते य कातिते तिय। सट्ठाणे सालिभद्दे त, आणंदे तेतली तिंत ॥ १ ॥ दसन्नभद्दे अतिमुत्ते, एमेते दस आहिया ॥ ५। आयारदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–वीसंअसमाहिट्ठाणा १ एगवीसं सबला २ तेत्तीसं आसायणातो ३ अट्ठविहा गणिसंपया ४ दस चित्तसमाहिट्ठाणा ५ एगारस उवासगपडिमातो ६ बारस भिक्खुपडिमातो ७ पज्जोसवणा कप्पो

८ तीसं मोहणिज्जट्ठाणा ९ आजाइट्ठाणं १०-६। पराहावागरणदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–उवमा १संखा २ इसिभासियाइं ३ आयरियभासिताइं ४ महावीरभासिआइं ५ खोमगपसिणाइं ६ कोमलपसिणाइं ७ अदागपसिणाइं ८ अंगुट्ठपसिणाइं ९ बाहुपसिणाइं १०७। बंधदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–बंधे १ य मोक्खे २ य देवद्धि ३ दसारमंडलेऽवित ४ आयरियविप्पडिवत्ती ५ उवज्झातविप्पडिवत्ती ६ भावणा ७ विमुत्ती ८ सातो (सासते) ९ कम्मे १०-८। दोगेद्धिदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–वाते १ विवाते २ उववाते ३ सुक्खित्ते कसिणे ४ बायालीसं सुमिणे ५ तीसं महासुमिणा ६ बावत्तरिं सव्वसुमिणा ७ हारे ८ रामे ९ गुत्ते १० एमेते दस आहीता ९। दीह दसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–चंदे सूरते सुक्के त सिरिदेवी पभावती दीव-समुद्दो-ववती बहूपुत्ती मंदरेति थेरे संभूतविजते थेरे पम्ह ऊसासनीसासे १०। संखेवितदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–खुड्डिया विमाणपविभत्ती १ महल्लिया विमाणपविभत्ती २ अंगचूलिया ३ वग्गचूलिया ४ विवाहचूलिया ५ अरुणोववाते ६ वरुणोववाए ७ गरुलोववाते ८ वेलंधरोववाते ९ वेसमणोववाते १०-११॥ सू० ७५५॥ दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीते दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीते॥ सू. ७५६॥ दसविधा नेरइया पन्नत्ता, तंजहा–अणंतरोववन्ना परंपरोववन्ना अणंतरावगाढा परंपरावगाढा अणंतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपज्जत्ता परंपरपज्जत्ता चरिमा अचरिमा, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया २४, १। चउत्थीते णं पंकप्पभाते पुढवीते दस निरतावाससतसहस्सा पन्नत्ता १। रयणप्पभाते पुढवीते जहन्नेणं नेरतिताणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, २। चउत्थीते णं पंकप्पभाते पुढवीते उक्कोसेणं नेरतिताणं दस सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता ३। पंचमाते णं धूमप्पभाते पुढवीते जहन्नेणं

नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पन्नता ४ । असुरकुमाराणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, ५ । एवं जाव थणियकुमाराणं १४ बायरवणस्सतिकातिताणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता १५ । वाणमंतरदेवाणं जहरणेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता १६ । बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता १७। लंतते कप्पे देवाणं जहरणेणं दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता १८, २ ॥ सू० ७५७ ॥ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजहा—अणिदाणताते १ दिट्ठिसंपन्नयाए २ जोगवाहियत्ताते ३ खंतिखमणताते ४ जितिंदियताते ५ अमाइल्लताते ६ अपासत्थताते ७ सुसामरणताते ८ पवयणवच्छल्लयाते ९ पवयणउब्भावणताए १० ॥ सू० ७५८ ॥ दसविहे आसंसप्पओगे पन्नते, तंजहा—इहलोगासंसप्पओगे १ परलोगासंसप्पओगे २ दुहतोलोगासंसप्पतोगे ३ जीवियासंसप्पतोगे ४ मरणासंसप्पतोगे ५ कामासंसप्पतोगे ६ भोगासंसप्पतोगे ७ लाभासंसप्पतोगे ८ पूयासंसप्पतोगे ९ सक्कारासंसप्पतोगे १० ॥ सू० ७५९ ॥ दसविधे धम्मे पन्नत्ते, तंजहा—गामधम्मे नगरधम्मे रट्ठधम्मे पासंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे ॥ सू० ७६० ॥ दस थेरा पन्नत्ता, तंजहा—गामथेरा नगरथेरा रट्ठथेरा पसत्थारथेरा कुलथेरा गणथेरा संघथेरा जातिथेरा सुअथेरा परितायथेरा ॥ सू० ७६१ ॥ दस पुत्ता पन्नत्ता, तंजहा—अत्तते खेत्तते दिन्नते विरणते उरसे मोहरे सोंडीरे संबुद्धे उवयातिते धम्मंतेवासी ॥ सू० ७६२ ॥ केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पन्नत्ता, तंजहा—अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिते, अणुत्तरा खंती, अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे, अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे ॥ सू० ७६३ ॥ समतखेत्ते णं दस कुरातो पन्नत्ताओ, तंजहा—पंच देवकुरातो, पंच उत्तरकुरातो १ ।

तत्थ णं दस महतिमहालया महादुमा पन्नत्ता, तंजहा—जंबू सुदंसणा १ धायतिरुक्खे २ महाधायतिरुक्खे ३ पउमरुक्खे ४ महापउमरुक्खे ५ पंच कूडसामलीओ १०, २। तत्थ णं दस देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति, तंजहा—अणाढिते, जंबुद्दीवाधिपती, सुदंसणे, पियदंसणे, पोंडरीते, महापोंडरीते, पंच गरुला वेणुदेवा १०, ३ ॥ सू० ७६४ ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तंजहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाहू पूइज्जंति साहू ण पूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छं पडिवन्नो, अमणुण्णा सद्दा जाव फासा १०, ४। दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तंजहा—अकाले न वरिसति तं चेव विपरीतं जाव मणुण्णा फासा ५ ॥ सू० ७६५ ॥ सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, तंजहा—मत्तंगता १ य भिंगा २ तुडितंगा ३ दीव ४ जोति ५ चित्तंगा ६। चित्तरसा ७ मणियंगा ८ गेहागारा ९ अणितणा १० त ॥ सू० ७६६ ॥ जंबूदीवे (२) भरहे वासे तीताते उस्सप्पिणीते दस कुलगरा हुत्था, तंजहा—"सयज्जले सयाऊ य अणंतसेणे त अमि(भि,जि)तसेणे त। तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे त सत्तमे ॥ १ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे ॥ जंबूदीवे (२) भारहे वासे आगमीसाते उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तंजहा—सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे संमुती पडिसुते दढधणू दसधणू सतधणू ॥ सू० ७६७ ॥ जंबुद्दीवे (२) मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पन्नत्ता, तंजहा—मालवंते चित्तकूडे विचित्तकूडे बंभकूडे जाव सोमणसे १। जंबुमंदरपच्चत्थिमे णं सीओताते महानतीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पन्नत्ता, तंजहा—विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे, २। एवं धायइसंडपुरच्छिमद्धेऽवि वक्खारा भाणिअव्वा जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ३ ॥ सू० ७६८ ॥

दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पन्नत्ता, तंजहा—सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणते अच्चुए १। एतेसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पन्नत्ता, तंजहा—सक्के ईसाणे जाव अच्चुते २। एतेसु णं दसराहं इंदाणं दस परिजाणितविमाणा पन्नत्ता, तंजहा—पालते पुप्फए जाव विमलवरे सव्वतोभद्दे ३ ॥ सू० ७६९ ॥ दस दसमिता णं भिक्खुपडिमा णं एगेण रातिंदियसतेणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासतेहिं अहासुत्ता जाव आराधितावि भवति ॥ सू० ७७० ॥ दसविधा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयएगिंदिता अपढमसमयएगिंदिता एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता १। दसविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया जाव वणस्सइकातिता बेंदिया जाव पंचेंदिता अणिंदिता २। अथवा दसविधा सव्वजीवा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयनेरतिया अपढमसमयनेरतिता जाव अपढमसमयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा ३ ।।सू. ७७१।। वाससताउस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-बाला किड्डा य मंदा य, बला पन्ना य हायणी। पवंचा पब्भारा य, मुंमुही सावणी तधा १ ॥ सू० ७७२ ॥ दसविधा तणवणस्सतिकातिता पन्नत्ता, तंजहा—मूले कंदे जाव पुप्फे फले बीये ॥ सू० ७७३ ॥ सव्वतोऽवि णं विज्जाहरसेढीओ दसदसजोयणाइं विक्खंभेणं पराणत्ता, सव्वतोऽवि णं अभिओगसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ताओ ॥ सू० ७७४ ॥ गेविज्जगविमाणाणं दस जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पराणत्ता ॥ सू० ७७५ ॥ दसहिं ठाणेहिं सह तेतसा भासं कुज्जा, तंजहा—केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते, तस्स तेतं निसिरेज्जा, से तं परितावेति, सेत्तं परितावेत्ता तामेव सह तेतसा भासं कुज्जा १, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते समाणे देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा सेत्तं परितावेति सेत्तं (२) तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा २, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविए

देवे त परिकुविते, दुहतो पडिराणा तस्स तेयं निसिरेज्जा ते तं परितावेंति ते तं परितावेत्ता तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा ३, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासादेज्जा से य अच्चासातिते परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति ते फोडा भिज्जंति ते फोडा भिन्ना समाणा तामेव सह तेतसा भासं कुज्जा ४, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासादिते देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिन्ना समाणा तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा ५, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा से त अच्चासातिते परिकुविए देवेऽवि य परिकुविए ते दुहतो पडिराणा ते तस्स तेतं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा संमुच्छंति सेसं तहेव जाव भासं कुज्जा ६, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते परिकुविए तस्स तेतं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा संमुच्छंति ते फोडा भिज्जंति तत्थ पुला संमुच्छंति ते पुला भिज्जंति ते पुला भिन्ना समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा ७, एते तिन्नि आलावगा भाणितव्वा ९, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेमाणे तेतं निसिरेज्जा से त तत्थ णो कम्मइ णो पकम्मति, अंचियं (२) करेति करेत्ता आताहिणपयाहिणं करेति (२) उड्ढं वेहासं उप्पतति (२) से णं ततो पडिहते पडिणियत्तति (२) तमेव सरीरगमणुदहमाणे (२) सह तेतसा भासं कुज्जा, जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेतेते १० ॥ सू० ७७६ ॥ दस अच्छेरगा पन्नत्ता, तंजहा—उवसग्ग १ गब्भहरणं २ इत्थीतित्थं ३ अभाविया परिसा ४। कण्हस्स अवरकंका ५ उत्तरणं चंदसूराणं ६ ॥१॥ हरिवंसकुलुप्पत्ती ७ चमरुप्पातो त ८ अट्ठसयसिद्धा ९। अस्संजतेसु पूआ १०, दसवि अणंतेण कालेण ॥ २ ॥ ॥ सू० ७७७ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाते पुढवीए रयणे कंडे दस जोअणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते १। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वतरे कंडे दस जोयणसताइं बाहल्लेणं पराणत्ते २। एवं

वेरुलिते १ लोहितक्खे २ मसारगल्ले ३ हंसगब्भे ४ पुलते ५ सोगंधिते ६ जोतिरसे ७ अंजणे ८ अंजणपुलते ९ रत्ते १० जातरूवे ११ अंके १२ फलिहे १३ रिट्ठे १४, जहा रयणे तहा सोलसविधा भाणितव्वा ३ ॥ सू० ७७८ ॥ सव्वेऽवि णं दीवसमुद्दा दसजोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता १ । सव्वेऽवि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता २ । सव्वेऽवि णं सलिलकुंडा दसजोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ३ । सियासीओया णं महानदीओ मुहमूले दस दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ ४ ॥ सू० ७७९ ॥ कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिरातो मंडलातो दसमे मंडले चारं चरति १ । अणुराधानक्खत्ते सव्वब्भंतरातो मंडलातो दसमे मंडले चारं चरति २ ॥ सू० ७८० ॥ दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पण्णत्ता, तंजहा—मिगसिरमद्दा पुस्सो तिन्नि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा । हत्थो चित्ता य तहा दस वुड्ढिकराइं णाणस्स ॥ १ ॥ सू० ७८१ ॥ चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं दस जातिकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता १ । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं दस जातिकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता २ ॥ सू० ७८२ ॥ जीवाणं दसठाणनिव्वत्तिता पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा (३), तंजहा—पढमसमयएगिंदियनिव्वत्तिए जाव फासिंदियनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेय तह णिज्जरा चेव' १ । दसपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता, दसपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता, दससमतठितीता पोग्गला अणंता पण्णत्ता, दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता, एवं वन्नेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहि दसगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता २ ॥ सू० ७८३ ॥ दसमं ठाणं सम्मत्तं १० ॥ दसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १० ॥

॥ इति दशस्थानकाख्यं दशममध्ययनम् ॥ १० ॥

॥ इति तृतीयं श्रीमत्स्थानाङ्गसूत्रम् ॥ ३ ॥

(ग्रन्थाग्रं ३७००)

॥ तृतीयं
श्रीमत्स्थानाङ्ग-सूत्रं
समाप्तम् ॥

अर्हम् ।

पञ्चमगणधर-श्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं

॥ श्रीमत्समवायांगसूत्रम् ॥

——::०::——

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं—[इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं वियट्टछउमेणं जिणेणं जाव(ण)एणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा सिवमयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति(त्तयं)सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते, तंजहा—आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइदसाओ ९ पराहावागरणं १० विवागसुए ११ दिट्ठिवाए १२, तत्थ णं जे से चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते तस्स णं अयमट्ठे पन्नत्ते, तंजहा—] एगे आया, एगे अणाया, एगे दंडे, एगे अदंडे, एगा किरिया, एगा अकिरिया, एगे लोए, एगे अलोए, एगे धम्मे, एगे अधम्मे, एगे पुराणे, एगे पावे, एगे बंधे, एगे मोक्खे, एगे आसवे, एगे संवरे, एगा वेयणा, एगा णिज्जरा १८, १। जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयाम(चक्कवाल)विक्खंभेणं पराणत्ते, अप्पइट्ठाणे नरए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते, पालए जाणविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते, सव्वट्ठसिद्धे

महाविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते १, २। अद्दानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते, चित्तानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते, सातिनक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते ३, ३। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, दोच्चाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, असुरकुमारिदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, असंखिज्जवासाउय-सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसंणिमणुयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पन्नत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइआणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, ईसाणे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसे णं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुपज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जे जीवा ते एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १८, ४॥ सूत्रं १॥ दो दंडा पन्नत्ता, तंजहा—अट्ठादंडे चेव अणट्ठादंडे चेव १। दुवे रासी पराणत्ता, तंजहा—जीवरासी चेव अजीवरासी

चेव २ । दुविहे बन्धणे पन्नत्ते, तंजहा—रागबन्धणे चेव दोसबन्धणे चेव, ३ । पुव्वाफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते ४ । उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते ५ । पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते ६ । उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते ७ । इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८ । दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११ । असंखिज्ज-वासाउयसन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । असंखिज्जवासाउयसन्निपंचेंदियमाणुस्साणं, अत्थेगइयाणं देवाणं च दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३ । सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १४ । ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १५ । सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १६ । ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं पन्नत्ता १७ । सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १८ । माहिंदे कप्पे देवाणं जह-ण्णेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १९ । जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं दोहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ २० । अत्थेगइया भव-सिद्धिया जीवा जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति २१ ॥ सूत्रं २ ॥ तओ दंडा पन्नत्ता, तंजहा—मणदण्डे वयदंडे कायदंडे, तओ गुत्तीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—

मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती १। तओ सल्ला पन्नत्ता, तंजहा—मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं २। तओ गारवा पन्नत्ता, तंजहा—इड्ढीगारवे णं रसगारवे णं सायागारवेणं ३। तओ विराहणा पन्नत्ता, तंजहा—नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा ४। मिगसिरनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ५। पुस्सनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ६। जेट्ठानक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ७। अभीइनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ८। सवणनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ९। अस्सिणिनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते १०। भरणीनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते ११। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। असंखिज्जवासाउय-सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। असंखिज्जवासाउय-सन्निगब्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १७। सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १८। सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १९। जे देवा आभंकरं पभंकरं आभंकरपभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सं(हिं)ति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति २० ॥ सूत्रं ३ ॥

चत्तारि कसाया पन्नत्ता तंजहा—कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए १। चत्तारि झाणा पन्नत्ता, तंजहा—अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे धम्मज्झाणे सुक्कज्झाणे २। चत्तारि विगहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा ३। चत्तारि सरणा पन्नत्ता, तंजहा—आहारसरणा भयसरणा मेहुणसरणा परिग्गहसरणा ४। चउव्विहे बन्धे पन्नत्ते, तंजहा—पगइबंधे ठिइबन्धे अणुभावबन्धे पएसबन्धे ५। चउगाउए जोयणे पन्नत्ते ६। अणुराहानक्खत्ते चउतारे पन्नत्ते ७। पुव्वासाढानक्खत्ते चउतारे पन्नत्ते ८। उत्तरासाढानक्खत्ते चउतारे पन्नत्ते ९। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्तं किट्ठिप्पभं किट्ठिजुत्तं किट्ठिवरणं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा चउराहऽद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा तेसिं देवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, अत्थेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति १४ ॥ सूत्रं ४ ॥ पंच किरिया पन्नत्ता, तंजहा—काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिआ पाणाइवायकिरिया १। पंच महव्वया पन्नत्ता, तंजहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदत्तादाणाओ वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ

वेरमणं २। पंच कामगुणा पन्नत्ता, तंजहा—सद्दा रूवा रसा गंधा फासा ३। पंच आसवदारा पन्नत्ता, तंजहा—मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा ४। पंच संवरदारा पन्नत्ता, तंजहा—सम्मत्तं विरई अप्पमत्तया(अपमादी) अकसायया अजोगया ५। पंच निज्जरट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं ६। पंच समिईओ पन्नत्ताओ, तंजहा—ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेल-सिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिई ७। पंच अत्थिकाया पन्नत्ता, तंजहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ८। रोहिणीनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते ९। पुणव्वसुनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते १०। हत्थनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते ११। विसाहानक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते १२। धणिट्ठानक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते १३। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १७। जे देवा वायं सुवायं वायावत्तं वायप्पभं वायकंतं वायवण्णं वायलेसं वायज्झयं वायसिंगं वायसिट्ठं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं पंचहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया

भवसिद्धिया जीवा जे पंचहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करिस्संति १८ । ॥ सूत्रं ५ ॥

छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–कराहलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा १ । छ जीवनिकाया पन्नत्ता, तंजहा–पुढवीकाए आऊकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए २ । छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पन्नत्ते, तंजहा–अणसणे ऊणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिचाओ कायकिलेसो संलीणया ३ । छव्विहे अब्भितरे तवोकम्मे पन्नत्ते, तंजहा–पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं उस्सग्गो ४ । छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअस-मुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए ५ । छव्विहे अत्थुग्गहे पन्नत्ते, तंजहा–सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिंदि-अत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे नोइंदियअत्थुग्गहे ६ । कत्तियानक्खत्ते छतारे पन्नत्ते ७ । असिलेसानक्खत्ते छतारे पन्नत्ते ८ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९ । तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११ । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरो-वमाइं ठिई पन्नत्ता १३ । जे देवा सयंभुं सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्टिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरावत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरव-राणं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववराणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छ सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा छराहं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ,

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १२ ॥ सूत्रं ६ ॥ सत्त भयट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा–इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए १ । सत्त समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए, २ । समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३ । इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पन्नत्ता, तंजहा–चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मन्दरे ४ । इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तंजहा–भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए ५ । खीणमोहे णं भगवं (भगवया) मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेए(ज्ज)ई ६ । महानक्खत्ते सत्ततारे पन्नत्ते ७ । अभि(कत्ति)आइआ सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पन्नत्ता ८ । महाइआ सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पन्नत्ता ९ । अणुराहाइआ सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पन्नत्ता १० । धणिट्ठाइआ सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पन्नत्ता, ११ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, १३ । चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १५ । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १६ । सणंकुमारे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १७ । माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १८ । बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त साहिया (साहिय-सत्त) सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १९ । जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए

उववराणा तेसि गां देवागां उक्कोसेगां सत्त सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते गां देवा सत्तरहं अद्धमासारां आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि गां देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे गां सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति २० ॥ सूत्रं ७ ॥ अट्ठ मयट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा- जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए १ । अट्ठ पवयणमायाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिया- समिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती २ । वाणमंतरागां देवागां चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ३। जंबू गां सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेगां पन्नत्ता ४ । कूडसामली गां गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेगां पन्नत्ते ५। जंबुद्दीवस्स गां जगई अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेगां पन्नत्ता ६ । अट्ठसा- मइए केवलिसमुग्घाए पन्नत्ते, तजहा—पढमे समए दंडं करेइ, बीए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेइ, पंचमे समए मंथंतराइ पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, ततो पच्छा सरीरत्थे भवइ ७। पासस्स गां अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तंजहा—सुभे य सुभघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य। सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इय ॥ १ ॥ ८ । अट्ठ नक्खत्ता चंदेगां सद्धि पमद्दं जोगं जोएंति, तंजहा—कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसू ३ महा ४ चित्ता ५ विसाहा ६ अणुराहा ७ जेट्ठा ८, ९ । इमीसे गां रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलि-

ओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ साग-रोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। जे देवा अच्चि १ अच्चिमालिं २ वइरोयणं ३ पभंकरं ४ चंदाभं ५ सूराभं ६ सुपइट्ठाभं ७ अग्गिच्चाभं ८ रिट्ठाभं ९ अरुणाभं १० अरुणुत्तरवडिंसगं ११ विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव अंतं करिस्संति १५ ॥ सूत्रं ८ ॥

नव बंभचेरगुत्तीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ १ नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ २ नो इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ ३ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४ नो पणीयरसभोई ५ नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता ६ नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइं समरइत्ता भवइ, नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गन्धाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई ८ नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ९, १। नव बंभचेरअगुत्तीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणं सेवणया जाव सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवइ ९, २। नव बंभचेरा पन्नत्ता, तंजहा—सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणिज्ज सम्मत्तं। आवंति धुत विमोहा उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥ १ ॥ ३। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उद्धं उच्चतेणं होत्था ४। अभीजीनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चन्देणं सद्धिं जोगं जोएइ ५। अभीजियाइया नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तंजहा—अभीजि सवणो जाव भरणी ६। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उद्धं आबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ ७। जंबूद्दीवे

णं दीवे नवजोयणिश्रा मच्छा पविसिंसु वा (३) ८। विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए नव नव भोमा पन्नत्ता ९। वाणमंतराणं देवाणं सभाश्रो सुहम्माश्रो नव जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ताश्रो १०। दंमणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स नव उत्तरपगडीश्रो पन्नत्ताश्रो, तंजहा—निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयलापयला थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे श्रोहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ११। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिश्रोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिश्रोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिश्रोवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवणं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं, सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावित्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं सुज्जवणं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्झसिंगं सुज्झसिट्ठं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिसगं, रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्लकंतं रुइल्लवणं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा, तेसि णं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं श्राहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १७॥ सूत्रं ९॥ दसविहे समणधम्मे पन्नत्ते, तंजहा—खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चियाए ९ बंभचेरवासे १०, १। दस चित्तसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—धम्मचिंता वा से असमुप्पणपुव्वा समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्मं

जाणित्तए १ सुमिणा(सुजाणा)दंसणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २ सरिणनाणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवे सुमरित्तए ३ देवदंसणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं तेवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ४ ओहिनाणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं जाणित्तए ५ ओहिदंसणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं पासित्तए ६ मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा जाव मणोगए भावे जाणित्तए ७ केवलनाणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए ८ केवलदंसणे वा से असमुप्पराणपुव्वे समुपज्जिज्जा केवलं लोगं पासित्तए ९ केवलिमरणं वा मरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए १०, २। मंदरे णं पव्वए मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ते ३। अरिहा णं अरिट्ठनेमी दस धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था ४। करहे णं वासुदेवे दस धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था ५। रामे णं बलदेवे दस धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था ६। दस नक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा पन्नत्ता, तंजहा—मिगसिर अद्दा पुस्सो तिरिणा अ पुव्वा य मूलमस्सेसा। हत्थो चित्तो य तहा दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥ १ ॥ ७। अकम्मभूमियाणं मणुआणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पन्नत्ता, तंजहा—मत्तंगया य भिंगा तुडिअंगा दीवजोइं चित्तंगा। चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणा य ॥१॥ ८। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहरणेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता ९। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्साइ पन्नत्ताणि ११। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहरणेणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहरणेणं दस वाससहस्साइं

ठिई पन्नत्ता १४। असुरिंदवज्जाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता १५। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। बायरवणस्सइकाइएणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता १७। वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता १८। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता २०। लांतए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता २१। जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति २२ ॥ सूत्रं १०॥

एक्कारस उवासगपडिमाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—दंसणसावए १ कयव्वयकंमे २ सामाइअकडे ३ पोसहोववासनिरए ४ दिया बंभयारी रत्तिपरिमाणकडे ५ दिआऽवि राओऽवि बंभयारी असिणाई (अनिसाई) विअडभोई मोलिकडे ६ सचित्तपरिणाए ७ (राइभत्त परिणाए ४ सचित्त परिणाए ५ दिया बंभयारी राओ परिमाणकडे ६ दियावि राओवि बंभयारी असिणाणए वोसट्ठ-केसरोमनहे ७) आरंभपरिणाए ८ पेसपरिणाए ६ उद्दिट्ठभत्तपरिणाए १० समणभूए ११ आवि भवइ समणाउसो ! १। लोगंताओ इक्कारसएहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसंते पराणत्ते २। जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारसहिं एकवीसेहिं जोयणसएहिं जोइसे चारं

चरइ ३। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, तंजहा– इंदभूई अग्गिभूई वायुभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरियपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे ८। मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पन्नत्ते ९। हेट्ठिमगेविज्जयाणं देवाणं एक्कारसमु(गु)त्तरं गेविज्जविमाणसतं भवइत्तिमक्खायं, मंदरे णं पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं पन्नत्ते १०। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। जे देवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एक्कारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं एक्कारसण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १६ ॥सूत्रं ११॥ बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–मासिआ भिक्खुपडिमा दोमासिआ भिक्खुपडिमा तिमासिआ भिक्खुपडिमा चउमासिआ भिक्खुपडिमा पंचमासिआ भिक्खुपडिमा छमासिया भिक्खुपडिमा सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा पढमा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा तच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा अहोराइआ भिक्खुपडिमा एगराइया भिक्खुपडिमा १। दुवालसविहे सम्भोगे पन्नत्ते, तंजहा–उवहीसुअभत्तपाणे, अंजलीपग्गहेत्ति य। दायणे य निकाए

अ, अब्भुट्ठाणेति आवरे ॥ १ ॥ किश्रकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इश्र । समोसरणं संनिसिज्जा य, कहाए अ पबन्धणे ॥ २ ॥ २ । दुवालसावत्ते कितिकम्मे पन्नत्ते, तंजहा–दुओणयं जहाजायं, कितिकम्मं बारसावयं । चउसिरं तिगुत्तं (सिद्धं) च, दुपवेसं एगनिक्खमणं ॥ २ ॥ ३ । विजया णं रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ४ । रामे णं बलदेवे दुवालस वाससयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्तं गए ५ । मंदरस्स णं पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, ६ । जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, ७ । सव्वजहण्णिआ राई दुवालसमुहुत्तिआ पण्णत्ता, एवं दिवसोऽवि नायव्वो ८ । सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थुभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइं उद्धं उप्पइआ ईसिपब्भारनामपुढवी पण्णत्ता ९ । ईसिपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा–ईसित्ति वा ईसिपब्भाराति वा तणूइ वा तणूयतरित्ति वा सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तीति वा मुत्तालएत्ति वा बंभेत्ति वा बंभवडिंसएत्ति वा लोकपडिपूरणेत्ति वा लोगग्गचूलिआइ वा १० । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११ । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३ । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १४ । लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १५ । जे देवा महिंदं महिंदज्झयं कंबुं कंबुग्गीवं पुंखं सुपुंखं महापुंखं पुंडं सुपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा तेसि

णं देवाणं बारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १६ ॥ सूत्रं १२ ॥ तेरस किरियाठाणा पन्नत्ता, तंजहा–अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दिट्ठिविपरिआसिआदंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मायावत्तिए लोभवत्तिए इरिआवहिए नामं तेरसमे १। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पन्नत्ता २। सोहम्मवडिंसगे णं विमाणे णं अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते ३। एवं ईसाणवडिंसगेऽवि ४। जलयरपंचिंदिअतिरिक्खजोणिआणं अद्धतेरस जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्साइं पन्नत्ते ५। पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पन्नत्ता ६। गब्भवक्कंतिअपंचेंदिअतिरिक्खजोणिआणं तेरसविहे पओगे पन्नत्ते,तंजहा-सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे कम्मसरीरकायपओगे ७। सूरमंडलं जोयणेणं तेरसेहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणं पन्नत्ते ८। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। लंतए कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं

लोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवरणं लोगलेसं लोगरूवं लोगसिंगं लोगसिट्ठं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा तेरसहिं श्रद्धमासेहिं श्राणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीस्ससंति वा तेसि णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइश्रा भवसिद्धिश्रा जीवा जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १४ ॥ सूत्रं १३ ॥ चउद्दस भूअग्गामा पन्नत्ता, तंजहा-सुहुमा अपज्जत्तया सुहुमा पज्जत्तया बादरा अपज्जत्तया बादरा पज्जत्तया बेइंदिया अपज्जत्तया बेइंदिया पज्जत्तया तेंदिआ अपज्जत्तया तेंदिया पज्जत्तया चउरिंदिआ अपज्जत्तया चउरिंदिया पज्जत्तया पंचिंदिश्रा असन्निअपज्जत्तया पंचिंदिश्रा असन्निपज्जत्तया पंचिंदिश्रा सन्निअपज्जत्तया पंचेंदिश्रा सन्निपज्जत्तया १ । चउद्दस पुव्वा पन्नत्ता, तंजहा–उप्पायपुव्वमग्गे-(ग्गा)णियं च तइयं च वीरियं पुव्वं । अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥ १ ॥ सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च । कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥ २ ॥ विज्जाअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसं पुव्वं । तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह बिंदुसारं च ॥ ३ ॥ २ । अग्गे(ग्गा)णीअस्स णं पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पन्नत्ता ३ । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था ४ । कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा–मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी अविरयसम्मदिट्ठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टीबायरे अनिअट्टिबायरे सुहुमसंपराए उवसामए वा खवए वा उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अयोगी केवली ५ । भरहेरवयाओ णं जीवाओ चउद्दस चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि अ एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पन्नत्ताओ, ६ । एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ-

हसरयणा पन्नत्ता, तंजहा-इत्थीरयणे सेणावइरयणे गाहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दंडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे ७। जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेणं लवणसमुद्दं समप्पंति, तंजहा—गंगा सिंधू रोहिआ रोहिअंसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकन्ता नारिकांता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ८। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। पंचमीए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। लंतए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। जे देवा सिरिकंतं सिरिमहिअं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा तेसिणं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १५ ॥ सूत्रं १४॥ पन्नरस परमाहम्मिआ पन्नत्ता, तंजहा—अंबे अंबरिसी चेव, सामे सबलेत्ति आवरे। रुद्दोवरुद्दकाले अ, महाकालेत्ति आवरे ॥ १ ॥ असिपत्ते धणु कुम्भे, वालुए वेअरणीति अ। खरस्सरे महाघोसे, एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥ १। णमी णं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था धुव(निच्च)राहू णं बहुलपक्खस्स पडिवए पन्नरसभागं पन्नरसभागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठति, तंजहा—

पढमाए पढमं भागं बीआए दुभागं तइआए तिभागं चउत्थीए चउभागं पञ्च-मीए पञ्चभागं छट्ठीए छभागं सत्तमीए सत्तभागं अट्ठमीए अट्ठभागं नवमीए नवभागं दसमीए दसभागं एक्कारसीए एक्कारसभागं बारसीए बारसभागं तेरसीए तेरसभागं चउद्दसीए चउद्दसभागं पन्नरसेसु पन्नरसभागं २। तं चेव सुक्कपक्खस्स य उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसभागं ३। छ णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता पन्नत्ता, तंजहा—सतभिसय भरणि अद्दा असलेसा साई तहा जेट्ठा। (साइ तहय जेट्ठा य) एते छण्णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता॥ १॥ ४। चेत्तासोएसु णं मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति ५। एवं चेत्त(त्तासो)मासेसु पण्णरसमुहुत्ता राई भवति ६। विज्जाअणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता ७। मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीर-कायपओगे वेउव्वियसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे आहारयसरीरकायप्पओगे आहारयमीससरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरका-यपओगे ८। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, ९। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, १०। असुरकु-माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, ११। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, १२। महासुक्के कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं पण्णरस सागरो-वमाइं ठिई पन्नत्ता, १३। जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमाइं

ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्भिस्संति बुज्भिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १४ ॥ सूत्रं १५ ॥

सोलस य गाहासोलसगा पन्नत्ता, तंजहा—समए वेयालिए उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमईए गाहासोलसमे सोलसगे १ । सोलस कसाया पन्नत्ता, तंजहा—अणंताणुबंधी कोहे अणंताणुबंधी माणे अणंताणुवंधी माया अणंताणुवंधी लोभे अपच्चक्खाणकसाए कोहे अपच्चक्खाणकसाए माणे अपच्चक्खाणकसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे पच्चक्खाणावरणे कोहे पच्चक्खाणावरणे माणे पच्चक्खाणावरणा माया पच्चक्खाणावरणे लोभे संजलणे कोहे संजलणे माणे संजलणे माया संजलणे लोभे २ । मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पन्नत्ता, तंजहा—मंदरमेरुमणोरम सुदंसण सयंपभे य गिरिराया । रयणुच्चय पियदंसण मज्भे लोगस्स नाभी य ॥ १ ॥ अत्थे अ सूरिआवत्ते सूरिआवरणेत्ति अ । उत्तरे अ दिसाई अ, वडिंसे इअ सोलसमे ॥२॥ ३ । पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण संपदा होत्था ४ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स णं सोलस वत्थू पन्नत्ता ५ । चमरबलीणं उवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ता ६ । लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए पन्नत्ता ७ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८ । पंचमाए पुढविए अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस सागरोवमाठिती पन्नत्ता ९ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १० ।

सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। जे देवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआवत्तं महाणंदिआवत्तं अंकुसं अंकुसपलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसे णं सोलस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा सोलसहिं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंत्ति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्भिस्संति बुज्भिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १३॥ सूत्रं १६॥ सत्तरसविहे असंजमे पन्नत्ते तंजहा–पुढविकायअसंजमे आउकायअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे बेइंदिअअसंजमे तेइंदियअसंजमे चउरिंदियअसंजमे पंचिंदिअअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उवेहाअसंजमे अवहट्टुअसंजमे अप्पमज्जणाअसंजमे मणअसजंमे वइअसंजमे कायअसंजमे १। सत्तरसविहे संजमे पन्नत्ते, तंजहा–पुढवीकायमंजमे आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदिअसंजमे तेइंदिअसंजमे चउरिंदिअसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उवेहासंजमे अवहट्टुसंजमे पमज्जणासंजमे मणसंजमे वइसंजमे कायसंजमे २। माणुसत्तरे णं पव्वए सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते ३। सव्वेसिंपि णं वेलंधरअणुवेलंधरणागराईणं आवासपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ४। लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पन्नत्ते ५। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सातिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पातित्ता ततो पच्छा चारणाणं तिरिआ गती पवत्तति ६। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुर-

रणो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एकवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते ७। बलिस्स णं असुरिंदस्स रुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एकवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते ८। सत्तरसविहे मरणे पन्नत्ते, तंजहा—आवीईमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडितमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहाणसमरणे गिद्धपिट्ठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगिणिमरणे पाओवगमणमरणे ९। सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति, तंजहा—आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहीदंसणावरणे केवलदंसणावरणे सायावेयणिज्जं जसोकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं १०। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १६। सहस्सारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १७। जे देवा सामाणं सुसामाणं महासामाणं पउमं महापउमं कुमुदं महाकुमुदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहवीअं भाविअं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्स-

संति वा नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिआ जीवा जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्भि-स्संति बुज्भिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १८ । ॥ सूत्रं १७ ॥ अट्ठारसविहे बंभे पन्नत्ते, तंजहा—ओरालिए कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, नोऽवि अराणं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतं पि अराणं न समणुजाणाइ, ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, नोऽवि अराणं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतंपि अराणं न समणुजाणाइ, ओरालिए कामभोगे णेव सयं कायेणं सेवइ णोऽवि यऽराणं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतंपि अराणं न समणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सेयं मणेणं सेवइ णोवि अराणं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतंपि अराणं न समणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, णोवि अराणं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतंपि अराणं न समणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ, णोवि अराणं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतंपि अराणं न समणुजाणाइ १ । अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था २ । समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं सखुड्डय-विअत्ताणं अट्ठारस ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—वयछक्कं ६ कायछक्कं १२, अकप्पो १३ गिहिभायणं १४ । पलियंक १५ निसिज्जा १६ य, सिणाणं १७ सोभवज्जणं १८ ॥ १ ॥ ३ । आयारस्स णं भगवतो सचूलियागस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं ४ । बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पन्नत्ते, तंजहा—बंभी जवणी(णा) लियादोसा ऊरिआ खरोट्टिआ खरसाविआ पहाराइया उच्चत्तरिआ अक्खरपुट्ठिया भोगवयता वेणतिया णिराहइया अंकलिवि गणिअलिवी गंधव्वलिवी भूयलिवि-आदंसलिवी माहेसरीलिवी दामि(ली)लिवी- बोलिंदिलिवी ७ । अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पन्नत्तं, ८ । धूमप्पभाए णं पुढवीए अट्ठारसुत्तरं

जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं पन्नत्तं ९। पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ, इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। छट्ठिए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस-सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-आणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४। आणए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १५। जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा णं अट्ठारसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं अट्ठारसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिया जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुचिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १६ ॥ सूत्रं १८ ॥ एगूणवीसं णायज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–उक्खित्तणाए संघाडे, अंडे कुम्मे अ सेलए । तुंबे अ रोहिणी मल्ली, मागंदी चंदिमाति अ ॥ १ ॥ दावद्दवे उदगणाए, मंडुक्के तेत्तली इय । नंदिफले अवरकंका, आइण्णे सुंसमा इअ ॥ २ ॥ अवरे अ पोण्डरीए, णाए एगूणवीसमे १। जंबूद्दीवे णं दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगू-णवीस जोयणसयाइं उड्ढमहो तवयंति, सुक्केणं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ २। जंबुद्दी-वस्स णं दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेअणाओ पन्नत्ताओ ३। एगूणवीसं

तित्थयरा अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ ४। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं एगूणवीस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ५। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। आणयकप्पे अत्थेगइआणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। पाणए कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं जहण्णेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ११ ॥ सूत्रं १९ ॥ वीसं असमाहिठाणा पन्नत्ता, तंजहा—दवदवचारि यावि भवइ अपमज्जियचारि आवि भवइ दुप्पमज्जियचारि आवि भवइ अतिरित्तसज्जासणिए रातिणिअपरिभासी थेरोवघाइए भूओवघाइए संजलणे कोहणे पिट्ठिमंसिए अभिक्खणं (२) ओहारइत्ता भवइ णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ पोराणाणं अधिकरणाणं खामिअविउसविआणं पुणोदीरेत्ता भवइ ससरक्खपाणिपाए अकालसज्झायकारए यावि भवइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणाऽसमिते आवि भवइ १। मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। सव्वेऽवि अ णं घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पन्नत्तो ३। पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो

वीसं सामाणिअसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ४। णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पन्नत्ता ५। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पन्नत्ता ६। उस्सप्पिणिओसप्पिणिमंडले वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पन्नत्तो ७। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १२। आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३। जे देवा सायं विसायं सुविसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियं वद्धमाणयं पलंबं रुइलं पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं(ट्ठं)पुप्फुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १४ ॥सूत्रं २०॥

एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तंजहा—हत्थकम्मं करेमाणे सबले मेहुणं पडिसेवमाणे सबले, राइभोअणं भुंजमाणे सबले, आहाकम्मं भुंजमाणे सबले, सागारियं पिंडं भुंजमाणे सबले, उद्देसियं कीयं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले, अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले, अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले, रायपिंडं

भुंजमाणे सबले, आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले, आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले, आउट्टिआए अदिरणादाणं गिरहमाणे सबले आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले, एवं आउट्टिआ चित्तमंताए पुढवीए एवं आउट्टिआ चित्तमंताए सिलाए कोलावासंसि वा दारुए ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले, जीवपइट्ठिए सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिङ्गे पणगदगमट्टीमक्कडासंताणए तहप्पगारे ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले, आउट्टिआए मूलभोअणं वा कंदभोअणं वा तयाभोयणं वा पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे सबले, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले, अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइ सेवमाणे सबले, अभिक्खणं (२) सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले १। णिअट्टिवादरस्स णं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एकवीस कम्मंसा संतकम्मा पन्नत्ता, तंजहा—अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाया माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरण-कसाए कोहे, पच्चक्खाणावरणकसाए माणे, पच्चक्खाणावरणकसाया माया, पच्चक्खाणावरणकसाए लोभे, संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणा माया, संजलणे लोहे, इत्थिवेदे, पुंवेदे, णपुंवेदे, हासे, अरति, रति भय, सोग, दुगुंछा २। एकमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचमछट्ठाओ समाओ एकवीसं एकवीसं वाससहस्साइं कालेणं पन्नत्ताओ, तंजहा—दूसमा दूसमदूसमा ३। एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढमबितिआओ समाओ एकवीसं एकवीसं वाससहस्साइं कालेणं पन्नत्ताओ, तंजहा—दूसमदूसमाए दूसमाए य ४। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीसपलिओ-वमाइं ठिई पन्नत्ता ५। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस

सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीसपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। अच्चुते कप्पे देवाणं जहन्नेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्ठं चावोन्नतं अरन्नं(आरण्ण)वडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११।

॥ सूत्रं २१ ॥ बावीस परीसहा पन्नत्ता, तंजहा—दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरीसहे दंसणपरीसहे १। दिट्ठिवायस्स णं बावीसं सुत्ताइं छिन्नछेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए २। बावीसविहे पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते, तंजहा—कालवण्णपरिणामे, नीलवण्णपरिणामे, लोहियवण्णपरिणामे, हालिद्दवण्णपरिणामे, सुक्किल्लवण्णपरिणामे, सुब्भिगंधपरिणामे, दुब्भिगंधपरिणामे, तित्तरसपरिणामे, कडुयरसपरिणामे, कसायरसपरिणामे, अंबिलरसपरिणामे, महुररसपरिणामे, कक्खडफासपरिणामे, मउयफासपरिणामे,

गुरुफासपरिणामे, लहुफासपरिणामे, सीतफासपरिणामे, उसिणफासपरिणामे, णिद्धफासपरिणामे, लुक्खफासपरिणामे, अगुरुलहुफासपरिणामे, गुरुलहुफासपरिणामे ३। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ४। छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ५। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहरणेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। अच्चुते कप्पे उक्कोसेणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहरणेणं बावीस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा महियं विसूहियं विमलं पभासं वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा णं बावीसाए अद्धमासएणं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं बावीस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बावीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११ ॥ सूत्रं २२ ॥ तेवीसं सुयगडज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—समए वेतालिए उवसग्गपरिरणा थीपरिरणा नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिरणा अपच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुयं अद्दइज्जं णालंदइज्जं १। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पराणे २। जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे णं ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तंजहा—अजित संभव अभिणंदण सुमई जाव

पासो वद्धमाणो य, उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ३। जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थंकरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तंजहा—अजित संभव अभिणंदण जाव पासो वद्धमाणो य, उसभे णं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था ४। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ५। अहेसत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। हेट्ठिममज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। जे देवा हेट्ठिम(२)गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १० ॥ सूत्रं २३ ॥

चउव्वीसं देवाहिदेवा पन्नत्ता, तंजहा—उसभअजितसंभवअभिणंदण-सुमइपउमप्पह-सुपासचंदप्पह-सुविधिसीअलसिज्जंसवासुपुज्ज-विमलअणंतधम्मसंति कुंथु-अरमल्लीमुणिसुव्वय-नमिनेमीपासवद्धमाणा १। चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णवबत्तीसे जोयणसए एगं अट्ठत्तीसइभागं जोयणस्स किंचिविसेसाहिआओ आयामेणं पन्नत्ताओ २। चउवीसं देवट्ठाणा सइंदया पन्नत्ता, सेसा अहमिंदा अनिंदा अपुरोहिआ ३। उत्तरायणगते णं सूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायं णिव्वत्तइत्ता णं णियट्टति ४। गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं पन्नत्ताओ ५। रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ

पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पन्नत्ताओ ६। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। जे देवा हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा णीससंति वा, तेसि णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १२ ॥सूत्रं २४॥

पुरिमपच्छिमगाणं तित्थगराणं पंचजामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—ईरियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयभायणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुवीतिभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुण्णवणया उग्गहसीमजाणणया सयमेव उग्गहं अणुगिण्हणया साहम्मियउग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुण्णविय पडिभुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्जणया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणं इंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरयपुव्वकीलिआणं अणणुसरणया पणीताहारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई फासिंदियरागोवरई ५, १। मल्ली णं अरहा पणवीसं धणु उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। सव्वेऽवि दीहवेयड्ढपव्वया पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, पणवीसं पणवीसं गाऊआणि उव्विद्धेणं पन्नत्ता ३। दोच्चाए णं पुढवीए पणवीसं णिरयावा-

ससयसहस्सा पन्नत्ता ४ । आयारस्स णं भगवओ सचूलिआयस्स पणवीसं
अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणीअ सम्मत्तं ।
आवंति धुयविमोह उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ
भासज्झयणा य वत्थ पाएसा । उग्गहपडिमा सत्तिक्कसत्तया भावण विमुत्ती
॥ २ ॥ निसीहज्झयणं पणवीसइमं ५ । मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्ज-
त्तए णं संकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणवीसं उत्तरपयडीओ णिबंधति,
तंजहा–तिरियगतिनामं, विगलिंदियजातिनामं, ओरालिअसरीरणामं, तेअग-
सरीरणामं, कम्मणसरीरनामं, हुंडगसंठाणनामं, ओरालिअसरीरंगोवंगणामं,
छेवट्ठसंघयणनामं, वण्णनामं, गंधणामं, रसणामं, फासणामं, तिरिआणुपुव्वि-
नामं, अगुरुलहुनामं, उवघायनामं, तसनामं, बादरणामं, अपज्जत्तयणामं,
पत्तेयसरीरणामं, अथिरणामं, असुभणामं, दुभगणामं, अणादेज्जनामं,
अजसोकित्तिनामं, निम्माणनामं २५, ६ । गंगासिंधूओ णं महाणदीओ
पणवीसं गाऊयाणि पुहुत्तेणं दुहओ घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएण
पवातेणं पडंति ७ । रत्तारत्तवईओ णं महाणदीओ पणवीसं गाऊयाणि
पुहुत्तेणं मकरमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेण पडंति ८ ।
लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पन्नत्ता ९ । इमीसे णं रयणप्प-
भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता
१० । अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं
ठिई पन्नत्ता ११ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओव-
माइं ठिई पन्नत्ता १२ । सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइआणं पणवीसं
पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १३ । मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं
पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १४ । जे देवा हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगविमा-
णेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं
ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा

उस्ससंति वा नीस्ससंति वा, तेसि णं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १५ ॥ सूत्रं २५ ॥

छव्वीसं दसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला पन्नत्ता, तंजहा—दस दसाणं छ कप्पस्स दस ववहारस्स १। अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पन्नत्ता, तंजहा—मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलस कसाया, इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे, हासं अरति रति भयं सोगं दुगुंछा २। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ३। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ४। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ५। सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइणाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। मज्झिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। जे देवा मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं छव्वीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ८ ॥ सूत्रं २६ ॥ सत्तावीसं अणगारगुणा पन्नत्ता, तंजहा—पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमणं, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं, सोइंदियनिग्गहे, चक्खिंदियनिग्गहे, घाणिंदियनिग्गहे, जिब्भिंदियनिग्गहे, फासिंदियनिग्गहे, कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लोभविवेगे, भावसच्चे करणसच्चे

जोगसच्चे, खमा, विरागया, मणसमा(समन्ना)हरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया, णाणसंपरणया दंसणसंपरणया चरित्तसंपरणया, वेयण-अहियासणया मारणंतियअहियासणया १। जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति २। एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसाहिं राइंदियाहिं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते ३। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ता ४। वेयगसम्मत्तबन्धो-वरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा पन्नत्ता ५। सावणसुद्धसत्तमीसु णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं नियट्टेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवट्टमाणे चारं चरइ ६। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नता ७। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। मज्झिमउवरिमगे-वेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११। जे देवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं सत्तावीस-वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनि-व्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १२ ॥ सूत्रं २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पन्नत्ते, तंजहा—मासिआ आरोवणा, सपंचराईमासिया आरोवणा, सदसराइमासिआ आरोवणा, सपंचदसराइमासिया आरोवणा, सवीसराइमासिया आरोवणा, सपंचवीसराइमासिया आरोवणा ६, एवं चेव दोमासिआ आरो-

वणा, सपंचराईदोमासिया आरोवणा ६, एवं तिमासिआ आरोवणा ६, चउमासिया आरोवणा ६, २४, उवघा(ग्घा)इया आरोवणा, अणुवघा(ग्घा)-इया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा २८, एतावता आयारपकप्पे एतावता व आयरियव्वे १। भवसिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा पन्नत्ता, तंजहा—सम्मत्तवेअणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलस कसाया णव णोकसाया २। आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पन्नत्ते, तंजहा—सोइंदियअत्थावग्गहे चक्खिंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिब्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे, सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदियवंजणोग्गहे जिब्भिदियवंजणोग्गहे फासिंदियवंजणोग्गहे, सोतिंदियईहा चक्खिदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिदियईहा फासिंदियईहा णोइंदियईहा, सोतिंदियावाए चक्खिदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिदियावाए फासिंदियावाए णोइंदियावाए, सोइंदिअधारणा चक्खिदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिदियधारणा फासिंदियधारणा णोइंदियधारणा ३। ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ४। जीवे णं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तंजहा—देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंससंठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगणामं वण्णणामं गंधणामं रसणामं फासनामं देवाणुपुव्विणामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं उस्सासनामं पसत्थविहायोगइणामं तसनामं बायरणामं पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणं सुभासुभाणं आएज्जाणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नामं णिबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं, एवं चेव नेरइआवि, णाणत्तं अप्पसत्थविहायोगइणामं हुंडगसंठाणणामं अथिरणामं दुब्भगणामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादिज्जणामं अजसोकित्तीणामं निम्माणनामं ५। इमीसे णं रयणप्पभाए

पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओयमाइं ठिई पन्नत्ता ९। उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा मज्झिमउवरिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ११॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पन्नत्ते, तंजहा–भोमे उप्पाए सुमिणे अंतरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे, भोमे तिविहे पन्नत्ते, तंजहा–सुत्ते वित्ती वत्तिए, एवं एक्केक्कं तिविहं, २४, विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे २९, १। आसाढे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते २। एवं चेव भद्दवए णं मासे कत्तिए णं मासे पोसे णं मासे फग्गुणे णं मासे वइसाहे णं मासे ३। चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं पन्नत्ते ४। जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहिआओ णामस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ५। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८।

सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९ । उवरिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । जे देवा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीस-भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११ ॥ सूत्रं २९ ॥

तीसं मोहणीयठाणा पन्नत्ता, तंजहा—जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिआ । उदएण कम्मा मारेई, महामोहं पकुव्वइ १ ॥ १ ॥ सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं । तिव्वासुभसमायारे, महामोहं पकुव्वइ २ ॥ २ ॥ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं । अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ३ ॥ ३ ॥ जायतेयं समारब्भ, बहुं ओरुंभिया जणं । अंतोधूमेण मारेई(ज्जा), महामोहं पकुव्वइ ४ ॥ ४ ॥ सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमंगम्मि चेयसा । विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ५ ॥ ५ ॥ पुणो पुणो पणिधिए, हरित्ता उवहसे जणं । फलेणं अदुवा दण्डेणं, महामोहं पकुव्वइ ६ ॥ ६ ॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाएँ छायए । असच्चवाई णिण्हाई, महामोहं पकुव्वइ ७ ॥ ७ ॥ धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा । अदुवा तुम कासित्ति, महामोहं पकुव्वइ ८ ॥ ८ ॥ जाणमाणो परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ । अक्खीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ ९ ॥ ९ ॥ अणायगस्स नयवं, दारे तस्सेव धंसिया । विउलं विक्खोभइत्ताणं, किच्चा णं पडिबाहिरं ॥ १० ॥ उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं । भोगभोगे वियारेई, महामोहं पकुव्वइ १० ॥ ११ ॥ अकुमारभूए जे केई, कुमारभूए-

त्तिऽहं वए। इत्थीहिं गिद्धे वसए, महामोहं पकुव्वइ ११ ॥ १२ ॥ अबंभयारी जे केई, बंभयारीत्तिऽहं वए। गद्दहेव्व गवां मज्झे, विस्सरं नयई नदं ॥ १३ ॥ अप्पणो अहिए बाले, मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुव्वइ १२ ॥ १४ ॥ जं निस्सिए उव्वहइ, जससाहिगमेण वा। तस्स लुब्भइ वित्तम्मि, महामोहं पकुव्वइ १३ ॥ १५ ॥ ईसरेणं अदुवा गामेणं, अणिसरे ईसरीकए। तस्स संपयहीणस्स, सिरी अतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेण आविट्ठे, कलुसाऽऽविलचेयसे। जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ १४ ॥ १७ ॥ सप्पी जहा अंडउडं, भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावइं पसत्थारं, महामोहं पकुव्वइ १५ ॥ १८ ॥ जे नायगं च रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता, महामोहं पकुव्वइ १६ ॥ १९ ॥ बहुजणस्स णेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता, महामोहं पकुव्वइ १७ ॥ २० ॥ उवट्ठियं पडिविरयं, संजयं सुतवस्सियं (जे भिक्खुं-जगजीवणं)। वुकम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ १८ ॥ २१ ॥ तहेवाणंतणाणीणं, जिणाणं वरदंसिणं। तेसिं अवण्णवं बाले, महामोहं पकुव्वइ १९ ॥ २२ ॥ नेयाइअस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवय(ह)रई बहुं। तं तिप्पयंतो भावेइ, महामोहं पकुव्वइ २० ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसई बाले, महामोहं पकुव्वइ २१ ॥ २४ ॥ आयरियउवज्झायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ। अप्पडिपूयए थद्धे, महामोहं पकुव्वइ २२ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुए य जे केई, सुएणं पविकत्थई। सज्झायवायं वयइ, महामोहं पकुव्वइ २३ ॥ २६ ॥ अतवस्सीए य जे केई, तवेण पविकत्थइ। सव्वलोयपरे तेणे, महामोहं पकुव्वइ २४ ॥ २७ ॥ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए। पभू ण कुणई किच्चं, मज्झंपि से न कुव्वइ ॥ २८ ॥ सढे नियडीपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे। अप्पणो य अबोहीय, महामोहं पकुव्वइ २५ ॥ २९ ॥ जे कहाहिगरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो।

सव्वतित्थाण भेयाणं, महामोहं पकुव्वइ २६ ॥ ३० ॥ जे अ आहम्मिए जोए, संपओजे पुणो पुणो । सहाहेउं सहीहेउं, महामोहं पकुव्वइ २७ ॥ ३१ ॥ जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए । तेऽतिप्पयंतो आसयइ, महामोहं पकुव्वइ २८ ॥ ३२ ॥ इड्ढी जुई जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं । तेसिं अवण्णवं बाले, महामोहं पकुव्वई २९ ॥ ३३ ॥ अपस्समाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे । अण्णाणी जिणपूयट्ठी, महामोहं पकुव्वइ ३० ॥ ३४ ॥ १ । थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियाइं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे २ । एगमेगे णं अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेणं पन्नत्ता ३ । एएसि णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा—रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए ५ अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे १० आणंदे विजए विस्ससेणे पायावच्चे उवसमे १५ ईसाणे तट्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे २० सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते २५ तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ३०, ४ । अरे णं अरहा तीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ५ । सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ६ । पासे णं अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ७ । समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ८ । रयणप्पभाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ९ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ११ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १२ । उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १३ । जे देवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता,

ते णं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति १४ ॥ सूत्रं ३० ॥

एक्कतीसं सिद्धाइगुणा पन्नत्ता, तंजहा—खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, खीणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे ५ खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे अचक्खुदंसणावरणे, खीणे ओहिदंसणावरणे, खीणे केवलदंसणावरणे खीणा(णे) निद्दा, खीणे णिद्दाणिद्दा, खीणे पयला, खीणे पयलापयला, खीणे थीणद्धी १४ खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे १६ खीणे दंसणमोहणिज्जे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे १८ खीणे नेरइआउए, खीणे तिरिआउए २० खी णेमणुस्साउए, खीणे देवाउए २२ खीणे उच्चागोए, खीणे निच्चागोए २४ खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे २६ खीणे दाणंतराए, खीणे, लाभंतराए, खीणे भोगंतराए, खीणे उवभगंतराए, खीणे वीरिअंतराए ३१, १ । मंदरे णं पव्वए धरणितले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्चेव तेवीसं जोयणसए किंचिदेसूणा परिक्खेवेणं पन्नत्ते, २ । जया णं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ३ । अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते ४ । आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते ५ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ६ । अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं

नेरइयाणं एकतीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेइयाणं एकतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एकतीसं पलिओमाइं ठिई पन्नत्ता ९। विजयवेजयंत-जयंतअपराजिआणं देवाणं जहणेणं एकतीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एकतीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा एकतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा निस्ससंति वा, तेसि णं देवाणं एकतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइयाणं भवसिद्धिया जीवा जे एकतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११। सूत्रं ३१ ॥

बत्तीसं जोगसंगहा पन्नत्ता, तंजहा—आलोयण १ निरवलावे २, आवईसु दढधम्मया ३। अणिस्सिओवहाणे ४ य, सिक्खा ५ निप्पडिकम्मया ६ ॥ १ ॥ अणाणयया ७ अलोभे ८ य, तितिक्खा ९ अज्जवे १० सुई ११। सम्मदिट्ठी १२ समाही १३ य, आयारे १४ विणओवए १५ ॥ २ ॥ धिईमई १६ य संवेगे १७, पणिही १८ सुविहि १९ संवरे २०। अत्तदो-सोवसंहारे २१, सव्वकामविरत्तया २२ ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणे २३-२४ विउस्सग्गे २५, अप्पमादे २६ लवालवे २७। झाणसंवरजोगे २८ य, उदए मारणंतिए २९ ॥ ४ ॥ संगाणं च परिणाया ३०, पायच्छित्तकरणेऽवि य ३१। आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ १। बत्तीसं देविंदा पन्नत्ता, तंजहा—चमरे बली धरणे भूआणंदे जाव घोसे महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए २। कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था ३। सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा णं पन्नत्ता ४। रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पन्नत्ते ५। बत्तीसतिविहे णट्टे पन्नत्ते ६। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए

अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ७। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ८। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता १०। जे देवा विजयवेजयंतजयंतअपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा, तेसि णं देवाणं बत्तीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११ ॥ सूत्रं ३२ ॥ तेत्तीसं आसायणाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—सेहे राइणियस्स आसन्नं गंता भवइ आसायणा सेहस्स १ सेहे राइणियस्स पुरओ गंता भवइ आसायणा सेहस्स २ सेहे राइणियस्स सपक्खं गंता भवइ आसायणा सेहस्स ३ सेहे राइणियस्स आसन्नं ठिच्चा भवइ आसायणा सेहस्स ४ जाव सेहे राइणियस्स आलवमाणस्स तत्थगए चेव पडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ३३, १। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्कवाराए तेत्तीसं तेत्तीसं भोमा पन्नत्ता २। महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं सागरेगाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता ३। जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ४। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ५। अहेसत्तमाए पुढवीए कालमहाकाल-रोरुयमहारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ६। अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई

पन्नत्ता ७ । असुरकुमाराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ८ । सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ९ । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १० । जे देवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववरणा तेसि णं देवाणं अजहरणमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा निस्ससंति वा, तेसि णं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ११ ॥ सूत्रं ३३ ॥

चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पन्नत्ता, तंजहा—अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी १ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६ आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाओ सेयवरचामराओ ८ आगासफालिआमयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ १० जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसियंति या तत्थ तत्थवि य णं जक्खा देवा तक्खणादेव संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ ११ ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेयमंडलं अभिसंजायइ अंधकारेऽवि य णं दस दिसाओ पभासेइ १२ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३ अहोसिरा कंटया जायंति १४ उऊविवरीया सुहफासा भवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेण य निहयरयरेणूयं किज्जइ १७ जलथलयभासुरपभूतेणं बिंटट्ठाइणा दसद्धवरणेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुराणाणं

सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो भवइ १९ मणुण्णाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ २० पच्चाहरओऽवि य णं हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो २१ भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२ साविय णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं अप्पणो हियसिवसुहयभासत्ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेरावि य णं देवासुरनागसुवण्ण-जक्खरक्खस-किंनरकिंपुरिस-गरुलगंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अण्णउत्थियपावयणियावि य णमागया वंदंति २५ आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पलिवयणा हवंति २६ जओ जओऽवि य णं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओऽवि य णं जोयणपणवीसाएणं ईती न भवइ २७ मारी न भवइ २८ सचक्कं न भवइ २९ परचक्कं न भवइ ३० अइवुट्ठी न भवइ ३१ अणावुट्ठी न भवइ ३२ दुब्भिक्खं न भवइ ३३ पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पाइया वाही खिप्पामेव उवसमंति ३४, १। जंबूद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पन्नत्ता, तंजहा—बत्तीसं महाविदेहे दो भरहे एरवए २। जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं दीहवेयड्ढा पन्नत्ता ३। जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थंकरा समुप्पज्जंति ४। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता, पढमपंचमछट्ठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ५ ॥ सूत्रं ३४ ॥

पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पन्नत्ता १। कुंथु णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसं जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु

जिणसकहाओ पन्नत्ताओ ४। बितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ५ ॥ सूत्रं ३५ ॥ छत्तीसं उत्तरज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—विणयसुयं १ परीसहो २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकाममरणिज्जं ५ पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसूयपूजा ११ हरिएसिज्जं १२ चित्तसंभूयं १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८ मियचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीओ २४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुंकिज्जं २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाओ २९ तवोमग्गो ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयणं ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्ती य ३६, १। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था ३। चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ ४ ॥ सूत्रं ३६ ॥ कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा सत्ततीसं गणहरा होत्था १। हेमवयहेरण्णवयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चउसत्तरे जोयणसए सोलसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं पन्नत्ताओ २। सव्वासु णं विजयवेजयंतजयंतअपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्तीतसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ३। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ४। कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ५ ॥ सूत्रं ३७ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जिआसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था १। हेमवयएरण्णवईयाणं जीवाणं धणूपिट्ठे अट्ठतीसं

जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पन्नत्ते २। अत्थस्स णं पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठतीसं तेवट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ४ ॥ सूत्रं ३८ ॥ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था १। समयखेत्ते एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पन्नत्ता, तंजहा—तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा, दोच्चचउत्थपंचमछट्ठसत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता २। नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूण-चत्तालीसं उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ३ ॥ सूत्रं ३९ ॥ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था १। मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्तं २। संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। भूयाणंदस्स णं नागकुमारस्स नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ४। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ५। फग्गुणपुण्णमासिणीए णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वट्टइत्ता णं चारं चरइ, एवं कत्तियाएऽवि पुण्णिमाए ६। महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावास-सहस्सा पन्नत्ता ७ ॥ सूत्रं ४० ॥

नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था १। चउसु पुढवीसु एकचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, तंजहा—रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए २। महालियाए णं विमाण-पविभत्तीए पढमे वग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ३ ॥ सूत्रं ४१ ॥ समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे १। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स

पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पन्नत्ते एवं चउद्दिसिंपि दओभासे संखे दयसीमे य २। कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा ३। बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा (३), ४। संमुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता ५। नामकम्मे बायालीसविहे पन्नत्ते, तंजहा—गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरंगोवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुब्भगनामे सुसरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे ५। लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भिंतरियं वेलं धारंति ६। महालियाए णं विमाणपविभत्तीए वितिए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ७। एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचमछट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पन्नत्ताओ ८। एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढमबीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पन्नत्ताओ ९ ॥सूत्रं ४२॥ तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा पन्नत्ता १। पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता २। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। एवं चउद्दिसिंपि दगभागे(से) संखे दयसीमे ४। महालियाए णं विमाणपविभत्तीए तइये वग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ५ ॥ सूत्रं ४३ ॥ चोयालीसं अज्झ-

यणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया (देवलोयचुयाणं इसीणं चोयालीसं इसिभासियज्झयणा) पन्नत्ता १ विमलस्स णं अरहओ णं चउआलीसं पुरिसजुगाइं अणुपिट्ठिं (अणुबंधेण) सिद्धाइं जावप्पहीणाइं २ । धरणस्स णं नागिंदस्स नागररणो चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ३ । महालियाए णं विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ४ ॥ सूत्रं ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते १ । सीमंतए णं नरए पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते २ । एवं उडुविमाणेऽवि ३ । ईसिपब्भारा णं पुढवी एवं चेव ४ । धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ५ । मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीसं (२) जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ६ । सव्वेऽवि णं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा—तिन्नेव उत्तराइं पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य । एए छ नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥१॥ ७ । महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पन्नत्ता ८ ॥ सूत्रं ४५ ॥

दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया पन्नत्ता १ । बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पन्नत्ता २ । पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ३ ॥ सूत्रं ४६ ॥ जया णं सूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसङ्कमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहि जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ १ । थेरे णं अग्गिभूई सत्तचालीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए २ ॥ सूत्रं ४७ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पन्नत्ता १ । धम्मस्स णं अरहओ अडया-

लीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था २। सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं पन्नत्ते ३ ॥ सूत्रं ४८ ॥ सत्त सत्तमियाए णं भिक्खुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउइभिक्खासएणं अहासुत्तं जाव आराहिया यावि भवइ १। देवकुरुउत्तरकुरुएसु णं मणुया एगूणपन्ना राइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति २। तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्ना राइंदिया ठिई पन्नत्ता ३ ॥ सूत्रं ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था १। अणंते णं अरहा पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। पुरिसुत्तमे णं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। सव्वेऽवि णं दीहवेयड्ढा मूले पन्नासं (२) जोयणाणि विक्खंभेणं पन्नत्ता ४। लंतए कप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा पन्नत्ता ५। सव्वाओ णं तिमिस्सगुहाखंडगप्पवायगुहाओ पन्नासं (२) जोयणाइं आयामेणं पन्नत्ताओ ६। सव्वेवि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं (२) जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता ७ ॥ सूत्रं ५० ॥

नवण्हं बंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला पन्नत्ता १। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सभा सुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविट्ठा पन्नत्ता २। एवं चेव बलिस्सवि ३। सुप्पभे णं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ४। दंसणावरणनामाणं दोण्हं कम्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीओ पन्नत्ता ५ ॥ सूत्रं ५१ ॥ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा– कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए १० माणे मदे दप्पे थंभे अत्तुक्कोसे गव्वे परपरिवाए अक्कोसे अवक्कोसे (परिभवे) उन्नए २० उन्नामे माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे ३० कूडे जिम्हे किव्विसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे लोभे इच्छा ४० मुच्छा कंखा गेही तिण्हा

भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा ५० नन्दी रागे ५२, १। गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं दगभासस्स णं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स ३। नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसि णं तिराहं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीओ पन्नत्ताओ ४। सोहम्मसणंकुमारमाहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ५ ॥सूत्रं ५२॥ देवकुरुउत्तरकुरुयाओ णं जीवाओ तेवन्नं (२) जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पन्नत्ताओ १। महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं पन्नत्ताओ २। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ३। संमुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पन्नत्ता ४ ॥ सूत्रं ५३ ॥ भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं (२) उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा (३), तंजहा—चउवीसं तित्थकरा बारस चक्कवट्टी नव बलदेवा नव वासुदेवा १। अरहा णं अरिट्ठिनेमी चउवन्नं राइंदियाइं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी २। समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्नाइं वागरणाइं वागरित्था ३। अणंतस्स णं अरहओ चउपन्नं गणहरा होत्था ४ ॥ सूत्रं ५४॥ मल्लिस्स णं अरहओ पणपन्नं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे १। मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ विजयदारस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं पणपन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं चउद्दिसिंपि वेजयंतजयंतअपराजियंति ३। समणे भगवं महावीरे

अंतिमराइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ४। पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ५। दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिराहं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ६ ॥ सूत्रं ५५ ॥

जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पन्नं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा (३), १। विमलस्स णं अरहओ छप्पन्नं गणा छप्पन्नं गणहरा होत्था २ ॥ सूत्रं ५६ ॥ तिराहं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावन्नं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–आयारे सूयगडे ठाणे १। गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं दगभासस्स केउयस्स य संखस्स य जूयस्स य दयसीमस्स ईसरस्स य ३। मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था ४। महाहिमवंतरूप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्नं (२) जोयणसहस्साइं दोन्नि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पन्नत्तं ५ ॥ सूत्रं ५७ ॥ पढमदोच्चपंचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता १। नाणावरणिज्जस्स वेयणियआउयनामअंतराइयस्स एएसि णं पंचराहं कम्मपगडीणं अट्ठावन्नं उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ २। गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। एवं चउदिसिंपि नेयव्वं ४ ॥ सूत्रं ५८ ॥ चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठिं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ता १। संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं आगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए २। मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया

होत्था ३ ॥ सूत्रं ५९ ॥ एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाइए १। लवणस्स णं समुद्दस्स सट्ठिं नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति २। विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ४। बंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ५। सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ६ ॥ सूत्रं ६० ॥

पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इगसट्ठिं उऊमासा पन्नत्ता १। मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते २। चंदमंडलेणं एगसट्ठिविभागविभाइए समंसे पन्नत्ते ३। एवं सूरस्सवि ४॥ सूत्रं ६१॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बासट्ठिं पुन्निमाओ बावट्ठिं अमावसाओ पन्नत्ताओ २। वासुपुज्जस्स णं अरहओ बासट्ठिं गणा बासट्ठिं गणहरा होत्था २। सुक्कपक्खस्स णं चंदे बासट्ठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ ३। ते चेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ ४। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए (पढमावलिया) एगमेगाए दिसाए बासट्ठिं विमाणा पन्नत्ता ५। सव्वे वेमाणियाणं बासट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पन्नत्ता ६ ॥ सूत्रं ६२ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए १। हरिवासरम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति २। निसढे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पन्नत्ता ३। एवं नीलवंतेति ४॥ सूत्रं ६३॥ अट्ठट्ठमिया भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव भवइ १। चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता २। चमरस्स णं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ३। सव्वेऽवि णं

दधिमुहा पव्वया (पल्लग)(पल्ला)संठाणसंठिया सव्वत्थ समा विक्खंभे णं (विक्खंभुस्सेहेणं) चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं पन्नत्ता ४। सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ५। सव्वस्सवि य णं रन्नो चाउरन्तचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिहारे पन्नत्ते ६ ॥ सूत्रं ६४ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पन्नत्ता १। थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए २। सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा पन्नत्ता ३ ॥ सूत्रं ६५ ॥

दाहिणड्ढमाणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा(३) छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा (३) १। उत्तरड्ढमाणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा (३) छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा (३) २। सेज्जंसस्स णं अरहओ छावट्ठिं गणा छावट्ठिं गणहरा होत्था ३। आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ४ ॥ सूत्रं ६६ ॥ पञ्चसंवच्छरियस्स णं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा पन्नत्ता १। हेमवयएरन्नवयाओ णं बाहाओ सत्तट्ठिं सत्तट्ठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पन्नत्ताओ २। मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। सव्वेसिंपि णं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिं भागं भइए समंसे पन्नत्ते ४ ॥ सूत्रं ६७ ॥ धायइसंडे णं दीवे अडसट्ठिं चक्कवट्टिविजया अडसट्ठिं रायहाणीओ पन्नत्ताओ १। उक्कोसपए अडसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा (३) एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा २। पुक्खरवरदीवड्ढे णं अडसट्ठिं विजया एवं चेव जाव वासुदेवा ३। विमलस्स णं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ४ ॥ सूत्रं ६८ ॥ समयखित्ते णं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा

वासधरपव्वया पन्नत्ता, तंजहा–पणतीसं वासा तीसं वासहरा चत्तारि उसुयारा १। मंदरस्स पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ३॥ सूत्रं ६९॥ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ १। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे २। वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेगे पन्नत्ते ४। माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ५॥ सूत्रं ७०॥

चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ १। वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा पन्नत्ता २। अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए ३। एवं सगरोऽवि राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइएत्ति ४॥ सूत्रं ७१॥ बावत्तरिं सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता १। लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारंति २। समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ३। थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ४। अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चंदा पभासिंसु (३) बावत्तरिं सूरिया तविंसु वा (३) ५। एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ६। बावत्तरिं कलाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गीयं ५ वाइयं ६ सरगयं ७ पुक्खरगयं ८ सम-

तालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोक्ख(रेव)च्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविहीं १५ पाणविहीं १६ वत्थविहीं १७ सयणविहीं १८ अज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ आभरणविहीं २६ तरुणीपडिकम्मं २७ इत्थीलक्खणं २८ पुरिसलक्खणं २९ हयलक्खणं ३० गयलक्खणं ३१ गोणलक्खणं ३२ कुक्कुडलक्खणं ३३ मिंढयलक्खणं ३४ चक्कलक्खणं ३५ छत्तलक्खणं ३६ दंडलक्खणं ३७ असिलक्खणं ३८ मणिलक्खणं ३९ कागणिलक्खणं ४० चम्मलक्खणं ४१ चंदलक्खणं ४२ सूरचरियं ४३ राहुचरियं ४४ गहचरियं ४५ सोभागकरं ४६ दोभागकरं ४७ विज्जागयं ४८ मंतगयं ४९ रहस्सगयं ५० सभासं ५१ चारं ५२ पडिचारं ५३ वूहं ५४ पडिवूहं ५५ खंधावारमाणं ५६ नगरमाणं ५७ वत्थुमाणं ५८ खंधावारनिवेसं ५९ वत्थुनिवेसं ६० नगरनिवेसं ६१ ईसत्थं ६२ छरुप्पवायं ६३ आससिक्खं ६४ हत्थिसिक्खं ६५ धणुव्वेयं ६६ हिरण्णपागं सुवन्नपागं मणिपागं धातुपागं ६७ बाहुजुद्धं दंडजुद्धं मुट्ठिजुद्धं अट्ठिजुद्धं जुद्धं निजुद्धं जुद्धाइं जुद्धं सुत्तखेडं ६८ नालियाखेडं वट्टखेडं धम्मखेडं चम्मखेडं ६९ पत्तछेज्जं कडगच्छेज्जं ७० सजीवं निज्जीवं ७१ सउणरुयं ७२, ७। संमुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता ८ ॥ सूत्रं ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं (२) जोयणसहस्साइं नव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पन्नत्ताओ १। विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे २ ॥ सूत्रं ७३ ॥ थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे १। निसहाओ णं वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिओ णं दहाओ सीतोयामहानदीओ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुही पवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउ-

जोयणायामाए पन्नासजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महया सद्देणं पवडइ २। एवं सीतावि दक्खिणाहिमुही भाणियव्वा ३। चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ४॥ सूत्रं ७४॥ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्था १। सीतले णं अरहा पन्नत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए २। संती णं अरहा पन्नत्तरिवाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ३॥ सूत्रं ७५॥

छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता, एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं। छण्हंपि जुगलयाणं छावत्तरि सयसहस्साइं॥ १॥ सूत्रं ७६॥ भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तहत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता महारायाभिसेयं संपत्ते १। अङ्गवंसाओ णं सत्तहत्तरि रायाणो मुंडे जाव पव्वइया २। गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्सपरिवारा पन्नत्ता ३। एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवे लवग्गेणं पन्नत्ते ४॥ सूत्रं ७७॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावाससयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं(महयररत्तं) आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ १। थेरे णं अकंपिए अट्ठहत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे २। उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूणचत्तालीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चारं चरइ ३। एवं दक्खिणायणनियट्टेऽवि ४॥ सूत्रं ७८॥ वलयामुहस्स णं पायालस्स हिट्ठिल्लाओ चरमंताओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते १। एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसर-

स्सवि, छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाश्रो छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं एगूणासीति जोयणसहस्साइं अबाहाए अन्तरे पन्नत्ते २। जम्बुद्दीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस णं एगूणासीई जोयणसहस्साइं सागरेगाइं अबाहाए अन्तरे पन्नत्ते ३ ॥ सूत्रं ७९ ॥ सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २। अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था ४। आउबहुले णं कण्डे असीइजोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पन्नत्ते ५। ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो असीई सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ६। जम्बुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेइ ७ ॥ सूत्रं ८० ॥

नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एकासीइ राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया १। कुंथुस्स णं अरहओ एकासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था २। विवाहपन्नत्तीए एकासीतिं महाजुम्मसया पन्नत्ता ३ ॥ सूत्रं ८१ ॥ जम्बुद्दीवे दीवे बासीयं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ तंजहा—निक्खममाणे य पविसमाणे य १। समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए २। महाहिमवतस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं बासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। एवं रुप्पिस्सवि ४ ॥ सूत्रं ८२ ॥ समणे भगवं महावीरे बासीइराइंदिएहिं वीइक्कंतेहि तेयासीइमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए १। सीयलस्स णं अरहओ तेसीई गणा तेसीई गणहरा होत्था २। थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ३। उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं

अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं जाव पव्वइए ४। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइं पुव्वसयमहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी ५ ॥ सूत्रं ८३ ॥ चउरासीइ निरयावास-सयसहस्सा पन्नत्ता १। उसभे णं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसय-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे २। एवं भरहो बाहुबली बंभी सुन्दरी ३। सिज्जंसे णं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ४। तिविट्ठे णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ५। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीई सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ६। सव्वेऽवि णं बाहिरया मंदरा चाउरासीइं (२) जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ७। सव्वेऽवि णं अंजणगपव्वया चउरासीइं (२) जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ८। हरिवासरम्मयवासियाणं जीवाणं धणुपिट्ठा चउरासीं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेणं पन्नत्ता ९। पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं चोरासीइ जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते १०। विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं पन्नत्ता ११। चोरासीइ नागकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता १२। चोरासीइ पइन्नगसहस्साइं पन्नत्ताइं १३। चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा पन्नत्ता १४ पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पन्नत्ते १५। उसभस्स णं अरहओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था १६। सव्वेऽवि चउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं १७ ॥ सूत्रं ८४ ॥ आयारस्स णं भगवओ सचूलिया-गस्स पंचासीइ उद्देसणकाला पन्नत्ता १। धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीइ जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पन्नत्ता २। रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइ

जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पन्नत्ते ३। नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ४ ॥ सूत्रं ८५ ॥

सुविहिस्स णं पुप्फदन्तस्स अरहओ छलसीइ गणा छलसीइ गणहरा होत्था १। सुपासस्स णं अरहओ छलसीई वाइसया होत्था २। दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोचस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं छलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३ ॥सूत्रं ८६ ॥ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते १। मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीई जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं मंदरस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ संखस्सावासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते ३। एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीईं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ४। छण्हं कम्मपगडीणं आइमउवरिल्लवज्जाणं सत्तासीई उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ५ । महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिमंताओ सोगन्धियस्स कंडस्स हेट्ठिले चरमंते एस णं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ६। एवं रुप्पिकूडस्सवि ७ ॥सूत्रं ८७ ॥ एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो पन्नत्तो १। दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइ सुत्ताइं पन्नत्ताइं तंजहा— उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए २। मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं ४। बाहिराओ उत्तराओ णं

कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ ५। दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ ६ ॥ सूत्रं ८८॥ उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसमदूसमाए पच्छिमे भागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे १। समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थाए दूसमसुसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे २। हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइं वाससयाइं महाराया होत्था ३। संतिस्स णं अरहओ एगूणनउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ४॥ सूत्रं ८९॥ सीयले णं अरहा नउई धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। अजियस्स णं अरहओ नउई गणा नउई गणहरा होत्था २। एवं संतिस्सवि ३। सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था ४। सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ५॥ सूत्रं ९०॥

एकाणउई परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पन्नत्ताओ १। कालोए णं समुद्दे एकाणउई जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पन्नत्ते २। कुंथुस्स णं अरहओ एकाणउई आहोहियसया होत्था ३। आउयगोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउई उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ४। ॥ सूत्रं ९१॥ बाणउई पडिमाओ पन्नत्ताओ १। थेरे णं इंदभूति बाणउइ वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे २। मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवासपव्वयस पच्चच्छिमिल्ले चरमंते

एस णं बाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। एवं चउद्दिसंपि आवासपव्वयाणं ४ ॥ सूत्रं १२ ॥ चंदप्पहस्स णं अरहओ तेणउई गणा तेणउई गणहरा होत्था १। संतिस्स णं अरहओ तेणउई चउद्दसपुव्विसया होत्था २। तेणउईमंडलगते णं सूरिए अतिवट्टमाणे निवट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेइ ३ ॥ सूत्रं १३ ॥ निसहनीलवंतियाओ णं जीवाओ चउणउइ जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्नि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पन्नत्ताओ १। अजियस्स णं अरहओ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था २ ॥ सूत्रं १४ ॥ सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइ गणा पंचाणउइ गणहरा होत्था १। जम्बुद्दीवस्स णं दीवस्स चरमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्द पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायालकलसा पन्नत्ता, तंजहा—वलयामुहे केऊए जूयए ईसरे २। लवणसमुद्दस्स उभओपासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए पन्नत्ताओ ३। कुंथू णं अरहा पंचाणउइ वाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव पहीणे ४। थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ५ ॥ सूत्रं १५ ॥

एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं छण्णउइं गामकोडीओ होत्था १। वायुकुमाराणं छण्णउइ भवणावाससयसहस्सा पन्नत्ता २। ववहारिए णं दंडे छण्णउइ अंगुलाइं अंगुलमाणेणं ३। एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसलेऽवि हु ४। अब्भितरओ आइमुहुत्ते छण्णउइअंगुलछाए पन्नत्ते ५ ॥ सूत्रं १६ ॥ मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते १। एवं चउदिसिंपि २। अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ ३। हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइ वाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे

भवित्ता णं जाव पव्वइए ४ ॥ सूत्रं १७ ॥ नंदणवणस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडुयवणस्स हेट्ठिले चरमंते एस णं अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते १। मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं चउदिसिंपि ३। दाहिणभरहस्स णं धणुप्पिट्ठे अट्ठाणउइ जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पन्नत्ते ४। उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मण्डलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ ५। दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखित्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ ६। रेवईपढमजेट्ठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पन्नत्ताओ ७ ॥ सूत्रं १८ ॥ मंदरे णं पव्वए णवणउइ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते १। नंदणवणस्स णं पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एस णं णवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ३। उत्तरे पढमे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते ४। दोच्चे सूरियमंडले नवनउइ जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते ५। तइए सूरियमंडले नवनउइ जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते ६। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ७ ॥ सूत्रं १९ ॥ दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं

अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहियावि भवइ १। सय-भिसया नक्खत्ते एक्कसयतारे पन्नत्ते २। सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणूसयं उड्ढं उच्चतेणं होत्था ३। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ४। एवं थेरेवि अज्ज-सुहम्मे ५। सव्वेऽवि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ६। सव्वेऽवि णं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगं जोय-णसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पन्नत्ता ७। सव्वेऽवि णं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पन्नत्ता, एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं पन्नत्ता ८॥ सूत्रं १००॥

चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुसयं उच्चत्तेणं होत्था १। आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं पन्नत्तं २। एवं अच्चुएऽवि ३। (१५०)॥सूत्रं १०१॥ सुपासे णं अरहा दो धणुसया उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। सव्वेऽवि णं महा-हिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, दो दो गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता २। जम्बुद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वयसया पन्नत्ता ३ (२००)॥ सूत्रं १०२॥ पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुस-याइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता २ (२५०)॥ सूत्रं १०३॥ सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए २। वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ३। समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था, पंचधणुसइयस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पन्नत्ता ४ (३००)

॥ सूत्रं १०४ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दस-पुव्वीणं संपया होत्था १। अभिनंदणे णं अरहा अधुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २ (३५०) ॥ सूत्रं १०५ ॥

संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। सव्वेऽवि णं णिसढनीलवंता वासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता २। सव्वेऽवि णं वक्खारपव्वया णिसढनीलवंतवासहरपव्वयए णं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ते ३। आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पन्नत्ता ४। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था (४००) ॥ सूत्रं १०६ ॥ अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था १। सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था २ (४५०) ॥ सूत्रं १०७ ॥ सव्वेऽवि णं वक्खारपव्वय सीआ सीओआओ महानईओ मंदरपव्वयंतेणं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ताओ १। सव्वेऽवि णं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, मूले पंच पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता २। उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ४। सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारपव्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच (२) जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता ५। सव्वेऽवि णं वक्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ता ६। सव्वेऽवि णं नंदणकूडा बलकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयाममविक्खंभेणं

पन्नत्ता ७। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच (२) जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ८ (५००)॥ सूत्रं १०८॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ्जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १। चुल्लहिमवंतकूडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं छ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २। एवं सिहरीकूडस्सवि ३। पासस्स णं अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोय वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था ४। अभिचंदे णं कुलगरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ५। वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ६। (६००)॥ सूत्रं १०९॥ बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था २। समणस्सणं भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया णं होत्था ३। अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ४। महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं सत्त जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ५। एवं रुप्पिकूडस्सवि ६ (७००) सूत्रं ११०॥

महासुक्कसहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्जविहारा पन्नत्ता २। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था ३। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चारं चरति ४। अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिआ वाईसंपया होत्था ५ (८००)

एस णं पंच जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते (५०००००) ॥ सूत्रं १२८ ॥ भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं रायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए (६०००००) ॥ सूत्रं १२९ ॥ जम्बूदीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ वेइयंताओ धायइखंडचक्कवालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते सत्त जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते, (७०००००) ॥ सूत्रं १३० ॥ माहिंदे णं कप्पे अट्ठ विमाणावाससयसहस्साइं पन्नत्ते, (८०००००) ॥ सूत्रं १३१ ॥ अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणिसहस्साइं होत्था (९००००) ॥ सूत्रं १३२ ॥ पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पञ्चमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने (१००००००) ॥ सूत्रं १३३ ॥ समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठविमाणे देवत्ताए उववन्ने (१०००००००) ॥ सूत्रं १३४ ॥ उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे पन्नत्ते (१००००००००००००००) ॥ सूत्रं १३५ ॥

दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते, तंजहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए १ । से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयर-विणयवेणइयट्ठाण-गमणचंकमणपमाणजोगजुंजण-भासासमितिगुत्ती-सेज्जोवहि-भत्तपाण-उग्गमउप्पायणा-एसणाविसोहि-सुद्धासुद्धग्गहण-वयणियम-तवोवहाण-सुप्पसत्थमाहिज्जइ २ । से समासओ पञ्चविहे पन्नत्ते, तंजहा—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे विरियायारे ३ । आयारस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणु-

श्रोगदारा संखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो ४ । से णं श्रंगट्ठयाए पढमे श्रंगे दो सुयक्खंधा पणवीसं श्रज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकाला पंचासीइं समुद्देसणकाला श्रट्ठारस पदसहस्साइं पदग्गेणं संखेज्जा श्रक्खरा श्रणंता गमा श्रणंता पज्जवा परित्ता तसा श्रणंता थावरा सासया कडा निबद्धा णिकाइया जिणपरणत्ता भावा श्राघविज्जंति पराणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५ । से एवं णाया एवं विराणाया एवं चरणकरणपरूवणया श्राघविज्जंति पराणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ६ । से त्तं श्रायारे ७ ॥ सूत्रं १३६ ॥ से किं तं सूत्रगडे ? सूत्रगडे णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति श्रजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति लोगो सूइज्जति श्रलोगो सूइज्जति लोगालोगो सुइज्जति १ । सूत्रगडे णं जीवाजीव-पुराणपावासवसंवरनिज्जरण-बंधमोक्खावसाणा पयत्था सुइज्जंति २ । समणाणं श्रचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोह-मोहमइमोहियाणं संदेहजाय-सहजबुद्धिपरिणामसंसइयाणं पावकरमलिन-मइगुणविसोहणत्थं श्रसीश्रस्स किरियावाइयसयस्स चउरासीए श्रकिरियवाईणं सत्तट्ठीए श्रणाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं तिराहं तेवट्ठीणं श्रणादिट्ठियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति णाणादिट्ठंतवयणणिस्सारं सुट्ठु दरिसयंता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिट्ठा मोक्खपहोयारगा उदारा श्रणाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूश्रा सोवाणा चेव सिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था २ । सुयगडस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा श्रणुश्रोगदारा संखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो ३ । से णं श्रङ्गट्ठयाए दोच्चे श्रंगे दो सुयक्खंधा तेवीसं श्रज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला तेत्तीसं समुद्देसणकाला छत्तीसं पदसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं ४ । संखेज्जा

॥ सूत्रं १११ ॥ आणयपाणयआरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १ । निसढकूडस्स णं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते २ । एवं नीलवंतकूडस्सवि ३ । विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ४ । इमीसे णं रयणप्पभाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चारं चरइ ५ । निसढस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ६ । एवं नीलवंतस्सवि ७ (१००) ॥ सूत्रं ११२ ॥ सव्वेऽवि णं गेवेज्जविमाणे दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते १ । सव्वेऽवि णं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता, मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ता २ । एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणियव्वा ३ । सव्वेऽवि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता, मूले दस दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता ४ । सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया पन्नत्ता ५ । सव्वेऽवि णं हरिहरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं ६ । एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा ७ । अरहावि(णं) अरिट्ठनेमी दस वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ८ । पासस्स णं अरहओ पुरिसादानीयस्स दस सयाइं जिणाणं होत्था ९ । पासस्स णं अरहओ दस अन्तेवासीसयाइं कालगयाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं १० । पउमद्दहपुंडरीयद्दहा य दस दस जोयणसयाइं आयामेणं पन्नत्ता ११ (१०००) ॥ सूत्रं ११३ ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता १ । पासस्स णं

अरहओ पुरिसादानीयस्स इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था २ (११००) ॥ सूत्रं ११४ ॥ महापउममहापुंडरीयदहा णं दो दो जोयणसहस्साइं आयामेणं पन्नत्ता (२०००) ॥ सूत्रं ११५ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरकंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं तिन्नि जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते (३०००) ॥ सूत्रं ११६ ॥ तिगिच्छिकेसरिदहाणं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं पन्नत्ता (४०००) ॥ सूत्रं ११७ ॥ धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीओ चउदिसिं पञ्च (२) जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे मंदरपव्वए पन्नत्ते (५०००) ॥ सूत्रं ११८ ॥ सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पन्नत्ते (६०००) ॥ सूत्रं ११९ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्त जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते (७०००) ॥ सूत्रं १२० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अट्ठ जोयणसहस्साइं सागरेगाइं वित्थरेणं पन्नत्ता (८०००) ॥ सूत्रं १२१ ॥ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईणपडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयणसहस्साइं आयामेणं पन्नत्ता (९०००) ॥ सूत्रं १२२ ॥ मंदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पन्नत्ते (१००००) ॥सूत्रं १२३॥ जम्बूदीवेणं दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते (१०००००) ॥ सूत्रं १२४ ॥ लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते (२०००००) ॥ सूत्रं १२५ ॥ पासस्स णं अरहओ तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था (३०००००) ॥ सूत्रं १२६ ॥ धायइखंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते (४०००००) ॥सूत्रं १२७॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छिमिल्ले चरमंते

अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणाया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ६। से तं सूयगडे (२) ७॥ सूत्रं १३७॥

से किं तं ठाणे ? ठाणेणं ससमया ठाविज्जंति परसमया ठाविज्जंति ससमय-परसमया ठाविज्जंति जीवा ठाविज्जंति अजीवा ठाविज्जंति जीवाजीवा ठाविज्जंति लोगा ठाविज्जंति अलोगा ठाविज्जंति लोगालोगा ठाविज्जंति १। ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव-पयत्थाणं–सेला सलिला य समुद्दा सूरभवणविमाण आगर णदीओ। णिहिओ पुरिसज्जाया (पस्सजोया) सरा य गोत्ता य जोइसंचाला॥ १॥ एक्कविहवत्तव्वयं दुविह जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइं च णं परूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति २। ठाणस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ संगहणीओ ३। से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा एक्कवीसं उद्देसणकाला बावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं ४। संखेज्जा अक्खरा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणाया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ६। सेत्तं ठाणे (३) ७॥ सूत्रं १३८॥

से किं तं समवाए ? समवाएणं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जति जाव लोगालोगा सूइज्जंति १। समवाएणं एकाइयाणं एगट्ठाणं एगुत्तरियपरिवुड्ढीए दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ठाणगसयस्स बारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स

जगजीवहियस्स भगवओ समासेणं समोयारे आहिज्जति २। तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वरिणया वित्थरेण अवरेऽवि अ बहुविहा विसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा-आवाससंखआययप्प-माण-उववायचवणउग्गहणोवहि-वेयणविहाण-उवओगजोगइंदियकसाय विविहा य जीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाण चक्कीणं चेव चक्कहर-हलहराण य वासाण य निगमा य समाए एए अराणे य एवमाइ एत्थ वित्थरेणं अत्था समाहि(मवा)ज्जंति ३। समवायस्स णं परित्ता वायणा जाव से णं अङ्गट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खंधे एगे उद्देसणकाले एगे चउयाले पदसहस्से पदग्गेणं पन्नत्ते ४। संखेज्जाणि अक्खराणि जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ५। से त्तं समवाए ६ ॥ सूत्रं १३९ ॥ से किं तं वियाहे? वियाहेणं ससमया विआहिज्जंति परसमया विआहिज्जंति ससमयपरसमया विआ-हिज्जंति जीवा विआहिज्जंति अजीवा विआहिज्जंति जीवाजीवा विआ-हिज्जंति लोगे विआहिज्जइ अलोए वियाहिज्जइ लोगालोगे विआहिज्जइ १। वियाहेणं नाणाविहसुरनरिंद-रायरिसि-विविहसंसइअपुच्छियाणं जिणेणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकाल-पज्जवपदेसपरिणाम-जहच्छिट्ठियभाव-अणुगमनिक्खेव-णयप्पमाण—सुनिउणोवक्कम—विविहप्पकार—पगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्द-रुंदउत्तरणसमत्थाणं सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिट्ठदीवभूय ईहामतिबु-द्धिवद्धणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाओ सुयत्थबहुविह-प्पगारा सीसहियत्था य गुण(म)हत्था २। वियाहस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्ती(संगहणी)ओ ३। से णं अंगट्ठयाए पञ्चमे

अंगे एगे सुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसते दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता ४। संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ५। से एवं आया से एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ६। सेत्तं वियाहे (५) ७॥ सूत्रं १४०॥

से किं तं णायाधम्मकहाओ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो ५ अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइअइड्ढीविसेसा १० भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहातवोवहाणाइं परियागा १५ संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायायाइं २० पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ २२ य आघविज्जंति जाव नायाधम्मकहासु णं पव्वइयाणं (समणाणं) विणयकरणजिणसामिसासण(प)वरे संजमपईण्ण(पालण)धिइमइववसायदुब्बलाणं १ तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयणिस्सहयणिसिट्ठाणं २ घोरपरीसहपराजियाणं सहपरुद्धरुद्ध(पराजियासहपारद्ध) सिद्धालयमग्गनिग्गयाणं ३ विसयसुह(महेच्छा)तुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं ४ विराहियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं ५ संसारअपारदुक्खदुग्गइभवविविहपरंपरापवंचा ६ धीराण य जियपरिसहकसायसेण्णधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं ७ आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनिस्सल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य कालक्कमचुयाणं जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाण य सदेवमाणुस्सधीरकरणकारणाणि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि

दिट्ठं ते पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जहट्ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसंजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेन्ति जह सासयं सिवं सव्व-दुक्खमोक्खं १। एए अराणे य एवमाइअत्था वित्थरेण य, णायाधम्म-कहासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगह-णीओ २। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधा एगूणवीसं अज्झ-यणा, ते समासओ दुविहा पराणत्ता, तंजहा—चरिता य कप्पिया य ३। दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइया-सयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उव-क्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओ भवंतीति मक्खायाओ ४। एएगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पराणत्ता संखेज्जा अक्खरा जाव चरणकरणपरूवणाया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ५। सेत्तं णायाधम्मकहाओ (६) ६ ॥ सूत्रं १४१ ॥

से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं उवासयाणं णगराइं उज्जा-णाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगु-णपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणा पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति, उवासगद-सासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगमसम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा य बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणपालणा उवसग्गाहियासणा णिरुवसग्गा य तवा य विचित्ता सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममार-णंतियसंलेहणाझोसणाहिं अप्पाणं जह य भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणस-

णाए य छेअइत्ता उववराणा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खएणं चुया समाणा जह जिणमयम्मि बोहिं लद्धूण य संजमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का उवेंति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं १ । एते अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण य २ । उवासयदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ ३ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं ४ । संखेज्जाइं अक्खराइं जाव एवं चरणकरणपरूवणाया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ५ । सेत्तं उवासगदसाओ (७) ६ ॥ सूत्रं १४२ ॥ से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणाइं राया अम्मापियरो समोसरणा धम्मायरिया धम्मकहा इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ बहुविहाओ खमा अज्जवं मद्दवं च सोअं च सच्चसहियं सत्तरसविहो य संजमो उत्तमं च बंभं आकिंचणाया तवो चियाओ समिइगुत्तीओ चेव तह अप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेण य उत्तमाणं दोण्हंपि लक्खणाइं पत्ताण य संजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लंभो परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ मुणिहिं पाओवगओ य जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता अंतगडो मुनिवरो तमरयोघविप्पमुक्को मोक्खसुहमणंतरं च पत्ता एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थारेणं परूवेई(विज्जंति), अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ २ । जाव से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा सत्त वग्गा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पगणत्ता संखेज्जा अक्खरा जाव एवं चरणकरणपरूवणाया

आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ३। सेत्तं अंतगडदसाओ (८)४ ॥सूत्रं १४३॥
से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोगपरलोगइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपाणपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाओ सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति १। अणुत्तरोववाइयदसासु णं तित्थकरसमोसरणाइं परमंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेणरिउबलपमद्दणाणं तव(दव)दित्तचरित्तणाणसम्मत्तसारविविहप्पगारवित्थरपसत्थगुणसंजुयाणं(गुणज्झयाणं) अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाण वण्णओ उत्तमवरतवविसिट्ठणाणजोगजुत्ताणं जह य जगहियं भगवओ जारिसा इड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं जह य उवासंति जिणवरं जह य परिकहंति धम्मं लोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊण य तस्स भासियं अवसेसकम्मविसयविरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहियं(वयणाणुगइसु)भासित्ता जिणवराण हियएणमणुणेत्ता जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थ विसयसोक्खं तओ य चुआ कमेण काहिंति संजया जहा य अंतकिरियं एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण २। अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ संगहणीओ ३। से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा तिन्नि वग्गा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं ४।

संखेज्जाणि अक्खराणि जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ५। सेत्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ (९) ६ ॥ सूत्रं १४४ ॥
से किं तं पराहावागरणाणि ? पराहावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति, पराहावागरणदसासु णं ससमयपरसमयपराण-वयपत्तेअबुद्धविविहत्थभासाभासियाणं अइसयगुणउवसमणाणप्पगारआय-रियभासियाणं वित्थरेणं थिर(वीर)महेसीहिं विविहवित्थरभासियाणं च जगहियाणं अद्दागंगुट्ठबाहुअसिमणिखोमआइच्चभासियाणं विविहमहापसिण-विज्जामणपसिण-विज्जादेवयपयोगपहाण-गुणप्पगासियाणं सब्भूयदु(विविह)गु-णप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अईसयमईयकालसमय-दमसमतित्थकरुत्तमस्स ठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजण-विबोहणकरस्स पच्चक्खयपच्चयकराणं पराहाणं विविहगुणमहत्था जिणवर-प्पणीया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति १। पराहावागरणेसु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ २। से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ताइणि ३। संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसि-ज्जंति ४। सेत्तं पराहावागरणाइ (१०) ५ ॥ सूत्रं १४५ ॥

से किं तं विवागसुयं ? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फल-विवागे आघविज्जंति १। से समासओ दुविहे पराणत्ते, तंजहा—दुहविवागे चेव सुहविवागे चेव २। तत्थ णं दस दुहविवागाणि दस सुहविवागाणि ३। से किं तं दुहविवागाणि ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपबंधे दुहपरंपराओ य आघविज्जंति, सेत्तं दुहविवागाणि

४। से किं तं सुहविवागाणि ? सुहविवागेसु सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरि-ग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणबोहिलाहा अंतकिरि-याओ य आघविज्जंति ५। दुहविवागेसु णं पाणाइवाय अलियवयण-चोरि-क्ककरण-परदारमेहुणससंगयाए महतिव्वकसाय इंदियप्पमाय-पावप्पओयअ-सुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागा णिरय-गति-तिरिक्खजोणि-बहुविहवसणसयपरंपरापबद्धाणं मणुयत्तेऽवि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होन्ति फलविवागा वहवसणविणास-नासाक-न्नुट्ठ गुट्ठ-करचरण-नहच्छेयण-जिब्भछेअण-अंजणकडग्गिदाह-गयचलणमलण-फालणउल्लंबणसूललया-लउडलट्ठिभंजण-तउसीसगतत्ततेल्ल-कलकलअहिसिं-चण-कुंभिपाग--कंपण--थिरबंधण-वेहवज्झकत्तण--पतिभयंकर-करपल्लीवणादिदा-रुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुबद्धा ण मुच्चंति पाव-कम्मवल्लीए ६। अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइधणियबद्धकच्छेण सोहणं तस्स वावि हुज्जा ७। एत्तो य सुहविवागेसु णं सीलसंजमणियमगुण-तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओगतिकालमइविसुद्धभत्त-पाणाइं पययमणसा हियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमई पयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जह य निव्वतेंति उ बोहिलाभं जह य परित्तीकरेंति नरनरय-तिरियसुरगमण-विपुलपरियट्ट-अरतिभयविसायसोग-मिच्छत्तसेलसंकडं अन्ना-णतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तारं जरमरणजोणि-संखुभियचक्कवालं सोलसकसाय-सावयपयंडचंडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जह य णिबंधंति आउगं सुरगणेसु जह य अणुभवंति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि ततो य कालंतरे चुआणं इहेव नरलोगमागयाणं आउवपुपुण्ण-रूवजाति-

कुल-जम्मआरोग्गबुद्धि-मेहाविसेसा मित्तजणसयणा-धणधणविभव-समिद्धसार-समुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु ८। अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणं सुभाणं चेव कम्माणं भासिआ बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेऽवि य एवमाइया बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति ९। विवागसुअस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ १०। से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला ११। संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं १२। संखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा अणंता पज्जवा जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति १३। सेत्तं विवागसुए (११) १४॥ सूत्रं १४६॥ से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जंति १। से समासओ पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया २। से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहसेणियापरिकम्मे चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ३। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते, तंजहा—माउयापयाणि एगट्ठियपयाणि पादोट्ठपयाणि आगासपयाणि केउभूयंरासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूयं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं सिद्धवद्धं, सेत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ४। से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—ताइं चेव माउआपयाणि जाव नंदावत्तं मणुस्सबद्धं, सेत्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ५। अवसेसा परिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ताइं ६। इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं ससमइयाइं सत्त आजीवियाइं छ चउक्कणइयाइं सत्त तेरासियाइं ७। एवामेव

सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं तेसीति भवंतीतिमक्खायाइं सेत्तं परिकम्माइं ८। से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीतिमक्खायाइं, तंजहा—उज्जुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पचइयं [विन(ज)यचरियं] अणंतरं परंपरं समाणं संजूहं [मासाणं] संभिन्नं अहाच्चयं (अहव्वायं) सोवत्थि(वत्तं)यं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुआवत्तं वत्तमाणप्पयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणामं(पस्सासं) दुपडिग्गहं, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्ण-छेअणइआइं ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेयनइ-याइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडिए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्त-परिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीतिमक्खयाइं, सेत्तं सुत्ताइं ६। से किं तं पुव्वगयं ? पुव्वगयं चउद्दसविहं पन्नत्तं, तंजहा—उप्पायपुव्वं अग्गेणीयं वीरियं अत्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंभप्पवायं पाणाऊप्पवायं किरियाविसालं लोगबिंदुसारं १४, १०। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पन्नत्ता, चत्तारि चूलियावत्थू पन्नत्ता ११। अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू बारस चूलियावत्थू १२। वीरियपवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पन्नत्ता १३। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू दस चूलियावत्थू पन्नत्ता १४। नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पन्नत्ता १५। सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पन्नत्ता १६। आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पन्नत्ता १७। कम्मप्पवायपुव्वस्स तीसं वत्थू पन्नत्ता १८। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पन्नत्ता १९। विज्जाणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पनरस वत्थू पन्नत्ता २०। अवंभस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पन्नत्ता २१। पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पन्नत्ता २२। किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पन्नत्ता २३। लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं

वत्थू पन्नत्ता २४। दस चोद्दस अट्ठट्ठारसे व बारस दुवे य वत्थूणि। सोलस तीसा वीसा पन्नरस अणुप्पवायमि॥ १॥ बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पन्नवीसाओ॥ २॥ चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि। आतिल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया णत्थि॥ ३॥ सेत्तं पुव्वगयं २५। से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य २६। से किं तं मूलपढमाणुओगे? एत्थ णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलोगगमणाणि आउं चवणाणि जम्मणाणि अ अभिसेया रायवरसिरीओ सीयाओ पव्वज्जाओ तवा य भत्ता केवलणाणुप्पाया अ तित्थपवत्तणाणि अ संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउं वन्नविभागो सीसा गणा गणहरा य अज्जा पवत्तणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं वावि परिमाणं जिणमणपज्जवओहिनाणसम्मत्तसुयनाणिणो य वाई अणुत्तरगई य जत्तिया सिद्धा पाओवगआ य जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडा मुणिवरुत्तमा तमरओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं च पत्ता, एए अन्ने य एवमाइया भावा मूलपढमाणुओगे कहिआ आघविज्जंति पराणविज्जंति परूविज्जंति, सेत्तं मूलपढमाणुओगे २७। से किं तं गंडियाणुओगे? (२) अणेगविहे पराणत्ते, तंजहा—कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ गणहरगंडियाओ चक्कहरगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ ओसप्पिणीगंडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पराणविज्जंति परूविज्जंति, सेत्तं गंडियाणुओगे २८। से किं तं चूलियाओ? (२) जराणं आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, सेत्तं चूलियाओ २९। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखे-

ज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ संगहणीओ ३० । से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयखंधे चउद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू संखेज्जा चूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता ३१ । संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपराणत्ता भावा आघविज्जति पराणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ३२ । एवं णाया एवं विराणाया एवं चरणकरणपरूवणाया आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति सेत्तं दिट्ठिवाए ३३ । सेत्तं दुवालसंगे गणिपिडगे (१२) ३४ ॥ सूत्रं १४७ ॥

इच्चेइयं दुगालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पराणे काले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति १ । इच्चेइयं दुवालसंग्रं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं वीईवइंसु एवं पडुप्पराणेऽवि एवं अणागएऽवि २ । दुवालसंगे णं गणिपिडगे ण कयावि णत्थि ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवति य भविस्सति य धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, से जहा णामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि ण कयाइ णत्थि ण भविस्सति भुविं च भवति य भविस्सति य धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवति य भविस्सइ य धुवे जाव अवट्ठिए णिच्चे ३ । एत्थ

णं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा आघविज्जंति पराणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ४ । एवं दुवालसंगं गणिपिडगं इति ॥ सूत्रं १४८ ॥

दुवे रासी पन्नत्ता, तंजहा–जीवरासी अजीवरासी य १ । अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासी य २ । से किं तं अरूवी अजीवरासी ? अरूविअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता, तंजहा–धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ३ । रूवीअजीवरासीअणेगाविहा पन्नत्ता, जाव से किं तं अणुत्तरोववाइआ ? अत्तणुरोववाइआ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–विजयवेजयंतजयंतअपराजितसव्वट्ठसिद्धिआ, सेत्तं अणुत्तरोववाइआ, सेत्तं पंचिंदियसंसारसमावरणजीवरासी ४ । दुविहा णेरइया पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्ता य अपज्जत्ता य, एवं दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियत्ति ५ । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए केवइयं खेत्तं ओगाहेत्ता केवइया णिरयावाआ पराणत्ता ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसत्तरि जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया, ते णं णिरयावासा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा जाव असुभा णिरया असुभाओ णिरएसु वेयणाओ ६ । एवं सत्तवि भाणियव्वाओ जं जासु जुज्जइ–'आसीयं बत्तीसं अट्ठावीसं तहेव वीसं च । अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव वाहल्लं ॥ १ ॥ तीसा य पराणवीसा पन्नरस दसेव सयसहस्साइं । तिरणेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥२॥ चउसट्ठी असुराणं चउरासीइं च होइ नागाणं । बावत्तरि सुवन्नाण वाउकुमाराण छराणउइ ॥३॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिदथणियमग्गीणं ।

छराहंपि जुवलयाणं बा(छा)वत्तरिमो य सयसहसा ॥४॥ बत्तीसऽट्ठावीसा बारस अड चउरो य सयसहस्सा। पराणा चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥५॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि। सत्त विमाणसयाइं चउसुवि एएसु कप्पेसु॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए। सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा॥ ७ ॥ ७। दोच्चाए णं पुढवीए तच्चाए णं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छट्ठीए पुढवीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिं भाणियव्वा ८। सत्तमाए पुढवी पुच्छा, गोयमा! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइं बाहल्लाए उवरि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठावि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पराणत्ता, तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नामं पंचमे ६। ते णं निरया वट्टे य तंसा य अहे खुरप्पसंठाणसंठिया जाव असुभा नरगा असुभाओ नरएसु वेयणाओ १०॥ सूत्रं १४१॥

केवइया णं भंते! असुरकुमारावासा पन्नत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता १। ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पोक्खरकरिणीआसंठाणसंठिया उक्किरणंतर-विउलगंभीर-खायफलिहा अट्टालयचरिय(चतुरय)दारगोउरकवाड-तोरणपडिदुवार-देसभागा जंतमुसलसंढिसयग्घिपरिवारिया अउज्झा अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिराणपंचंगुलितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छा सराहा लराहा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया

सउज्जोआ पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवं जं जस्स कमती तं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तह चेव वण्णओ २। केवइया णं भंते! पुढविकाइयावासा पन्नत्ता? गोयमा! असंखेज्जा पुढवीकाइयावासा पन्नत्ता, एवं जाव मणुस्सत्ति ३। केवइया णं भंते! वाणमंतरावासा पन्नत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसयं वज्जेता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा पन्नत्ता, ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, एवं जहा भवणवासीणं तहेव णेयव्वा, णवरं पडागमालाउला सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ४। केवइया णं भंते! जोइसियाणं विमाणावासा पन्नत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थ णं दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा पन्नत्ता, ते णं जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपञ्जरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपुण्डरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतो बाहिं च सण्हा तवणिज्जवालुआपत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा ५। केवइया णं भंते! वेमाणियावासा पन्नत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि (बहूणि जोयणसयसहस्साणि) बहुइओ जोयणकोडीओ बहुइओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थ णं विमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण-

सणंकुमारमाहिंद-बंभलंतग-सुक्कसहस्सार-आणयपाणय-आरणअच्चुएसु गेवेज्ज-गमणुत्तरेसु य चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खाया, ते णं विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्टा मट्टा णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समरिया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ६। सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ७। एवं ईसाणाइसु अट्ठावीस बारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पण्णासं चत्तालीसं छ एयाइं सहस्साइं आणए पाणए चत्तारि आरणऽच्चुए तिन्नि एयाणि सयाणि, एवं गाहाहि भाणियव्वं ८ ॥सूत्रं १५०॥
नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता १। अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं २। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए एवं जाव विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ३। सव्वट्ठे अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ४ ॥ सूत्रं १५१ ॥
कति णं भंते ! सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पन्नत्ता, तंजहा—ओरलिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए १। ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—एगिंदियओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतियमणुस्सपचिंदियओरालियसरीरे य २। ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं ३। एवं जहा ओगाहण-

संठाणे ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं एवं जाव मणुस्सेति उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ४। कइविहे णं भंते! वेउव्वियसरीरे पन्नत्ते? गोयमा दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे अ ५। एवं जाव सणंकुमारे आढत्तं जाव अणुत्तराणं भवधारणिज्जा जाव तेसिं रयणी रयणी परिहायइ ६। आहारयसरीरे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! एगाकारे पन्नत्ते, जइ एगाकारे पन्नत्ते किं मणुस्सआहारयसरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे? गोयमा! मणुस्सआहारगसरीरे णो अमणुस्स-आहारगसरीरे ७। एवं जइ मणुस्सआहारगसरीरे किं गब्भवक्कं-तियमणुस्सआहारगसरीरे संमुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे? गोयमा! गब्भ-वक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे नो संमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे ८। जइ गब्भवक्कंतिय०हारयसरीरे किं कम्मभूमिग०हारयसरीरे अकम्मभूमिग०-हारयसरीरे? गोयमा! कम्मभूमिग०हारसरीरे नो अकम्मभूमिग०हारससीरे ९। जइ कम्मभूमिग०आहारसरीरे किं संखेज्जवासाउय०सरीरे असंखेज्जवा-साउय०सरीरे? गोयमा! संखेज्जवासाउय०सरीरे नो असंखेज्जवासाउय-०सरीरे १०। जइ संखेज्जवासाउय०सरीरे किं पज्जत्तय०सरीरे अपज्जत्तय ०सरीरे? गोयमा! पज्जत्तय०सरीरे नो अपज्जत्तय०सरीरे ११। जइ पज्जत्तय०सरीरे किं समद्दिट्ठी०सरीरे मिच्छदिट्ठी०सरीरे सम्मामिच्छदिट्ठी ०सरीरे? गोयमा! सम्मदिट्ठी०सरीरे नो मिच्छदिट्ठी०सरीरे नो सम्मामिच्छ-दिट्ठी०सरीरे १२। जइ सम्मदिट्ठी०सरीरे किं संजय०सरीरे असंजय०सरीरे संजयासंजय० सरीरे? गोयमा! संजय०सरीरे नो असंजय०सरीरे नो संजया-संजय०सरीरे १३। जइ संजय०सरीरे किं पम्मत्तसंजय०सरीरे अपम्मत्तसंजय-०सरीरे? गोयमा! पमत्तसंजय०सरीरे नो अपमत्तसंजय०सरीरे १४। जइ पमत्तसंजय०सरीरे किं इड्ढिपत्त०सरीरे अणिड्ढित्त०सरीरे? गोयमा! इड्ढिपत्त-०सरीरे नो अणिड्ढपत्त०सरीरे १५। वयणा विभाणियव्वा आहरयसरीरे

समचउरंससंठाणसंठिए, आहारयसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं देसूणा रयणी उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी १६। तेआसरीरे णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते? गोयमा! पंचविहे पन्नत्ते, एगिंदिय-तेयसरीरे बितिजउपंचेंदियसरीरे १७। एवं जाव गेवेज्जस्स णं भंते! देवस्स णं मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स समाणस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं अहे जाव विज्जाहरसेढीओ उक्कोसेणं जाव अहोलोइयग्गामाओ १८। उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं १९। एवं जाव अणुत्तरोववाइया एवं कम्मयसरीरं भाणियव्वं २०॥ सूत्रं १५२॥ कइविहे णं भंते! ओही पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, भवपच्चइए य खओवसमिए य, एवं सव्वं ओहिपदं भाणियव्वं १। सीया य दव्व सारीर साया तह वेयणा भव्वे दुक्खा। अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए चेव अणि-याए॥ १॥ २। नेरइया णं भंते! किं सीतं वेयणं वेयंति उसिणं वेयणं वेयंति सीतोसिणं वेयणं वेयंति? गोयमा! नेरइया णं सीतं वेदणं वेयंति उसिणं वेयणं वेयंति सीतोसिणं वेयणं वेयंति, एवं चेव वेयणापदं भाणि-यव्वं ३। कइ णं भन्ते! लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का, एवं लेसापयं भाणियव्वं ४। अणंतरा य आहारे आहाराभोगणा इय। पोग्गला नेव जाणंति, अज्झवसाणे य सम्मते॥ १॥ ५। नेरइया णं भंते! अणंत-राहारा तओ निव्वत्तणाया तओ परियाइयणाया तओ परिणामणाया तओ परियारणाया तओ पच्छा विकुव्वणाया? हंता गोयमा! एवं आहारपदं भाणियव्वं ६॥ सूत्रं १५३॥ कइविहे णं भंते! आउगबन्धे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे आउगबन्धे पन्नत्ते, तंजहा–जाइनामनिहत्ताउए गतिनाम-निहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए

ओगाहणानामनिहत्तउए १ । नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउगबन्धे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—जातिनामआउगबन्धे, गइनामआउगबन्धे, ठिइनामआउगबन्धे, पएसनामआउगबन्धे, अणुभागनामआउगबन्धे, ओगाहणानामआउगबन्धे, एवं जाव वेमाणियाणं २ । निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ते, एवं तिरियगई मणुस्सगई देवगई ३ । सिद्धिगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे, एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा ४ । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं ? एवं उववायदंडओ भाणियव्वो उवट्टणादंडओ य ५ । नेरइया णं भंते ! जातिनामनिहत्ताउगं कति आगरिसेहिं पगरंति ? गोयमा ! सिय १ सिय २ । ३।४।५।६।७। सिय अट्ठहिं, नो चेव णं नवहिं, एवं सेसाणवि आउगाणि जाव वेमाणियत्ति ६ ॥ सूत्रं १५४ ॥ कइविहे णं भंते ! संघयणे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे संघयणे पन्नत्ते, तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवट्टसंघयणे १ । नेरइया णं भंते ! किंसंघयणी ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी णेव अट्ठि णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुण्णा अमणामा अमणाभिरामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति २ । असुरकुमारा णं भंते ! किंसंघयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा मणाभिरामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति, एवं जाव थणियकुमाराणं ३ । पुढवीकाइया णं भंते ! किंसंघयणी पन्नत्ता ? गोयमा ! छेवट्टसंघयणी पन्नत्ता, एवं जाव संमुच्छिमपञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियत्ति, गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी, संमु-

च्छिममणुस्सा छेवट्ठसंघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विहे संघयणे पन्नत्ते, जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया य ४। कइविहे णं भंते ! संठाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे संठाणे पन्नत्ते, तंजहा—समचउरंसे १ णिग्गोहपरिमण्डले २ साइए ३ वामणे ४ खुज्जे ५ हुँडे ६ ५। णेरइया णं भंते ! किंसंठाणी पन्नत्ता ? गोयमा ! हुँडसंठाणी पन्नत्ता ६। असुरकुमारा किंसंठाणी पन्नत्ता ? गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिया पन्नत्ता, एवं जाव थणियकुमारा ७। पुढवी मसूरसंठाणा पन्नत्ता, आऊ थिबुयसंठाणा पन्नत्ता, तेऊ सूइकलावसंठाणा पन्नत्ता, वाऊ पडागासंठाणा पन्नत्ता, वणस्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता, बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय-संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खा हुँडसंठाणा पन्नत्ता ८। गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा संमुच्छिममणुस्सा हुँडसंठाणसठिया पन्नत्ता, गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पन्नत्ता, जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरजोइसियवेमाणियावि ९ ॥ सूत्रं १५५ ॥

कइविहे णं भंते ! वेए पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए पन्नत्ते, तंजहा—इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसवेए १। नेरइया णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया पन्नत्ता ? गोयमा ! णो इत्थीवेया णो पुंवेए णपुंसगवेया पन्नत्ता २। असुरकुमारा णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ? गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया णो णपुंसगवेया जाव थणियकुमारा ३। पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई बितिचउरिंदिय-संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-संमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया, गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया, जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसियवेमाणियावि ४ ॥ सूत्रं १५६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा वोच्छिण्णा जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था तं—मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे। विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥ १ ॥ १। जंबुद्दीवे

णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, तंजहा—सयंजले सयाऊ य, अजियसेणे अणंतसेणे य। कज्जसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे २। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए सत्त कुलगरा होत्था, तंजहा—पढमेत्थ विमलवाहण चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे। तत्तो पसेणईए मरुदेवे चेव नाभि य ॥ ३ ॥ ३। एतेसिं णं सत्तरहं कुलगराणं सत्त भारिया होत्था, तंजहा—चंदजसा चंदकंता सुरूवपडिरूव चक्खुकंता य। सिरिकंता मरुदेवी कुलगरपत्तीण णामाइं ॥ ४ ॥ ४। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तंजहा—णाभी य जियसत्तु य जियारी संवरे इय, मेहे धरे पइट्ठे य महसेणे य खत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवे दढरहे विराहू वसुपूज्जे य खत्तिए। कयवम्मा सीहसेणे भाणू विस्ससेणे इय ॥ ६ ॥ सूरे सुदंसणे कुंभे सुमित्तविजए समुद्दविजये य। राया य आससेणे य सिद्धत्थेच्चिय खत्तिए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं एए पियरो जिणवराणं ॥ ८ ॥ ५। जंबूद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तंजहा—मरुदेवी विजया सेणा सिद्धत्था मंगला सुसीमा य। पुहवी लखणा रामा नंदा विराहू जया सामा ॥ ९ ॥ सुजसा सुव्वय अइरा सिरिया देवी पभावई उपमा। वप्पा सिवा य वामा तिसला देवी य जिणमाया ॥ १० ॥ ६। जंबूद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तंजहा—उसभ १ अजिय २ संभव ३ अभिणंदण ४ सुमइ ५ पउमप्पह ६ सुपास ७ चंदप्पभ ८ सुविहिपुप्फदंत ९ सीयल १० सिज्जंस ११ वासुपुज्ज १२ विमल १३ अणंत १४ धम्म १५ संति १६ कुंथु १७ अर १८ मल्लि १९ मुणिसुव्वय २० णमि २१ णेमि २२ पास २३ वद्धमाणो २४ य ७। एएसिं चउवीसाए तित्थ-

गराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था, तंजहा-'पढमेत्थ वइरणाभे विमले तह विमलवाहणो चेव । तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह धम्ममित्ते य ॥ ११ ॥ सुंदरबाहु तह दीहबाहु जुगबाहु लट्ठबाहू य । दिराणे य इंददत्ते सुंदर माहिंदरे चेव ॥ १२ ॥ सीहरहे मेहरहे रुप्पी अ सुंदसणे य बोद्धव्वे । तत्तो य नंदणे खलु सीहगिरी चेव वीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तु संखे सुदंसणे नंदणे य बोद्धव्वे ओसप्पिणीए एए, तित्थकराणं तु पुव्वभवा ॥ १४ ॥ ८ । एएसिं चउव्वीसाए तित्थकराणं चउव्वीसं सीयाओ होत्था, तंजहा-सीया सुदंसणा सुप्पभा य सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य । विजया य वेजयंती जयंती अपराजिया चेव ॥ १५ ॥ अरुणप्पभ चंदप्पभ सूरप्पह अग्गि सप्पभा चेव । विमला य पंचवराणा सागरदत्ता य णागदत्ता य ॥ १६ ॥ अभय-कर निव्वुइकरा मणोरमा तह मणोहरा चेव । देवकुरुत्तरकुरा विसाल चंदप्पभा सीया ॥ १७ ॥ एआओ सीअओ सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं । सव्वजगवच्छ-लाणं सव्वोउगसुभाए छायाए ॥ १८ ॥ पुव्विं ओक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टु(ट्ठ) रोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीअं असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १९ ॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदिआणं वहंति सीअं जिणंदाणं ॥ २० ॥ पुरओ वहंति देवा नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि । पचच्छिमेण असुरा गरुला पुण उत्तरे पासे ॥ २१ ॥ उसभो अ विणीयाए बारवईए अरिट्ठवरणेमी । अवसेसा तित्थयरा निक्खंता जम्म-भूमीसु ॥ २२ ॥ सव्वेऽवि एगदूसेण णिग्गया जिणवरा चउव्वीसं । ण य णाम अराणलिंगे ण य गिहिलिंगे कुलिंगे य ॥ २३ ॥ एक्को भगवं वीरो पासो मल्ली य तिहि तिहि सएहिं । भगवंपि वासुपुज्जो छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ॥ २४ ॥ उग्गाणं भोगाणं राइराणाणं च खत्तियाणं च । चउहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥ २५ ॥ सुमइत्थ णिच्च भत्तेण णिग्गओ वासुपुज्ज चोत्थेणं । पासो मल्ली य अट्ठमेण सेसा उ

छट्ठेणं ॥ २६ ॥ एएसिं णं चउव्वीसाए तित्थगराण चउव्वीसं पढमभिक्खादायारो होत्था, तंजहा–'सिज्जंस बंभदत्ते सुरिंददत्ते य इंददत्ते य । पउमे य सोमदेवे माहिंदे तह सोमदत्ते य ॥ २७ ॥ पुस्से पुणव्वसू पुणणंद सुणंदे जये य विजये य । तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह वग्गसीहे अ ॥ २८ ॥ अपराजिय विस्ससेणे वीसइमे होइ उसभसेणे य। दिणणे वरदत्ते धणे बहुले य आणुपुव्वीए ॥ २९ ॥ एए विसुद्धलेसा जिणवरभत्तीइ पंजलिउडा उ । तं कालं तं समयं पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥ ३० ॥ संवच्छरेण भिक्खा लद्धा उसभेण लोयणाहेण । सेसेहि बीयदिवसे लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥ ३१ ॥ उसभस्स पढमभिक्खा खोयरसो आसि लोगणाहस्स । सेसाणं परमणणं अमियरसरसोवमं आसि ॥ ३२ ॥ सव्वेसिंपि जिणाणं जहियं लद्धाउ पढमभिक्खाउ । तहियं वसुधाराओ सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥ ३३ ॥ ९ । एएसि चउव्वीसाए तित्थगराणं चउवीसं चेइयरुक्खा होत्था, तंजहा–णग्गोहसत्तिवणे सले पियए पियंगु छत्ताहे । सिरिसे य णागरुक्खे माली य पिलंक्खुरुक्खे य ॥ ३४ ॥ तिंदुग पाडल जंबू आसत्थे खलु तहेव दहिवण्णे । णंदिरुक्खे तिलए अंबयरुक्खे असोगे य ॥ ३५ ॥ चंपय बउले य तहा वेडसरुक्खे य धायईरुक्खे । साले य वद्धमाणस्स चेइयरुक्खा जिणवराणं ॥ ३६ ॥ बत्तीसं धणुयाइं चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स । णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेणं ॥ ३७ ॥ तिण्णेव गाउआइं चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स । सेसाणं पुण रुक्खा सरीराओ बारसगुणा उ ॥ ३८ ॥ सच्छत्ता सपडागा सवेइया तोरणेहि उववेगा । सुरअसुरगरुलमहिया चेइयरुक्खा जिणवराणं ॥ ३९ ॥ १० । एएसिं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढमसीसा होत्था, तंजहा–पढमेत्थ उसभसेणे बीइए पुण होइ सीहसेणे य । चारू य वज्जणाभे चमरे तह सुव्वय विदब्भे ॥ ४० ॥ दिण्णेय वराहे पुण आणंदे गोथुभे सुहम्मे य । मंदर जसे अरिट्ठे चक्काह

सयंभु कुंभे य ॥ ४१ ॥ इंदे कुंभे य सुभे वरदत्ते दिएण इंदभूई य। उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सा जिणवराणं ॥ ४२ ॥ ११। एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सिणी होत्था, तंजहा—बंभी य फग्गु सामा अजिया कासवीरई सोमा। सुमणा वारुणि सुल(ज)सा धारणि धरणी य धरणिधरा ॥ ४३ ॥ पउम सिवासुयी(हा) तह अंजुया(दामणी) भावियप्पा य रक्खी य। बंधुवती पुप्फवती अज्जा अमि(ति)ला य आहिया ॥ ४४ ॥ जक्खीणी पुप्फचूला य चंदणाऽज्जा य आहियाउ ॥ उदितोदियकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सी जिणवराणं ॥ ४५ ॥ गाहा १२ ॥ सूत्रं १५७ ॥ जंबूद्दीवे णं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिपियरो होत्था, तंजहा—उसभे सुमित्ते विजए समुद्दविजए य आससेणे य। विस्ससेणे य सूरे सुदंसणे कत्तवीरिए चेव ॥ ४६ ॥ पउमुत्तरे महाहरी, विजए राया तहेव य। बंभे बारसमे उत्ते, पिउनामा चक्कवट्टिणं ॥ ४७ ॥ १३। जंबूद्दीवे णं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तंजहा—सुमंगला जसवती भद्दा सहदेवी अइरा सिरिदेवी तारा जाला मेरा वप्पा चुल्लणि अपच्छिमा १४। जंबुद्दीवे णं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था, तंजहा—भरहो सगरो मघवं सणंकुमारो य रायसद्दूलो। संती कुंथू य अरो हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥ ४८ ॥ नवमो य महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो। जयनामो य नरवई, बारसमो बंदभत्तो य ॥ ४९ ॥ १५। एएसिं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था, तंजहा—पढमा होइ सुभद्दा भद्द सुणंदा जया य विजया य। किण्हसिरी सूरसिरी पउमसिरी वसुंधरा देवी ॥५०॥ लच्छिमई कुरुमई इत्थीरयणाण नामाइं १६। जंबूद्दीवे णं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नवबलदेवनववासुदेवपितरो होत्था, तंजहा—पयावई

य बंभो सोमो रुद्दो सिवो महसिवो य। अग्गिसिहो य दसरहो नवमो भणिओ य वसुदेवो ॥ ५१ ॥ १७। जंबूदीवेणं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव वासुदेवमायरो होत्था, तंजहा—मियावई उमा चेव पुहवी सीया य अम्मया। लच्छिमई सेसमई, केकई देवई तहा॥ ५२ ॥ १८। जंबूदीवेणं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णवबलदेवमायरो होत्था, तंजहा—भद्दा तह सुभद्दा य, सुप्पभा य सुदंसणा। विजया वेजयंती य, जयंती अपराजिया ॥ ५३ ॥ णवमीया रोहिणी य, बलदेवाण मायरो ११। जंबुदीवेणं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव दसारमंडला होत्था, तंजहा—उत्तमपुरिसा मज्झमपुरिसा, पहाणपुरिसा, ओयंसी तेयंसी वच्चंसी, जसंसी छायंसी कंता, सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूआ सुहसीला सुहाभिगमा सव्वजणणयणकंता ओहबला अतिबला महाबला अनिहता अपराइया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा साणुकोसा अमच्छरा अचवला अचंडा मियमंजुलपलावहसिया गंभीरमधुरपडिपुण्णसच्चवयणा अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागाकंतपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पभा(ब्भा)रा गंभीरदरसणिज्जा तालद्धओव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया महासत्त साअरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुलवंससतिलया अजिया अजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा पवरुज्जलसुक्कंतविमलगोत्थुभतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा एकावलिकराठलइयवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंबसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा अट्ठसयविभत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमहुरगंभीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा

नरवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छीए दिप्पमाणा नीलगपीयग-वसणा दुवे दुवे रामकेसवा भायरो होत्था, तंजहा—तिविट्ठू जाव कराहे अयले जाव रामे यावि अपच्छिमे ॥५४॥ २० । एएसि णं णवराहं बलदेववासु देवाणं पुव्वभविया नव नामधेज्जा होत्था, तंजहा—विस्सभूई पव्वयए धणदत्त समुद्दत्त इसिवाले । पियमित्त ललियमित्ते पुणव्वसू गंगदत्ते य ॥ ५५ ॥ एयाइं नामाइं पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं । एत्तो बलदेवाणं जहक्कमं कित्तइस्सामि ॥ ५६ ॥ विसनंदी य सुबन्धू सागरदत्ते असोगललिए य । वाराह धम्मसेणे अपराइय रायललिए य ॥ ५७ ॥ २१ । एएसिं नवराहं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, तंजहा—संभूय सुभद्द सुदंसणे य सेयंस कराह गंगदत्ते अ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणे य णवमए ॥ ५८ ॥ एए धम्मायरिया कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । पुव्वभवे एआसिं जत्थ नियाणाइं कासीय ॥ ५९ ॥ २२ । एएसिं नवराहं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमिओ होत्था, तंजहा—महुरा य कणगवत्थू सावत्थी पोयणं च रायगिहं । कायंदी कोसम्बी मिहिलपुरी हत्थिणाउरं च ॥ ६० ॥ २३ । एतेसिं णं नवराहं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था, तजहा—गावी जुवे (जाव माउआ) संगामे तह इत्थी पराइओ रङ्गे । भज्जाणुराग गोट्ठी परइड्ढी माउया इय ॥ ६१॥ २४ । एएसिं नवराहं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था, तंजहा—अस्सग्गीवे जाव (तारए मेरए महुकेढवे निसुंभे य । बलिपहराए तह रावणे य नवमे) जरासंधे ॥ ६२ ॥ एए खलु पडिसत्तू जाव सचक्केहि ॥ ६३ ॥ एको य सत्तमीए पंच य छट्ठीएँ पंचमी एको । एको य चउत्थीए कराहो पुण तच्च-पुढवीए ॥ ६४ ॥ अणिदाणकडा रामा सव्वेऽवि य केसवा नियाणकडा । उड्ढंगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी ॥ ६५ ॥ अट्ठंतकडा रामा एगो पुण बम्भलोयकप्पंमि । एक्कस्स गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ६६ ॥ २५ ॥ सूत्रं १५८ ॥ जंबूद्दीवे णं भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए एरवए

वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसं तित्थयरा होत्था, तंजहा–चंदाणणं सुचंदं अग्गीसेणं च नंदिसेणं अत्तसेणं च। इसिदिणणं ववहारिं वंदिमो सोमचंदं च ॥ ६७ ॥ वंदामि जुत्तिसेणं (दाहबाहु, दीहसेणं) अजियसेणं (सयाउयं) तहेव सिवसेणं (सच्चसेणं सच्चइंच)। बुद्धं च देवसम्मं सययं निक्खत्त(सेयंस) सत्थं च ॥ ६८ ॥ असंजलं जिणवसहं (सयंजलं) वंदे य अणंतयं अमिय-णाणिं (संहसेणं)। उवसंतं च धुयरयं वंदे खलु गुत्तिसेणं च ॥ ६९ ॥ अति-पासं च सुपासं देवेसरवंदियं च मरुदेवं। निव्वाणगयं च वरं खीणदुहं सामकोट्ठं च ॥ ७० ॥ जियरागमग्गिसेणं वंदे खीणरायमग्गिउत्तं च। वोक्कसियपिज्ज-दोसं वारिसेणं गयं सिद्धिं ॥ ७१ ॥ २६। जंबूदीवे णं भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भारहे वासे सत्त कुलगरा भविस्संति, तंजहा–मियवाहणे सुभूमे य, सुप्पभे य सयंपभे। दत्ते सुहुमे सुबन्धू य, आगमिस्साण होक्खति ॥ ७२ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दस कुलगरा भविस्संति, तंजहा–विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दढधणू दसधणू सयधणू पडिसूई सुमइत्ति २७। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति तंजहा-महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयंपभे। सव्वाणुभूई अरहा, देवस्सुए य होक्खई ॥ ७३ ॥ उदए पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सत्तकित्ति य। मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविऊ जिणे ॥ ७४ ॥ अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे। चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्सेण होक्खई ॥ ७५ ॥ संवरे अणियट्टी य, विजए विमलेती य। देवोववाए अरहा, अणंतविजए इय ॥ ७६ ॥ एए वुत्ता चउव्वीसं भरहे वासम्मि केवली। आगमिस्सेण होक्खंति, धम्मतित्थस्स, देसगा ॥ ७७ ॥ २८। एएसि णं चउव्वीसाए तित्थकराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति, तंजहा–सेणिय सुपास उदए पोट्टिल अणगार तह दढाऊ य। कत्तिय संखे य तहा नंद

सुनंदे य सतई(ए)य ॥ ७८ ॥ बोद्धव्वा देवई य सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे। रोहिणि सुलसा चेव तत्तो खलु रेवई चेव ॥ ७९ ॥ ततो हवइ सयाली बोद्धव्वे। खलु तहा भयाली य। दीवायणे य कण्हे तत्तो खलु नारए चेव ॥ ८० ॥ अंबड दारुमडे य साई बुद्धे य होइ बोद्धव्वे। भावी तित्थगराणं णामाइं पुव्वभवियाइं ॥ ८१ ॥ २९। एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पियरो भविस्संति चउव्वीसं मायरो भविस्संति चउव्वीसं पढमसीसा भविस्संति चउव्वीसं पढमसिस्सणीओ भविस्संति चउव्वीसं पढमभिक्खादायगा भविस्संति चउव्वीसं चेइयरुक्खा भविस्संति ३०। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति, तंजहा—भारहे य दीहदंते गूढदंते य सुद्धदंते य। सिरिउत्ते सिरिभूई सिरिसोमे य सत्तमे ॥ ८२ ॥ पउमे य महापउमे विमलवाहणे (ले तह) विपुलवाहणे चेव। वरिट्ठे बारसमे वुत्ते आगमिसा भरहाहिवा ॥ ८३ ॥ ३१। एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो भविस्संति, बारस मायरो भवस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ३२। जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेववासुदेवपियरो भविस्संति, नववासुदेवमायरो भविस्संति, नव बलदेवमायरो भविस्संति ३३। नव दसारमंडला भविस्संति, तंजहा—उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव नीलगपीतगवसणा दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति, तंजहा—नंदे य नंदमित्ते दीहबाहू तहा महाबाहू। अइबले महाबले बलभद्दे य सत्तमे ॥ ८४ ॥ दुविट्ठू य तिविट्ठू य आगमिस्साण वण्हिणो। जयंते विजए भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे। आणंदे नंदणे पउमे, संकरिसणे य अपच्छिमे ॥ ८५ ॥ ३४। एएसि णं नवण्हं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति, नव धम्मायरिया भविस्संति, नव नियाणभूमीओ

भविस्संति, नव नियाणकारणा भविस्संति, नव पडिसत्तू भवस्संति, तंजहा–तिलए य लोहजंघे, वइरजंघे य केसरी पहराए। अपराइए य भीमे, महाभीमे य सुग्गीवे ॥ ८६ ॥ एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । सव्वेवि चक्कजोही हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥ ८७ ॥ ३५ । जंबुद्दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सपिणीए चउव्वीसं तित्थकरा भविस्संति, तंजहा–सुमंगले अ सिद्धत्थे, णिव्वाणे य महाजसे । धम्मज्झए य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ८८ ॥ सिरिचंदे पुप्फकेऊ, महाचंदे य केवली । सुयसागरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ८९ ॥ सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली । सच्चसेणे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ९० ॥ सूरसेणे य अरहा, महासेणे य केवली । सव्वाणंदे य अरहा, देवउत्ते य होक्खई ॥ ९१ ॥ सुपासे सुव्वए अरहा, अरहे य सुकोसले । अरहा अणंतविजए, आगमिस्सेण होक्खई ॥ ९२ ॥ विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महाबले । देवाणंदे य अरहा, आगमिस्सेण होक्खई ॥ ९३ ॥ एए वुत्ता चउव्वीसं, एरवयम्मि केवली । आगमिस्साण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥ ९४ ॥ ३६ । बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति, बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ३७ । नव बलदेववासुदेवपियरो भविस्संति, णव वासुदेवमायरो भविस्संति णव बलदेवमायरो भविस्संति, णव दसारमंडला भविस्संति उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति, णव पडिसत्तू भविस्संति, नव पुव्वभवणामधेज्जा णव धम्मायरिया णव णियाणभूमीओ णव णियाणकारणा, आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा, एवं दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ३८ ॥ सूत्रं १५८ ॥ इच्चेयं एवमाहिज्जंति, तंजहा–कुलगरवंसेइ य एवं तित्थगरवंसेइ य चक्कवट्टिवंसेइ य गणधरवंसेइ य इसि-

वंसेइ य जइवंसेइ य मुणिवंसेइ य सुएइ वा सुअंगेइ वा सुयसमासेइ वा सुयखंधइ वा समवाएइ वा संखेइ वा सम्मत्तमंगमक्खायं अज्झयणान्तिबेमि ३१ ॥ सूत्रं १५१ ॥ इति समवायं चउत्थमंगं समत्तम् ॥४॥

॥ इति समवायाङ्ग-सूत्रम् ॥४॥

(ग्रन्थाग्रं १६६७)

॥ चतुर्थं
श्रीमत्समवायाङ्ग-सूत्रं
समाप्तम् ॥

इति श्रीमदागमसुधासिन्धौ
प्रथमो विभागः समाप्तः ॥